Fortnight of the Ancestors

pitrapaksha MAHASANGAM

तर्पण

2018

पितृपक्ष मेला, गया (बिहार)

जिला प्रशासन, गया की प्रस्तुति

भगवान् विष्णु का शृंगार विभूषित
पूज्य–चरण

Fortnight of the Ancestors

pitrapaksha

MAHASANGAM

तर्पण

2018

स्मारिका

प्रकाशक

जिला प्रशासन, गया

गया तीर्थ का महानायक : गयासुर

स्मारिका परिवार

संरक्षक

अभिषेक सिंह, भा०प्र०से०
जिला पदाधिकारी, गया

संयोजक

नागेन्द्र कुमार गुप्ता

सम्पादक-मण्डल

कंचन कुमार सिन्हा

डॉ० राकेश कु. सिन्हा 'रवि'

डॉ० के. के. नारायण

डॉ० कृष्ण देव मिश्र

डॉ० ब्रजराज मिश्र

मुकेश कुमार सिन्हा

महत्वपूर्ण दूरभाष संख्या/मोबाईल नम्बर

गया (कोड – 0631)	दूरभाष/मोबाईल
जिला पदाधिकारी	2222900, 2222800
वरीय पुलिस अधीक्षक, गया	2222901, 2222902
नगर पुलिस अधीक्षक, गया	9473191722
उप–विकास आयुक्त, गया	9431818351
सिविल सर्जन, गया	9470003278
अनुमंडल पदाधिकारी, सदर, गया	9473191246
पुलिस उपाधीक्षक, नगर, गया	9431800110
पुलिस उपाधीक्षक, विधि व्यवस्था, गया	9471002095
पुलिस उपाधीक्षक, यातायात, गया	9934034126
अधीक्षक, मगध मेडिकल कॉलेज, गया	9470003301
अधीक्षक, जय प्रकाश नारायण अस्पताल, गया	9470003263
अधीक्षक, प्रभावती अस्पताल, गया	9794848000
प्र. चिकित्सा पदा०, संक्रामक रोग अस्प., गया	9431838574, 9470003293
रेलवे स्टेशन प्रबंधक, गया	9471006726
रेलवे टूरिस्ट इन्फॉरमेशन सेन्टर, गया	2200672
रेलवे इन्क्वायरी, गया	2223320
संवास सदन समिति मेला नियंत्रण कक्ष, गया	2223510, 2223511 2223512, 2223513
फायर ब्रिगेड, गया	101, 222258, 9473199836

पितृपक्ष महासंगम

Fortnight of the Ancestors
pitrapaksha
MAHASANGAM

के अवसर पर पिण्डदान हेतु
आगत सभी तीर्थ यात्रियों के सुविधार्थ स्थापित

हेल्पलाइन 'ई–समाधान'

844859680

हेल्पलाईन सुविधा 24×7 उपलब्ध है।

ONLINE INFORMATION & COMPLAIN CENTRE :

www.pinddaangaya.in

ANDROID APP ON Google play
App Store
pinddaangaya

लाल जी टंडन
LAL JI TANDON

सत्यमेव जयते

राज्यपाल, बिहार
GOVERNOR OF BIHAR

राजभवन
पटना – 800022
RAJ BHAWAN
PATNA-800022

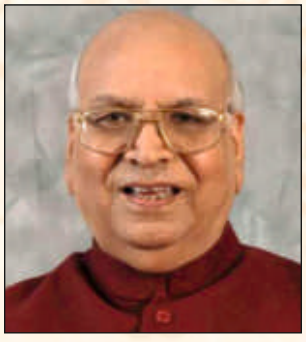

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि आगामी 'पितृपक्ष मेला-2018' के अवसर पर जिला प्रशासन, गया द्वारा एक 'स्मारिका' के प्रकाशन का निर्णय लिया गया है।

पितरों की आत्मा की चिरशांति हेतु पिंडदान एवं तर्पण के लिए लाखों तीर्थ यात्री इस मेले में गया पहुँचते हैं। आशा है, इन तीर्थ यात्रियों के ठहरने तथा पूजादि आवश्यक कर्मकांडीय विधानों के लिए बेहतर व्यवस्था की जाएगी।

मैं 'पितृपक्ष मेला' के आयोजन तथा इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली 'स्मारिका' की समग्र सफलता की मंगलकामना करता हूँ।

लाल जी टंडन

(लाल जी टंडन)

Phone : 0612-2786100-107, Fax : 0612-2786178
e-mail : governorbihar@nic.in

नीतीश कुमार
मुख्यमंत्री
बिहार

बिहार सरकार

आवास : 1, अणे मार्ग
पटना - 800001

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी गया शहर में विश्वप्रसिद्ध पितृपक्ष मेला दिनांक 23 सितम्बर, 2018 से 08 अक्टूबर, 2018 तक आयोजित हो रहा है, जिसमें देश-विदेश से लाखों तीर्थ-यात्री गया के पावन धरती पर पहुँच कर अपने पितरों की आत्मा की शान्ति के लिए तर्पण करेंगे। इस अवसर पर जिला प्रशासन गया की ओर से एक स्मारिका का प्रकाशन भी प्रस्तावित है।

''पितृपक्ष मेला'' में देश के कोने-कोने से एवं विदेशों से भी श्रद्धालुगण गया की पावन धरती पर पधारते हैं एवं पितरों को मोक्ष प्रदान करने हेतु धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेते हैं। मुझे विश्वास है कि जिला प्रशासन, गया अपने गौरवशाली अतीत के अनुरूप तथा स्थानीय लोग अपने गौरवशाली परंपरा के अनुरूप मेला में भाग लेने आये श्रद्धालुओं, तीर्थयात्रियों, भक्तों एवं पर्यटकों का स्वागत अतिथियों की तरह करेंगे जिससे तीर्थयात्रियों को समस्त सुविधा एवं सहायता मिल सके। मैं आशा करता हूँ कि प्रकाश्य स्मारिका ज्ञानवर्द्धक होगी तथा जिले के पौराणिक महत्त्व, ऐतिहासिक धरोहर, सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक अनुष्ठानों और शैक्षणिक गतिविधियों से आमजन को परिचित कराने के साथ-साथ तीर्थयात्रियों का उचित मार्ग दर्शन करने में सफल सिद्ध होगी।

''पितृपक्ष मेला'' के अवसर पर इस क्षेत्र के लोगों को मेरी हार्दिक बधाई तथा तीर्थयात्रियों की सुगम, सुखद एवं मंगलमय यात्रा तथा प्रकाश्य स्मारिका की व्यापक उपयोगिता हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

(नीतीश कुमार)

सुशील कुमार मोदी
उप मुख्यमंत्री
बिहार

बिहार सरकार

पटना

संदेश

यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि विश्वप्रसिद्ध पितृपक्ष मेला इस वर्ष 23 सितम्बर से 08 अक्टूबर, 2018 तक आयोजित होगा और इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जायेगा। गया की पावन धरती पर आयोजित होने वाले इस पितृपक्ष मेला में देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु अपने पितरों की आत्मा की चिर शांति के लिए श्राद्ध, तर्पण एवं पिण्डदान करते हैं।

आशा है, आमजन एवं श्रद्धालुओं को मेला की पौराणिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्ता से अवगत कराने में स्मारिका महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

पितृपक्ष मेला एवं स्मारिका की सफलता हेतु हार्दिक मंगलकामनायें।

(सुशील कुमार मोदी)

मो० हारूण रशीद
उप-सभापति
बिहार विधान परिषद्

बिहार सरकार

Md. Haroon Rashid
Deputy Chairman
Bihar Legislative Council

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला इस वर्ष 23 सितम्बर, 2018 से आरंभ होकर 8 अक्टूबर, 2018 तक चलेगा, जिसमें देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु गया में फल्गु नदी के तट पर अपने पितरों को मोक्ष की प्राप्ति हेतु श्राद्ध और तर्पण के लिए पहुँचेंगे। ऐसी मान्यता है कि गया में श्राद्ध कर्म के बाद विष्णुपद में भगवान विष्णु के दर्शन करने से व्यक्ति को पितृ एवं मातृ ऋण से मुक्ति मिल जाती है।

'मोक्षनगरी गया' में आयोजित होनेवाली इस भव्य मेले की सफलता एवं इस अवसर पर प्रकाश्य स्मारिका हेतु मैं अपनी हार्दिक शुभ कामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(मो० हारूण रशीद)

आवास : 11/M, Strand Road, Patna
E-mail : dyc.blc@gmail.com

Tel. + Fax : 0612 - 2215683 (O)
0612 - 2215245
Mob. : 9431250157

कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा
मंत्री
शिक्षा एवं विधि विभाग
बिहार सरकार, पटना

बिहार सरकार

Krishnnandan Pd. Verma
Minister
Education & Law Department
Government of Bihar, Patna

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी गया में विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला का 23 सितम्बर 2018 से शुभारम्भ हो रहा है। गया एक सांस्कृतिक नगरी है। यहाँ सदियों से विभिन्न धर्मावलंबियों के बीच यह मेला पवित्रता एवं आस्था का प्रतीक है।

इस अवसर पर देश-विदेश से लाखों में तीर्थ यात्री यहाँ आते हैं और आस्था की इस नगरी में अपने पितरों की मुक्ति के लिए तर्पण एवं पिण्डदान करते हैं। यह सारा अनुष्ठान पितरों के सम्मान तथा उनकी आत्मा की मुक्ति/शांति हेतु किया जाता है।

यह हर्ष का विषय है कि इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन जिला प्रशासन, गया की ओर से किया जा रहा है। इस प्रकाशन से विश्वविख्यात् पितृपक्ष मेला तथा सांस्कृतिक नगरी को नजदीक से समझने का सुअवसर मिलेगा।

इस आयोजन को सफल बनाने की दिशा में गया जिला प्रशासन के सभी अधिकारी, कर्मचारी एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता लगे हैं। मैं अपनी ओर से सभी के प्रति अपनी हार्दिक शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

(कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा)

आवास : 3, स्टैण्ड रोड, पटना - 800015 / कार्यालय : विकास भवन, नया सचिवालय, बिहार, पटना
कार्यालय : 0612-2201904 फैक्स : 2215836
Res. : 3, Stant Road, Patna-800015/Office : Vikas Bhawan, New Secretariat, Bihar, Patna
Phone : 0612-2201904 (O), Fax : 2215836
E-mail : ministereducation0099@gmail.com, Mob. : 9931271328, 8544412147

डॉ० प्रेम कुमार

मंत्री

कृषि विभाग

बिहार सरकार, पटना

बिहार सरकार

कार्यालय :

द्वितीय तल, विकास भवन

बेली रोड, पटना (बिहार)

फोन : 0612-2231212 (का.)

फैक्स : 0612-2215526 (का.)

मो० : 9431818703

e-mail : agri.ministerbihar@gmail.com

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि पितृपक्ष के अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि स्मारिका पितृपक्ष में आनेवाले श्रद्धालुओं को इस पवित्र मोक्षधाम के संबंध में और अधिक जानकारी सुलभ कराने में सक्षम होगी।

हिन्दू धर्म और संस्कृति में पूर्वजों और पितरों की आत्मा की शांति के लिए आश्विन महीने के कृष्ण पक्ष यानी पितृपक्ष में पिंडदान एक अति महत्त्वपूर्ण कर्मकांड होता है। बिहार का गया पिंडदान के लिए धार्मिक और पौराणिक रुप से सर्वोत्तम माना जाता है। पितृपक्ष के दौरान लोग अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति और मोक्ष की प्राप्ति हेतु पिंडदान करने भारतवर्ष सहित देश-विदेश से गया आते हैं।

स्मारिका के सफल एवं लोकोपयोगी प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ० प्रेम कुमार)

प्रमोद कुमार

बिहार सरकार

मंत्री
पर्यटन विभाग
बिहार सरकार, पटना

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि दिनांक 23 सितम्बर 2018 से 08 अक्टूबर 2018 तक पितृपक्ष मेला का आयोजन गया में किया जा रहा है। इस अवसर पर देश-विदेश के लाखों तीर्थ यात्री गया आकर अपने पितरों की आत्मा के शान्ति हेतु तर्पण करेंगे।

विदित होगा कि गया मोक्ष एवं ज्ञान की भूमि रही है। इस भूमि की ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्ता को देखते हुए पर्यटकों की सुविधा हेतु कार्य किया जा रहा है। इस अवसर पर 'स्मारिका' का प्रकाशन का निर्णय लिया गया है। स्मारिका में गया जिला के महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थलों का विवरणी के साथ-साथ यहाँ के ऐतिहासिक महत्त्व का उल्लेख किया जायेगा। जिससे यहाँ आने वाले पर्यटकों को काफी जानकारियाँ उपलबध होगी।

मैं पितृपक्ष मेला के अवसर पर गया आने वाले देश विदेश के तीर्थ यात्रियों एवं बिहार वासियों को शुभकामना देता हूँ। साथ ही इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(प्रमोद कुमार)

कार्यालय : पुराना सचिवालय, पटना – 800015

फोन : 0612-2211242 (का) 2215199 (फै)
E-mail : ministertourismbihar@gmail.com

विनोद नारायण झा

मंत्री

लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग

बिहार सरकार, पटना

बिहार सरकार

कार्यालय :

विश्वेश्वरैया भवन, बेली रोड, पटना (बिहार)

फोन : 0612-2545180 (का.)

फैक्स : 0612-2545181 (का.)

मो० : 9431815798

e-mail : ministerphed0099@gmail.com

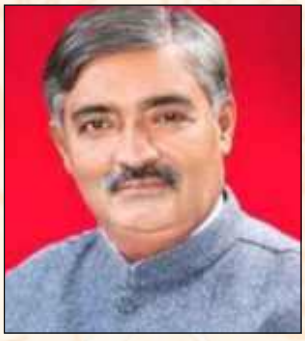

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला इस वर्ष 23 सितम्बर, 2018 से प्रारम्भ होकर 08 अक्टूबर, 2018 तक चलेगा। आश्विन कृष्ण प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक का पक्ष पितृपक्ष के नाम से विख्यात है। इस पक्ष में लोग अपने पितरों को जल देते हैं तथा उनकी मृत्यु तिथि पर श्राद्ध करते हैं। पिता-माता आदि पारिवारिक मनुष्यों की मृत्यु पश्चात् उनकी तृप्ति के लिए श्रद्धापूर्वक किए जाने वाला कर्म पितृ श्राद्ध कहलाता है। तत्पश्चात् पितृपक्ष मेले के अवसर पर देश-विदेश से लाखों तीर्थ-यात्री, गया पहुँचकर अपने पितरों की आत्मा की शान्ति हेतु तर्पण करते हैं। गया के विष्णुपद मंदिर वह स्थान है जहाँ माना जाता है कि वहाँ स्वयं भगवान विष्णु के चरण उपस्थित हैं, जिसकी पूजा करने के लिए लोग देश-विदेश के कोने-कोने से आते हैं। गया में जो दूसरा सबसे प्रमुख स्थान है जिसके लिए लोग दूर-दूर से आते हैं वह स्थान एक नदी है उसका नाम ''फल्गु नदी'' है। ऐसा माना जाता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम ने स्वयं इस स्थान पर अपने पिता राजा दशरथ का पिंडदान किया था तब से यह माना जाने लगा कि इस स्थान पर आकर कोई भी व्यक्ति अपने पितरों के निमित्त पिंडदान करेगा तो उसके पितर उससे तृप्त रहेंगे और वह व्यक्ति अपने पितृऋण से उऋण हो जाएगा।

मैं इस पितृपक्ष मेले के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ तथा पितृपक्ष महासंगम से जुड़े सभी पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों को साधुवाद देता हूँ।

भवदीय

विनोद नारायण झा

(विनोद नारायण झा)

कृष्ण कुमार ऋषि

मंत्री

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग

बिहार सरकार

बिहार सरकार

कार्यालय :

विकास भवन, नया सचिवालय

बेली रोड, पटना (बिहार)

टेली०+फैक्स : 0612-2215688 (का.)

मो० : 9431800562

e-mail : ministerartcultureyouth@gmail.com

संदेश

विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला- 2018 का आयोजन इस वर्ष 23 सितम्बर से 8 अक्टूबर, 2018 तक किया जा रहा है, जो भारत एवं बिहार वासियों के लिए हर्ष का विषय है। उक्त आयोजन के अवसर पर स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय लिया गया है, जो सराहनीय है।

हिन्दू धर्म शास्त्रों में कहा गया है कि माता-पिता की सेवा को सबसे बड़ी पूजा माना गया है। इसी सेवा की भावना से अपने पितरों की आत्मा की शांति के लिए फल्गु नदी के तट पर तर्पण किया जाता है। फल्गू नदी के तट पर अवस्थित गया समूचे भारत वर्ष ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में पितृपक्ष के समय तर्पण के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान माना गया है।

धर्म शास्त्रों से पता चलता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम ने स्वयं इस स्थान पर अपने पिता राजा दशरथ का पिंड दान किये थे। तब से यह परंपरा चलने लगी कि इस स्थान पर आकर अपने पितरों के निमित पिंड दान करने से पितरों की आत्मा को शांति मिलती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पितृपक्ष मेला-2018 सफल होगी। सफलता के लिए जिला प्रशासन, गया को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(कृष्ण कुमार ऋषि)

दीपक कुमार, भा०प्र०से०
मुख्य सचिव

Deepak Kumar, I.A.S.
Chief Secretary

बिहार सरकार

बिहार सरकार
मुख्य सचिवालय, पटना – 800 015
GOVERNMENT OF BIHAR
Main Secretariat, Patna - 800 015
Tel. No. : 0612-2215804 (O), Fax : 0612-2217085
e-mail : cs-bihar@nic.in

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि गया में विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 23 सितम्बर 2018 से प्रारंभ होकर 08 अक्टूबर 2018 तक आयोजित होगा। इस अवसर पर देश-विदेश से लाखों तीर्थ-यात्री गया पहुँचकर अपने पितरों की आत्मा की चिर-शांति के लिए पिण्डदान एवं तर्पण करते हैं। यह मान्यता है कि पितृपक्ष के दौरान गया में पिण्डदान करने से उनके पूर्वजों की आत्मा को मोक्ष प्राप्ति में सहायता मिल सकती है। गया पिण्डदान के लिए अति पवित्र स्थल है। धार्मिक अनुष्ठान के अंतर्गत श्राद्ध कर्म को विशिष्ट महत्ता प्रदान की गयी है। इसे भारतीय संस्कृति का महान अवदान माना गया है।

पितृपक्ष मेला आयोजन की स्मृतियों को अविस्मरणीय बनाने के लिए जिला प्रशासन के द्वारा ''स्मारिका'' का प्रकाशन किया जा रहा है। निश्चय ही यह एक सराहनीय प्रयास है। मैं पितृपक्ष मेला 2018 के आयोजन की सफलता की कामना करता हूँ तथा अपनी शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

(दीपक कुमार)

अतीश चन्द्रा
भा.प्र.से.
सचिव

बिहार सरकार

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग
सूचना भवन, बेली रोड, पटना – 800015
दूरभाष : 0612-2212390, फैक्स : 0612-2212390
ई–मेल : secy@prdbihar.gov.in

संदेश

ज्ञान एवं मोक्ष की भूमि पर आयोजित विश्व विख्यात पितृपक्ष मेला का ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्त्व है। अपने पितरों की आत्मा की शांति हेतु तर्पण करने देश-विदेश से लोग गया की पावन धरती पर आते हैं। हिंदू धर्मावलंबियों के लिए गयाजी के नाम से प्रसिद्ध यह तीर्थ स्थल अत्यंत विश्वास और श्रद्धा का प्रतीक है।

पितरों की आत्मा की चिर शांति के लिए तर्पण तथा पिण्डदान के लिए देश-विदेश से आने वाले लाखों श्रद्धालुओं को आवश्यक सुविधा मुहैया कराना प्रशासन की प्राथमिकता होनी चाहिये ताकि आने वाले लोग इस मोक्ष धाम की उत्कृष्ट व्यवस्था की छवि को लेकर लौटें।

पितृपक्ष मेला 2018 के अवसर पर जिला प्रशासन, गया की ओर से एक स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय लिया गया है। उम्मीद है कि इस स्मारिका द्वारा पितृपक्ष मेला के संबंध में आमजनों तथा श्रद्धालुओं को ज्ञानवर्द्धक सूचनायें उपलब्ध होंगी। मैं पितृपक्ष मेला 2018 के सफल एवं शांतिपूर्ण संचालन तथा इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका की सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

(अतीश चन्द्रा)

T. N. BINDHYESHWARI
I.A.S.
COMMISSIONER
MAGADH
GAYA

सत्यमेव जयते

COMMISSIONER'S OFFICE :
MAGADH, GAYA
0631 - 2225821 (Office)
0631 - 2229002 (Resid)
0631 - 2221641 (Fax)
9473191426 (M)
E-mail : divcom-magadh-bih@nic.in

संदेश

गयाधाम में विश्वविख्यात पितृपक्ष मेला के आयोजन 23 सितम्बर से 08 अक्टूबर, 2018 तक किया जा रहा है। इस अवसर पर देश-विदेश के लाखों तीर्थयात्री मोक्षधाम गया आकर अपने पितरों की आत्मा की मुक्ति एवं उनकी चिरकालीन शांति हेतु पिंडदान एवं तर्पण करते हैं। वर्तमान संतति का अपने पितरों के मोक्ष प्राप्ति हेतु पिण्डदान करना अपने पूर्वजों के प्रति अपार श्रद्धा, असीम सम्मान एवं अगाध स्नेह का प्रमाण है। यह भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का प्रतिमान है।

गया न सिर्फ सनातन् धर्म के लिए बल्कि बौद्ध धर्म के साथ अन्य धर्म के अनुयायियों के लिए भी महत्त्वपूर्ण एवं दर्शनीय स्थल है। सर्वविदित है कि महात्मा बुद्ध को बोधगया में ज्ञान की प्राप्ति हुई और उन्होंने सम्पूर्ण विश्व को सत्य, अहिंसा और करुणा का संदेश दिया। बोधगया के महाबोधि मंदिर को विश्व-धरोहर का दर्जा प्राप्त हैं बौद्ध धर्म का केन्द्रबिन्दु है बोधगया। यहाँ सालों भर बौद्ध धर्म के अनुयायियों का तांता लगा रहता है। वे यहाँ महात्मा बुद्ध की ज्ञानस्थली के दर्शन एवं शांति की प्राप्ति के लिए आते हैं। इसके अतिरिक्त गया जिला में अनेक ऐसे स्थल हैं जो ऐतिहासिक, धार्मिक, पौराणिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। यहाँ का मंगलागौरी शक्तिपीठ, बिथोशरीफ, कोटेश्वर धाम, मोहड़ा अवस्थित तपोवन, टनकुप्पा के चोवार ग्राम अवस्थित बाबा जटाशंकर महादेव (शिवजी) मंदिर का चमत्कारी शिवलिंग, बराबर की पहाड़ी, ब्रह्मयोनि, जामा मस्जिद, कुर्किहार इत्यादि उल्लेखनीय है। बिहार सर्वधर्म सम्भाव का संदेश विश्व को देता रहा है। गया भी सभी धर्मों एवं संस्कृतियों का सभागम स्थल है। अत: सच्चे अर्थों में गया बिहार का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करता है।

गया जिला के पर्यटक स्थल के विकास एवं संरक्षण के लिए सरकार निरंतर प्रयत्नशील है। पितृपक्ष मेला के दौरान यहाँ आने वाले लाखों श्रद्धालुओं के लिए आवासन, पेयजल, साफ-सफाई, चिकित्सा व्यवस्था, प्रकाश, यातायात एवं परिवहन, सुरक्षा व्यवस्था, मनोरंजन तथा वांछित सूचना उपलब्ध कराने हेतु जिला प्रशासन द्वारा समुचित व्यवस्था की गई है। पितृपक्ष मेला, 2018 के सफल आयोजन हेतु वरीय प्रशासनिक पदाधिकारियों के साथ अधोहस्ताक्षरी द्वारा मेला क्षेत्र का भ्रमण किया गया तथा इसकी सफलता के लिए अनेक बार उच्चस्तरीय बैठकें की गयीं। उल्लेखनीय है कि पितृपक्ष मेला के दौरान सर्वाधिक तीर्थयात्री रेल मार्ग से गयाधाम आते हैं। उनकी सुविधा के लिए विशेष प्रबंध करने हेतु रेलवे के उच्च अधिकारियों के साथ भी अधोहस्ताक्षरी द्वारा बैठक की गयी।

पितृपक्ष मेला-2018 के सफल आयोजन हेतु मैं शुभकामनाएँ देती हूँ साथ ही इस पुनीत अवसर पर गया जिला प्रशासन द्वारा प्रकाशित की जाने वाले स्मारिका 'तर्पण' की सफलता की कामना करती हूँ कि यह स्मारिका गयाधाम, पिंडदान एवं गया के अन्य महत्त्वपूर्ण पर्यटकीय, धार्मिक, ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी प्रस्तुत करने में सक्षम एवं सफल सिद्ध होगी।

आयुक्त, मगध प्रमण्डल, गया

विनय कुमार, भा.पु.से.
पुलिस उप-महानिरीक्षक
मगध क्षेत्र, गया

सत्यमेव जयते

फोन नं० : 0631-2223085 (का.)
0631-2222352 (आ.)
मोबाईल : 9431822960

संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हो रहा है कि आगामी 23 सितम्बर, 2018 से प्रारम्भ होकर 08 अक्टूबर, 2018 तक चलने वाली पितृपक्ष मेला के शुभ अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी प्रकाशित की जाने वाली ''स्मारिका'' प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया है।

विश्व प्रसिद्ध मेला में देश-विदेश से गया पहुँच कर अपने पितरों की आत्मा का की शांति हेतु तर्पण करने आये लाखों श्रद्धालुओं की सुख-समृद्धि एवं खुशहाली हेतु मेरी हार्दिक कामना है तथा प्रकाशित होने वाली 'स्मारिका' के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

भवदीय

(विनय कुमार, भा.पु.से.)

राजीव मिश्रा, भा.पु.से.
वरीय पुलिस अधीक्षक

सत्यमेव जयते

फोन नं० - 0631 - 2225901 (O)
2225902 (R)
मो० : 9431822973

संदेश

मुझे यह जानकर काफी प्रसन्नता हो रही है कि प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी सुषमा से आच्छादित, समन्वयवादी संस्कृति से परिपुर्ण आध्यात्मिक स्पन्दन से झंकृत एवं कर्म-ज्ञान-भक्ति से अप्लावित, सदानीरा अन्तःसलिला के पुलिन अवस्थित गया में प्रागैतिहासिक काल से आयोजित पन्द्रह दिवसीय पितृपक्ष मेला का शुभारंभ दिनांक 23 सितम्बर, 2018 से हो रहा है। ब्रह्मर्षियों का सत्संग ही काल-चक्र के अनवरत् प्रवाह के क्रम में बाह्य-कर्म काण्ड के विधान द्वारा श्रद्धा और आस्था के समेकित रूप से परिवर्तित होकर 'पिण्डदान' एवं 'पितृपक्ष मेला' के स्वानुष्ठान में आयोजित होता रहा है। ईश्वर के सगुण-साकार के प्रतीकात्मक स्वरूप की ब्रह्माण्डीय सत्ता का पिण्ड में आवाहन कर निर्गुण-निराकार रूप में विलय का संकल्प ही पिण्डदान है। इस अवसर पर देश-विदेश से लाखों की संख्या में तीर्थयात्री पधार कर इस आस्था नगरी में अपने पितरों के लिए पिण्डदान कर मुक्ति हेतु कामना करते हैं।

इस अवसर पर अपनी समस्त प्रशासनिक, अनुशासनिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक ऊर्जा का राशिभूत रूप इस पुनीत अवसर पर समर्पित भाव से निष्काम सेवा द्वारा प्रदान कर सुख, शांति एवं सुरक्षा की भावना को सतत् क्रियमाण रखना ही पुलिस विभाग का मूल उद्देश्य है। 'मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः, आचार्य देवो भवः, अतिथि देवो भवः' का औपनिषदिक भाव हमारे पुलिस विभाग के समस्त सहकर्मियों के अंतःकरण में संचारित होता रहे, यही मेरी शुभकामना है।

गया नगर के तमाम नागरिकों, पितृपक्ष अनुष्ठान से जुड़े सभी आचार्यों, होताओं, अध्वर्थु, उद्गाताओं एवं अपने विभागीय सहकर्मियों को आह्वान करता हूँ कि अपनी सेवा एवं आतिथ्य भावना से आगत तीर्थयात्रियों को संतुष्ट और प्रसन्न रख कर अपनी गौरवमयी परम्परा को बनाये रखें।

इस शुभ अवसर पर प्रकाश्य 'स्मारिका' के सम्पादक-मंडल, प्रकाशन से जुड़े नगर एवं जिला प्रशासन के समर्पित सहकर्मीगण एवं सुधी पाठकों के साथ-साथ सभी तीर्थ यात्रियों एवं उनके पूर्वजों को नमन करता हूँ।

'स्मारिका' आर्य संस्कृति की संवाहिका बनकर गवेषणात्मक तथ्यों से भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन करे। इसी शुभकामना के साथ।

(राजीव मिश्रा)

पितृपक्ष महासंगम 2018

अभिषेक सिंह, भा.प्र.से.

गया एक पवित्र नगर है। सनातन धर्मावलंबियों के लिए यह मोक्ष भूमि है और बौद्ध मतावलंबियों के लिए आस्था केन्द्र, ज्ञान-भूमि और शांति भूमि है। यहाँ के कण-कण में आस्था प्रस्फुटित है। यहाँ सालों भर श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है।

फलस्वरूप प्रशासन को सदैव सक्रिय एवं सचेत रहना पड़ता है। इस वर्ष पितृपक्ष मेला 23 सितम्बर से 08 अक्टूबर, 2018 तक चलेगा। 02 सितम्बर, 2014 को बिहार सरकार ने इसे राजकीय मेला की श्रेणी में शामिल कर लिया। मेला के आयोजन हेतु आवंटन राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग, बिहार सरकार द्वारा उपलब्ध कराया जाता है तथा मेला के आयोजन में नगर विकास विभाग, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग, पर्यटन विभाग, सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग सहित अन्य विभागों द्वारा भी उल्लेखनीय भूमिका निभायी जाती है।

पितृपक्ष मेला के अवसर पर गया की आबादी लगभग दुगुनी हो जाती है। फलस्वरूप 5-7 लाख लोगों के लिए आवासन, पानी, शौचालय, बिजली, साफ-सफाई, चिकित्सा, यातायात और सुरक्षा के साथ-साथ वांछित सूचना उपलब्ध कराने की व्यवस्था करनी पड़ती है। इन कार्यों के सुनियोजित ढंग से करने की आवश्यकता होती है ताकि देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालु जब वापस जाएं तो गया की तस्वीर उनके दिल में सदैव संयोजित रहे और इसकी चर्चा वे अपने रिश्तेदारों, साथियों और सम्पर्क में आनेवाले लोगों से कर सकें। इन्हीं भावनाओं के साथ मैंने गया में अपने पदस्थापन के साथ ही इन पर कार्य करना प्रारंभ कर दिया था। इनमें से कई व्यवस्था ऐसी है, जिन्हें प्रत्येक वर्ष अस्थाई रूप से करना पड़ता है। मैंने सोचा क्यों न इसे स्थाई और प्रमाणक व्यवस्था में तब्दील कर दिया जाय ताकि वर्ष भर आनेवाले श्रद्धालुओं को इनका लाभ मिल सके। इस ओर प्रयास और कार्य जारी है। पितृपक्ष मेला के लिए प्रत्येक क्षेत्र में सर्वोत्तम व्यवस्था की जा सके इसके लिए 16 कार्य समितियाँ बनायी गयीं। विगत चार महीनों से लगातार इन समितियों के द्वारा पूरी संवेदनशीलता से अपने दायित्वों का निर्वहन किया गया।

इस वर्ष पितृपक्ष मेला की तैयारी की विशेषता यह रही कि स्वयंसेवी संस्थाएँ सिविल सोसाईटी एवं पंडा समाज के लोगों ने अपना भरपूर सहयोग दिया। मेला क्षेत्र के भ्रमण के दौरान एवं विभिन्न समीक्षा बैठकों उनके महत्त्वपूर्ण सुझाव प्राप्त होते रहे। पितृपक्ष मेला के दौरान साफ-सफाई की मुकम्मल व्यवस्था की आवश्यकता पड़ती है। इस वर्ष आउटसोर्सिंग के माध्यम से यह व्यवस्था करवायी जा रही ताकि विगत वर्षों की तुलना में बेहतर साफ-सफाई रहे।

तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए वेबसाईट एवं पिंडदान गया स्मार्टफोन एप्प के माध्यम से सभी वांछित सूचना उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है, ताकि वे घर बैठे ही आवासन, परिवहन, पिंडदान सहित अन्य अपेक्षित कार्यों की बुकिंग करा सकें।

तीर्थयात्रियों के आवासन के लिए निजी आवासन स्थलों को चिह्नित करते हुए 27 सरकारी आवासन स्थल की व्यवस्था की गयी है, जहाँ पानी, शौचालय और साफ-सफाई का पुख्ता इंतजाम किया गया है।

पितृपक्ष मेला के दौरान जिला प्रशासन के लिए निर्बाध यातायात और सुरक्षा की मुकम्मल व्यवस्था बहुत बड़ी चुनौती होती है। उल्लेखनीय है कि 80 प्रतिशत तीर्थयात्री रेलमार्ग से ही आते हैं। रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा एवं उनके स्वागत की व्यवस्था के लिए रेलवे के उच्चाधिकारियों के साथ बैठक की गयी। गया रेलवे स्टेशन परिसर को भी आकर्षक बनाने का प्रयास किया गया ताकि तीर्थयात्रियों को गया आते ही सुखद अनुभूति का एहसास हो सके। वाहनों के पार्किंग के लिए इस वर्ष व्यापक व्यवस्था की गयी है और पार्किंग स्थलों का विस्तार करवाने के साथ-साथ वाहनों के लिए सुगम्य बनवाया गया है।

पितृपक्ष मेला में आनेवाले तीर्थयात्रियों की सुरक्षा व्यवस्था के लिए 72 स्थलों पर पुलिस शिविर की स्थापना करवायी गयी है। सम्पूर्ण मेला क्षेत्र को 38 जोन में बाँटा गया है और प्रत्येक जोन के अन्तर्गत कई सेक्टर बनाये गये हैं। प्रत्येक सेक्टर के लिए दंडाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी के साथ पुलिस बल की प्रतिनियुक्ति की गयी है। विधि व्यवस्था संधारण के लिए साढ़े तीन सौ दंडाधिकारी एवं लगभग पाँच हजार पुलिस बल लगाया गया है।

पितृपक्ष मेला, 2018 के आयोजन को मात्र प्रशासनिक दायित्व का निर्वहन न समझ एक उत्सव के रूप में करने का निर्णय लिया गया। इसके लिए गया शहर को एक आकर्षक दृश्य देने का प्रयास किया गया है। इसके लिए सभी बिजली के खंभों की रंगाई करवाई गयी है। अनेक स्थानों में तीर्थयात्रियों के लिए स्वागत द्वार बनवाये गए हैं।

पितृपक्ष मेला के आयोजन को विश्वस्तरीय बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है। इसे निरंतर बेहतर बनाने का प्रयास जारी है ताकि जब तीर्थयात्री यहाँ से जाएँ तो गया की अच्छी छवि लेकर जाएँ तथा अन्य लोगों को भी गया जाने हेतु प्रेरित करें।

अंत में अपने सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, यहाँ के स्वयंसेवी संस्थाओं, समाजसेवियों, पंडा समाज के लोगों एवं गया के नगरवासियों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ, जिनके सहयोग से पितृपक्ष मेला का आयोजन सफल होता रहा है। आशा है कि इस वर्ष का आयोजन अविस्मरणीय बना रहेगा।

साथ ही तर्पण 2018 स्मारिका के प्रकाशन में अपना बहुमूल्य योगदान देने वाले सम्पादक मंडल के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह स्मारिका गयाधाम, पितृपक्ष, पिंडदान के पौराणिक, धार्मिक तथ्यों की जानकारी प्रस्तुत करने में सफल सिद्ध होगी। स्मारिका को सम्पादक मंडल द्वारा आकर्षक एवं उपयोगी के साथ-साथ पितृपक्ष मेला महासंगम, 2018 का एक उपहार बनाने का प्रयास किया गया है।

जिलाधिकारी, गया।

पितृपक्ष स्मारिका	–	**तर्पण, 2018**
प्रकाशक	–	जिला प्रशासन, गया
पितृपक्ष	–	23 सितम्बर से 08 अक्टूबर, 2018
छाया चित्र	–	मनीष भण्डारी
मुद्रण एवं साज-सज्जा	–	मगध प्रिन्टर्स, गया

स्मारिका के सम्पादन-कार्य से जुड़े सभी सदस्य अवैतनिक हैं। स्मारिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों के लिए स्वयं लेखक-गण उत्तरदायी हैं।

अनुक्रमणिका

1.	सम्पादकीय	–	नागेन्द्र कुमार गुप्ता	1
2.	इतिहास, संस्कृति और परम्पराओं का संगम ...	–	प्रो० महेश कुमार शरण	3
3.	**The Brammanas of Gaya**	-	Dr. Rajiv Kumar	6
4.	पितरि प्रीतिमान्ने प्रीयन्ते सर्वदेवता	–	डॉ० कृष्णदेव मिश्र	10
5.	पित्र्यर्थ गया पिण्डदान : कल्याण सोपान	–	ज.गु.स्वा. वेंकटेश प्रपन्नाचार्य	12
6.	फल्गु नदी का हिन्दू धर्म में स्थान	–	रंजीत कुमार वर्मा	14
7.	सुमागद्या तटे : धर्म क्षेत्रे	–	डॉ० प्राणेश कु० सिन्हा	16
8.	पितृपक्ष : भारतीय राष्ट्रीय एकता और ...	–	डॉ० राधानन्द सिंह	19
9.	गयासुर – आज भी जीवित है	–	डॉ० मंजु शर्मा	21
10.	पितृपक्ष में करें पितृदोष का निवारण	–	राजेश मंझवेकर	23
11.	श्राद्ध करते समय क्या करें और क्या न करें	–	श्रीमती अनुराधा प्रसाद	24
12.	पूर्वजों के प्रति श्रद्धा का महापर्व : पितृपक्ष	–	समीर परिमल	25
13.	श्राद्ध पिंडदान तथा तपर्ण का उपयुक्त स्थान गया	–	योगेश कुमार मिश्र	27
14.	जन्मपत्र में पितृदोष तथा उसका निवारण गया श्राद्ध	–	डॉ० सुबोध कुमार मिश्र	29
15.	पितृपक्ष – आज भी प्रासंगिक	–	डॉ० भावना शेखर	32
16.	तर्पण – एक मूल अवधारण	–	डॉ० राशि सिन्हा	33
17.	गया- सदियों के झरोखे से	–	यमुना गिरि	35
18.	सनातन धर्म में श्राद्ध के प्रकार एवं गया	–	अश्विनी कुमार आलोक	37
19.	भगवान विष्णु का भक्तिमूलक मोक्ष	–	प्रो० अरुण कुमार प्रसाद	38
20.	गया संग्रहालय ...	–	डॉ० विनय कुमार	40

21.	**Incredible Gaya**	-	Dr. Mritunjala Kri. Sinha	42
22.	**चरणतीर्थ में सिर्फ बालू पिंडदान से मोक्ष**	–	अशोक कुमार अंज	45
23.	**तर्पण : जीवन के बाद का जीवन दर्शन**	–	अश्विनी	46
24.	**फल्गु : भारतीय संस्कृति की अन्तः सलिता**	–	सुनील सौरभ	47
25.	**तथा तीर्थ में श्राद्ध का महत्त्व**	–	दयाशंकर उपाध्याय	49
26.	**गया श्राद्ध में पुनपुन नदी की महत्ता**	–	प्रभाकर शर्मा शास्त्री	50
27.	**गया श्राद्ध : मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन**	–	आचार्य सुशील कु० तिवारी	52
28.	**गया स्थित विष्णुपद का पुरातात्विक ...**	–	प्रो० मुन्द्रिका प्र० नायक	54
29.	**पितरों का तृप्ति का साधन श्राद्ध**	–	डॉ० कौशल किशोर पाण्डेय	56
30.	**समय के साथ हो रहा है बदलाव**	–	सुमन्त	58
31.	**पौराणिक और आध्यात्मिक नगरी गया जी**	–	कंचन	60
32.	**गया श्राद्धय पुनः पुनः**	–	मुकेश कु० सिन्हा	62
33.	**ज्ञान और विज्ञान**	–	राम नरेश सिंह	64
34.	**श्राद्ध एवं गया श्राद्ध**	–	आचार्य लालभूषण मिश्र याज्ञिक	65
35.	**सर्व पाप हरा धुमा**	–	बन्दना प्रज्ञा	67
36.	**श्राद्ध एवं श्रद्धा**	–	उपासना उदिप्त	68
37.	**गयाधाम में श्राद्ध की विशेष महत्ता**	–	डॉ० ब्रजराज मिश्र	69
38.	**पिंडदान में जौ और तिल प्रयोग .....**	–	प्रो० अरविन्द कुमार सिन्हा	71
39.	**Main Places for Pinddaan**	-	Anil Saxena	73
40.	**सिद्धि गच्छन्ति मानवा**	–	डॉ० सच्चिदानन्द प्रेमी	74
41.	**पितर करते हैं गया जी में वास**	–	नीरज कुमार	76
42.	**जब गया तीर्थ में पहली बार ...**	–	प्रो० डॉ० रामनिरंजन परिमलेन्दु	77
43.	**धर्म का मर्म**	–	मुन्द्रिका सिंह	78
44.	**किलाबंदी की तरफ फाटकों से ...**	–	डॉ० रामकृष्ण	80
45.	**मृत्यु जीवन का शृंगार कैसे बने?**	–	शिववचन सिंह	81
46.	**मगध में गया, फल्गु नदी ...**	–	रामरत्न प्र० सिंह रत्नाकर	82
47.	**पूज्यनीय पितृतीर्थ गया**	–	डॉ० राकेश कुमार सिन्हा 'रवि'	84
48.	**तीर्थयात्री ख्याल रखें इन बातों का**	–	डॉ० रामदीप मिस्त्री	85
49.	**श्राद्ध का आरंभ एवं स्वर्ग-नरक**	–	डॉ० शत्रुघ्न दांगी	87
50.	**तीर्थों का प्राण गयाजी**	–	डॉ० मनोरंजन कुमार सिंह	88
51.	**देवघाट में बना है गुरुद्वारा ...**	–	सुबोध कुमार नन्दन	91

सम्पादकीय

ज्ञान और मोक्ष भूमि गया

नागेन्द्र कुमार गुप्ता

गयाधाम न सिर्फ हिन्दुओं के लिए बल्कि बौद्ध मतावलम्बियों के लिए भी आदरणीय है। बौद्ध धर्म के अनुयायी इसे महात्मा बुद्ध की ज्ञानस्थली मानते हैं, जबकि हिन्दू इसे अपना मोक्षधाम मानते हैं। यही कारण है कि यहाँ प्रत्येक दिन देश-विदेश के कोने-कोने से लोग आते रहते हैं। हिन्दू अपने पितरों की आत्मा की शांति और मोक्ष की कामना लेकर पिंडदान करने आते हैं। बौद्ध अपने मन की शांति के लिए महाबोधि मंदिर एवं महात्मा बुद्ध से जुड़े अन्य स्थलों का दर्शन एवं नमन करने आते हैं। गया तीर्थ के बारे में गरुड़पुराण में कहा गया है-

गयाश्राद्धात् प्रमुच्यन्ते पितरो भवसागरात्।
गदाधरानुग्रहेण ते यान्ति परमांगतिम् ।।

यानी गया में पितरों का श्राद्ध करने से वे संसार से मुक्त होकर भगवान विष्णु की कृपा से बैकुण्ठ को प्राप्त होते हैं।

वायुपुराण के अनुसार जब मीन, मेष, कन्या एवं कुंभ राशि में सूर्य होता है तो उस समय पिंडदान करना अत्यन्त शुभ होता है। इसी प्रकार मकर संक्रांति एवं ग्रहण के समय का श्राद्ध एवं पिंडदान श्राद्ध करने वाले एवं मृत व्यक्ति दोनों के लिए कल्याणकारी एवं उत्तम लोकों में स्थान दिलाने वाला होता है। गरुड़ पुराण के अनुसार गया में पिंडदान करने मात्र से व्यक्ति की सात पीढ़ी एवं एक सौ कुल का उद्धार हो जाता है।

शास्त्रों के अनुसार पुत्र का कर्त्तव्य तभी सार्थक माना जाता है, जब वह अपने जीवनकाल में माता-पिता की सेवा करें और उनके मरणोंपरान्त बारहवीं को तथा महालया (पितृपक्ष) में विधिवत् श्राद्ध करें। इस वर्ष श्राद्ध का पखवाड़ा (पितृपक्ष) 23 सितम्बर से 08 अक्टूबर, 2018 तक चलेगा।

श्राद्ध की मूल कल्पना वैदिक दर्शन के कर्मवाद और पुनर्जन्मवाद पर आधारित है। कहा गया है कि आत्मा अमर है, जिसका नाश नहीं होता । श्राद्ध का अर्थ अपने देवताओं, पितरों और वंश के प्रति श्रद्धा प्रकट करना है। ऐसी मान्यता है कि जो लोग अपना शरीर छोड़ जाते हैं, वे किसी भी लोक में या किसी भी रूप में हों, श्राद्ध पखवाड़े में पृथ्वी पर आते हैं और श्राद्ध व तर्पण से तृप्त होते हैं।

गया को भगवान विष्णु का नगर माना गया है। यह मोक्ष की भूमि कहलाती है। विष्णु पुराण के अनुसार गया में पिंडदान करने से पूर्वजों को मोक्ष मिल जाता है और वे स्वर्ग में वास करते हैं। माना जाता है कि भगवान विष्णु यहाँ स्वयं पितृ देवता के रूप में अवस्थित हैं। इसलिए इसे 'पितृतीर्थ' भी कहा जाता है।

किंवदतियों के अनुसार भस्मासुर के वंशज गयासुर नामक राक्षस ने कठिन तपस्या कर अपने शरीर को देवताओं जैसा पवित्र होने का वर ब्रह्मा जी से मांग लिया। वर प्राप्त गयासुर के शरीर के दर्शन से घोर पापी भी पापमुक्त होकर स्वर्ग जाने लगे। परिणामस्वरूप स्वर्ग की जनसंख्या बेतहाशा बढ़ने लगी। यह देखकर देवतागण चिंतित हो गये। इसके समाधान के लिए देवताओं ने यज्ञ हेतु गयासुर से पवित्र स्थल की मांग की । गयासुर ने अपने पवित्र शरीर को ही यज्ञ हेतु देवताओं को प्रदान कर दिया। गयासुर जब पृथ्वी पर लेटा तो उसका शरीर पाँच कोस यानी 15 किलामीटर में फैल गया। यही पाँच कोस का स्थान आगे चलकर गयाधाम कहलाया। यज्ञ के

उपरान्त गयासुर के शरीर पर भगवान विष्णु ने अपना चरण रख दिया जिनके भार के कारण वह उठ न सका और वहीं लेटा रह गया। गयासुर ने लोगों को पापमुक्त करने की इच्छा से भगवान विष्णु से यह वरदान मांगा कि यह स्थल लोगों को तारने वाला बना रहे। जो भी यहाँ अपने पितरों को पिंडदान करें, उनके पितरों को मुक्ति मिले एवं पिंडदान करने वाले भी तर जाएं। यही कारण है कि गया में ही सर्वाधिक लोग पिंडदान करने आते हैं।

पितृपक्ष मेला के दौरान लाखों श्रद्धालु गया में पिंडदान करने आते हैं। श्रद्धालु एक दिन, तीन दिन, सात दिन, पन्द्रह दिन एवं सत्रह दिन का कर्मकांड करते हैं। यानी लंबी अवधि तक प्रवास करते हैं। उनके आवागमन हेतु वाहन सुविधा, आवासन हेतु आवासन स्थल, जन सुविधाएँ (प्रसाधान, पेयजल, साफ-सफाई), सुरक्षा आकस्मिक चिकित्सा, आवश्यक सूचना, मनोरंजन की व्यवस्था जिला प्रशासन करती है। ताकि श्रद्धालु सुविधापूर्वक पिंडदान कर सके। जिला प्रशासन इसकी तैयारी तीन माह पूर्व से करना प्रारंभ कर देती है। पितृपक्ष मेला के आयोजन में स्थानीय नागरिक, स्थानीय स्वयं सेवी संस्था, पंडा समाज का भी निरन्तर सहयोग प्राप्त होता रहा है। इस आयोजन को सफल बनाने में संबंधित विभाग के पदाधिकारियों, कर्मियों, उनके कार्य करने वाली एजेंसियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस दौरान सबों ने पूरे उत्साह के साथ कार्य किया है। वे सभी प्रशंसा के पात्र हैं।

स्मारिका प्रकाशन का दायित्व लंबे समय से स्व० गोवर्द्धन प्रसाद सदय ने कुशलतापूर्वक निभाया है। उनके प्रति सम्पादक मंडल श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

स्मारिका को मूर्त्त रूप प्रदान करने में सम्पादक मंडल के साथ-साथ जिला सूचना भवन में आने वाले विद्वानों, लेखकों, साहित्यप्रेमियों का भी बड़ा योगदान रहा है। मैं उन सबों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। स्मारिका में प्रकाशित लेखों के लिए लेखकों को भी साधुवाद देता हूँ, जिन्होंने स्वेच्छा से स्वत: स्फूर्त्त होकर अपने-अपने लेख ससमय उपलब्ध कराया। स्मारिका के मुद्रण एवं प्रकाशन में मगध प्रिन्टर्स का बहुमूल्य योगदान रहा, जिन्होंने प्राप्त लेखों का ससमय मुद्रण कर संपादन हेतु उपलब्ध कराया। साथ ही स्मारिका के लिए खुबसूरत एवं आकर्षक छवि चित्र इन्द्रधनुष डिजिटल फोटो सेन्टर ने उपलब्ध कराया। मैं इन दोनों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

'तर्पण' स्मारिका में अधिकतर लेख पितृपक्ष, पिंडदान, श्राद्ध एवं गयाजी पर आधारित है। यह प्रासंगिक भी है। इस स्मारिका का मूल उद्देश्य है कि तीर्थयात्री के साथ-साथ स्थानीय एवं देश-विदेश के श्रद्धालु गयाजी एवं पिंडदान के महत्त्व को जान सकें।

आशा है यह स्मारिका अपने उद्देश्य की कसौटी पर खरा उतरेगी और पाठकों के लिए ज्ञानवर्द्धक रहेगी।

नागेन्द्र कुमार गुप्ता
प्रधान संपादक

इतिहास, संस्कृति और परम्पराओं का संगम : पितृतीर्थ गया

प्रो० महेश कुमार शरण

किसी भी देश का जीवन वृत्तान्त इतिहास होता है और वह स्थान तथा समय की सीमा से जुड़ा होता है अत: वह राष्ट्र का दर्पण कहलाता है। अतीत में जाने बिना भविष्य की कल्पना और विकास के कार्य क्रम तैयार नहीं किये जा सकते। ऐतिहासिक घटनाओं का सही-सही मूल्यांकन करना तथा उसे लिपिबद्ध करना इतिहास का धर्म और कर्तव्य है। इतिहास देश के भूतकाल की स्थिति का स्पष्ट वर्णन करता है। इतिहास धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देनेवाला एक शास्त्र है।

कोई भी देश तभी उन्नति कर सकता है जब वह अपने अतीत, संस्कृति और परम्पराओं से परिचित हो। इतिहास भावी पीढ़ियों का मार्गदर्शन करता है तथा उनके लिए सशक्त दस्तावेज भी है। एक इतिहासकार अपनी लेखनी से भावी पीढ़ी को अतीत के जानने का अवसर देता है तथा हमारे इतिहासकारों ने प्राचीन काल के विविधतापूर्ण लेखों के द्वारा अनेक ऐतिहासिक घटनाक्रमों का वर्णन किया है। अतीत के अनुभव के आलोक में वर्तमान को देखना तथा आज के समाज में जो शक्तियाँ काम कर रही हैं उनको समझना तथा मानव समाज के हित की दृष्टि से उनका संचालन करना एक सच्चे इतिहासकार का काम है। इतिहास का मुख्य उद्देश्य बीते हुए कल की घटनाओं का सत्य और सही रूप में वर्णन करना होता है। इतिहास के माध्यम से बीता हुआ कल वर्तमान में जीवित रहता है। इतिहास अतीत को नष्ट नहीं होने देता। यह लोक संस्कृति और परम्पराओं की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ले जाने का साधन है।

इतिहास समाज और आर्थिक व्यवस्था की उन्नति, मानव विकास पूर्व की घटनाओं से सबक और विभिन्न विषयों के अन्त: सम्बन्धों को भी विवेचित-विश्लेषित कर सकता है। इतिहास लेखन राष्ट्र की सभ्यता की चेतना के विकास में अभूतपूर्व योगदान होता है। इतिहास से हमें सीखने और संवरने का अवसर मिलता है। हमारे देश का सामाजिक एवं धार्मिक इतिहास देश में रहने वाले नागरिकों के सर्वांगीण जीवन का चित्रण प्रस्तुत करता है तथा सभी जनसमुदाय के विभिन्न कार्यकलापों को अभिव्यक्त करता है। भारत का धार्मिक जीवन अत्यन्त वैविध्यपूर्ण है अत: इतिहास राष्ट्र की स्मरण शक्ति है। विभिन्न जातियों एवं राष्ट्रों को अपने खोये हुए गौरव का ज्ञान इतिहास द्वारा ही प्राप्त होता है और वे पुनरुत्थान के लिए प्रेरणा ग्रहण करते हैं तथा उन्नति की चरम सीमा को प्राप्त करने में सफल हुए हैं। हमारी भारतीय संस्कृति धर्म पर आधारित है। हमारे लिए धर्म और संस्कृति वास्तव में एक ही है। हमें यह भी मालूम है कि हमारा देश प्राचीन काल से ही ऋषि मुनियों का देश रहा है और उनके विचार धाराओं के अनुसार ही देश का विकास होता रहा। अत: हमारा धर्म वही है जो भारतीय आर्ष ग्रंथों में निहित है- ऋषि-मुनियों के उपदेशों के माध्यम से जो समाज को अनुप्रणित करते रहे हैं। हमारे आर्य ग्रन्थों में जिन चार प्रकार के पुरुषार्थों का वर्णन किया गया है- वे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं। धर्म प्रथम पुरुषार्थ है। धर्म-पूर्वक जीवन जीने से अर्थ, काम और मोक्ष की स्वत: प्राप्ति होती है। इस मोक्ष की प्राप्ति केवल अपने लिए नही वरन् औरों के लिए भी सुलभ करने की प्रेरणा हमारा धर्म ही देता है। हमारी भारतीय संस्कृति की यही विशेषता रही है कि हम स्वार्थ सिद्ध की अपेक्षा दूसरों की सेवा, समाज सेवा, जैसे परमार्थ कर्म पर अधिक बल देते हैं। हमारे ऋषि-मुनियों ने व्यक्ति को समाज मार्ग भी बतलाया है। जो मार्ग जो विधि, जो किया हमें भगवान की ओर ले जाती है वही भारतीय संस्कृति है, आर्य संस्कृति है, हिन्दू संस्कृति है। भारतीय संस्कृति की मूल प्रेरणा पितृपूजा है। धर्म, विश्वास, नैतिकता तथा सामाजिक विचार संस्कृति के अंग हैं। हमारी संस्कृति हमारे भीतर इन संस्कारों को जन्म देती है। धर्म के प्रति आस्था और उसी के अनुरूप आचरण, व्यवहार, हमारी संस्कृति है, हमारी पहचान है तभी तो सम्पूर्ण विश्व हमें आस्था और विश्वास की भूमि समझता है। पितरों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि के रूप में उनके प्रति अपने कर्त्तव्यों

की सार्थकता के रूप में पिण्डदान, पितृपक्ष या श्राद्ध कर्म हमारा पुरुषार्थ है। श्राद्ध भारतीय जीवन में अपने पितरों के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है। श्रद्धा के बिना पितरों के लिए किया गया श्राद्ध सर्वथा निरर्थक है। श्राद्ध में श्रद्धा तथा आस्तिकता का होना अनिवार्य है। विष्णु के पवित्र चरणों से विभाजित होने के कारण गया 'गयाधाम' बन गया। गयाधाम पितरों के उद्धार का धाम है। अत: सभी सनातन धर्मावलम्बियों को प्रसन्न मन से गयाधाम में आकर पितरों का श्राद्ध करना अपनी उन्नति के लिए श्रेयस्कर है।

हमें यह भी मालूम है कि राष्ट्र की परम्पराएँ उसकी संस्कृति की विरासत है जो उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि और मूल्यों के अवबोधन को प्रदर्शित करती है। इस दृष्टि से अपनी संस्कृति के ऐतिहासिक प्रमाणों को सुरक्षित रखने का परामर्श दिया जा सकता है। अत: एक सभ्य राष्ट्र अपने रीतिरिवाजों और परम्पराओं की, जो नई पीढ़ी तक आ पहुँचती है, उपेक्षा नहीं कर सकता जिससे यह पीढ़ी भी जान सके कि कैसे उसके पूर्वज लोग रहते थे और उनके क्या विश्वास थे। हम यह भी जानते हैं कि भारत का इतिहास परम्पराओं का इतिहास रहा है। हमारी अक्षुण्ण परम्पराएँ, रीतिरिवाज और संस्कृति विरासत जनमानस की निरन्तर गतिशीलता और कर्मठ, क्रियाशील व्यक्तित्व दर्शाती है। भारतीय हिन्दू समाज के गृहस्थ जीवन के लिए पितृपक्ष की अवधि में पितरों की मुक्ति हेतु श्राद्ध तर्पण का महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। पितृ-पूजा के लिए आश्विन मास का कृष्ण पक्ष का महत्व इसलिए है कि इस पक्ष में सूर्य, कन्या राशि में आदि, मध्य या अन्त में आ जाता है। इसी समय पितृगण यमलोक से आकर अपने परिवार वालों के लिय हाँ आ जाते हैं। श्रद्धा और स्वच्छ मन से की गई पितृपूजा को श्राद्ध कहा जाता है। इस अवधि में किये गये श्राद्ध-तर्पण को पितृगण ग्रहण कर, कर्त्ता को आशीर्वाद देते हैं। हम परिवार में रहते हैं और संयुक्त पारिवारिक जीवन हमें परिवार के सब मनुष्यों को उनके धर्म, अर्थ और काम के साधन में समुचित स्वतंत्रता का अवसर देने की सीख देता है। पारस्परिक सहयोग के लिए परस्पर के प्रति आदर का भाव रखा गया है। हमारी संस्कृति में धर्म-नियोजित काम की स्वीकृति विवाह माध्यम से ही मिलती है। गृहस्थ-धर्म का पालन विवाह के द्वारा ही होता है जिससे परिवार में पुत्र का आगमन होता है। और वह पितृऋण से मुक्त होने के लिए अपने पितरों को गया जाकर मोक्ष दिलाने के लिए श्राद्ध और तर्पण करता है। पितृतीर्थ गया की अपनी इसी पृष्ठभूमि में युगों-युगों से मृत-पितरों का धार्मिक-अनुष्ठान हम आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में समार्पित करते हैं। इसी कारण पितृपक्ष का पूरा पखवारा गया धाम के लिए एक मेला का ही अवसर रहता है। पितृपक्ष की प्रतिपदा को मिलाकर इस पक्ष को षोडस दिनात्मक कहा गया है। इन सभी दिनों में प्रतिदिन श्राद्ध का अलग-अलग विधान तथा महत्व है। अपने सामर्थ के अनुसार प्रत्येक दिन या पंचमी से ग्यारह दिन या अष्टमी से आठ दिन या एकादशी से पाँच दिन श्राद्ध करने को विधान हमारे पुराणों में बताया गया है। यदि यह भी सम्भव न हो सके तो मृत्यु की तिथि अथवा अमावस्या के दिन श्राद्ध अवश्य करना चाहिए।

इस पक्ष में श्राद्ध तर्पण की विधि एवं महिमा का वर्णन ऐसे तो अनेक धार्मिक ग्रन्थों में है पर 'श्राद्धकल्प लता' में प्रत्येक दिन के श्राद्ध का महत्व बतलाया गया है। प्रतिपदा को श्राद्ध करने से धन लाभ, द्वितीया-पुत्र, तृतीया-वर, चतुर्थी-शत्रु नाश, पंचमी-लस्मी, षष्ठ-सम्मान, सप्तमी-जनाधिप्तय, अष्टमी-बुद्धि, नवमी-स्त्री, दशमी-मनोकामना की पूर्ति, एकादशी-ज्ञान-प्रप्ति होती है। अगर किसी की मृत्यु आकस्मिक हो गयी है तो उनके लिए चतुर्दशी को श्राद्ध किया जाता है। पितृपक्ष को अवधि में गया धाम में जो भी श्रद्धालु आते हैं तथा अपने पूर्वजों की आत्मा की शान्ति के लिए जो पिण्डदान तथा श्राद्ध कर्म करते हैं वह भी हमारी भारतीय संस्कृति का ही एक अंग है। समय की गति अबध रूप से चलती रहती है। इसके गति प्रवाह में कभी किसी प्रकार का व्यवधान नहीं आता। इसी कारण हम चाहे जिस परिस्थिति में हों, कई प्रकार की असुविधाओं से जूझते हुए भी हम अपने पितरों के प्रति श्रद्धा का भाव रखते हुए गयाधाम की यात्रा करते हैं। अत: हमारे आर्य-ग्रन्थों में यह भी कहा गया है कि कभी भी मृतात्मा की मृत्यु तिथि के अनुसार श्राद्ध कर्म कर सकते हैं पर पितृपक्ष की अवधि एक विशेष अवधि

है ओर श्राद्ध कर्म के लिए विष्णुनगरी गयाधाम का विशेष महत्व है क्योंकि इस कर्म के लिए देश-विदेश में रहने वाले सनातन हिन्दू धर्मावलम्बी गयाधाम आते हैं और इस श्राद्ध-कर्म की सनातन परम्पराओं का निर्वाह कर पितरों तथा देवों का आशीर्वाद प्राप्त कर जीवन में सुख और शांति का अनुभव करते हैं। इसीलिए यह पुनीत परम्परा आज भी जीवित है। गयाजी को पितृ कर्म के लिए परम पवित्र विष्णु नगरी के रूप में हम जानते हैं जिनमें वेदियों की संख्या 360 थीं पर दिनानुदिन इनकी संख्या कम होती जा रही है क्योंकि वेदियों के रख-रखाव और सुरक्षा की कमी से आज के युग में दबंगों द्वारा हड़प लिए जाने के कारण जो शेष हैं उन्हीं पर तर्पण और पिण्डदान की पुष्ट परम्परा है जिनमें फल्गु नदी, प्रेतशिला, रामशिला, सीताकुण्ड, विष्णुपद, मंगलागौरी एवं अक्षयवट आदि प्रमुख हैं। अन्त में तीर्थपुरोहित गयावाल पण्डों को यथाशक्ति श्रद्धापूर्ण दान-दक्षिणा के द्वारा संतुष्ट कर सुफल प्राप्त करते हैं। यह शुद्ध संस्कार युक्त सनातन गौरवमयी परम्परा आज भी गयाजी में आश्विन कृष्ण-पक्ष तथा पितृपक्ष के अवसर पर देखा जा सकता है। गया में ही पिण्डदान, तर्पण और श्राद्ध की परम्परा क्यों है इसपर हम अपना ध्यान आकृष्ट करेंगे। प्राकृतिक सौन्दर्य से आच्छाति गया धाम भारत के प्रमुख तीर्थ स्थलों में से है। यह नगर सप्त पर्वतमालाओं से घिरा हुआ है। निरंजना एवं मोहाने नदियों से उद्‌गमित अन्तःसलिला फल्गु नदी के पश्चिमी किनारे बसा यह नगर प्राकृतिक सुषमा से घिरा प्रत्येक पहाड़ियों पर मन्दिर, विष्णुपद का विशाल ऐतिहासिक मन्दिर तो ब्रह्मयोनि पर्वत पर इसकी ऐतिहासिकता, पौराणिकता तथा धार्मिकता में चार चाँद लगा रहा है। गया एक साधना तपः भूमि तथा तन्त्र के क्षेत्र में अग्रगण्य रहा है। भगवान विष्णु का चरण-चिन्ह, भगवान बुद्ध के ज्ञानर्जन की भूमि, योगीश्वर गम्भीरनाथ का साधना, स्थल कपिल धारा इस नगर के विरासत तथा गरिमा की गाथा को आज भी वर्णन कर रहा है।

महाभारत में गया को एक उत्कृष्ट और महत्व का तीर्थ कहा गया है तथा सभी को एक बार यहाँ की यात्रा आवश्यक रूप से करने का निर्देश दिया गया है। गयासुर की कथा से भी हम गया धाम की ऐतिहासिकता से परिचित होते हैं जिसमें उसने वर माँगा था कि जब तक पर्वत का अस्तित्व रहे जब तक चाँद और तारे रहें उस समय तक ब्रह्मा, विष्णु और महेश इस शिला पर स्थित रहें। मेरा शरीर त्रिदेवों से भी अधिक पावन हो जिसे स्पर्श कर भक्तों को मुक्ति मिले। अतः वैदिक काल से भी पूर्व अनादि काल से चली आ रही यह परम्परा अभी भी निरन्तर गति से चल रही है। इसकी निरन्तरता कभी बाधित नहीं हुई। सनातन धर्मावलंबियों की निष्ठा और आस्था का यही जीवन्तता है। पितृपक्ष पूर्वजों की स्मृति को सजीव बनाये रखने की साधना का एक महान पर्व है। इस पक्ष में ज्ञात, अज्ञात सभी पितरों का स्मरण किया जाता है। पितृ यज्ञ करना प्रत्येक गृहस्थ के लिए जरूरी है। इसका परिणाम केवल परमराध्य पितरों की संतुष्टि और तृप्ति नहीं है वरन् पितृयज्ञ के कर्त्ता को भी विशिष्ट फल की प्राप्ति होती है। पितृ पक्ष के अवसर पर जो पितर पूजा करते हैं, अपने दिवंगत पूर्वजों की आत्मा की चिर शान्ति के लिए श्राद्ध कर्म तथा पिण्डदान और तर्पण करते हैं- वह हमारी भारतीय संस्कृति का अंग है। कर्म काण्ड के इन अनुष्ठानों के माध्यम से हमें केवल उनके साथ नहीं, वरन् भगवान के साथ जुड़ने हैं। यही कारण है कि आज भी हम इस परम्परा को प्रेम और श्रेय समझते है। अगर सांस्कृतिक दृष्टि से देखा जाये तो गया का धार्मिक मिश्रण मुख्यतः बड़ी परम्परा पर आधारित है। बड़ी परम्परा से अर्थ है यहाँ हिन्दू धर्म से जो गया के धार्मिक केन्द्रों, श्राद्ध व्यापार, तीर्थ-पुरोहितों तथा धार्मिक आचार्यों के व्यापक प्रभाव से लक्षित होता है। आधुनिक समय में कुछ लोग इसके महत्व को न समझ रहे हैं पर उन्हें अपने पितरों की पूजा अवश्य करनी चाहिए। (बृजेश गोस्वामी-जीतोदय की पुमार, गया। पितृपक्ष मेला स्पेशल परिशिष्ट, 1995) प्रस्तुत लेख में जिन-जिन महानुभावों के विधातापूर्ण लेखों से इसे पाठकों के समक्ष रखा जा रहा है, उन सबों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

अपराजिता, 26 R. *बैंक कॉलोनी, पादरी बाजार, बहराइच रोड*
डाक जंगल सालिक राम, गोरखपुर(उत्तर प्रदेश) मो०-9452778554

◆

THE BRAHMANAS OF GAYA

Dr. Rajiv Kumar

Gaya is the pitri- tirth par excellance and commands reverence all over the Hindu domain. During the post-vedic period, Gaya earned eminence, when "pinda dana" ceremony began to be observed in the elaborate manner. It was incumbent on every son to observe shraddha to release the spirits of ancestors from the horrors of hell. Gayasura blessed with the boon that by offering the pinda and performing sraddha at Gaya, people will transmit their ancestors and also themselves to the Brahmalok . He who would offer worship to the god here will attain the highest reward after death. In the inscription of the time of Nayapala, Gaya has been described as a door to salvation:'.

The central idea in the cult of sraddha is the payment of solemn, debits of gratitude to the departed ancestors. The sraddha- mantras indicate that when a man offers pindas, he not only propitiates his forefathers, but also all the deceased persons of the universe, even all the dead animals, birds, insects and trees[2] Thus he becomes the well wisher, friend and relative of the whole universe. Really it is a matter of great wonder and glory to observe that no other religion has got such a noble, broad, grand, and ideal conception of a rite, having universal appeal, union and love.

Gaya is divided into several sacred zones with clusters of sacred spots in each zone. The Vishnupada temple and the other shrines etc. in the adjoining areas form one group. The Akshayvata and the adjoining sacred spots form another zone. The Pitamahesvara is another important zone. With some sacred places within it. Besides these, three important zones are Ramasila, Pretasi/a and others. The Brahmans of gaya may broadly be divided into two groups Gayawals and non-Gayawals. The Gayawals are those Brahmans who perform the sraddha ceremonies for the salvation of the departed souls. The Puranas narrate that Brahma' created these officiating priests from his mind to perform the sacrifice on the body of Gayasura and asked them not to take gifts for sraddha. But they accepted gifts from Vama after sraddha and was cursed by Brahma. When they asked for Brahmas mercy he promised that they would have one means of livelihood in the gifts of devotees who perform sraddha at Gaya and that though devoid of knowledge and learning, they would be respected and worshipped by all. The Purana, thus gives a very good account of the profession and character of the Gayawala Brahmans in general. There were other Brahmans who did not perform sraddha, but carried only the worship of deities. The modern Gayawala brahmanas receive their education from the acharyas who live in the Vishnupada temple and are different in behavior and temperament from the Gayawals. The Sakaldvipi brahmanas retain their control over the sun temple of the locality ; while a nonbrahmana priestly class called Dhamins, are guardians of the hill shrines at Ramasila and Pretsila, . where they perform rites for the propitiation of evil spirits.

The earliest epigraphic document that may be associated with this region and refers to some rituals connected with the dead hails from Kailan in the Patna districts and belongs to second Century A.D. It is written on the brim of a stone vessel and records that on the 5th day of the s" fortnight of summers, in the year 108 when Arya-Visakhamitra was the king, the vessel of the worshipful teacher which was intimately associated with his fame and power, was offered as a present in the name of the Mahanadaka and the Phalgunadika", Thus,

the custom of offering some objects in the river in connection with the sraddha ceremony at gaya might have been in vogue at that period also. D.C Sircar finds in this inscription reference to a river called Mahananda, which he identified with the modern Mohana, a tributary of Phalgu". It is interesting that one of the two rivers, mentioned in the inscription, is a nada and the other is a nadi. The confluence of a nada and a nadi was probably considered as a very sacred at a time. The next point to be noted in this inscription is the term Acharya which is still used in Gaya to denote a class of brahmanas. The Acharya of the present inscription was also a renowned teacher, and the vessel gifted is said to have connected with his fame and power.

We do not know with which temple the Acharya of this inscription was connected, but the history of Vishnupada temple, with which the modern Acharyas are intimately associated, may be archeologically traced back as early as the Gupta period. It finds its reference in a terracotta seal from Basarh. It depicts on the upper half a srivatsa symbol in the centre, a peculiar club, samkha and solar disc to right and to left symbol for moon and an ornamental wheel, and the legend below reads- Sri Vishnupadasvami naravan", Thus by the Gupta period the Vishnupada temple was well organized by the brahmana priest who were in a position to issue seals in the name of the diety carried on transactions with Vaisali, an important centre of Gupta administration.

There is an epigraphic gap about Gaya from the time of the Guptas to the rise of the Palas. But we possess a very important account of the Brahmans of this period from the itinerary of Hiuen Tsang who found here about 1000 Brahmana families who were not subject to the King and were treated by all with reverence . It is interesting that when the curtain is lifted again in the Pala period we find in Gaya a brahmana royal family, serving as feudatories of the Pala overlords. The genealogy of this family, so far as known from inscriptions, is as follows-

(1) Paritosha (2) sudraka (3) visvaditya or visvarupa (4) Yakshapala

This family had been described in the inscription as Mahadvija-raja vamsa. Mahadvija is usually taken as a degradatory and so M. Chakravorty takes them as low- class brahmanas and D.C. Sircar likes to identify them with a Gayawala brahmana family. If this identification is accepted, the inscriptions at our disposal would show how in the chaotic period that prevailed in Bengal after sasanka a shrewd Gayawala brahmana family curved out an independent principality of their own .Members of this family were essentially Gayawala brahamanas and king like Visvaditya and Yakshapala spend much money to construct and repair temples of various deities at Gaya. Visvaditya either constructed or repaired the temples of Janardana, Godadhara, Pitamahesvara, Gathesa, Kanakesvara,Ambujabhava, Visvarupesvara, Gangesa, Sukla-Bhanu, Griddhresa, Sujanardana and Vatesa. His son Yakshapala constructed a temple for hocusing the gods

Maunaditya, Sahasralinga, Kamala, Ardhangma, Narayana, two Somesvaras, Phalgunatha, Vijayaditya and Kedaresvara. They were also patrons of learning.The Gaya Krishna Dwarika temple inscription of the reign of Nayapala introduces Gaya as a place where brahamanas spent their time in the study of the Veda and in sacrificial activities.

वेदाभ्यास-परायण-द्विजगुणोद्गीणोग्र-पाठक्रमा-दु
च्चैरूच्चरित-ध्वनिव्यकिरैर्यत्रावाधार्य गिरः।
किंचाजिस्त्रित-होम-धूमपटल-ध्वान्तावृतौ साम्प्रतं
धर्म्मो यत्र महाभयादिव कलैः कालस्य सन्तिष्ठते।।

The vedic studies were carried on in Gaya inscription of the time of

Govindpala. It refers to Dallana of Vasistha Gotra, who was a Dwiveda- brahmana.

वशिष्ठगोत्रो त्रिगुणोद्विवेद श्री डल्लणोसुत।

We do not know definitely whether this Dallama was a Gayawala brahmana or not. But it should be noted that Vasistha is one of the fourteen gotras which are found among the present Gayawala brahmanas. But Dallana's intimate association with Gaya is suggested by the fact that his son Vidyadhara was a Guggulin,i.e, incense burner in the temple of Gadadhara situated within the complex of the Vishnupada temple. The inscription of Yakshapala was composed by the Brahmana Murari, who hailed from Agi-grama and was a master of logic.

न्यायाविद्याविदाम ज्ञेयाना-गीग्राम कुलोद्भवः
श्रीमुरारीद्विज श्रेष्ठः प्रशस्तिमकरोदिमाम लिखितासौ

The science of medicine seems to have been popular in this region. Of the five inscriptions of this royal family three were written by Vaidyas- two by Vajrapani and one by Dharmapani. Another inscription was composed by Vajji-Vaidya sahadeva, who was specialized in the Science of medicine of horses. The Sakaldvipi brahmanas might have contributed something in the popularization of the medical profession of this locality.

We do not hear of this brahmana royal family after the 11th century but Gaya continues to be a living centre of pilgrimage. A fair idea of the administration of various religious establishments at Gaya may be gathered from the inscriptions found from this place. Different sacred complexes were under the supervision of different groups of priests. But when endowments were made for some specific purposes persons of various categories were made to associate themselves with them. Yakshapala established a sattara at Akshayavata which was probably administered by the Gayawala brahamanas who had control over this sacred zone. But, another inscription shows that Vidyadhara, the son of Dviveda brahmana Dallana deposited some money for feeding brahamanas at the temple of Gadadhara on fifth of Asvinasudi every year. The money was deposited with Raghava, Sribara, Asuka, Damodari, Sridhara, Bhika and Devanidhi, who apparently were members of the board of trustee. After the name of Devanidhi there is the world dharmin, which according to D.C Sircar may be a personal name or epithet of Devanidhi.Among the witnesses mention have . been made of Padma, Visvarupa, Narasimha, Sridhara, Devadhara, Alii and Padmanabha. The last two are said to have been servants of Vishnu in the temple of Gadadhara. A line of inscription in the margin shows that the annual interest was paid by Raghava and others in cowrie-shells in presence of the image of the god and Samesvara and Gaya- brahmana Padmanabha.

Another earlier Gaya inscription of the time of Narayanapala refers to one Bhanudeva, son of Bappadeva and Vallabhadevi, grandson of Sahadeva and great grandson of Bhatta Vamadeva, who dedicated a house at Gaya for the ascetics on the full moon day of the month of vaisakha, which is described as an ashrama of the brahmacarins. It was stipulated that only ascetics who were not deformed and were respectable should stay here. The donor requested the brahmanas of of Gaya to see that no transgression of this rule was made. Thus the brahmanas of Gaya had direct or indirect control over the administration and organization of different religious and semi-religious establishments. at Gaya.

The sources of prosperity of the Brahmans of Gaya are the munificences made to them by the pilgrims coming from different parts of India. Among the pilgrims there were also kings and nobles, who must have made rich gifts in cash and kind to sustain them. Saktipur c.p. of

Lakshmanasena says that his father Vallalasena made a grant of land to the Gayawala- brahmana Haridasasena. So far as epigraphic records are concerned we know also of Gauri, the wife of Mallikarjuna, the preceptor of the Kakatiya king Prataparudra, who came to Gaya to perform the nitya- sraddha of her husband. Apanna, the son of Acharya Padmanabha Bhattopadhyaya, who was apparently a priest of a temple constructed by the Hoysala king Narasimha III came to Gaya and discharged his debts to the gods, to his forefathers and other human beings by constructing a monastery here. The king of Vijayanagara are also associated with Gaya through inscriptions Krisna-devaraya's court poet Nandi Timmana visited this place. Another timmanamma, who was apparently a priest of the Vijayanagara king came to Gaya and performed sraddha on behalf of king Acyuraya and made his ancestors Gaya-mukta.

Modern anthropological research has shown that with the change of economic set-up and behavioural pattern of the society the Gayawala Brahmans are facing great problems of existence .

Their study shows that these brahmanas of Gaya hold an unique position. In the eyes of the orthodox brahmanas they were degraded and possesses low social status. At the same time they have considerable power and prestige as they lead to the door of salvation. They are liberal in their attitude towards religion and caste. They are degraded because they have imbibed various non-vedic elements and it is for this reason that they are to the scholars living examples of the evolution of Indian culture and hold a matchless position in the brahmanical society.

Journalist, 'Dainik Bhaskar', Gaya

◆

विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरित निस्पृहः।
निर्मनो निरहंकारः शान्ति मधिगच्छती।।
(गीता- 2/71)

''जो मनुष्य सब इच्छाओं को त्याग देता और कामना-रहित होकर कार्य करता है, जिसे किसी वस्तु के साथ ममत्व नहीं होता और जिसमें न अहंकार की भावना होती, उसे शान्ति प्राप्त होती है।''

पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवता

डा0 कृष्णदेव मिश्र

मानव जीवन में माता पिता के अवदान और उपकार को किसी को समझाने की आवश्यकता नहीं। यह स्वयं सिद्ध है। माता पिता न केवल हमारे जन्म के निमित्त कारण हैं अपितु हमारी काया तथा जीवन उपादान के रूप भी उन्हीं की कोशिकाएँ हैं। स्पष्ट है कि हमारे रूप रंग, आकृति-प्रकृति शील स्वभाव, धन-वैभव तथा सुख-दु:खादि समग्र स्थितियों में उन्हीं का अस्तित्व पल्लवित है। इस रूप में केवल माता पिता ही नहीं पितामह, प्रपितामह, पितामही, प्रपितामही, मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामह तथा मातामही प्रमातामही वृद्ध प्रभातामहादि कुल मिलाकर अपने पितृकुल और मातृकुल की पूरी परंपरा कारणभूत रूप में हैं। हमारी साधना एवं ज्ञानवपुष के निर्माण में गुरूकुल तथा भावी पीढ़ियों के निर्माण में श्वसुरकुल का अवदान भी महत्वपूर्ण होता है। इन सारे सम्बन्धों की गणना कोशिकीय तथा रक्त सम्बन्ध के रूप में होती है तथा इन चारों कुलों के पूर्वजों के लिए 'पितर' या पितृजन की संज्ञा दी जाती है जिसके व्यापक अर्थ में उपर्युक्त चारों कुल की पूर्व पीढ़ियाँ समाहित होती है। पितरों के अतिरिक्त हमारे जीवन में देवताओं का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है जिनकी पूजा उपासना कर उनकी कृपा से हमारा जीवन और संस्कार सँवरता है। फलत: शास्त्रों में मानव को तीन ऋणों से ग्रस्त अर्थात् ऋणी बतलाया गया है। ये हैं देवऋण, पितृऋण तथा गुरूऋण अथवा ऋषिऋण। यद्यपि इन ऋणों से मुक्ति पाने के लिए मानव को सतत् प्रयत्नशील एवं तत्पर रहने के उपदेश दिये गये हैं। हर व्यक्ति का यह कर्त्तव्य होता है कि उक्त ऋणों से मुक्त होने के लिए वह सतत् धर्माचरण में तत्पर रहें। इसके लिए देवाराधन , पितृसेवा, श्राद्ध एवं तर्पण, अतिथि सत्कार, देवता, ब्राह्मण और गाँवों की सेवा के उपदेश दिये गये हैं जो 'लोक-सुयश' और पर 'लोक सुख' दोनों के प्रबल साधक हैं।

देवऋण से मुक्ति मानव को देवाराधन एवं धर्माचरण से प्राप्त होती है, गुरूऋण से मुक्ति के लिए जिज्ञासु एवं सत्पात्र शिष्यों को विद्या प्रदान करना बतलाया गया है। इसके साथ गुरू के प्रति श्रद्धा, सम्मान, सेवा तथा कृतज्ञता की भावना भी अपेक्षित है, किन्तु पितृऋण से मुक्ति के लिए उनके जीवन काल में सेवा तथा मरणोपरांत श्राद्ध तर्पण आदि के विधान बतलाये गये हैं। गृहस्थ जीवन में संतान (विशेष रूप से पुत्र प्राप्ति की आवश्यकता इसीलिए बतलायी गई है कि पुत्र अपने पिण्डदान तर्पणादि से पितरों को परितुष्ट कर उन्हें नरक से त्राण दिला सकता है) मोक्ष का मार्ग प्रशस्त कर सकता हे। "पुंनरकात् त्रायते इति पुत्र:" अर्थात् पुत्र वही है जो नरक से त्राण दिलाये। पुत्र धर्म का प्रतिपादन करते हुए धर्मशास्त्रों में बतलाया गया है -

जीवितो वाक्य करणात् क्षयाहे भूरिभोजनात्।
गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता।।

अर्थात् जीवन काल में पिता (अर्थात् पिता पितामहादि गुरु जनों) की बात मानकर उनका अनुसरण करना, उनकी मृत्यु के पश्चात् (अन्य श्राद्ध के दिन) बहुत सारे लोगों को (ब्राह्मण, दरिद्र तथा कुटुम्बादि को) भोजन कराना तथा गया क्षेत्र में पिण्डदान करने से ही पुत्र धर्म की सिद्धि है। अन्यथा पुत्र का कोई औचित्य नहीं। देवाराधन के लिए हमारी संस्कृति में दैनिक जीवन के अतिरिक्त कई पर्व त्योहार बनाये गये हैं किन्तु पितरोपासना के लिए वर्ष में पन्द्रह दिनों के लिए विशेष पर्व की व्यवस्था की गई है जिसे पितृपक्ष के रूप में जाना जाता है तथा श्राद्ध क्षेत्र के लिए प्रभासक्षेत्र, पुष्कर क्षेत्र, गयाधाम, कुरुक्षेत्र, प्रयाग तथा बदरीकाश्रम जैसे कुछ विशेषतीर्थों की महिमा बतलाई गई है। शास्त्रीय मान्यता तथा लोक आस्था के अनुसार ''सर्वं विष्णुमयं जगत्'' में गयाधाम में भगवान नारायण के चरण, तीर्थराज प्रयाग (वेणीमाधव) तीर्थ में भगवान नारायण का हृदय तथा बदरीकाश्रम (ब्रह्मकपाली) तीर्थ में भगवान नारायण का सिर विद्यमान है। ये तीनों ही तीर्थों में पितरों के श्राद्ध तर्पण और पिण्डदान का विधान है। इसमें भी गयाधाम की महिमा सर्वाधिक बतलायी गयी है।

कीकट प्रदेश (मगध का पौराणिक नाम) कोलाहल पर्वत (भस्मकूट पर्वत का दूसरा पौराणिक नाम) पर परम पावनी मोक्षदायिनी अंत:सलिला फल्गु नदी के प्रतीच्य तट पर अवस्थित गयाधाम, जो भगवती मंगला की अवतार भूमि तथा भारत के बावन शक्तिपीठों में एक देदीप्यमान शक्तिपीठ है। स्वयं नारायण की संज्ञा से विभूषित भगवान विष्णु ने भी यहाँ श्रीविद्या की उपासना कर तारक ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त की है। यहाँ पितामहेश्वर, प्रपितामहेश्वर तथा वृद्धप्रपितामहेश्वर तीनों संज्ञाओं (पितामह, प्रपितामह एवं वृद्धप्रपितामह) से विभूषित देवाधिदेव महादेव ''क्रोशमेकं गयासिर:'' कहे जाने वाले पावन क्षेत्र में ही अवस्थित हैं। इसी परिधि में महर्षि मार्कण्डेय द्वारा स्थापित मार्कण्डेय मन्दिर (शिव मन्दिर) भी है जो भस्मकूट पर्वत पर अवस्थित मंगलागौरी नामक सिद्ध शक्तिपीठ के अग्रभाग में अवस्थित है। ऐसी जनश्रुति है कि यही बैठकर महर्षि मार्कण्डेय ने भगवान शिव और भगवती मंगला की उपासना की थी तथा शक्ति उपासना के निमित्त सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ मार्कण्डेय-पुराण की रचना की थी। भारतवर्ष के बावन शक्तिपीठों में तीन की महिमा तो अपरम्पार बतलायी जाती है। इनमें कामाख्या को (आसाम) जननपीठ, मंगलागौरी (गया) को पालनपीठ तथा ज्वालामुखी (हिमाचल प्रदेश) संहार पीठ के रूप में शास्त्र पुराण प्रशस्त और लोकविश्रुत है। इन तीनों में भी पालन पीठ की महिमा सर्वदा वरीयसी है। इस पालन पीठ पर ही गयाधाम में गयासुर नामक दैत्य के तारक उद्धारक के रूप पालक ब्रह्म भगवान विष्णु का अवतार भी गयासुर के साथ-साथ समस्त प्राणियों के उद्धार के लिए हुआ जिनका चरण चिह्न गयाधाम के परम पावन विष्णुपद मंदिर में आज भी विशाल शालिग्रामशिला पर विद्यमान है जिनके दर्शन, स्पर्श तथा चरणामृतपान से पापियों को भी मोक्षफल की प्रप्ति सुलभ हो जाती है, गृह-बाधाएँ दूर होती है, स्वास्थ्य एवं नैरूज्य की प्राप्ति होती है, अभीष्ट फल प्राप्त होंते हैं तथा यहाँ पितरों के और्ध्वदेहिक कर्म एवं पिण्डदान करने से उन्हें तो मोक्ष की प्राप्ति होती ही है उनके आशीर्वाद से यहाँ तर्पण श्राद्ध तथा विष्णुचरण के दर्शन करने वाले पुत्र पौत्रादि भी पुरुषार्थ चतुष्टय को प्राप्त करते हैं। गया तीर्थ की महिमा बतलाते हुए गरुड़पुराण में कहा गया है -

पृथिव्यां यानि तीर्थानि ये समुद्राः सरांसि च ।
फल्गुतीर्थं गमिष्यन्ति वारमेकं दिने दिने ।।
पृथिव्यां च गया पुण्यां गयायांच गयासिरः ।
श्रेष्ठं तथा फल्गुतीर्थं, तन्मुखं च सुरस्यहि ।।
(ग०पु० 83/22, 23)

वायुपुराण के अनुसार ब्रह्मज्ञान, गयाश्राद्ध, गोशाला में मृत्यु एवं कुरुक्षेत्र में निवास जीवात्माओं (मानवों) के लिए मोक्षदायक होते हैं:-

ब्रह्मज्ञानं गयाश्राद्धं गोगृहे मरणं तथा ।
वासः पुंसां कुरूक्षेत्रे मुक्तिरेषचतुर विद्याविधिः
(वायुपुराण 105/16-17)

पुराणों की यह मान्यता है कि मोक्षतीर्थ गयाधाम के अधीश्वर गदाधर भगवान विष्णु अर्थात् स्वयं नारायण हैं जिनके ध्यान एवं पूजन के साथ गयाश्राद्ध करने से व्यक्ति अपने सौ कुलों का उद्धार कर पितरों को ब्रह्मलोक की प्राप्ति कराता है तथा तृप्त पितरों के आशीर्वाद से स्वयं भी मरणोपरांत मोक्ष को प्राप्त करता है। यथा -

आद्यं गदाधरं ध्यायन् श्राद्धं पिण्डादिदानतः।
कुलानां शतमुद्धृत्य ब्रह्मलोकं नयेत् पितून्।।
(वायुपुराण 112/59)

अग्निपुराण में तो यहाँ तक कहा गया है कि गयाधाम में साक्षात् विष्णु ही पितृरूप में विराजमान हैं। पितरों के तर्पण पूजन तथा श्राद्धादि से देवता और पितर दोनों प्रसन्न होते हैं तथा व्यक्ति को तीनों ही ऋणों से मुक्त कर देते हैं-

गयायां पितृरूपेण स्वयमेव जनार्दनः ।
ते दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्षं मुच्चते वैऋणत्रयात् ।।
(अ०पु० 116110-11)

अत: गृहस्थ जीवन व्यतीत करने वाले हर व्यक्ति का यह परम कर्त्तव्य है कि वह सेवा, श्रद्धा तथा तर्पण से पितरों को तृप्त करें और उनका आशीर्वाद प्राप्त करें क्योंकि शास्त्रों का निर्देश है:-

पिता स्वर्गः पिताधर्मः पिता हि परमं तपः ।
पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः ।।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
स्वामी धरणीधर महाविद्यालय, परैया, गया

पित्र्यर्थ गया पिण्डदानः कल्याण सोपान

ज.गु.रा. स्वामी वेंकटेशप्रपन्नाचार्य

मनुष्य के लिए माता,पिता एवं गुरु जंगम तीर्थ हैं। इनके निमित्त विहित कर्म कल्याणकारी होता है। मर्यादा पुरूषोत्तम परमधर्मज्ञ और धर्माचारी भगवान् श्रीराम की मान्यता है

न हि तु धर्माचरणं किंचिंदस्ति महत्तरम् ।
यदा पितरि शुश्रुषा तस्य वा वचनक्रिया ।
(श्रीमद्वा०रा०अयो०का० 17/122)

पुत्र की पुत्रता की सिद्धि शास्त्रानुसार तीन प्रकार से होती है –

जीवितोवाक्यकरणात् क्षयाहे भूरिभोजनात्
गयायां पिण्डदानात्तु त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता ।

मनुस्मृति का निर्देश है –

पिण्डान्वाहार्य्यकं श्राद्धं कुर्यान्मासानुमासिकम्।
(मनुस्मृति 2/122)

श्राद्ध एवं पिण्डदान का ऐतिहासिक समर्थन

हमारी संस्कृति वैदिक है। वेदों में पिण्डदान और श्राद्ध का प्रबल पोषण है। (एतदर्थ यजुर्वेद का 19 वाँ अध्याय, अथर्ववेद के 18वें काण्ड के अध्याय 2 और 3 विशेष रूप में द्रष्टव्य है) पुराण ग्रन्थों में भी पिण्डदान एवं श्राद्ध कर्म का प्रबल पोषण है। विष्णुपुराण का कथन है–

श्राद्धं श्रद्धान्वितः कुर्वन् प्रीणाति ह्यखिल जगत्
(विष्णु० 3/14/2)

वायुपुराण का श्वेतवाराह कल्प तो मानो पिण्डदान एवं श्राद्ध का एल्बम है। यही बात गरुड़पुराण के कुछ अध्यायों में कही गयी हैं। इतिहास ग्रन्थों में रामायण एवं महाभारत में पिण्डदान का विशेष उल्लेख है –

राज्ञे ददुर्जलं तत्र सर्वे ते जलकांक्षिणे ।
पिण्डान्निर्वापयामास रामोलक्ष्मणसंयुतः ।
(अध्यात्मरा०अयो०का०सर्ग–9श्लोक–18)

तथैव भगवान् श्रीराम का मृत पिता से इंगुदी बैरफल आदि का पिण्ड देते हुए निवेदन है–

इदं भुङ्क्ष्व महाराज प्रीतो यदशना वयम्
यत्रत्यः पुरूषो भवति यत्रत्याः तस्य देवताः।
(श्रीमद् वा०रा०अयो०का०103/30)

पिता दशरथ जी को कौन कहे, पितृतुल्य जटायु महाराज के लिए भगवान् श्रीराम ने पिण्डदान किया है।

महाराजस्य स्वामी ब्रह्ममेधसंस्कारमकरोत्।

महाभारत में पाण्डुराजा के लिए स्वधामय श्राद्ध का उल्लेख है–

ततः कुन्ती च राजा च भीष्मश्च सह बन्धुभिः
ददुः श्राद्धं तदा पाण्डोः स्वधामृतमयं तदा।
(महाभा०आदि५० 12711)

महाराज युधिष्ठिर ने विदुर जी का भी ब्रह्ममेध संस्कार किया–

धर्मपुत्रोऽशरीरिवाक्यं ज्ञानाधिक्यं चादायश्रीविदुरं
ब्रह्ममेधेन संचस्कार। (श्रीव०भू०सू० 245)

धर्मशास्त्र श्रीमद्भगवद्गीता का तो स्पष्ट निर्णय है कि पिण्डदान और तर्पण क्रिया के लुप्त होने पर पितर नरकगामी हो जाते हैं–

पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः
(श्रीमदभ०गी०अ० 1 श्लो०42)

अतः वेद-मन्त्रों में सादर पिण्डदान का निर्देश है। ऐसा एक मन्त्र उदृत –

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामेहभ्यः
स्वधायिभ्यः स्वधानमः, प्रपितामहेभ्यः
स्वधायिभ्यः स्वधानमः।।
(यजु०अ० 19 मं–36) (3)

धर्मक्षेत्रों में गयाक्षेत्र ही पिण्डदानार्थ चयनित क्यों ? महापुरुषों के मत और शास्त्रमत से पितृ-तर्पण एवं पिण्डदान के लिए गया तीर्थ ही शीर्षस्थ है। भगवान्

श्रीराम का उद्घोष है कि पुत्रों में किसी न किसी को गया अवश्य जाना चाहिये–

एष्टव्या बहवः पुत्रा गुणवन्तो बहुश्रुताः।
तेषां वै समवेतानामपि कश्चिद् गयां व्रजेत्।।
(श्रीमदवा०रा०अयो०का० 107/13)

गया में भगवान् जनार्दन पितृरूप में स्थित है–

गयायां पितृरूपेण स्वयमेव जनार्दनः।
(वायु०पु०श्वे०वा०क०4/92)

भगवान् जनार्दन मुक्तिदाता हैं–। कहा गया है कि मोक्षमिच्छेत् जनार्दनात्।

गयासुर ने वर लिया है –

श्राद्धं सपिण्डकं येषां ब्रह्मलोकं प्रयान्तु ते ।।
(वायु०पु०श्वे०वा०क० 2/72)

गया जी में श्राद्ध करने से महापातक भी नष्ट हो जाते हैं।

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वंगनागमः।
पापं तत्संगजं सर्वं गयाश्राद्धाद्विनश्यति।।
(ग०पु० 82/17)

ऋषिमत है, श्री सनत्कुमार जी का कथन हे –

गयातीर्थः सर्वदेशे तीर्थेभ्योप्यधिकंश्रृणु ।
(वायु०पु०श्वे०वा०क० 1/3)

इनकी तो घोषणा है–

गयायां नहि तत्स्थानं यत्र तीर्थं न विद्यते
(वायु०पु०श्वे०वा०क० 1/46)

इस निर्देश की भी पूर्ति गयाजी में होती है। दाक्षिणात्य कनियनूर शिरियाच्चन् स्वामीजी का उद्घोष है –

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं यतिराजो जगद्गुरुः ।
स एव सर्वलोकानां उद्धर्ता नात्र संशयः ।।

ऐसे श्री वैष्णवकुल कमल दिवाकर भाष्यकार श्रीरामानुज स्वामी जी महाराज भी श्रीरामानुजाचार्य मठ गयाजी में अर्चाविग्रह रूप में विद्यमान हैं। ऐसे गुरू से बड़ा तीनों लोकों में कोई नहीं है–

न गुरोरधिकः कश्चित् त्रिषुलोकेषु विद्यते ।
(योगशि०अ० मं० 56)

तो एकतरफ गयाजी में श्री विष्णुपद दृश्य है और दूसरी ओर भक्तों के लिए आश्रितपारिजात भगवत्पाद श्रीरामानुज स्वामी जी महाराज के दर्शन होते हैं –। अतएव यह ऋषिकाङ्क्षिताभूमि गया विशेषकर मुक्तिदायिनी रूप में अभिवंदित है।

गया का पिण्डदान कल्याण का सोपान कैसे ?

हम कितना भी वस्तु–निष्ठ एवं यथार्थवादी हों, कल्याणवादाभिमुखी आदर्शवाद से दूर नहीं हो सकते, क्योंकि हम मानव हैं। विचारणीय यह है कि गया में पिण्डदान और कल्याण का क्या संबंध है। इस सन्दर्भ में शास्त्र–सम्मत एक विवेचन प्रस्तुत है– गरुड़पुराण का कथन है कि गया गमन मात्र से व्यक्ति पितृऋण से मुक्त हो जाता है–

गयागमनमात्रेण पितृणामनृण्णो भवेत्
(ग०पु० 82/5)

गयाप्राप्तं सुतं दृष्टवा पितृणामुत्सवो भवेत्।
(वायु०पु०श्वे०वा०क० 1/9)

मुक्ति– हेतु अन्य साधनों से गया–यात्रा की अधिक महत्ता है–

ब्रह्मज्ञानेनकिं साध्यं गोगृहे मरणेन किम्।
वासेन किं कुरूक्षेत्रे यदि पुत्रो गयां व्रजेत।।
(वायु०पु०श्वे०वा०क० 1/16/17)

अतः विस्तार–भय से गया के कुछ ही प्रमुख स्थलों में पिण्डदान के फल का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है– विष्णुपद में सपिण्डक श्राद्ध करने वाला अपने हजार कुलों को दिव्य विष्णुपद में पहुँचा देता है। पुनश्च गयाशिर में जिनके नाम से पिण्डप्रदान किया जाता है, वे नरक में हों तो स्वर्ग चले जाते हैं और स्वर्ग में हों तो मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं–

गयाशिरसि यः पिण्डान्येषां नाम्ना तु निर्वपेत्।
नरकस्था दिवंयान्ति स्वर्गस्था मुक्तिमाप्नुयात्।।
(वायु०पु०श्वे०वा०क० 7/85)

तथैव प्रेतशिला में पिण्डदान से प्रेतत्व से मुक्ति मिलती है–

पिण्डदानाच्च तस्यां तु प्रेतत्वान्मुच्यतेनरः।
(वायु०पु०श्वे०वा०क० 4/15)

रामशिला स्थित श्रीरामतीर्थ का पिण्डदान विष्णुलोकदायी है। गया तीर्थ में जो अक्षयवट है, वहाँ अन्न से श्राद्ध करने पर पितर अक्षय ब्रह्मलोक को प्राप्त करते हैं

कृते श्राद्धेऽक्षय्यवटे अन्नेनैव प्रयत्नतः
दृष्ट्वा नत्वा च सम्पूज्य यो वटेशः समाहितः।
पितून्नयेद् ब्रह्मलोकमक्षय्यं च सनातनम्।।
(वायु०पु०श्वे०वा०क० 7/94,95)

विभिन्न वेदियों पर श्राद्ध को कौन कहे, गया के प्रति यात्रा मात्र से ही पितरों के लिए स्वर्गारोहण का सोपान बनने लगता है-

गृहाच्चलितमात्रेण गयायां गमनं प्रति ।
स्वर्गारोहणसोपानं पितृणां च पदे पदे ।
पदे पदेऽश्वमेधस्य यत्फलं गच्छतो गयाम्।
(वायु०पु०श्वे०वा०क० 6/6,7)

पिण्डदानी का कल्याण इसलिए भी निश्चित है कि यहाँ आने पर श्री विष्णुपद में ही श्रीहरि के अभीष्टदोह पादचिन्ह के दर्शन के साथ-साथ करूणामयी अम्बा गयेश्वरी, प्रभुगदाधर नाथ एवं भगवत्पाद श्रीरामानुज स्वामी महाराज आदि दिव्य विभूतियों के दर्शन हो जाते हैं। पितरोद्धारक का अपना उद्धार भी हो जाता है। अतः शास्त्रमत एवं ऋषिमत है कि गया में पिण्डदान महाकल्याणकारी है। प्रजापति भरद्वाज, आभूति हैमवर्चि, वैशानस, शंख आदि ऋषियों ने पितरों से धन देने की आशंसा साकी है - ऐसी ही याचना अथर्वा ऋषि ने अथर्ववेद के 18 वें काण्ड के तीसरे अनुवाक में की है। वस्तुतः पिण्डदाता का भी पितरों की तृप्ति से कल्याण होता है। प्रसिद्ध कथन है- पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः। - तो वैदिक संदेश है।-

ते पिण्डदान अभयप्रद है, दाता और गृहीता दोनों के लिए शिवप्रद है।

महन्त, श्रीरामानुजाचार्य मठ, देवघाट, गया

◆

फल्गु नदी का हिन्दू धर्म में स्थान

प्रो० रंजीत कुमार वर्मा

भारत की संस्कृति में प्रकृति की सुरक्षा, संरक्षा एवं सम्मान का बड़ा ही महत्त्व है। ब्रह्मांडपुराण, जिसकी रचना का काल 325-400 ई० आँका गया है, उसमें गंगा को 'माँ' का न सिर्फ स्थान दिया गया है अपितु उसके निकट तेरह तरह के कार्य वर्जित किए गए हैं -

गंगां पुण्यजलां प्राप्य त्रयोदश विवर्जयेत् ।
शौचमाचमनं सेकं निर्माल्यं मलघर्षणम् ।
गात्रसंवाहनं क्रीड़ां प्रतिग्रहमथो रतिम् ।
अन्यतीर्थरतिंचैवं अन्यतीर्थप्रशंसनम् ।
वस्त्रत्यागमथाधातं सन्तारंच विशेषतः ।।

मलमूत्र त्याग करना, प्रयोग किए गए जल को गिराना, शरीर के मैल छुड़ाना, अश्लीलता, मंत्रों के गलत प्रयोग, अधजले शवों सहित किसी प्रकार की गंदगी छोड़ना, नग्नता, तैर कर उसे पार करना आदि कार्य वर्जित किए गए हैं। भारत में शास्त्रार्थ, विवेचना, वाद-विवाद की परिपाटी ने हमारे पूर्वजों को वैज्ञानिक सोच दी थी और प्रकृति ही उनकी प्रयोगशाला थी। इसी ज्ञान और वैज्ञानिक सोच ने हमें प्रदूषण से बचने के गुण सिखाए थे। उपर्युक्त वर्जनाओं से हमने गंगा को हजारों वर्ष तक शुद्ध और प्रदूषण मुक्त रखा ।

वायुपुराण में गया के माहात्म्य की वृहद् चर्चा है और यहाँ की वेदियों और पास से गुजरती नदी, फल्गु के महत्त्व को दर्शाया गया है। इस पतित-पावन अन्तःसलिला नदी में लाखों हिन्दू धर्मावलम्बी अपने पूर्वजों को मोक्ष दिलाने हेतु पिंडदान करते हैं। माँ सीता ने भी भगवान राम व लक्ष्मण के आने में विलम्ब होते और शुभ मुहूर्त निकलते देख इसी नदी में पिंड-दान किया था। ब्रह्मयोनि पर्वत श्रृंखला के पूर्वी तट पर स्थित करसिल्ली पहाड़ी (जिस पर वर्त्तमान में विष्णुपद मंदिर है) और सीताकुंड समाहृत किए पहाड़ी के मध्य से फल्गु नदी गुजरती है। गया पहुँचने के पूर्व बोधगया में इसे निरंजना के नाम से जाना जाता है और वहीं पर इसके तट के निकट एक पीपल वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ ने तपस्या कर ज्ञान प्राप्त किया था और बौद्ध धर्म का उद्भव हुआ था । नदी के पूर्व में डुंगेश्वरी पर्वत श्रृंखला फल्गु नदी के समानान्तर विष्णुपद स्थित घाटों के ठीक सामने, नदी के उस पार स्थित है। पौराणिक कथाओं/चर्चाओं ने और डुंगेश्वरी के भगवान बुद्ध की तपस्या स्थली रहने के कारण फल्गु के महत्त्व को और बड़ा आयाम मिला है। इसे गंगा के समान ही पवित्र और स्तुत्य माना गया है (वायुपुराण) श्री गरुड़पुराण में महर्षि वेद व्यास जी से ब्रह्माजी द्वारा कहा गया एक प्रसंग है जिसमें कहा गया है।

'हे व्यास जी ! सभी समुद्र, नदी, वापी, कूप, तड़ागादि जितने भी तीर्थ हैं, वे सब इस गया तीर्थ में स्वयमेव स्नान करने के लिए आते हैं (श्लोक 83/22-23)। ब्रह्मज्ञान, गया-श्राद्ध, गोशाला में मृत्यु तथा कुरूक्षेत्र में निवास-ये चारों मुक्ति के साधन हैं-

"ब्रह्मज्ञान गयाश्राद्धं गोगृहे मरणं तथा ।
वासः पुंसां कुरूक्षेत्रे मुक्तिरेषा चतुर्विधा।।"
(82/15)

उसी में विष्णु पर्वत और उत्तरमानस के बीच का भाग गया का सिर माना गया है तथा उसे फल्गुतीर्थ कहा गया है जिसकी महत्ता श्लोक (83/3) में दर्शायी गयी है-

पंचक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशमेंकं गयाशिरः।
यत्र पिण्डप्रदानेन तृप्ति' भवति शाश्वती ।।

साथ ही कहा गया है-

पृथिव्यां यानि तीर्थानि ये समुद्राः सरांसि च।
फल्गुतीर्थं गमिष्यन्ति वारमेकं दिने दिने ।।
पृथिव्यां च गया पुण्या गयायां च गया शिरः।
श्रेष्ठं तथा फल्गुतीर्थं तन्मुखं च सुरस्य हि ।।

वायुपुराण में फल्गु की महिमा का वर्णन इस प्रकार किया[2] गया है:

फल्गुतीर्थे नरः स्नात्वा दृष्टवा देवं गदाधरम्।
आत्मानं तारयेत्सद्यो दश पूर्वान्दशावरान् ।।"

फल्गुतीर्थ में स्नान करके आदि गदाधर देव का दर्शन करने वाला अपने साथ (पूर्व एवं बाद की दस-दस पीढ़ियों) का उद्धार करता है।

गया शीर्षे वसेन्नित्यं स्नानं फल्ग्व्यां समाचरेत् ।
गयाशीर्षे सदा पिण्डमेतत स्वर्गेऽपि दुर्लभम्।

हाल फिलहाल के वर्षों के वर्षों में इस नदी में मल-मूत्र एवं शहरी नालों का गिरना बदस्तूर जारी है जो हमारी संस्कृति ही नहीं हमारे संविधान के प्रावधानों के प्रतिकूल है। राष्ट्र की नदियों सहित प्रकृति प्रदत्त पर्यावरण की सुरक्षा हेतु भारत के संविधान की धारा 48 में देश के वनों एवं वन्यजीवन की सुरक्षा तथा पर्यावरण की रक्षा और सुधार के प्रयासों की गारंटी दी गयी है। धारा 51. । में नागरिकों के कर्त्तव्यों की चर्चा करते हुए स्पष्ट उल्लेख है कि वनों, तालाबों, और नदियों की रक्षा होनी चाहिए और इसे आवश्यक बताया गया है।

मगध विश्वविद्यालय, बोधगया
मो. - 09431068823

सुमागधा तटेः धर्म क्षेत्रे

डॉ० प्राणेश कुमार सिन्हा

'गया जी' एक विख्यात तीर्थ है। प्रायः इसे पितृतीर्थ या गदाधर क्षेत्र का भी संबोधन प्राप्त होता है, परन्तु यदि ऐतिहासिक दृष्टिकोण एवं पुरावशेषों के आलोक में इसे समझने का यत्न करें तब यह क्षेत्र प्राचीन काल से शाक्त क्षेत्र रूप में ही ख्यात रहा है। धर्मारण्य स्थित मांतगेश्वरी देवी असुर सेवित रही है, कारण की यह क्षेत्र आदि काल से असुरों का निवास स्थल रहा है। शाक्त क्षेत्र होने से यहाँ शैव साधना का भी बड़ा जोर रहा है। परिणामस्वरूप 1987 तक पूरे धर्मारण्य में शिव लिंगों का जंगल सा रहा है। धीरे-धीरे बढ़ती और फैलती आबादी से यह प्रमाण लुप्त होते गए। फिर भी धर्मारण्य परिसर में स्थित धर्मेश्वर महादेव एवं मुक्तेश्वर महादेव के पंच मुखी शिव लिंग इसी क्रम की कड़ी प्रतीत होती है।

सिद्धार्थ गौतम के साथ भी एक विचित्र संयोग दिखता है कि राजगृह से उरुवेला तक की यात्रा में वह प्रायः वहीं रुके जहाँ प्रख्यात शिव स्थल थे, शक्ति स्थल थे। यहाँ हमें स्मरण रखना होगा कि सिद्धार्थ उस इक्ष्वाकु वंश के थे जो शैव उपासक थे। सिद्धार्थ ज्येष्टिवन में रुके जो प्रसिद्ध शैव तीर्थ था। कुर्किहार भी शैव तीर्थ तथा डुंगेश्वरी पर्वत शक्ति स्थल था। वहाँ से उतरकर जब वह उरुवेला क्षेत्र में आते हैं तो उनका प्रथम विश्राम स्थल धर्मारण्य परिसर ही था जो ख्यात शैव साधना केन्द्र था। पुनः मातंगवापी स्थित स्थल जो जाग्रत शिव शक्ति साधना केन्द्र था। वह जब नदी तट पार कर ध्यान के लिए बैठे तो वह स्थल वाग् देवी का क्षेत्र था। उन्हीं की प्रेरणा से वह वट वृक्ष की छाया में गए जहाँ उन्हें बोध प्राप्त हुआ। माँ मंगला गौरी मंदिर प्रसिद्ध शक्ति पीठों में एक है। यह पूरा क्षेत्र एक समय परिव्राजकों एवं जटिलों के साधना का प्रमुख केन्द्र रहा है। ब्रह्मयोनि पर्वत विजय कृष्ण गोस्वामी सरीखे साधकों की दीक्षा भूमि एवं साधना केन्द्र रहा हैं।

विभिन्न पुराणों, रामायण, महाभारत तथा अन्य संबंधित साहित्यों में भी गया का जो वर्णन प्राप्त होता है, वह साधारण तीर्थ स्थली अथवा धार्मिक स्थली की ही नहीं बल्कि एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक-राजनैतिक केन्द्र का भी है, जहाँ से समस्त उत्तर भारत की सभ्यता एवं संस्कृति विकसित हुई। इन साहित्यिक स्रोतों का समर्थन न्यूनाधिक इस क्षेत्र में अब तक के उत्खनन से प्राप्त पुरावशेष भी करते हैं।

वेदों में भी मगध का उल्लेख मिलता है। यजुर्वेद में प्रायः गायकों को 'मागध' कहने का उल्लेख मिलता है, जो बलि के अवसर पर गाने का कार्य करते थे। यास्क ने कीकट की पहचान मगध से की है (किकटा मगधा हुयाः) बाद में लेखकों ने निर्विवाद रूप से इसका अनुसरण किया। ऋग्वेद में यक्ष के संदर्भ में 'किकट" शब्द का उल्लेख एक अनार्य प्रदेश के रूप में मिलता है। वायुपुराण के रचयिता ने भी कीकट प्रदेश की पहचान मगध से की है, जब कि इसके टीकाकार ने इसकी पहचान मात्र 'गया' से किया है। इसके साथ ही इसके अन्य नामों का भी उल्लेख मिलता है यथा-पिथि, गया, नगर मुक्ति, मोकितों (चीनी विवरणों में)।

तांत्रिक ग्रंथों में भी गया जी का वर्णन मिलता है। 'वृहद नील तंत्र' में श्लोक 1 से 5 का अर्थ इस प्रकार है :- शिव जी बोले, ''हे विशाल बुद्ध पार्वती, सिद्धि को देने वाले और महात्माओं से सेवित जो पीठ स्थान है, उन सब का हम वर्णन करते हैं, सुनो

1. (पुष्कर और गया क्षेत्र इत्यादि अनेक सिद्धपीठ स्थान का कथन करने के अनंतर) पाटन और महाबोधि अर्थात बुद्ध गया, नाग तीर्थ, पवित्र रामेश्वर तथा मेघ वन सिद्धपीठ स्थान हैं।

2. इन स्थानों में देवता और पितृगण, महर्षि और सिद्धि को चाहने वाले योगी इत्यादि सदा सन्निहित है।

3. हे प्यारी ! इन सब स्थानों में श्रद्धा भक्ति से निष्पादित कर्म शीघ्र फल देते हैं। पुण्यकाल में विद्या पाठ इत्यादि करने का फल अक्षय पुण्य प्राप्त और जप करने का फल त्वरित सिद्ध होता है।

फल्गु नदी ने गया नगरी में युगों से जो हमारी संस्कृति गढ़ी है, वह वर्णनातीत है। फल्गु कोई अलग नदी नहीं बल्कि निरंजना और मोहाने, इन दो नदियों के संगम से बनती है। फल्गु का एक नाम सुमागधा भी है। फल्गु की छिन्न-भिन्न धाराओं से बनी अनेक नदियों से पुराकाल में और आज भी मगध के खेत आबाद होते थे और होते हैं। इन छिन्न-भिन्न धारा मार्गों के किनारे कई सांस्कृतिक आश्रम और मंदिर बने थे। अत: फल्गु का नाम (सुमागधा) विश्रुत था, जिसने इस पृथ्वी पर मागद्यों को विख्यात किया 'सुमागधा नदी रम्या मागधानाम विश्रुता'

इसी फल्गु के तट पर गया जी की स्थापना हुई तथा इसके तट पर ही गया की सभ्यता एवं संस्कृति पनपी एवं विकसित हुई। वस्तुत: गया के उल्लेख से अनुमान आधुनिक गया से नहीं वरन् बोधगया प्रखण्ड में निरंजना एवं मोहाने के मध्य दो मील की दोआब भूमि से है, जिसके संबंध में महाभारत के 17वें अध्याय में वर्णन है। यह स्थान आरंभ में असुर वन प्रदेश था। नागों के आक्रमण से आक्रांत असुर धीरे-धीरे छोटानागपुर के जंगलों में सिमटते गए। कालांतर में यह प्रदेश महा नाग वन के नाम से जाना जाने लगा। आर्यों के विस्तार के पश्चात राजा गय के पुत्र 'अमूर्तरय गय' ने इसे अपनी राजधानी बनाया तथा विशाल यज्ञ किया। शमठ नामक ब्राह्मण से इसकी महत्ता जानकर धर्मराज युधिष्ठिर ने यहाँ बड़ा भारी चातुर्मास यज्ञ किया। अत: इसका नामकरण 'धर्मारण्य' हो गया। तत्कालीन सभ्यता एवं तीर्थ मुख्यता फल्गु के पूर्वी तट पर ही स्थित थे।

संभवत: यह कारण रहा कि श्रीराम जब गया आए, उनका रथ नदी के पूर्वी तट पर ही रुका। आनंद रामायण, यात्रा सर्ग के 77वें से 83वें श्लोक में यह वर्णन मिलता है कि, सीता जी नदी के पूर्वी तट पर स्नान हेतु पधारी तथा महेश्वरी की पुजा हेतु सैकत प्रदेश में जा कर बालू के पाँच पिण्डों से दुर्गा जी की पूजा करने को उद्यत हुई। बाएँ हाथ में नीली बालुका लेकर दाहिने हाथ से पिण्ड बनाकर ज्योहीं पृथ्वी पर रखना चाहा, त्योंही उन्हें पृथ्वी तल से निकलता हुआ अपने ससुर महाराज दशरथ का सुंदर हाथ दिखाई दिया। उनका दाहिना हाथ सीता जी के हाथ से उस उत्तम पिण्ड को लेकर पुन: धरती में प्रविष्ट हो गए। यह देखकर सीता जी के मन में बड़ा कौतूहल हुआ। बाद में फिर सीता जी ने पिण्ड बना कर जमीन पर रखा (उसको भी पूर्वभूत वह हाथ ले गया। इस प्रकार सीता जी ने एक-एक कर एक सौ आठ पिण्ड दुर्गा की पूजा के लिये रखे और उन सब को ससुर का हाथ ले गया। बाद में जब राम ने प्रेतशिला पर जाकर पिण्ड दान किया तथा तिल-घृत-मधु आदि से युक्त सत्तू के पिण्ड रखना प्रारम्भ किया तथा दाहिने हाथ में पिण्ड ले कर जमीन की ओर देखा तो उन्हें अपने पिता का हाथ नहीं दिखा। संशय की स्थिति बन गई। तभी महाराज दशरथ वहाँ प्रकट हुए और कहा- 'हे राम ! तुमने यथार्थ में हमको तार दिया है। मैथिली के पिंडदान से हमें बड़ी तृप्ति मिली है।'

तब भी लोक शिक्षा के लिये तुम गया श्राद्ध अवश्य करो। इसी सर्ग के 119वें श्लोंक में वर्णन है कि राम ने गदाधर भगवान की पूजा की एवं कीकट देशस्य आम्र वृक्ष का जल से सिंचन किया।

गदाधरः ततः पूज्यः अमृतैः पंच संयुंतम्
सेचयामास तीर्थस्य चूतवृक्षं सकीकटम।।

अत: उपरोक्त उद्धरण से भी संकेत मिलता

है कि रामायण के रचानाकाल में भी किकट देश का अभिप्राय गया जी ही था। साहित्यिक वर्णनों को भी यदि यथार्थ की कसौटी पर परखें तब भी उपरोक्त कथन ही प्रमाणित होता है। सैकत प्रदेश अर्थात बालुका क्षेत्र यह फल्गु का पूर्वी तट की स्थिति थी। निलिका बालू राशि भी इसी तथ्य का समर्थन करती है। गया क्षेत्र में सोडियम सिलिकेट के विशाल स्रोत है। आज भी फल्गु में बालू में मिले सिलिकेट के छोटे-छोटे नीले कण स्पष्ट दिखते हैं। यदि उन्हें जल के साथ अंजुली में लें तो पूरी बालूका राशि ही नीली दिखाई देती हैं। इस प्रसंग में यदि आनंद रामायण के यात्राकांड में वर्णित च्यवन मुनि का राम से संवाद पर ध्यान दे ंतब राम ने किकट देश में पुण्य स्थलों का वर्णन करते हुए कहा है-

।।24।।25।। ''हे मुनिवर ! मेरे कहने से किकट देश में गया, पुनपुना नदी, आपका आश्रम तथा राजगृह वन पुण्यस्थल होंगे।'' यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक प्रतीत होता है कि असुरों का वन क्षेत्र नागों के अधीन 'महा नाग वन', राजा अमूर्तरय गय के अधीन ''राजवन'' तथा धर्मराज युधिष्ठिर के यज्ञ के ख्याति से धर्मारण्य ख्यात हुआ। ग्रंथो के वर्णन कुछ स्पष्ट निर्देश भी छोड़ते प्रतीत होते हैं, यथा

(1) श्राद्ध-तर्पण का अधिकार कुलवधुओं को भी है। (2) श्राद्ध के पश्चात वृक्षा रोपण अर्थात् वृक्ष सिंचन प्राचीन परंपरा है। (3) राम की गया यात्रा प्रसंग है। (4)धर्मारण्य वस्तुतः गया का आदि क्षेत्र एवं साधना भूमि रहा है।

155, अनुग्रह पुरी कॉलोनी, गया

◆

तुलसी कानन चैव गृहे यस्यावतिष्ठते।
तद्गृहं तीर्थभूतं हि नायान्ति यमकिङ्कः।।
तुलसी मञ्जरी भिर्यः कुर्याहरिहरार्चनम्।
न स गर्भगृहं याति मुक्तिभागी भवेन्नरः।।

जिसके घर में तुलसी-वन होता है, वह घर तीर्थ रूप हो जाता है,
वहाँ यमदूत नहीं आते। जो मनुष्य तुलसी मञ्जरी से भगवान हरि-हर की पूजा करता है,
वह फिर गर्भ में नहीं आता, वह मुक्ति का भागी हो जाता है।

पितृपक्ष : भारतीय राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का मंगलपर्व

डॉ० राधानन्द सिंह

हिमालय से कन्याकुमारी तक और द्वरिकापुरी से जगन्नाथपुरी तक भारत भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी, वेश-भूषा, खान-पान और रहन-सहन का एक विस्तृत देश है। अनेकता में एकता ही भारत की पहचान है। यहाँ तीर्थों में लाखों की भीड़ उमड़ती है। एक बार एक अंग्रेज कुंभ की भीड़ देखकर यह कहने लगे कि इसे जुटाने में बहुत व्यय करना पड़ता होगा, तो मालवीय जी ने कहा-अपने 25 पैसे के पंचांग में इसकी सूचना मात्र दे दी जाती है और संपूर्ण भारत एकत्र हो जाता है। अंग्रेज यह सुनकर हतप्रभ हो गये।

पितृपक्ष में भारत के कोने-कोने से लाखों लोग पितरों के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पण करने गयाधाम आते हैं। ऐसा प्रतीत हेाता है कि संपूर्ण भारत गया में सदेह उपस्थित हो गया हो। आश्चर्य तो यह कि यहाँ के पण्डा तमिल, तेलुगु, मलयालम, बंग्ला, उड़िया, असमी, गुजराती, संथाली, मराठी के साथ-साथ अनेक क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों में तीर्थयात्रियों से बेहिचक बात करते हैं। तीर्थयात्रियों के आपस के प्रेम, स्नेह, श्रद्धा और भ्रातृभाव से भारतीय की समग्र संस्कृति विहँसने लगती है और विष्णुधाम गया मानो पितृपक्ष में अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा समर्पण के कारण तीर्थयात्रियों को अखंड राष्ट्रीयता का प्रमाण पत्र वितरित कर रहा हो। काश ! इस दिव्य भाव की संवेदना का बोध हम सबको होता।

युग आता है और चला जाता है। सिद्धांत बनते हैं और बिगड़ते हैं। परन्तु जीवन का सत्य नहीं बदलता। भारतीय सांस्कृतिक जीवन का सत्य है - श्रद्धा और आस्था। इन्हीं दो आधार-स्तंभों पर लौकिक-पारलौकिक अभ्युदय की सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना अवस्थित है। आज के इस तर्कशील युग में भी न केवल, वरन् विदेशों के सनातन धर्मावलम्बियों सहित अन्य धर्मों के अनुयायियों की श्रद्धापूर्ण उपस्थिति से पितृपक्ष का महत्त्व सहज ही स्थापित हो जाता है। भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों से तीर्थयात्रियों, जिनकी अलग-अलग सामाजिक धारणाएँ होती हैं, की स्पष्ट मान्यता है कि पितृपक्ष के साथ पितरों का विशेष संबंध रहता है। वे शास्त्र के इस बात को जानते और मानते हैं कि पितृपक्ष में श्राद्ध करने से पुत्र, आयु? अतुल ऐश्वर्य और अभिलषित वस्तुओं की प्राप्ति होती है। इस लौकिक उपलब्धि का एक सामाजिक महत्त्व है। इससे उनके श्राद्ध करने की मनोवैज्ञानिक भावना पुष्ट होती है। अत: पितृपक्ष में गयाश्राद्ध का धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय महत्त्व है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आर्ष परंपरा द्वारा स्थापित मान्यताएँ मात्र पारलौकिक कल्पना नहीं, वरन् उनका अपना अलग सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय उद्देश्य है। तभी तो हिन्दुओं के श्राद्ध करने की प्रशंसा मुस्लिम राजा शाहजहाँ ने की है। अपने पुत्र औरंगजेब के द्वारा दिये ये कठोर कारावास का दंड झेलते हुए शाहजहाँ ने जो पत्र पुत्र को लिखा है, उसका आकिल खाँ ने अपनी वाकेआत आलमगीरी में विस्तारपूर्वक वर्णन किया है, जो इस प्रकार है -

ऐ पिसर तू अजब मुसलमानी,
ब पिदरे जिन्दा आब तरसानी।
आफरीन बाद हिन्दवान सदबार।
मैं देहंद पिदरे मुर्दा रावा दायम आब।।

अर्थात् हे पुत्र ! तू भी विचित्र मुसलमान है जो अपने जीवित पिता को जल के लिए तरसा रहा। शत-शत बार प्रशंसनीय हैं वे हिन्दू, जो अपने मृत पिता को भी जल देते हैं।

एक मुस्लिम सम्राट की इस उक्ति से श्राद्ध की महत्ता महत्तर हो जाती है और सामान्य जीवन में इसकी प्रासंगिकता स्थापित होती है। आज के टूटते

पारिवारिक परिवेश में यह घटना हमें प्रेरणा देती है कि आस्था और श्रद्धा ही पारिवारिक सुख शांति के कारण तत्त्व हैं। न्युकिलियर फैमिली लाख भौतिक साधन संपन्न हों, परन्तु श्रद्धा के अभाव में आज तनाव, कुंठा और अशांति का पर्याय बन गया है। अत: स्पष्ट है कि पितृपक्ष भारतीय पारिवारिक -सांस्कृतिक-राष्ट्रीय चेतना का उद्बोदान है।

हमारे ऋषियों का यह आयोजन कितना सात्विक और उदार है कि गयादि तीर्थों में भारत का संपूर्ण समाज-गरीब-अमीर, उँच-नीच, सभी श्रेणी, वर्ग और जाति के जन सभी भेदभावों को भूलकर इस समभाव से मिलते जुलते हैं कि मानो वे एक ही वृहतर परिवार के सदस्य हैं। इन तीर्थों की पवित्र नदियों में स्नान करने से, सत्संगादि के आयोजन से और दूर-दूर से आए तीर्थयात्रियों के पारस्परिक संभाषण से हमारी आंतरिक कल्मषता तो प्रक्षालित तो ही है, हम अपने स्वार्थवृत्त को विस्तृत कर कन्याकुमारी से हिमालय तक के विशाल क्षेत्र में फैले अपनी भारतीय राष्ट्रीयता को जानने और समझने का सहज ही सुअवसर प्राप्त करते हैं। इससे हमारा व्यक्तिगत संस्कार सात्विक होता है, सामाजिक सांस्कृतिक भावना पवित्र होती है और अपने भारत राष्ट्र की गौरव-गरिमा को समझकर अखंड राष्ट्रीयता का भाव बोध जागृत होता है।

आदि शंकराचार्य ने चारों धाम की यात्रा के मूल में यही अखंड भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का स्वप्न देखा था। कल्याण तीर्थांक विशेषांक में पंडित श्री रामनिवासजी का यह कथन अत्यंत सार्वभौमिक और सार्वकालिक है - तीर्थ भारतीय जातीयता और भारतीय व्यापक अखंडता के दिव्य प्रतीक है। संपूर्ण भारतीय तीर्थयात्रियों को एकात्मभाव के मूर्त्त रूप है। तीर्थ वस्तुत: भारतीय जातीयता, भारतीय सांस्कृतिक अखंडता और तीर्थयात्रियों की स्वर्णिम समन्वय माला के मनके हैं।

इसी तीर्थांक में श्री लक्ष्मीनारायण जी टंडन कहते हैं - *''सैंकड़ों व्याख्यानों, नारों और लेखों भारतीय एकता क्षेत्र में वह बात नहीं बनती, जो एक तीर्थक्षेत्र से बन जाती है। वे आगे कहते हैं कि किसी पावन क्षेत्र, तीर्थादि में सामूहिक साधना का अनंत गुणा फल मिलता है और हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय भावना और जाग्रत बनती है।''*

भारतरत्न महामहोपाध्याय डॉ. पांडुरंग वामन काणे अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'धर्मशास्त्र का इतिहास' में गयाश्राद्ध की वैश्विक भावना को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि - पितृऋण पुत्रोत्पत्ति से चुकता है, क्योंकि पुत्र पितरों को पिंड देता है। यह एक अतिव्यापक और विशाल धारणा है। गया में तिलयुक्त जल के तर्पण एवं पिंडदान के समय जो कहा जाता है उससे बढ़कर कौन सी उच्चतर भावना होगी ? कहा गया है - 'मेरे वे पितर लोग जो प्रेतरूप में हैं, तिलयुक्त यव (जौ) के पिंडों से तृप्त हों, और प्रत्येक वस्तु जो ब्रह्मा से लेकर तिनके तक का हो या अचर, हमारे द्वारा दिये गये जल से तृप्त हों।' यदि हम इस महान उक्ति के तात्पर्य को अपने वास्तविक आचरण में उतारें तो यह सारा विश्व एक कुटुम्ब हो जाए। अत: युगों से संचित जटिल बातों को त्यागते हुए आज के हिन्दुओं को चाहिए कि वे धार्मिक कृत्यों एवं उन उत्सवों के, जिन्हें लोग भ्रामक ढंग से समझते आ रहे हैं, भीतर पड़े हुए सोने को न ठुकरायें। (भाग-3, पृष्ठ-1298)

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि पितृतीर्थ गयाधाम में पितृपक्ष के पावन अवसर पर (अब तो सालों भर) शासन-प्रशासन, समाजसेवी संस्थान और उनके सदस्य, वरेण्य पत्रकार, कर्मठ, सजग गयावाल पंडे, असंख्य कर्मकांडी ब्राह्मण, सामग्री आपूर्त्तिकर्त्ता और मुख्यत: पूरे भारतवर्ष से आए लाखों तीर्थयात्रियों सहित विदेशों में रह रहे अप्रवासी भारतीयों के परिजन पितृयज्ञ के रूप में भारतीय राष्ट्रीय अखंडता के महामेध में श्रद्धा, विश्वास और आस्था की आहुति डाल रहे हैं। यही है पितृतीर्थ गया की राष्ट्रीय एकता और अखंडता का महापर्व।

संरक्षक, गया जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, गया।

◆

गयासुर - आज भी जीवित हैं।

डॉ० मंजु शर्मा

सच ही कहा गया है कि जो जन-कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित कर देता है, वो अमर जाता है, उसका यश चिरकाल तक स्थायी रहता है, जीवित रहता है। 'गयासुर' के नाम पर ही गया तीर्थ या गयाजी आज विश्व प्रसिद्ध शहर बन गया है, जहाँ विदेशों से भी तीर्थ यात्री आकर श्रद्धा से श्रद्धा-कर्म करते हैं ताकि उनके पूर्वजों को मोक्ष की प्राप्ति हो सके। गया की प्रसिद्धि का सारा श्रेय गयासुर नामक असुर को जाता है। आइये जानते हैं कैसे ?

हुआ यूँ कि असुर वंश में जन्म लेने वाला 'गय' विष्णु का परमभक्त था। इस तरह की भक्ति की प्रेरणा गय को अपने पूर्वज 'प्रह्लाद' से मिली थी, उसके स्वभाव में आसुरी-प्रवृत्ति भी नहीं थी। गय उच्च कोटि का वैष्णव, वेदपाठी, मंत्रदृष्टा एवं भक्त था। वेदों में कई ऋचाएँ उसके नाम से मिलती हैं। गयासुर का नाम, वेद संहिताओं में आने वाले असुरों के नामों में एक प्रसिद्ध नाम है। देवताओं को भगवान का भक्त मानकर आदर की दृष्टि से देखा जाता है, उनकी पूजा की जाती है, परन्तु असुरों को ऐसा दर्जा नहीं दिया जाता है, जबकि असुरों में कई भगवान् के परमभक्त थे। प्रह्लाद उनका पुत्र विरोचन, महादानी बलि भी प्रह्लाद का प्रपोत्र था, वाणासुर भी बलि के सौ पुत्रों में एक था, विभीषण भी असुर था पर भगवान् का परमभक्त था । सृष्टि के प्रारम्भ में महासुर 'गुडाकेश' भगवान विष्णु का परम भक्त था, वृत्रासुर भी भगवान का परम भक्त था, उसी प्रकार गयासुर भी भगवान का परम भक्त था। गयासुर ने सोचा कि मैं भी अच्छा कर्म करके इतना बड़ा पुण्यात्मा हो जाऊँ कि लोग मेरे दर्शन करके पापों से मुक्त हो स्वर्ग में स्थान पाए। इसी मंशा से गयासुर ने कोलाहल पर्वत पर जाकर समाधि लगा ली और भगवान विष्णु की तपस्या में लीन हो गया। तपस्या के समय वह एक पैर पर निराहार खड़ा रहता, उसके तेज से दशों दिशाएँ ढंक गयी। तब ब्रह्मा जी को चिंता हुई वो विष्णुजी के पास गए तब विष्णु जी गय के पास गए और कहा 'असुर श्रेष्ठ ! उठो, तुम्हारी तपस्या पूर्ण हुई अपना वरदान मांगो। वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कहा 'भगवान' आपके दर्शन करके ही मेरी सारी मनोकामनाएँ पूर्ण हो गयी, मुझे ऐसा आभास हो रहा है कि आप इसी रूप में मेरे अन्दर समा गए हैं आप इसी रूप में मेरे अन्दर समाऐं रहें और जो मेरे माध्यम से आपके दर्शन करें वो पुण्य-लाभ पाए तथा उसके सभी पाप नष्ट हो जाए अन्त में वो स्वर्ग में स्थान पाए' भगवान गय की इसे लोक-कल्याण की भावना से अत्यन्त प्रसन्न हो गए और तथास्तु कहकर अन्तर्धान हो गए ।

अब गयासुर जहाँ जाता वहाँ के लोगों का पाप नष्ट हो जाता और वो स्वर्ग में स्थान पाता, उसके दर्शन-मात्र से। इस कारण यमराज चितिंत हो गए कि इससे तो कर्म-फल का विधान ही समाप्त हो जायेगा। तब ब्रह्माजी ने विष्णुजी से मंत्रणा की और ब्रह्मा जी ने गयासुर से कहा कि 'असुरश्रेष्ठ ! मुझे एक महान यज्ञ करना है और उसके लिए अति पवित्र स्थान चाहिये और तुम्हारे शरीर से ज्यादा कोई भी स्थान पवित्र नहीं है। इतना सुनकर गयासुर खुशी-खुशी तैयार हो गया। वह तो जन-कल्याण के लिए तैयार ही था। ब्रह्मा जी ने यमराज सहित सभी देवताओं को लेकर गय को पत्थर से दबा दिया और उसपर बैठ गए और यज्ञ आरम्भ कर दिया। यज्ञ बहुत समय तक चला, उस समय तक गय स्थिर पड़ा रहा, उसका शरीर तनिक भी नहीं हिला पर यज्ञ समाप्त होते हीं वो उठना चाहा तब ब्रह्मा जी घबड़ा गए और भगवान् विष्णु को याद किया तब वे आकर गय के विभिन्न अंगों पर देवताओं के साथ खुद गदा लेकर गय की हृदयस्थली पर खड़े हो गए, विष्णु जी के बैठते ही गयासुर अचल, स्थिर हो गया और उसने

कहा *''अब आप सब और विष्णु की मर्यादा हेतु मैं अचल हो गया हूँ''*और भगवान् विष्णु को सम्बोधित कर कहा – *''हे भगवन अब आप मुझे पत्थर मिला के रूप में परिवर्तित कर दें।''*गयासुर का यह महान तथा लोक-कल्याण हेतु मर्यादित त्याग देखकर भगवान् ने उसे आशीर्वाद दिया *''असुरश्रेष्ठ यह महा त्याग व्यर्थ नहीं जायेगा, इस अवस्था में भी तुम्हारी कोई इच्छा हो तो माँग लो मैं निश्चय ही पूरा करूँगा।''*तब गयासुर ने भगवान से कहा *''भगवन् अब मेरी अन्तिम इच्छा यही है कि आप सभी अपरोक्ष रूप से इसी शिला पर बैठे रहें और यह शिला मरणोपरान्त धार्मिक कृत्य के लिए तीर्थ बन जाए। जो व्यक्ति यहाँ आकर अपने पितरों का श्रद्धा, तर्पण, पिण्डदान आदि करेगा उसके पितरों को नरक की पीड़ा से मुक्ति मिले तथा यह सारा क्षेत्र ऐसी ही पुण्य भूमि बन जाए''।*

भगवान् विष्णु ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा *''तुम धन्य हो गयासुर, तुमने अपने जीवन में भी कल्याण के लिए ही ऐसा वर माँगा और अब मरणासन्न स्थिति में भी मृत-आत्माओं की मुक्ति के लिए भी ऐसा ही वर माँग रहे हो। तुम्हारी इस जन-कल्याण भावना से हम सभी अत्यन्त प्रसन्न हैं और यह वरदान देते हैं कि आज से यह क्षेत्र तुम्हारें ही नाम पर 'गया' नाम से विख्यात होगा। इस क्षेत्र में आनेवाले तथा इस शिला के (विष्णुपद) दर्शन कर श्रद्धा, पिण्डदान करने वालों के पूर्वजों को जाने-अनजाने में किए गए पाप कर्मों से मुक्ति मिलेगी तथा स्वर्ग की प्राप्ति होगी और इस क्षेत्र में स्थित पर्वत गयासिर कहलायेगा। गयासिर परिक्रमा, फल्गु में स्नान तथा इस शिला के दर्शन से पितरों का कल्याण होगा।''*

इस प्रकार गयासुर असुर-कुल में जन्म लेने के बाद भी जन कल्याण के कारण ही प्रसिद्ध हो गया और यह शहर 'गयाजी' के रूप में अजर-अमर हो गया। हमें भी निरन्तर जन-कल्याण हेतु कार्य करना चाहियें ताकि मनुष्य योनि में जन्म पाने का हित सार्थक हो सके। हमें हमेशा त्याग के लिए तत्पर रहना चाहिये नि:स्वार्थ सभी की सेवा करनी चाहिये। लोक कल्याण ही सर्वोपरि है। इसीलिए कहा गया है 'गयासुर आज भी जीवित है'।

सेवानिवृत्त प्रोफेसर मनोविज्ञान
जी.बी.एम. कॉलेज, गया
मो. 9431225810

◆

य एवं हन्तारं यैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते।।
(गीता)

जो व्यक्ति इस आत्मा को मारने वाला समझता है तथा जो इसको मरा मानता है, वे दोनो ही नहीं जानते (अर्थात् अज्ञानी हैं);
क्योंकि यह आत्मा वास्तव में न तो किसी का मारता है और न ही किसी के द्वारा मारा जाता है।

पितृपक्ष में करें पितृदोष का निवारण

राजेश मंझवेकर

आश्विन के सम्पूर्ण प्रथम पक्ष तक चलने वाले पितृपक्ष में प्रेतयोनि में भटक रहे मृत आत्माओं की शांति के लिए श्रद्धा और तर्पण करने का विधान किया जाता है। मोक्षभूमि गयाधाम में श्रद्धा और तर्पण का विशेष महत्व है। प्राय: अकाल मृत्यु और आत्महत्या से मरने वाले प्रेतयोनि में चले जाते हैं। अपने शुभकार्यों, ईश प्रार्थना एवं परिजनों के श्रद्धा कर्म से मृतात्मा को इस लोक से उपर पितृलोक प्राप्त होता है। मंक्षवे निवासी कर्मकांडी पं. जितेन्द्र पांडेय ने बताया कि ज्योतिष ग्रंथों एवं पूराणों के अनुसार 18 प्रकार के प्रेत होते हैं। मनुष्य योनि में इनकी अतृप्त कामना रह जाने से यह नन्हें बच्चें, महिलाओं एवं दुर्बल व्यक्तियों को परेशान करते हैं। इनकी इच्छाएं अतृप्त होती है। यह भूलोक के पास ही रहती है। जहाँ पूजा-पाठ, गायत्री जाप, ईश वंदना एवं देव मंदिर तथा तुलसी चौरा होगा, वहां इनका आगमन नहीं होता। जब कभी इस योनि का प्रभाव जीवित व्यक्तियों पर पड़ता है तो उसे कई प्रकार का कष्ट होने लगता है।

जानें पितृदोष के लक्षण :-

मृतात्माओं की इहलोक में ही भटकते रहने पर पितृदोष अथवा अन्य कई प्रकार के लक्षण व्यक्तियों के घर में और शरीर में दिखाई पड़ने लगते हैं। पं. जितेन्द्र पांडये कहते हैं कि घर में निरंतर बीमारी का आगमन, वंश में रुकावट, संतान का जन्म लेने के साथ मृत्यु, मानसिक अशांति, व्यापार में घाटा, विवाह में अवरोध, आकस्मिक दुर्घटना, घर में परिजनों को बराबर बुरा एवं डरावना सपना आना, कुछ भी इच्छित न होना, बने काम बिगड़ जाना आदि स्थिति का सामना करना पड़े तो इसे पितृदोष समझना चाहिए तथा इसके शमन का उपाय करना चाहिए।

शांति के लिए करें उपाय :-

जब पितरों को पितृलोक में उचित स्थान मिल जाता है तो वे प्रसन्न होकर अपने परिजनों को खूब आशीर्वाद देते हैं। घर के सभी संकट दूर हो जाते हैं। पूर्वजों के प्रति श्रद्धा रखना ही श्रद्धा है। पं. जितेन्द्र पांडेय ने बताया कि तर्पण, भोजन, पिण्डदान और वस्त्रदान व दक्षिणा श्रद्धा के चार अंग होते हैं। पितृदोष एवं पूर्वजन्म के पापों से मुक्ति के लिए राहु काल में शिवपूजन अवश्य करनी चाहिए। प्रत्येक अमावस्या पर पितरों का नाम लेकर तर्पण अवश्य करे। पितृदोष निवारक कवच धारण करना भी एक उपाय है। पितृदोष से मुक्ति के लिए गया तीर्थधाम में मृतजनों का पिंडदान कराना सबसे लाभदायी होता है। भगवान राम ने भी गयाधाम के फल्गु नदी तट पर अपने पिता महाराज दशरथ का तर्पण और श्रद्धा किया था।

पितृदोष से मुक्ति के सरल उपाय :-

1. जातक को घर की दक्षिण दिशा की दीवार पर अपने स्वर्गीय परिजनों का फोटो लगाकर हार आदि चढ़ाएं और पूजा करें।
2. स्वर्गीय परिजनों की निर्वाण तिथि पर जरूरतमंदो को वह भोजन कराएं जो दिवंगत को पसंद थी।
3. इसी दिन यथाशक्ति गरीबों को वस्त्र और अन्न आदि का दान दें ।
4. पीपल के वृक्ष पर दोपहर में जल, पुष्प, अक्षत, दूध, गंगाजन, काले तिल चढ़ाएं।
5. शाम के समय में दीप जलाएं और नाग स्तोत्र, महामृत्युंजय मंत्र या रूद्र सूक्त या पितृ स्तोत्र व नवग्रह स्तोत्र का पाठ करें।
6. सोमवार प्रात:काल में स्नान कर नंगे पैर शिव मंदिर में जाकर आक के 21 पुष्प, कच्ची लस्सी, बेलपत्र के साथ शिवजी की पूजा करे। 21 सोमवार ऐसा करने से दोष कम होता है।
7. प्रतिदिन इष्ट देवता व कुल देवता की पूजा करें।
8. कुंडली में पितृदोष होने से किसी गरीब कन्या का विवाह या उसकी बीमारी में सहायता करें।
9. ब्राह्मणों को प्रतीकात्मक गोदान करें, गर्मी में पानी पिलाने के लिए कुआं बनवाएं या राहगीरों को शीतल जल पिलाएं।
10. पवित्र पीपल तथा बरगद के पेड़ लगाएं। विष्णु भगवान के मंत्र जाप, श्रीमद्भागवत गीता का पाठ करें।
11. पितरों के नाम पर गरीब विद्यार्थियों की मदद करने तथा दिवंगत परिजनों के नाम से अस्पताल, मंदिर, विद्यालय, धर्मशाला, आदि का निर्माण करवाने से अत्यंत लाभ मिलता है।

पत्रकार
मंझवे, नवादा (बिहार) मो. 9334988252

◆

श्राद्ध करते समय क्या करें और क्या न करें ?

श्रीमती अनुराधा प्रसाद

भारतीय संस्कृति में अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा निवेदन, पूजन, हवन, तर्पण करने का पुनीत समय पितृपक्ष के नाम से जाना जाता है। पितरों का श्राद्ध करने वाला गृहस्थ दीर्घायु, पुत्र-पौत्रादि, यश, स्वर्ग, पुष्टि, बल, लक्ष्मी, पशु, सुख, साधन तथा धन धन्यादि की प्रप्ति करता है। पूर्वजों की कृपा से सभी तरह की समृद्धि और सौभाग्य की प्रप्ति होती है। आयु, प्रजा, धन-धान्य, राज्य, प्रजा तथा मोक्ष की प्राप्ति पूर्वजों की प्रसन्नता पर ही मिलती है। श्राद्ध करते समय विभिन्न शास्त्रों में यह बताया गया है कि उस समय क्या करना चाहिए और कौन-कौन से कार्य नहीं करना चाहिए, ताकि श्राद्ध करने के सम्पूर्ण फल की प्राप्ति हो सके।

श्राद्ध में प्रयुक्त आठ दुर्लभ करने वाली चीजें :-

श्राद्ध करने का मुख्य समय 'कुतुप बेला' दिन का आठवां मुर्हुत्त यानी दिन में 11 बजकर 36 मिनट से 12 बजकर 24 मिनट का समय, मध्याह्न काल का समय, खड्गपात्र कम्बल, चांदी, कुश, तिल, गौ और दौहित्र (कन्या का पुत्र) ये सारी चीजें श्राद्ध के लिए बड़े ही दुर्लभ है। कुश और तिल ये दोनों भगवान् विष्णु के शरीर से प्रादुर्भूत हुए है। अत: ये श्राद्ध की रक्षा करने में सर्व समर्थ हैं, ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। दौहित्र, कुतुप और तिल, चांदी का दान और भगवत्स्मरण, ये सब श्राद्ध करने में अत्यन्त पवित्र माने जाते हैं।

श्राद्ध में तुलसी की महिमा:

तुलसी की गंध से पितृगण प्रसन्न होकर गरुड़ पर सवार हो विष्णुलोक को चले जाते हैं। तुलसी से पिण्डदान किये जाने पर हमारे पूर्वज सदा तृप्त रहते हैं, ऐसा शास्त्रों का कहना है। दूध, गंगाजल, मधु, तसर का कपड़ा का प्रयोग होना श्राद्ध के महत्व को दर्शाता है। श्राद्ध करते समय कार्य में जल्दबाजी, क्रोध और अपवित्रता नहीं करनी चाहिए।

श्राद्ध में फूलों का महत्त्व:

गयाजी, पुष्कर, प्रयागराज, हरिद्वार आदि तीर्थों में श्राद्ध करने की विशेष महिमा है। शास्त्रों में वर्णन है कि अपने घर में, गोशाला, देवालय, गंगा, यमुना, नर्मदा, फल्गु आदि पवित्र नदियों के तट पर श्राद्ध करने का अत्यधिक महत्त्व है। श्राद्ध करने की जगह को गोबर मिट्टी और जल से धोकर शुद्ध कर लेना चाहिए। दक्षिण दिशा की ओर मुख करके यह कार्य करना चाहिए। श्राद्ध में मुख्य रूप से सफेद पुष्प का विशेष महत्त्व माना जाता है। स्मृत्तिसार के अनुसार अगस्त का फूल, भृंगराज, तुलसी, शनपत्रिका, चम्पा, तिल, पुष्प, ये छह पूर्वजों को प्रिय होते हैं।

श्राद्ध में ब्राह्मण तथा अन्न फलादि:

शील, शौच एवं प्रजा से युक्त सदाचारी, संन्धवन्दन एवं गायत्री मंत्र का जाप करने वाला ब्राह्मण के द्वारा ही श्राद्ध का कार्य सम्पूर्ण करवाना चाहिए। जहां श्राद्ध में एक ओर गाय का दूध, दही और घी का प्रयोग होना चाहिए वहां दूसरी ओर जौ, धान, तिल, गेहूं, मूंग, सरसों तेल, चावल, कंगनी आदि से पितरों को तृप्त करने का प्रावधान है। फलों में आम, अमड़ा, बेर, बिजौरा, आंवला, खीर, नारियल, फालसा, अंगूर तथा उस समय के मौसमी फलों के द्वारा भावपूर्वक श्रद्धा करना उचित माना गया है।

श्राद्ध में पाद-प्रक्षालन विधि:

ऐसा माना गया है कि श्राद्ध में ब्राह्मणों को बैठाकर पैर धोना शुभ है। पत्नी को दाहिनी तरफ रखकर जल गिराना चाहिए। श्राद्ध में ब्राह्मणों को भोजन कराते समय मौन रहना जरूरी है। भोजन करते समय

ब्राह्मण तथा भोजनकर्त्ता को भी श्राद्धान्न की प्रशंसा या निन्दा करने से बचना चाहिए। वैसे तो सोना, चांदी, कांसे और तांबे के पात्र इस कार्य के लिए सर्वोत्तम हैं पर इसके अभाव में पलाश आदि वृक्ष के पत्तल पर ही कार्य करना चाहिए न कि केले के पत्ते या मिट्टी के पात्र द्वारा।

श्राद्ध करते समय कुछ ऐसी बातें है जिन्हें नहीं करना चाहिए। श्राद्ध करने के दौरान दातुन, पान, तेलमर्दन, उपवास, स्त्री संभोग, औषधि तथा दूसरों का दिया हुआ भोजन नहीं करना चाहिए। चिता में बिछाये हुए, रास्ते में पड़े हुए, पितृतर्पण एवं ब्रह्मयज्ञ में उपयोग किया हुआ बिछावन, गंदगी से तथा आसन में से निकाले हुए पिण्डों के नीचे रखे हुए तथा अपवित्र कुश निषिद्ध माने जाते हैं। पुरानी लकड़ी, कस्तूरी, रक्त चंदन, गोरोचन तथा फूलों में कदम्ब, केवड़ा, मौलश्री, बेलपत्र, लाल तथा काले रंग के सभी फूल तथा तेज गंधवाले और गंध रहित सभी फूल श्राद्ध में वर्जित हैं। मसूर, राहड़, गाजर, लौकी, बैगन, शलजम, हींग, प्याज, लहसुन, काला नमक, जीरा, पीला सरसो, चना, महुआ आदि वस्तुओं का प्रयोग श्राद्ध करते समय बचना चाहिए ।

उपरोक्त सारी बातों को ध्यान में रखते हुए जो मनुष्य अपने सामर्थ्य के अनुसार श्राद्ध करता है, वह साक्षात् ब्रह्मा से लेकर तृण पर्यन्त सभी प्राणियों को तृप्त करता है। भारतीय धर्मशास्त्र में उन तीन ऋणों की चर्चा है जिन्हें उतारे बिना किसी भी व्यक्ति का सांसारिक फर्ज पूरा नहीं होता। ये तीन ऋण है, देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋण। इन तीनों में पितृऋण इसलिए ज्यादा महत्त्वपूर्ण है कि माता-पिता को प्रत्यक्ष देवता कहा गया है।

मौलागंज, अन्दरगया, गया

◆

पूर्वजों के प्रति श्रद्धा का महापर्व : पितृपक्ष

समीर परिमल

श्राद्ध यानी जो श्रद्धा से किया जाए- 'श्रद्धा इदम् श्राद्धं' । हमारे भारतवर्ष में श्राद्ध के लिए हरिद्वार, गंगासागर, जगन्नाथपुरी, कुरुक्षेत्र, चित्रकूट, पुष्कर, बद्रीनाथ आदि स्थान महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। किन्तु इन सब में 'गया' का स्थान सर्वोपरि है। गरुड़ पुराण के अनुसार गया जाने के लिए घर से निकलने पर चलने वाले प्रत्येक कदम पितरों के स्वर्गारोहण के लिए एक-एक सीढ़ी बनाते हैं। 'पितृपक्ष' पूर्वजों के प्रति श्रद्धा का महापर्व है।

आश्विन कृष्ण प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक 15 दिनों के इस पितृपक्ष में लोग अपने पितरों (पूर्वजों) को जल देते हैं तथा उनकी मृत्यु तिथि पर पार्वण श्राद्ध करते हैं। दुर्गापूजा से पहले वाली अमावस्या को 'महालय' के नाम से जाना जाता है। यह विशेष दिन हमारी उन सभी पिछली पीढ़ियों को समर्पित होता है, जिन्होंने हमारे जीवन में किसी न किसी रूप में अपना योगदान दिया हे। वैसे तो लोग अपने मरे हुए माँ-बाप को अपनी श्रद्धांजलि देने के तौर पर एक धार्मिक रिवाज के रूप में इस दिन को मनाते है, लेकिन दरअसल यह उन सभी पीढ़ियों के प्रति अपना आभार प्रकट करने का एक जरिया है जो हम से पहले इस धरती पर आई थीं। इस समय भारतीय उपमहाद्वीप में नई फसलों का पकना भी प्रारंभ हो जाता है। इसलिए पूर्वजों के प्रति सम्मान और आभार प्रकट करने के प्रतीक रूप में सबसे पहला अन्न उन्हें पिंड के रूप में भेंट करने की प्रथा

रही है। इसके बाद ही हम नवरात्रि विजयादशमी दिवाली जैसे त्यौहार रमनाते हैं।

एक प्रचलित कथा है कि राक्षस भस्मासुर का वंशज गयासुर ने कठिन तपस्या कर ब्रह्मा जी से वरदान प्राप्त किया था कि उसका शरीर देवताओं की तरह पवित्र हो जाए और लोग उसके दर्शन मात्र से पाप मुक्त हो जाएं। यह वरदान मिलने के बाद लोग बिना भय के पाप करने लगे तथा स्वर्ग की जनसंख्या तेजी से बढ़ने लगी और प्राकृतिक नियम भंग होने लगे। फलस्वरूप देवताओं ने इसका हल ढूंढ़ते हुए गयासुर से यज्ञ हेतु पवित्र भूमिस्थल उपलब्ध कराने की मांग की। गयासुर ने अपना शरीर देवताओं को यज्ञ के लिए दे दिया। जब गयासुर लेटा तो उसका शरीर 5 कोस में फैल गया और कालांतर में यही पांच कोस गया के नाम से जाना गया। परन्तु गया के मन से लोगों को पाप मुक्त करने की इच्छा समाप्त नहीं हुई। उसने देवताओं से वरदान मांगा कि यह स्थान लोगों को तारने (मुक्ति देने) वाला बना रहे, लोग यहाँ पर किसी की मुक्ति की इच्छा से पिंड दान करें और उन्हें मुक्ति मिले।

पुराणों में पितृपक्ष एवं श्राद्ध को लेकर कई कथाएं हैं जिनमें कर्ण के पुनर्जन्म की कथा अत्यंत प्रचलित है। हिन्दू धर्म के नायक श्रीराम द्वारा श्री दशरथ और जटायु को गोदावरी नदी पर जलांजलि देने का उल्लेख भी रामचरितमानस में है एवं भरत जी द्वारा दशरथ हेतु दशगात्र विधान का उल्लेख '**भरत कीन्हीं दशगात्र विधान**' भी है। महाभारत के अनुसार, सबसे पहले श्राद्ध का उपदेश महर्षि निमि को महातपस्वी अत्रि मुनि ने दिया था। इस प्रकार पहले निमि ने श्राद्ध का आरम्भ किया, उसके बाद अन्य महर्षि भी श्राद्ध करने लगे। धीरे-धीरे चारों वर्णों के लोग श्राद्ध में पितरों को अन्न देने लगे। लगातार श्राद्ध का भोजन करते-करते देवता और पितर पूर्ण तृप्त हो गए। मान्यता है कि पितरों की भक्ति से मनुष्य को पुष्टि, आयु, वीर्य और धन की प्राप्ति होती है। ब्रह्माजी, पुलस्त्य, वसिष्ठ, पुलह, अंगिरा, क्रतु और महर्षि कश्यप-ये सात ऋषि महान योगेश्वर और पितर माने गए हैं। मरे हुए मनुष्य अपने वंशजों द्वारा पिंडदान पाकर प्रेतत्व के कष्ट से छुटकारा पा जाते हैं।

भारतीय धर्म ग्रंथों के अनुसार मनुष्य पर तीन प्रकार के ऋण प्रमुख माने गए हैं - पितृ ऋण, देव ऋण तथा ऋषि ऋण । इनमें सर्वोपरि है - पितृ ऋण। पितृ ऋण में पिता के अतिरिक्त माता तथा वे सभी बुजुर्ग भी सम्मिलित हैं जिन्होंने हमें अपना जीवन धारण करने तथा उसके विकास में सहयोग दिया। उत्तर आधिुनिकता के इस दौर में भी पितृपक्ष, श्राद्ध तथा पिंडदान का महत्व पूर्ववत् है। किन्तु यह ध्यान रखना आवश्यक है कि पितरों को केवल धन से नहीं, बल्कि भवना से प्रसन्न किया जाता चाहिए। पितृपक्ष में अपशब्द बोलना, ईर्ष्या करना, क्रोध करना आदि निषिद्ध माना जाता है और उनका त्याग करना ही चाहिए। धार्मिक रीति रिवाजों के अतिरिक्त हमें मन-कर्म-वचन से भी अपने पूर्वजों का स्मरण कर उनके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करनी चाहिए। यदि इस अवसर पर उनके नाम से स्कूल, अस्पताल, धर्मशाला, प्याऊ आदि के निर्माण में तन-मन-धन से सहयोग किया जाए तो हमारे पूर्वजों की हम पर सदैव कृपा बनी रहेगी ।

302, महा सरस्वती टावर, अभियंता नगर
बेली रोड, दानापुर, पटना (बिहार) 801503
मोबाईल - 9934796866

◆

श्राद्ध पिंडदान तथा तर्पण का उपयुक्त स्थान 'गया'

योगेश कुमार मिश्र

अगर श्राद्ध का महाकुंभ कहीं नजर आता है तो वह है 'गया'। यह वही स्थान है जहाँ लोग दूरदराज से अपने मृत पूर्वजों का श्राद्ध करने प्रत्येक वर्ष खास करके पितृपक्ष में आया करते हैं। यह शहर बिहार की राजधानी पटना से करीब 92 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम अंत:सलिला फल्गु के पवित्र तट पर अवस्थित है।

गया का विश्व भर में इस मामले में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह मगध प्रदेश का हृदयक्षेत्र तक है। इसे ऐतिहासिक धार्मिक, पुरातात्विक तथा प्राचीनतम मर्यादा एवं गरिमा प्राप्त है। एक पखवाड़े तक चलने वाला पितृपक्ष मेला विश्व की नजरों में महत्तम है। वैसे तो गया में वर्षों श्राद्ध एवं पिण्डदान का कार्य चलता ही रहता है। भाद्रपद की पूर्णिमा से लेकर आश्विन माह की अमावस्या के समय को पितृपक्ष तो कहते हैं ही, इस अवधि को महालया भी करते हें।

धर्मशास्त्र की मान्यता है कि अगर कोई व्यक्ति अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति की कामना रखता है, अपने पूर्वजों का उद्धार चाहता है, उन्हें नरक से स्वर्ग भेजना चाहता है तो वह अवश्य ही 'गया' जाकर श्राद्ध पिण्डदान और तर्पण का कार्य अंत:सलिला फल्गु में स्नान कर तमाम वेदियों पर करें। कहा गया है -

गया प्राप्तं सुतं दृष्ट्वा पितृणामुत्सवो भवेत् ।
(वायु पु० ३० 43/9)

तात्पर्य यह है कि पुत्र को गया में आया देख कर पितरों के लिए उत्सव होता है। अंत:सलिला फल्गु गया में ही बहती है। गया पिण्डदान के लिए सर्वोत्तम स्थान माना जाता है। इस स्थान की गरिमा इसलिए भी है कि यहाँ पूरे विश्व के हिन्दू अपने पूर्वजों की मोक्ष प्राप्ति के लिए पिंडदान करने आते हैं।

वायु पुराण के आधार पर :-

गंगा पादोदकं विष्णोः फल्गु ह्यादि गदाधरः
स्वयं हि द्रवरुपेण तस्माद् गंगाधिकं विदुः ।

तात्पर्य है कि यहाँ भगवान विष्णु 'गदाधर' के नाम से निवास करते हैं। शास्त्र कहता है कि मनुष्य को मानव तन में जन्म लेकर तीन प्रकार के ऋण क्रमश: देव ऋण, ऋषि ऋण तथा पितृऋण उतारने का दायित्व 'जन्म जन्मांतरों' से चला आ रहा है।

गया आकर श्राद्ध कर्म करने से उसके (कर्त्ता के) पितृगण संतुष्ट होकर अक्षय लोक प्राप्त करते हैं श्राद्ध करने वाले को पुण्य फल प्राप्त होता है तथा मानसिक शांति मिलती है।

गया के बारे में जन श्रुति है कि यह स्थान 'गयासुर' नामक एक दैत्य के नाम पर पड़ा। मान्यता है कि गयासुर ने गुरु शुक्राचार्य से विद्या ग्रहण करने के पश्चात् भगवान विष्णु से विशिष्ट वरदान के ध्येय से अखण्ड तपस्या की थी, गयासुर की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने इसे मनचाहा वरदान दिया :- ''जो कोई मनुष्य तुम्हारा दर्शन कर लेगा या स्पर्श करेगा तो उसे सीधे स्वर्ग की प्राप्ति हो जायेगी।''

भगवान विष्णु द्वारा 'गयासुर' को प्राप्त इस वरदान से पूरी यमपुरी में उथल-पुथल मच गई। यमराज तो यमराज सभी देवताओं में इसको लेकर चिंता होने लगी। फलस्वरूप यमराज के साथ-साथ सभी देवताओं ने आकर विष्णु का अनुनय विनय किया। इस अनुरोध को सुनकर भगवान विष्णु ने ब्रह्मा से कहा, दिशा निर्देश दिया। अंतत: समस्या का समाधान नहीं देखकर भगवान विष्णु ने अपनी गदा से धर्मशिला पर जोर से प्रहार करने की योजना बनाई।

गयासुर ने उक्त योजना का पूर्वानुमान करते हुए विष्णु भगवान से प्रार्थना की कि हे प्रभु! आप मेरे ऊपर गदा प्रहार करने जा रहे हैं लेकिन इसके पहले कृपया मुझे एक वरदान और देने की कृपा करें कि – जिस शिला पर आप प्रहार करेंगे उस पर आपके पैरों के चिह्न अंकित हों जायं, सभी देवताओं का उस शिला पर वास रहे तथा यदि इस शिला पर आकर कोई मनुष्य अपने पितरों का श्राद्ध, पिंडदान एवं तर्पण करें तो पितरों के साथ–साथ उस मनुष्य को भी मृत्यु पर्यन्त स्वर्ग की प्राप्ति हो। तत्पश्चात् भगवान विष्णु ने घोषणा की कि आज से यह पवित्र क्षेत्र तुम्हारे नाम 'गया' से पुकारा जायेगा। यहाँ पर जो भी व्यक्ति अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए पिण्डदान, श्राद्ध एवं तर्पण करेंगे तो उनके पितरों को प्रेतयोनि और नरक लोक से मुक्ति मिलकर उन्हें सीधे स्वर्गलोक की प्राप्ति होगी ।

इतना सब कुछ होने के बाद भगवान विष्णु ने शिला पर अपनी गदा से एक जोरदार प्रहार किया। भगवान विष्णु द्वारा गयासुर को दिये गये वरदान के फलस्वरूप तब से लेकर आजतक गया में दाह संस्कार, श्राद्ध, पिंडदान व तर्पण आदि कर्मकांड किये जाते रहे हैं।

पौराणिक महत्ता के मुताविक मनुष्य तो मनुष्य स्वयं भगवान के मानव रूपी अवतारों जैसे– श्रीराम द्वारा भी इसी 'गया' में अपने–अपने पितरों का पिंडदान किया गया है। धर्मराज युधिष्ठिर, भीष्म पितामह, बलराम आदि ने भी यहाँ आकर पितरों का पिंडदान किया हे।

यहाँ पितरों की आत्मा की शांति के लिए जिन स्थानों पर जो तीर्थ कर्म या श्राद्ध कर्म सम्पन्न किये जाते हैं उन्हें 'वेदी' कहा जाता है। प्राचीन काल में ऐसे वेदी स्थल की संख्या 364.65 के करीब थी लेकिन वर्त्तमान समय में 55 के करीब है। जिसमें मंदिर रूप में 'विष्णुपद' नदी रूप में 'फल्गु जी' और मोक्षवट के रूप में 'अक्षयवट' सर्वप्रमुख है और मुख्यत: इन्हीं तीनों को त्रिस्तंभ वेदी कहा गया है।

मुख्य रूप से कुछ वेदियों के नाम इस प्रकार हैं, जैसे – गोदावरी, रामशिला, सीताकुंड, प्रेतशिला, गायत्रीघाट, उत्तर मानस, गदालोल, भीमगया, धर्मारण्य, मातंगी, सरस्वती, सोलहवेदी, ब्रह्मसर, रामगया, आदि गया आदि प्रमुख है। जहाँ तक पिंडदान के लिए प्रयुक्त सामग्रियों के नाम है – इसमें गाय का दूध, घी, खोवा के अलावा अरवा चावल, जौ, गेहूँ के आटे, काला तिल प्रमुख है। पिंडदान में भैंस के दूध तथा इससे बनी सामग्री वर्जित है।

अंतत: जिस प्रकार से बनारस को घाटों और मंदिरों का शहर कहा गया है, उसी प्रकार से 'गया' कोा भी मंदिरों की नगरी कहा गया है। गृह कलह, द्वेष, पितृदोष, तनाव, जीवन में आ रही नित्य नयी–नयी समस्याओं के निदान के लिए निम्न मंत्र पढ़े जाते हैं – **''ऊँ श्री सर्व पितृदोष निवारणाय क्लेश तन हन सुख शांति देहि देहि फट् स्वाहा।''**

उक्त मंत्र का 108 बार जाप करने से फल तत्काल मिलता है तथा आत्म संतुष्टि एवं शांति मिलती है।

सेवानिवृत्त, अंचल अधिकारी, मोहड़ा (गया)
पता – स्वराज्यपुरी रोड, मेखलौटगंज
तेली गली, महावीर स्कूल के पास, गया
मो० 8809001216

◆

जन्मपत्र में पितृदोष तथा उसका निवारण गयाश्राद्ध

सुबोध कुमार मिश्र

''अवश्यमेवभोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'' गरुड़ पुराण की उक्ति प्राणिमात्र के जीवन में चरितार्थ है। चौरासी लाख योनियों (जीवों) में मानव को सर्वश्रेष्ठ माना गया है क्योंकि जन्म से मृत्यु पर्यन्त शेष सारी चीजें मानव तथा पशुओं या अन्य प्राणियों में समान होते हैं, किन्तु विधाता ने मानव को एक चीज अन्य जीवों से अधिक प्रदान किया है- 'धर्म' अर्थात् कर्त्तव्य विवेक। फलतः मानव ज्ञानी है तथा उसे स्वकृत धर्माधर्म (पुण्य और पाप) के फल भोगने पड़ते हैं। हमारे यहाँ शास्त्र वचन को प्रमाण माना जाता है फलतः हम उसपर सन्देह नहीं करते। तद्नुसार हम जो भी शुभाशुभ कर्म करते हैं उनका फल तीन भागों में बाँटकर भोगते हैं। इस प्रत्येक तीसरा अंश का नाम क्रमशः संचित प्रारब्ध और भोग्य कर्मफल है। तद्नुसार अपने अच्छे या बुरे कर्मों का एक तिहाई फल सुयश-अपयश, हानि-लाभ, घटना क्रम तथा ख्याति-कुख्याति के रूप में होते हैं। इसमें एक तिहाई (दूसरी तिहाई) भविष्य के लिए संचित होता है जिसका भोग्य हमें अगले जीवन में प्राप्त होगा। तीसरी तिहाई के रूम में प्रारब्ध फल हैं पूर्व जन्म के शुभाशुभ कर्मों के संचित फल को इस जन्म में प्रारब्ध के रूप में शुभाशुभ अर्थात् सुख दुःख के रूप में भोगते हैं जिसका निर्देशन ही हमारा जन्म पत्र और उसमें विविध ग्रहों की स्थितियाँ तथा उनके भोग्य दशाफल है।

हमारे जन्म पत्र के बारह भाव एवं उनमें उपस्थित ग्रहों की स्थितियाँ हमारे पूर्व, जन्मार्जित कर्मों के अनुरूप आनेवाली सुख दुःखात्मक स्थितियों के संकेतक हैं। इनमें कुछेक ग्रह भोग पितृदोष सूचक हैं, जो हमारे पूर्व जन्म कृत पित्रावमान अथवा पितृजनों के प्रति किये गये अपराध के परिणाम स्वरूप पितृकोप को इंगित करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति को संतानहीनता, बंध्यत्व, काक बन्ध्यतव, रोजी रोजगार की अवनति, विवाह में बाधा, अन्नधन का अभाव, मानसिक अशांति, आकस्मिक संकट आदि के दुष्परिणाम मानव को जीवन में झेलने पड़ते हैं।

जन्म कुंडली में सूर्य और शनि की युति, अथवा दोनों की परस्पर दृष्टि, सूर्य पर शनि की तृतीय अथवा दशम भाव की पूर्ण दृष्टि, तुलालग्नगत (नीचराशिगत) सूर्य, तुलाराशि में सूर्य और शनि की युति (नीचराशिगत सूर्य और उच्च राशिगत शनि) सूर्य अथवा चन्द्रमा के साथ राहु का ग्रहणयोग, प्रथम द्वितीय एवं द्वादश भाव में राहु की स्थिति, गुरु और की युति (गुरु चाण्डाल योग), सूर्य शनि और राहु का योग चन्द्रमा और केतु का योग, सूर्य और चन्द्रमा की युति, शुक्र का राहु शनि अथवा मंगल से पीड़ित होना (युति अथवा दृष्टि), लग्नेश का नीच राशिगत, निज नवांशगत अथवा शत्रुराशिगत होना अथवा शत्रुराशि से पंचमस्थ होना, लग्न और पंचम भाव पर पाप ग्रहों के प्रभाव, व्ययेश का लग्न में, अष्मेश का पंचम में तथा दशमेश का अष्टम् भाव में अवस्थित होना पितृदोष का सूचक होता है। इसके परिणाम स्वरूप संतान का न होना अथवा संतान बाधा होती है।

इसी तरह पंचम भाव में तुलाराशिगत सूर्य, मकर अथवा कुंभ के नवांश में स्थित सूर्य, पंचम भाव पर पापग्रह का प्रभाव (अवस्थिति अथवा दृष्टि) हो तो पितृदोष से निःसंतानता अथवा संतान बाधा होती है। चन्द्रमा अगर पाप कर्तरियोग पीड़ित होकर अष्टम् भाव में हो अथवा अष्टम् भाव पर पापग्रह का प्रभाव हो तो किसी स्त्री से सम्बन्धित पितृदोष होता है। गुरु अगर सिंहराशिगत पंचमेश अथवा सूर्य से योग करते हैं। तो किसी पुरुष पितर के कारण पितृदोष होता है।

हर व्यक्ति के पिण्ड का कोषगत (सेलगत) सम्बन्ध पूर्व के सात पीढ़ियों तक पूर्णत: प्रभावी होता है। यही कारण है कि हमारे शास्त्रों में सात पीढ़ियों तक मरणाशौच का प्रमाण है। यह तथ्य शास्त्रीय होने के साथ पूर्णत: वैज्ञानिक है कि पिता के जिस शुक्राणु के रूप में जीवमातृगर्भ में प्रवेश पाकर आत्म विस्तार करता है तथा जिस माता के शरीरस्थ के रूप में जीवमातृगर्भ में प्रवेश पाकर आत्म विस्तार करता है तथा जिस माता के शरीरस्थ पोषक तत्त्व को इस क्रम में वह ग्रहण करता है उनमें 84 अंश होते हैं। उनमें 28 अंश पिता के 21 अंश पितामह के 15 अंश प्रपितामह के तथा 10 अंश वृद्ध प्रपितामाह के, 6 अंश वृद्धतर प्रपितामह के, 3 अंश वृद्धतम प्रपितामह के तथा 1 अंश उनके भी पूर्व प्रपितामह के अर्थात् सप्तम पुरुष के होते हैं। इतना ही अंश मातृपक्षीय भी है। यही कारण है कि हम सात पीढ़ियों तक कोशिकाओं (सेलों) से सीधा सम्बन्ध रखते हैं और वहाँ तक वंश के सभी पूर्वजों के रक्त की एकता रहती है। मानव की आकृति प्रकृति, स्वभाव तथा संस्कारादि में इतने पीढ़ियों का अंश समाहित होता है। हर जीवात्मा में जितनी पीढ़ियों के पितरों के 10 से ज्यादा अंश होता है अर्थात् प्रपितामह तक (कुछ मतानुसार वृद्ध प्रपितामह तक हम विशेष रूप से ऋणी होते हैं तथा वहाँ तक पितरों के प्रति कर्त्तव्यच्युति जन्य अपराध पितृदोष के कारण होते हैं जिसके फलस्वरूप हमें जीवन की विविध यातनाएँ भुगतानी पड़ती है।

उक्त पितृदोष के निवारण का एक ही उपाय है, उनकी मुक्ति के निमित्त ग्रहणकाल में तथा पितृतीर्थ में श्राद्ध। इन पितृतीर्थों में गयाश्राद्ध की महिमा सर्वाधिक है। जो लोग गयाधाम में आकर पितृपक्ष में अथवा सूर्यग्रहण काल में अथवा अन्य किसी भी दिन अपने पितरों के निमित्त एकोद्दिष्ट अथवा सामूहिक पार्वण श्राद्ध करते हैं उनके अनन्त पीढ़ियों तक पूर्वज तृप्त होकर मोक्ष को प्राप्त करते तथा अपनी संततियों को मंगलकारी आशीर्वाद प्रदान करते हैं। गरुड़ पुराण में कहा गया है :-

आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्ष सुखानिच।
प्रयच्छन्ति तथा राज्यं पितरः श्राद्ध तर्पिताः।।

गयाधाम में भगवान विष्णु समागत भक्तों एवं उनके पितरों को मुक्ति प्रदान करने के लिए गदाधार रूप में अवस्थित हैं। गयाधाम पितृतीर्थ की महिमा तो पुराणों में इतनी बतलायी गई है कि पितृश्राद्ध का संकल्प लेकर घर से गयातीर्थ के लिए प्रस्थान कर संतान का एक-एक कदम चलने से पितरों के लिए स्वर्ग के एक-एक सोपान निर्मित होते हैं। यथा

गृहच्चलितमात्रेण गयायां गमनं प्रति।
स्वर्गारोहणसोपानं पितृणां तारणाय च।।
(गरुड़ पुराण)

गयाधाम में विशेष रूप से पितृपक्ष में अपने पुत्र पौत्रों को देखकर पितर अतिशय आनंदित होते हैं इस आशा से कि वे उनकी मुक्ति के लिए गया क्षेत्र में पिण्डदान या तर्पण अवश्य करेंगे।

गयाप्राप्तं सुतं दृष्ट्वा पितृणामुत्सवो भवेत्।
पद्भ्यामपि जलं स्पृष्ट्वा अस्मभयं किन्न दास्यति।।
(गरुड़ पुराण 83/61)

पुत्र पौत्रादि कोई भी संतान अथवा बंशज द्वारा गयाकूप नामक पवित्र तीर्थ में जिसके भी नाम से पिण्डदान किया जाता है उन्हें शाश्वत गति की प्राप्ति होती है।

आत्मजोऽप्यन्नजोवापि तथान्या वा गयाकूपो
यदा तदा।
यन्नाम्ना पातयेत्पिण्डं तं नयेद् ब्रह्मशाश्वतम्।।

पंचकोश अर्थात् पन्द्रह किलोमीटर में विस्तीर्ण सम्पूर्ण गया क्षेत्र ही मोक्षधाम है। इस क्षेत्र में जहाँ कहीं भी पिण्डदान करके पितरों को अक्षय

ब्रह्मलोक प्रदान करता है।

गयायां नहि तत्स्थानं यत्र तीर्थों न विधते।
पञ्चक्रोशे गयाक्षेत्रे यत्र तत्र तु पिण्डदः।।
अक्षयं फलमप्नोति ब्रह्मलोकं नयेत् पितृण।।
ग०पु० 83/39-40

गरुड़ पुराण में गयाधाम की महिमा यहाँ तक बतलायी गयी है कि पितरों के निमित्त गयागमन मात्र से व्यक्ति पितृऋण से मुक्त हो जाता है। उसके जन्म जन्मांतर के सारे पाप दूर हो जाते हैं।

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वंगनागमः।
पापं तत्संगजं सर्वं गया श्राद्धाद्धिनश्यति।।
ग०पु० 82/17

स्पष्ट है कि पितृदोष के शमनार्थ, पितृकोप एवं पितृशाप से मुक्त्यर्थ एवं उनकी कृपा प्राप्ति के लिए गया श्राद्ध एवं तर्पण तथ संभव हो तो इसके बाद श्रीमद्भागवत का सप्ताहपरायण सर्वश्रेष्ठ साधन तथा पितृमुक्ति के अनन्य उपाय है। गयाश्राद्ध से पितर तो मुक्ति प्रद भी है। यहाँ श्राद्ध करने से स्वकुल, मातृकुल, श्वसुर कुल, गुरुकुल के साथ सकुल बन्धु बान्धवों को मुक्ति प्रदान कर उन दिव्य आत्माओं के कृपापूर्ण आशीर्वाद प्राप्त किये जा सकते हैं। जन्मांतर से प्राप्त पितृदोष निवारण का एक मात्र उपाय है गयाधाम में पितरों का श्राद्ध एवं परम पावनी फल्गु जल से उनका तर्पण।

संस्थापक, श्री विद्या बगलामुखी पीठम्
पडाव, वाराणसी

◆

धर्मेणै वर्षयस्तीर्णा धर्मे लोकाः प्रतिष्ठिताः।
धर्मेण देवता ववृधुर्धर्मै चार्थः समाहित।।

महाभारत-वन 313/128

धर्म के द्वारा ऋषिगण इस भव-सागर से पार हो गए।
सम्पूर्ण लोक धर्म के आधार पर ही टिके हुए हैं; धर्म से ही देवता बढ़े हैं
और धन भी धर्म के ही आश्रित है।

◆

नचलति निजवर्ण धर्म तो यः सममतिरात्म सुहृदिपक्षपक्षे
नहरति नच हन्ति किञ्चदुच्चैःसितयवंस तयवेहि विष्णु भक्तम्

विष्णु पुराण - 3/7/20

जो पुरूष अपने वर्णधर्म से विचलित नहीं होता, अपने सुदृढ़ और विपक्षियों में समान भाव रखता है, किसी का धन हरण नहीं करता; न किसी जीव को मारता ही है, उस अत्यन्त रागादि शून्य और निर्मल मन व्यक्ति को विष्णु का भक्त जाना।

पितृपक्ष आज भी प्रासंगिक

डॉ० भावना शेखर

हिन्दू धर्म में पुनर्जन्म की मान्यता है। श्रीमद्भागवद्गीता में आत्मा को अजर-अमर और देह को मरणशील माना गया है। दार्शनिकों के अनुसार यह संसार मृत्युलोक कहलाता है। मृत्यु के उपरांत आत्मा शरीर छोड़ देती है और सूक्ष्मशरीर के रूप में पितृलोक में रहने लगती है। पितृलोक के ऊपर सूर्यलोक और उसके ऊपर सबका अभीष्ट स्वर्गलोक है। स्वर्गलोक जाने से पहले पितृलोक में आत्मा अपने कर्मों के अनुसार एक वर्ष से लेकर सौ वर्षों तक रहती है। एक प्रकार से इसे वेटिंग हॉल कहा जा सकता है, जहाँ दूसरा जन्म लेने से पहले आत्मा को प्रतीक्षा करनी पड़ती है। सूक्ष्म शरीर में रहने वाला आत्मा 'प्रेत' कहलाता है। प्रेत का अर्थ है - प्रिय के अतिरिक्त की अवस्था यानि इस अवस्था में वह भूख-प्यास और अपने प्रियजनों से मोहमाया को नहीं छोड़ पाता। इन्हीं की प्रप्ति के लिये आत्माएं पन्द्रह दिन के लिये भूलोक पर आती हैं। यह पन्द्रह दिनों का पक्ष ही पितृपक्ष कहलाता है। जो भाद्रपद पूर्णिमा के बाद आश्विन मास के कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से अमावस्या तक चलता है। गरुड़पुराण के अनुसार इस समय हमारे पूर्वज अपने-अपने घरों के आस-पास मंडराते हैं। वे अतिथि, भिक्षुक, आगन्तुक, पशु, पक्षी या किसी भी जीव के रूप में अपनी संततियों के सामने आते हैं। जो उनका श्राद्ध करते हैं, उनके पितर प्रसन्न होकर अपनी सन्तान पर आशीष बरसाते हैं किन्तु असन्तुष्ट रहने की स्थिति में अतृप्त पितर दु:खी होकर श्राप दे सकते हैं, जिसे पितृदोष कहते हैं। पितृदोष के परिणामस्वरूप परिवार में अशांति, रोग, निर्धनता, व्यापार में हानि, सन्तानहीनता आदि कष्ट आ जाते हैं। अत: पितृपक्ष में हर हिन्दू को अपने पुरखों को खुश करने के लिए सारे विधि विधान करने चाहिए।

श्रद्धा और तर्पण इसके लिए मुख्य करणीय कार्य हैं। श्रद्धा का अर्थ है - श्रद्धा दीयते इतिश्राद्धा अर्थात् जो श्रद्धा के किया या दिया जाए। हिन्दू अपने-अपने पूर्वज की मृत्यु तिथि पर ही तर्पण और ब्राह्मण भोज कराते हैं। इस समय ब्राह्मण के अतिरिक्त गौ, कुत्ते और कौए को भी खिलाया जाता है, न जाने किस रूप में पुरखे आ जाएं-यह सोचकर। श्राद्ध में काले तिल का प्रयोग अनिवार्य है। पिंडदान में बाएं हाथ के अंगूठे से जल छोड़ने का विधान है, जबकि देव सम्बन्धी सारे शुभ कार्य दाएँ हाथ से सम्पादित किये जाते हैं। मध्याह्न में ब्राह्मण को कराए जाने वाले भोजन में खीर, पूरी के साथ उड़द, अदरक का समावेश आवश्यक है। भोजन के बाद सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा के साथ वस्त्र, बर्त्तन आदि देने का प्रचलन है। आज के व्यस्त जीवन में नई विचारधारा के लोग जो शास्त्रीय विधानों से अनभिज्ञ हैं, अपने पितरों को प्रसन्न करने के लिए मृतात्मा का पसन्दीदा भोजन गरीबों को खिलाते हैं। ऐसा भोजन दान भी श्रद्धा का आधुनिक और व्यावहारिक रूप है। पितृपक्ष में कुछ व्यवहार वर्जित हैं जैसे नए वस्त्र खरीदना या पहनना, बासी भोजन और मांस मदिरा का सेवन, झूठ और अनैतिक काम करना। हिन्दुओं की इस सदियों पुरानी धार्मिक परम्परा का व्यावहारिक पक्ष यह है कि हम अपने पुरखों को विस्मृत न करें। उनके सम्मान में वर्ष के पन्द्रह दिन मनसा वाचा कर्मणा सदाचार का पालन करें।

आज जब संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, पीढ़ियों में टकराव हो रहा है, जीवन मूल्य बदल रहे हैं, बुज़ुर्गों की उपेक्षा हो रही है, महानगरों में माता-पिता को 'ओल्ड एज होम' में ढकेला जा रहा है। ऐसे में हमारी परम्पराएं टूटती सम्वेदनाओं पर श्लेष का काम करती हैं। दरकते रिश्तों को जोड़ती है, दिन के घावों पर मरहम लगाती हैं। दिन-रात झूठ फरेब की दलदल में आकंठ डूबे लोगों के लिए पन्द्रह दिनों की शुद्धि बेला है जब वे अपने अन्त:करण को सत्य, परोपकार, सहानूभूति और त्याग के जल से धो सकते हैं। जो परम्पराएँ रूढ़ि बन जाएं उन्हें तोड़ देना बेहतर रहे पर कुछ परम्पराएँ समाज की बिगड़ती सेहत के लिए अचूक औषधि का काम करती हैं। पितृपक्ष माता-पिता और पुरखों के प्रति नयी पीढ़ी की सम्वेदनाओं का सम्प्रेषण है। यह परम्परा टूटनी नहीं चाहिए।

सी/43, जगत अमरावती अपार्टमेंट, बेली रोड, पटना

◆

तर्पणः एक मूल अवधारणा

डॉ० राशि सिन्हा

तर्पण एक 'तृप्ति पूरक' शब्द है अर्थात् इसकी शाब्दिक अभिव्यक्ति किसी को तृप्त करने से ही पूर्ण होती है, तर्पण और श्राद्ध कहीं न कहीं समान रूप से गमन करने वाले शब्दों की तरह ही व्याप्त होते हैं, तभी तो हमारे हिन्दू धर्म में 'पितृदोष' से बचने के लिए पितरों का श्रद्धा पूर्वक किये गये तर्पण को ही श्राद्ध की संज्ञा दी गई है, अब सवाल उठता है कि श्राद्ध क्या है? तो 'श्रद्धया इदम् श्रादम्' अर्थात् श्रद्धा से जो किये जाएँ वहीं श्राद्ध है, इसे हम एक अन्य श्लोक के माध्यम से भी समझ सकते हैं:-

श्रद्धया पितून् उद्दिश्य विधिना
क्रियते यत् कर्म तत् श्राद्धम्

अर्थात् पितरों की आत्मतृप्ति हेतु विधि विधान से किये गये कार्य को श्राद्ध कहते हैं।

पितृ पक्ष की आवश्यकता क्यों?

श्राद्ध या तर्पण वैदिक दर्शन के कर्मवाद और पुनर्जन्मवाद पर आधारित एक ऐसी अवधारणा है जिसमें पितरों के प्रति ऋण मुक्त होने के साथ-साथ उनकी भटकती आत्मा को प्रेतयोनि से मुक्त करने की व्यवस्था है। यह एक बड़ा प्रश्न है कि इसे पितृपक्ष क्यों कहा जाता है? कहा जाता है कि आश्विन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक ब्रह्माण्ड की ऊर्जा तथा उस ऊर्जा के साथ पितृगण पृथ्वी पर व्याप्त रहता है। इसी निर्धारित अवधि में पुत्र या उनके कुल के सदस्य उनके नाम से जौ, तिल तथा चावल का पिण्ड दान देते हैं उसमें अपने हिस्से का अंश लेकर वह अग्रभाग का ऋण चुका देते हैं। ठीक आश्विन कृष्ण प्रतिपदा से यह चक्र अपने उर्ध्वमुख की दिशा में आ जाते हैं, 15 दिनों तक अपने अपने भाग लेकर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से पितर उसी ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ वापस लौट जाते हैं अतः इसे 'पितृ पक्ष' नाम से जाना जाता है।

पिण्डदान और गया का महत्त्व

यों तो भारतवर्ष में ऐसे बहुतेरे धार्मिक स्थल हैं जहाँ पिण्डदान का काफी महत्त्व है यथा: हरिद्वार, गंगासागर, जगन्नाथपुरी, कुरुक्षेत्र, चित्रकूट, पुष्कर, बद्रीनाथ, किन्तु इन सभी में गया का स्थान सर्वोपरि है। जब भी श्राद्ध की बात आती है तो बिहार राज्य में स्थित गया का नाम इस संदर्भ में बहुत आदर व सम्मान के साथ लिया जाता है। गयाजी को पितरों की मुक्ति का प्रथम व मुख्य द्वार माना गया है। कहा जाता है कि 'गयासुर' नामक राक्षस व भगवान श्री विष्णु जी के मध्य हुए युद्ध के परिणामस्वरूप गया में विष्णुपद अवस्थित हुआ जिसमें स्वयं भगवान विष्णुजी के चरण स्थापित हैं तथा स्वयं नारायण पितृ देवता के रूप में निवास करते हैं, गरूड़ पुराण में तो यहाँ तक कहा गया है कि गया जाने के लिये घर से निकलने वाले एक एक कदम पितरों की आत्मतृप्ति के लिये स्वर्गारोहण समान हैं। वैसे तो पितरपक्ष की एक निर्धारित तिथि होती है किंतु गया जी की महत्ता का पता इसी बात से लगाया जा सकता है कि यहाँ सदैव पिण्ड दान की अनुमति प्रदान की गई है जिसकी पुष्टि इस श्लोक के माध्यम से की जा सकती है:

गयायां सर्वकालेषु पिंडं दद्यात् विचक्षणः

फल्गु नदी का महत्त्व

पिंडदान के मामले में गया स्थित फल्गु नदी के जल का काफी महत्त्व है,। ऐसी भी मान्यता है कि इसमें पांव पड़ने से जो पानी के छींटे पड़ते हैं उसे भी पूर्वजों की आत्मा ग्रहण कर लेती हैं। 'वायुपुराण' में इस 'फल्गु तीरथ' की उपमा दी गई है। फल्गु की महत्ता ऐसे भी समझी जा सकती है कि आदिकाल में सर्वप्रथम जन्मदाता ब्रह्मा और भगवान श्रीराम ने यहाँ

पिंड दान किया था। महाभारत के वन पर्व में भीष्म पितामह व पांडवो द्वारा पिंडदान की बात मिलती हैं, उपलब्ध साक्ष्यों से गुप्त मौर्य वंश के राजाओं, रामकृष्ण परमहंस तथा चैतन्य महाप्रभु द्वारा फल्गु में पिंडदान की पुष्टि होती है। ऐसा कहा जाता है कि 'फल्गु तट पर' पिंडदान करने से पितरों की आत्माओं के साथ-साथ सात पीढ़ियों का भी उद्धार होता ही है। साथ ही 'पिंडदान कर्त्ता भी परमगति को प्राप्त करता है।

महिलायें भी कर सकती हैं तर्पण

वर्त्तमान समय में आज जब महिलाएं सभी क्षेत्रों में समान भागीदारी का अधिकार रखती हैं तो ऐसे में सबसे बड़ा सवाल उठता है कि क्या तर्पण में महिलाओं को अधिकार प्राप्त है? तो यह एक सुखद आश्चर्य की बात है कि इस मामले में महिलाओं की भागीदारी कोई आधुनिक सोच का परिणाम नहीं है वरन् हिन्दू धर्म ग्रंथ, मनुस्मृति, गरुड़ पुराण आदि द्वारा प्रदत्त अनुमति की देन है कि महिलायें भी तर्पण या पिंडदान का अधिकार रखती हैं। गरुड़ पुराण के अनुसार,

पुत्राभावे वधूः कुर्यात् भार्याभावे च सोदरः।
ज्येष्ठस्य का कनिष्ठस्य भ्रातृ पुत्रस्य पौत्रकैः।।

अर्थात् ज्येष्ठ पुत्र या कनिष्ठ पुत्र के अभाव में बहू या पत्नी को श्राद्ध करने का अधिकार है यदि बड़े या छोटे भाई का लड़का या पोता श्राद्ध कर सकते हैं। वाल्मीकि रामायण में भी सीता द्वारा राजा दशरथ को पिंडदान का उल्लेख है। वैदिक परम्परा में विधवा स्त्री द्वारा भी पिंडदान करने के नियम विधान की चर्चा की गई है। आदि गुरु शंकराचार्य ने आपसी सौहार्द और पारिवारिक मूल्यों के आधार पर तर्क देते हुए कहा है कि कम से कम इस तरीके से परम्परा तो जीवित रह सकेगी, लोग अपने पितरों-पूर्वजों को विस्मृत तो नहीं कर देंगे। इसी कड़ी में एक अलग प्रकार के श्राद्ध का वर्णन आता है जिसे 'मातामह' श्राद्ध के नाम से जाना जाता है। इसके तहत एक नाती एवं नतिनी द्वारा नाना के लिये किये गये तर्पण श्राद्ध का उल्लेख है, किंतु इसमें कुछ नियम आवश्यक हैं, जिनके अभाव में यह श्राद्ध नहीं किया जाता है।

आवश्यक व्यवहारिक पक्ष

उपरोक्त सभी बातों से इतना तो तय है कि पिंडदान की यह परम्परा मनुष्यों में अपने पूर्वजों व पितरों के प्रति एक जिम्मेदारी व कर्त्तव्यों का बोध कराती है। इस विधान में महिलाओं के प्रति बरती गई उदारता भी अनायास इस परम्परा के प्रति नतमस्तक होने को बाध्य करती है, किंतु वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में एक सवाल जो बड़ा अतिमुखर हुआ प्रतीत होता है वह यह कि क्या पिंडदान महज एक परम्परा है? क्या सच में हम इसके वास्तविक स्वरूप को व्यावहारिक जामा पहना पाए हैं? मेरा ऐसा मानना है कि हरेक परम्परा में एक व्यवहारिक संदेश छिपा होता है। तो क्या हम तर्पण के व्यवहारिक संदेश को समझ पाए हैं? शायद नहीं। सच है कि तर्पण या श्राद्ध विधानों के माध्यम से अपने कर्त्तव्यों क महज निर्वाह भर नही है वरन् इसे हम एक संदेश के रूप में समझकर भी जी सकते हैं:- तर्पण को 'परातृप्ति' के रूप में महसूस कर जीवित माता-पिता , गुरुजन, पड़ोसी तमाम सजीव आत्माओं के प्रति मानवतापूर्ण कर्त्तव्यों का निर्वाह कर उनकी आत्मसंतुष्टि का आत्मतृप्ति का हिस्सा बन सकते हैं, तभी तर्पण श्राद्ध व पिंडदान जैसे विधान अपने पूर्णरूप में परिभाषित हो सकेंगे और हमारी परम्पराओं में छिपे संदेशों को उसका वास्तविक रूप मिल पाएगा।

न्यू एरिया, पातालपुरी मंदिर के पीछे
नवादा (बिहार)

◆

गया-सदियों के झरोखे से

यमुना गिरि

ब्रह्मज्ञानं गयाश्राद्धं गो गृहे मरणं तथा।
वासः पुंसां कुरुक्षेत्रे मुक्ति रेषा चतुर्विधा।।

पुण्य सलिला फल्गु नदी के पश्चिमी तट पर अवस्थित गया एक पौराणिक शहर है। यह राज्य के दूसरा सबसे बड़ा शहर है। यह मगध प्रमंडल और गया जिला का मुख्यालय भी है। इस शहर का धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक इतिहास अत्यंत ही समृद्ध एवं वैभवशाली रहा है, जो हमें अपने परम्परागत मूल्यों के प्रति सचेष्ट एवं जागरुक बनाये रखने के लिए अनुप्रेरित करता है। यह न केवल हिन्दु धर्मावलंवियों के लिये अपितु जैन एवं बौद्ध धर्मावलंवियों के लिये भी महान तीर्थस्थल है। यह शहर तीन ओर से छोट-छोटे पहाड़ों : मंगलागौरी, सिंगरा स्थान, रामशिला एवं ब्रह्मयोनि से और चौथे तरफ फल्गु नदी से घिरा है।

बाराणसी की तरह गया की प्रसिद्धि मुख्य रूप से एक धार्मिक नगरी के रूप में है। पितृपक्ष के अवसर पर देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु पिंडदान के लिये जुटते हैं। रामायण में उल्लेख है कि भगवान् राम ने अपनी पत्नी सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ यहाँ आकर अपने पिता राजा दशरथ को पिंडदान किया था। महाभारत में इसे गयापुरी कहा गया है। महाभारत के वनपर्व में भीष्म पितामह और पाण्डवों द्वारा पिंडदान किये जाने का उल्लेख है। हिन्दू धर्म में सनातन काल से 'श्राद्ध' की परम्परा रही है। ऐसा माना जाता रहा है कि पितृपक्ष (आश्विन कृष्ण पक्ष प्रतिपद से आश्विन अमावस्या तक) में गया आकर पिंडदान और तर्पण करने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है और माता-पिता समेत सात पीढ़ियों का उद्धार होता है। यह भी माना जाता है कि भगवान विष्णु स्वयं पितृदेवता के रूप में यहाँ मौजूद है। इसलिए इसे 'पितृतीर्थ' भी कहा जाता है।

गया मगध प्रदेश के अनेक राजवंशों के उत्थान-पतन का साक्षी रहा है। गया 6वीं ई०पू० से 18वी० सदी के बीच प्रदेश के सांस्कृतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। नागवंश के संस्थापक शिशुनाग ने 600 ई० के आसपास पटना और गया पर शासन किया था। इसी राजवंश की पाँचवी पीढ़ी के बिम्बिसार ने 519 ई० पू० शासन किया और बिम्बिसार के शासन काल में यहाँ महात्मा बुद्ध और भगवान महावीर ने परमज्ञान (मोक्ष) की प्राप्ति की। नन्दवंश के लघु कालखंड के बाद गया अैर सम्पूर्ण मगध प्रदेश मौर्यवंश के आधीन आ गया। इस वंश के महान सम्राट अशोक (272 ई० पू० -232 ई०पू०) ने बौद्ध धर्म को अंगीकार किया। सम्राट अशोक ने गया का परिभ्रमण किया और बोधगया में राजकुमार गौतम के परमज्ञान प्राप्ति स्थल की स्मृति में प्रथम मन्दिर का निर्माण करवाया। गुप्तवंश (4थी शताब्दी-5वीं शताब्दी) के काल में सनातन (हिन्दू) धर्म का पुनरुत्थान हुआ। इस राजवंश के प्रतापी सम्राट समुद्रगुप्त ने गया को ख्याति दिलायी। इस काल में बिहार जिला का गया मुख्यालय था। इसके बाद पाल साम्राज्य जिसकी स्थापना सम्राट गोपाल ने की थी के अधीन गया आ गया। ऐसा विश्वास किया जाता है कि सम्राट गोपाल के पुत्र धर्मपाल ने बोधगया का वर्तमान मंदिर का निर्माण कराया था। 12वीं सदी में, मोहम्मद बख्तीयार खिलजी ने गया पर आक्रमण किया था। ब्रिटिश शासन के अधीन आने के पूर्व यह मुगलों के अधीन था और 1764 ई० की बक्सर युद्ध के बाद यह अंग्रजों के अधीन आ गया। सन् 1810 ई० के आस-पास गया शहर दो भागों में बंटा था। एक भाग जहाँ पंडा-पुजारी रहते थे, गया के नाम से जाना जाता था। दूसरे भाग जहाँ वकील और व्यापारी

निवास करते थे, मूल रूप में एलाहाबाद कहलाता था। बाद में इस भाग को 'थामस लॉ' नामक एक प्रसिद्ध समाहर्ता 'साहेब' ने विकसित किया था, जो साहेबगंज कहलाया। इसी साहेबगंज में प्रखर राष्ट्रवादी बिहार विभूति डा० अनुग्रह नारायण सिंहा जो बिहार राज्य के प्रथम उपमुख्य मंत्री सह वित्त मंत्री थे, का जन्म हुआ था। मगध का अन्तिम महान शासक टेकारी महाराज थे।

किसान आन्दोलन के प्रख्यात नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने नेयामतपुर, गया में एक आश्रम की स्थापना की थी, जो बाद में स्वतंत्रता आन्दोलन का केन्द्र बना। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लब्ध प्रतिष्ठित नेतागण यहाँ बार-बार जदुनन्दन शर्मा से मिलने आते थे। यदुनन्दन शर्मा स्वामी से मिलने आते थे। यदुनन्दन शर्मा स्वामी सहजानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आश्रम में रहते थे। यदुनन्दन शर्मा गया जिला के एक अविवादित किसान नेता के साथ-साथ आजादी की लड़ाई के एक प्रसिद्ध योद्धा भी थे। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में गया का महान योगदान रहा है स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान देशबन्धु चितरंजन दास की अध्यक्षता में काँग्रेस का अखिल भारतीय सम्मेलन सन् 1922 ई० में गया में आयोजित हुआ था, जिसमें स्वतंत्रता आन्दोलन के महान दिग्गज एवं ख्याति प्राप्त नेता यथा मोहनदास कर्मचन्द गाँधी, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, डॉ० अनुग्रह नारायण सिंह, सरदार पटेल, मौलाना आजाद, जवाहर लाल नेहरू, एवं श्री कृष्णा सिंह सम्मिलित थे।

मगध विश्वविद्यालय, गया कॉलेज, अनुग्रह मेमोरियल कॉलेज, मिर्जा गालिब कॉलेज, गया इंजीनियरिंग कॉलेज जैसे ख्याति-प्राप्त संस्थाओं के कारण गया का एक शानदार शैक्षणिक इतिहास रहा है। राष्ट्रीय महत्व के एक नवीन प्रबंधन संस्थान- 'इंडियन इन्स्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेंट, बोधगया' की स्थापना हुई है, जो सम्प्रति मगध विश्वविद्यालय के प्रांगण में संचालित हैं। केन्द्रीय विश्वविद्यालय, दक्षिण बिहार भी गया में अवस्थित है। प्रारम्भिक एवं माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के कई विद्यालय यहाँ संचालित है । परन्तु, गया के शैक्षणिक विकास के हमारे आधे-अधूरे प्रयास अपनी पूर्णता के लिये राजनीतिक गतिशीलता एवं प्रतिबद्धता की अपेक्षा रखतें है।

आज भी गया के कई तीर्थ स्थानों के भग्नावशेष हमारे सांस्कृतिक बोध और राष्ट्रीय चेतना को प्रश्नांकित करते हैं। अपने अल्प कालीन शैक्षिक-प्रशासनिक कर्मस्थली में निवास करने के क्रम में मैं निरंतर अनुभव करता रहा कि एतिहासिक, वैदिक, नागवंश, मौर्य, गुप्त, पाल, मुगल और ब्रिटिश शासन काल के उत्थान-पतन की साक्षी इस भूमि को उतना महत्व नहीं मिला, जितना अपेक्षा थी, विशेषकर धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों का स्वरूप आज भी अपने सदियों पुराने रूप में है जिनके उद्धार के नितान्त आवश्यकता हैं और जिसे सामाजिक सजगता और प्रशासनिक सक्रियता से ही सम्पादित किया जा सकता है।

सरस्वती निकेतन, विद्यानगर (पं०)
हनुमान मंदिर के निकट, हरमू, राँची
मो० - 9905315010

◆

सनातन धर्म में श्राद्ध के प्रकार एवं गया

अश्विनी कुमार आलोक

सामान्यत: श्रद्धा से दान की गयी वस्तु को 'श्राद्ध' कहा गया है। लेकिन पौराणिक मान्यताओं के आधार पर सनातन धर्म में सनातन काल से अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का महत्वपूर्ण मार्ग है श्राद्ध। वैज्ञानिक काल में भी सभी परिवार अपने पूर्वज की मृत्यु के पश्चात् निर्धारित तिथि में श्राद्ध करते हैं। श्राद्ध में श्राद्ध करवाने वाले ब्राह्मण को पुरोहित एवं श्राद्ध करने वाले परिजन को यजमान कहा गया है। यह श्राद्ध एक प्रकार का यज्ञ है जो मोक्ष अथवा स्वर्ग के रास्ते तो खोलता ही है, मनुष्य जीवन में किये गये पापों से मुक्ति का कर्मकांडीय अनुष्ठान भी है। श्राद्ध में पूर्वजों के हित में पिंडदान किया जाना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है। वैसे धन, अन्न, गाय, वस्त्र एवं जीवनकाल में उपयोग में लायी जाने वाली ही सामग्री का यदि दान किया जाता है तो यह उच्च फलदायक माना गया है। श्राद्ध कर्म के कर्मकांड को सबसे ज्यादा प्रश्रय गया में दिया गया है। इस कर्मकांड की कई मान्यता है कि जिस गाय ने दस दिन पूर्व बछड़े देने के बारह या बीस दिनों के बाद के दूध का उपयोग पुण्यप्रद माना गया है। श्राद्ध में यह मान्यता है कि पिता का श्राद्ध पुत्र ही करे। पुत्रों की संख्या ज्यादा होने की स्थिति में यह सबसे पहला अधिकार ज्येष्ठ पुत्र को तदन्तर कनिष्ठ पुत्र को प्राप्त है। निर्धारित पद्धति से निर्धारित गोत्रों के मृत पात्रों के पक्ष में श्राद्ध करना आवश्यक माना गया है। गया में आश्विन कृष्ण पक्ष के प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक कुल 15 दिनों तक पिंडदान के माध्यम से पितरों को मोक्ष दिलाने की मान्यता प्रचलित है। इन 15 दिनों में लोग अपने पूर्वजों को जल देते हैं। मृत्यु तिथि पर जल देने को पार्वण कहा गया है। जल देकर अपने पूर्वजों के तर्पण से जुड़ी सनातन धर्म में कई मान्यताएं है। श्रीराम द्वारा पिता दशरथ और गोदावरी तट पर जटायु को तर्पण देने की कथा प्रसिद्ध रही है।

श्राद्ध के कई प्रकार बताये गये हैं। मत्स्य पुराण में ' त्रिविधम् श्राद्ध मुच्यते' कहकर श्राद्ध के तीन प्रकार बताए गये हैं -

(क) नित्य श्राद्ध- इस श्राद्ध में केवल जल से भी कर्मकांड सम्पन्न किया जा सकता है। इसमें विश्वदेव को स्थापित नहीं किया जाता। यह प्रतिदिन किया जाता है।

(ख) नैमित्तिक श्राद्ध- इस श्राद्ध को एकादि्दश्ट श्राद्ध भी कहा गया है। किसी एक को निमित्त मानकर यह श्राद्ध किया जाता है। यहाँ भी विश्व देवों को स्थापित नहीं किया जाता। जैसे किसी एक व्यक्ति के निधन पर निर्धारित दश, एकादश एवं द्वादश दिनों पर नैमित्तिक श्राद्ध की परंपरा है।

(ग) काम्य श्राद्ध- किसी आकांक्षा की पूर्ति के लिए किये जाने वाले श्राद्ध को काम्य कहा गया है।

इन तीन श्राद्धों को छोड़कर यमस्मृति मे दो अन्य श्राद्धों का भी उल्लेख मिलता है।

(क) वृद्धि श्राद्ध- विभिन्न प्रकार के मांगलिक अवसरों पर अपने पितरों का स्मरण एवं उन्हें प्रसन्न करने हेतु वृद्धि श्राद्ध किया जाता है। विवाह, जन्मसंस्कार, गृहप्रवेश आदि अवसरों पर यह श्राद्ध होता है।

(ख) पार्वण श्राद्ध- किसी पर्व अर्थात पितृपक्ष, अमावस्या के अवसर पर विश्वदेव को स्थापित कर किया जाने वाला श्राद्ध पार्वण श्राद्ध कहलाता है। इनके अतिरिक्त कुछ और श्राद्ध भी बताये गये हैं-

(क) सपिंडन श्राद्ध - पिंडों को मिलाकर पितर में ले जाने की क्रिया को सपिंडन कहते है। प्रेत पिंडों का पितृपिंडो से मेल कराया जाता है। यह सपिंडन श्राद्ध कहलाता है।

(ख) गोष्ठी श्राद्ध - सामूहिक रूप से किये जाने वाले श्राद्ध को गोष्ठी श्राद्ध कहा गया है।

(ग) शुद्धयर्थ श्राद्ध - शुद्धि के लिए ब्राह्मणों को भोज कराने से शुद्धयर्थ श्राद्ध जुड़ा हुआ है।

(घ) कर्माग श्राद्ध - कर्म को प्रधानता देने वाले श्राद्ध को कर्माग श्राद्ध कहा गया है।

(ड़) पुष्ट्यर्थ श्राद्ध - शारीरिक दौर्बल्य को दूर कर पुष्टि प्राप्त करने के लिए पुष्टयर्थ श्राद्ध होता है।

श्राद्ध का प्रमुख स्थल गया का विष्णुपद मंदिर है। यहां न सिर्फ भारत बल्कि सनातन धर्म में आस्था रखने वाले पूरे संसार के लोग श्राद्ध तर्पण के लिए आते हैं। यहाँ की फल्गु नदी के तट पर युधिष्ठिर, कर्ण, राम आदि द्वारा अपने पूर्वजों का श्राद्ध करने से संबंधित कई पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं।

◆

पत्रकार कॉलोनी, महनार
वैशाली (बिहार) मो०-9801699936

भगवान विष्णु का भक्तिमूलक मोक्ष

प्रो० अरुण कुमार प्रसाद

'ब्रह्मसूत्र' वेदान्त साहित्य का मूल है। 'ब्रह्मसूत्र' की रचना महर्षि बादरायण ने उपनिषदों के मतों में एकता को स्थापित करने के उद्देश्य से किया था। दार्शनिक दृष्टिकोण में महर्षि बादरायण का 'ब्रह्मसूत्र' बहुत ही संक्षिप्त और दुर्बोध था। अत: उनके बाद के विद्वानों ने 'ब्रह्मसूत्र' पर अपना अलग-अलग भाष्य लिखा। उन भाष्यकारों में मध्वाचार्य का नाम विशुद्ध द्वैतवाद के प्रवर्तक के रूप मे लिया जाता है। इन्होंने 'ब्रह्मसूत्र' पर जो भाष्य लिखा है उसे 'पूर्ण प्रज्ञा भाष्य कहते हैं। इनका समय सन् 1199 से 1268 ई० माना जाता है।

मध्वाचार्य जीव और जगत का ब्रह्म से भेद बतलाते हैं। इसलिए उनके दार्शनिक विचार विशुद्ध द्वेतवाद के नाम से प्रचलित है। इनकी मान्यता है कि ईश्वर या ब्रह्म ही परमतत्व है। ये जगत सत्य है। भेद सत्य है। जीवात्मा ईश्वर के सेवक हैं। श्रेष्ठता में उनमें आपस में भेद है। मोक्ष निर्मल-स्वाभाविक आनन्द का अनुभव है। मध्वाचार्य ने ब्रह्म को 'विष्णु' के रूप में स्वीकार किया है। विष्णु का स्वरुप का वैयक्तिक ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ रूप बताया जाता है। विष्णु अपनी इच्छा से ही इस संसार का संचालन करते हैं। वही इस संसार की सृष्टि करते हैं। संहार या प्रलय का कार्य भी उन्हीं की इच्छा से पूरा होता है। विष्णु में अनेक रूपों में अपने को प्रकट करने की शक्ति है।

मध्वाचार्य के अनुसार बन्धनग्रस्त जीव अज्ञान, मोह, दु:ख, भय आदि दोषों से युक्त होते हैं। ये मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं- मुक्तियोग्य, नित्यसंसारी और तमोयोग्य। मुक्तियोग्य जीव देव, पितृ, चक्रवर्ती सम्राट और उत्तम मानव होते हैं। नित्यसंसारी जीव अपने कर्म के अनुसार स्वर्ग के सुख, मृत्युलोक के सुख-दु:ख और नरक के दु:ख भोगते रहते हैं। ये मध्यम कोटि के मानव है। तमोयोग्य जीव, राक्षस, पिशाच और अधम मनुष्य होते हैं। ये कभी मुक्त नहीं हो सकते हैं। मध्वाचार्य के अनुसार जीव अनेक हैं और परस्पर भिन्न हैं। जीवों में गुणों का तारतम्य सांसारिक एवं मुक्त अवस्था में भी बना रहता है।

माध्वाचार्य भेद को वस्तुओं का स्वरूप मानते हैं। उनके अनुसार नित्य भेद पाँच हैं, जिसके ज्ञान को वे मोक्ष के लिए आवश्यक मानते हैं। वे भेद हैं- (1) ईश्वर और जीव का भेद (2) ईश्वर और जड़ का भेद (3) जीव और जड़ का भेद (4) जीव और जीव का भेद (5) जड़ और जड़ का भेद। उन्होंने भेद पर इतना बल दिया है कि वे मुक्त जीवों में भी ज्ञान और आनन्द के तारतम्य रूपी भेद को स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार मुक्त जीवों का आनन्द चार प्रकार का होता है- सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य। सालोक्य मोक्ष का अर्थ है वैकुण्ठ में निवास करना तथा वहाँ ईश्वर के सहवास में रहकर उनके निरन्तर दर्शन से संतोष एवं आनन्द का अनुभव करना। सामीप्य मोक्ष का अर्थ है ईश्वर के समीप निरन्तर निवास, जिसका उपभोग संत-गण करते हैं। सारूप्य मोक्ष का उपभोग ईश्वर के परिचारक करते हैं जिनके ईश्वर के समान ही ब्रह्म रूप होते हैं। सायुज्य मोक्ष का अर्थ है उन्हीं भक्तियों का उपभोग करना जो ईश्वर में होती है। यह शक्ति ईश्वर से एकाकार होने पर संभव है। इस प्रकार के मोक्ष के योग्य केवल देव-गण होते हैं। मध्वाचार्य ईश्वर जीव और जगत को नित्य तत्व मानते हैं जिनमें ईश्वर स्वतंत्र है और अन्य दोनों ईश्वर-परतंत्र है।

मध्वाचार्य का मानना है कि जीव वास्तविक कर्त्ता और भोक्ता है। ये गुण केवल बन्धन की अवस्था में नहीं बल्कि मोक्ष की अवस्था में भी

कायम रहते हैं। परन्तु उसका कर्तृत्व और भेक्तृत्व स्वतन्त्र नहीं है। वे ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है। मध्वाचार्य का विश्वास है कि इस तथ्य को जानना ही वास्तविक ज्ञान प्राप्त करना है और इस तथ्य को न जानना ही अविद्या और परिणामस्वरूप बंधन है। जीव को साधनाओं द्वारा स्वयं को इस योग्य बनाना जरूरी है कि वह ईश्वर की कृपा प्राप्त कर सके। मध्वाचार्य कर्म, ज्ञान, भक्ति और अष्टांग योग का मूल्य मोक्ष प्राप्त करने के साधनों के रूप में स्वीकार करते हैं। परन्तु उनका विश्वास है कि भगवान विष्णु की भक्ति ही मोक्ष प्राप्त करने का एकमात्र सुरक्षित साधन है। निष्काम कर्म और ज्ञान भगवान विष्णु के प्रति भक्ति उत्पन्न करने में सहायक होते हैं। मध्वाचार्य मानते हैं कि भगवान विष्णु तक उपागम के लिए वायु पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। इनके दर्शन में वायु ज्ञान का प्रतीक है। अत: वायु पर ध्यान देने का अर्थ होगा ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करना।

भक्ति के स्वरूप की चर्चा करते हुए मध्वाचार्य कहते हैं कि ईश्वर के प्रति हृदय की आसक्ति को ही भक्ति कहते हैं। परन्तु ईश्वर के प्रति यह आसक्ति ज्ञान से रहित नहीं है। यह ऐसी आसक्ति है जो पूर्ण ज्ञान और दृढ़ विश्वास के बाद उत्पन्न होती हैं। मध्वाचार्य भक्ति शब्द का प्रयोग उच्च और निम्न दो प्रकार की भक्तियों के लिए करते हैं। निम्न भक्ति मोक्ष प्राप्ति का एक मात्र सुरक्षित साधन है और उच्च भक्ति स्वयं मोक्ष है। मोक्ष मानवजीवन का परम पुरुषार्थ है। मध्वाचार्य के अनुसार अपरोक्ष ज्ञान ईश्वर की अनन्तता और उसकी तुलना में स्वयं की असीमता का ज्ञान है। जिस क्षण ऐसा ज्ञान होता है उसी क्षण ईश्वर की अनन्तता और स्वयं की लघुता को देखकर भक्त का हृदय द्रवित हो जाता है। यहीं से उच्च भक्ति का आरम्भ होता है। ऐसी भक्ति को भक्त कभी छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता है। मध्वाचार्य ऐसी ही भक्ति को सर्वोच्य मूल्य मानते हैं। यही जीवन का परम लक्ष्य है।

मध्वाचार्य के अनुसार मुक्त जीव ईश्वर से केवल साहचर्य लाभ ही करता है। अपनी वैयक्तिकता को कायम रखते हुए वह ईश्वर की भक्ति करता रहता है। भक्ति का अपना विशिष्ट आनन्द है और कोई भी भक्त इस आनन्द को छोड़ना नहीं चाहता है। मोक्ष भी नहीं चाहता है यदि उसमें भक्ति न हो। भक्ति के लिए वैयक्तिकता बनाये रखना अनिवार्य है। मुक्त जीव भगवान विष्णु से केवल समानता प्राप्त कर लेता है। प्रत्येक जीव की अपनी अलग-अलग क्षमताएँ हैं। जिस प्रकार विभिन्न आकार के घड़े सागर से अपनी क्षमता के अनुसार ही जल ग्रहण कर सकते हैं, उसी प्रकार प्रत्येक जीव अपनी क्षमता के अनुसार ही ईश्वर की भक्ति कर सकता है। अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास ही मोक्ष है। अत: मोक्ष की अवस्था विभिन्न जीवों के व्यक्तित्व के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है। मोक्ष की अवस्था में सामान्य तत्व यह है कि किसी भी मुक्त जीव को कोई दु:खमय अनुभव नहीं भोगना पड़ता है।

इस प्रकार, स्पष्ट है कि मध्वाचार्य की साधना पद्धति में भक्ति और ज्ञान में कोई विरोध नहीं है। वास्तविकता यह है कि उच्चतम भक्ति में ईश्वर का अपरोक्ष ज्ञान निहित रहता है। परन्तु मोक्ष तभी प्राप्त हो सकता है जब अपरोक्ष ज्ञान के साथ ईश्वरीय कृपा भी प्राप्त हो।

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग
मिर्जा गालिब कॉलेज, गया

◆

गया संग्रहालय सह मगध सांस्कृतिक केन्द्र : एक झलक

डॉ० विनय कुमार

धरोहरों, पुरावशेषों, कलाकृतियों को संग्रहक, संरक्षित एवं सम्वर्द्धित करने में संग्रहालयों की मुख्य भूमिका होती है। जहाँ अपार जनसमूह एवं प्रशासकीय शक्तियों का सहयोग जिस संग्रहालय को प्राप्त होती है उसका क्रमिक विकास भी वैसा ही होता है।

विश्व प्रसिद्ध मोक्षदायिनी विष्णु की महान नगरी एवं ज्ञान प्राप्ति स्थली बोधगया को कौन नहीं जानता ? गया की इस धरती पर कला एवं संस्कृति अद्‌भुत है, जिनके अति दुर्लभ कलाकृति सर्वत्र फैले हुए विराजमान हैं। गया जिला के लगभग प्रत्येक गाँव में कलात्मक चिह्न नजर आते हैं। प्राचीन काल से ही गया कलात्मक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। गया के सुदूर गाँवों में भी कलात्मक अवशेष बिखरे मिलते हैं। भारतीय कला के विकास में मगध क्षेत्र का विशेष योगदान सदियों से रहा है। गया संग्रहालय गया में प्रदर्शित सग्रहित एवं संरक्षित अद्‌भुत अमूल्य पुरावशेषों के दुर्लभ नमूने बखूबी देखे जा सकते है।

'गया संग्रहालय' दिनांक 23 नवम्बर 1952 में स्थापित हुआ परन्तु इसका विधिवत उद्‌घाटन 27 नवम्बर 1952 को प्रात: 9.15 बजे गया नगरपालिका भवन के एक भाग में नगरपालिका, गया के अध्यक्ष श्री राधा मोहन प्रसाद द्वारा किया गया। 27 नवम्बर 1952 को इसे सार्वजनिक रूप से जनता के लिए खोल दिया गया। तत्पश्चात् ज्ञान पिपासु बुद्धिजीवियों द्वारा कलात्मक अवशेषों का संग्रह आरंम्भ हो गया। हालांकि सन् 1885 में ही इस संग्रहालय निर्माण का बीजारोपण हो गया, जब वर्तमान जिला केन्द्रीय लोक पुस्तकालय खोला गया था। अंग्रेजों ने स्थानीय कलाकृतियों को संरक्षित करने के लिए उन्हें वहाँ कलाकृति इकट्‌ठा करना शुरू कर दिया था। उस समय प्राप्त कलाकृतियों में पाल कालीन बुद्ध की बैठी हुई मूर्ति मंजूश्री, दो राजकीय बन्दूकें जिसके घोड़े और कुन्दों पर हाथी दाँत की बेहतरीन नक्काशी है। एक लम्बा सा भाला भी रखा गया। ये सभी वस्तुएं सन् 1976 में राजकीय संग्रहालय, गया को हस्तांतरित कर दी गई।

गया संग्रहालय के क्रमिक विकास में गया के तत्कालीन दो कलेक्टर मि० ग्रियर्सन और मि० ओल्डहैम का विशेष योगदान रहा है। जिन्होंने प्राचीन कलाकृतियों का विवरण सिलसिलेवार से रखा। मि० ग्रियर्सन ने 1885 से 1891 तक के कार्यकाल में गया जिले पर एक टिप्पणी भी तैयार की जिसमें विभिन्न प्राचीन कलाकृतियों का जिक्र था। उस चर्चित टिप्पणी का नाम था Bihar Peasants Life and Notes on the District of Gaya, तत्पश्चात् मि० ओल्डहैम ने 1898 से 1902 के दौरान प्रक्षेत्र में कई दौरा कर प्राचीन कलाकृतियों की तस्वीरें खिंचवाकर इकट्‌ठा किये।

दिन-बदले, युग बदला, फिर एक अन्तराल के बाद संग्रहालय आन्दोलन पुन: जोर पकड़ा जिसका श्रेय श्री बलदेव प्रसाद को जाता है। यह आन्दोलन महान समाज सेवी तथा स्थानीय वकील श्री बलदेव प्रसाद ने शुरू की। 23 अप्रैल 1947 को सोसायटी ऑफ इन्डियन कल्चर की स्थापना हुई जिसका मुख्य उद्देश्य क्षेत्र की पुरातात्विक और ऐतिहासिक धरोहरों को बचाना था। इस दिशा में तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट जी०सी० माथुर ने श्री बलदेव प्रसाद के साथ प्रस्तावित संग्रहालय के लिए प्राचीन कलाकृतियाँ एकत्र करना आरंभ किया। तत्पश्चात् 21 जनवरी 1950 को सोसायटी ने गया संग्रहालय बनाने की घोषणा की। एक समिति गठित की गई जिसके पदेन अध्यक्ष जिला मजिस्ट्रेट तथा सचिव पुलिस सुपरिटेनडेन्ट बनाये गये। श्री बलदेव

प्रसाद संयुक्त सचिव बने। गया संग्रहालय का नाम गया संग्रहालय रखने का प्रस्ताव पारित किया गया।

गया संग्रहालय हेतु कलाकृतियों के संग्रहण में स्थानीय नागरिकों की भूमिका काफी सराहनीय रही, जिनमें प्रमुख रूप से उमाशंकर भट्टाचार्य उर्फ राजाबाबू, श्री छोटे लाल भैया तथा कृष्णा लाल प्रमुख थे, जिन्होंने 1952 से 1954 के बीच भेन्ट स्वरूप वस्तुएँ प्रदान किया। गया संग्रहालय जिसका नाम सामूहिक सहमति से अब 'गया संग्रहालय-सह-मगध सांस्कृतिक केन्द्र' कर दिया गया, जिसमें विभिन्न आकार प्रकार के पुरावशेषों, कलाकृतियों एवं देवी-देवताओं की प्रतिमाएं संग्रहित तथा प्रदर्शित हैं। गया जिला के खिजरसराय से प्राप्त पालकालीन विष्णु की काले पत्थर की मूर्त्ति जिसकी लंबाई 9 फुट है, आकर्षण का केन्द्र-बिन्दु है। विष्णु की यह मूर्त्ति 8वीं से 10वीं शताब्दी की है। विष्णु की दूसरी मूर्त्ति दशावतार की है, जिसका निर्माण सन् 11वीं शताब्दी की है। विष्णु दशावतार की यह मूर्त्ति दाबथु नामक स्थान से प्राप्त की गई है। ब्राह्मण देवी-देवताओं की मूर्त्तियाँ 6वीं से 12वीं की है। अन्य देवी-देवताओं की मूर्त्तियाँ 6वीं से 12वीं की है। अन्य देवी देवताओं की मूर्त्तियों में शिव, नृत्यरत् शिव, भैरव, उमा-महेश्वर, सूर्य, रेवन्त, अग्नि, कामदेव, हरिहर, सरस्वती, पार्वती, दुर्गा, चामुन्डा, नृत्यरत् गणेश, भैरव आदि की है।

ब्राह्मण मूर्त्तियों के पश्चात् बौद्ध प्रतिमाओं का स्थान है। इसके अन्तर्गत अवलोकितेश्वर मंजूश्री, मंजूवर, मैत्रेय, तारा, अपराजिता की प्रतिमाएं संग्रहालय में प्रदर्शित हैं।

पाण्डुलिपियाँ, जो 16वीं से 19वीं सदी की है इनमें श्रीमद्भागवतगीता, स्कन्द पुराण, रामचरितमानस, दुर्गा सप्तशती प्रमुख हैं। सिक्के में स्वर्ण रजत तथा कांस्य की है। फारसी में आइन-ए-अकबरी, खम्साई शेख निजामी उपलब्ध है। मृण मूर्त्तियाँ (टेराकोटा) ईसा पूर्व तीसरी से छठी सदी की है, जो वैशाली और कुम्हरार से प्राप्त की गई है।

व्यक्ति परमात्मा का दूत होता है। इसका पुनीत कर्तव्य है अंत: में छिपे पड़े ईश्वरीय सन्देश को विश्व के सम्मुख रखना। इस लिहाज से मगध क्षेत्र सबसे अलग है कि हम अपने अस्तित्व को आज भी विश्व में अनमोल बनाये रखे हैं। इसे सुरक्षित संरक्षित और संग्रहित करने की आवश्यकता हम सबों की है। हम अपने समस्त धरोहरों, पुरावशेषों एवं कलाकृतियों को सुरक्षित एवं संग्रहित करने में सचेष्ट रहे।

कला संस्कृति एवं युवा विभाग, का यह केन्द्र गया संग्रहालय सह मगध सांस्कृतिक केन्द्र जिला प्रशासन एवं इस क्षेत्र के व्यापक जन-समूहों के सहयोग से सामाजिक सांस्कृतिक शैक्षणिक ज्ञानोपार्जन तथा मनोरंजक गतिविधियाँ को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। गया संग्रहालय गया वर्तमान में गांधी मैदान (गेवाल बिगहा मोड़), गया के पास स्थित है।

संग्रहालयाध्यक्ष
गया संग्रहालय-सह-मगध सांस्कृतिक केन्द्र, गया

◆

INCREDIBLE GAYA

Dr. Mritunjala Kumari Sinha

Gaya is famous city in Indian map as well as on the World map. It is known for its History, Religion and Mythology. It is one of the major tourist attractions of the state of Bihar. Gaya is the 2nd largest city of Bihar.

Gaya was established in the year 1865. Before that it was a part of Ramgarh which is now in Jharkhand. It was given the status of an independent district on 3rd october 1865. It occupies an area of 4976 km^2 comparatively equivalent to the island of Trinidad. Gaya district finds its mention in the great Epics such as Ramayana and Mahabharata. Lord Rama along with Sita and lakshmana, visited Gaya to offer pinddaan to their father Dasharatha. In Mahabharata, the place is referred as Gayapuri. Gaya derives its name from the mythological Asura Gayasur (which literally means Gaya, the demon) according to Vayu Purana, Gaya was the name of an Asura whose body became pious after he performed rigid penance and secured blessings from Lord Vishnu. It is said that the body of Gayasura was transformed into the series of rocky hills that make upto the landscape of Gaya.

Ancient Approach of Gaya

Gaya further flourished under the rule of dynasties like the maurian's who ruled from Patliputra (Modern Patna) and covered the area beyond the boundaries of the Indian subcontinent. During this period Gaya was a part of Magadh region. Gaya witnessed the rise and fall of many dynasties in the magadh region. From the 6th century BC to the 15th century AD, about 2300-2400 years, Gaya has been occupying an important place in the cultural history of the region. It opened up with the Sisunaga dynasty founded by Sisunaga, who exercised power over Patna and Gaya around 600 BC. Bimbisara, fifth in line, who lived and ruled around 519 BC, had projected Gaya to the outer world. The area experienced the bliss of Gautam Buddha and Bhagwan Mahavira during the reign of Bimbisara. Asoka visited Gaya and built the first temple at Bodhgaya to commemorate prince Gautama's attainment of supreme enlightenment. In the Gupta period (4th - 5th century AD) Samudragupta, Gaya become a limelight city and it was the head quarters of Bihar district during the Gupta empire.

Modern Approach of Gaya

The town of Gaya is called the residence of priests and on the other hand it is also known as the residence of lawyers and trade men. It is the birth place of eminent nationalist Bihar Vibhuti, Dr. Anugrah Narayan singh, Bihar's first deputy chief minister cum finance minister. The last great ruler of magadh was Maharaja of Tekari the leader of kisan Andolan. Swami Sahajanand Saraswati established an ashram at Neyamatpur. Gaya (Bihar) which later became the centre of freedom struggle in Bihar, so on ..... Gaya has also immensely contributed in the Indian independence movement, the all India session of the congress was held under the presidency of Deshbandhu Chittaranjan Das in 1922, who established Rajendra Aasram in the middest place of Gaya, as congress office.

Religious Approach of Gaya

Gaya is the most valuable place in term of religion. There are a lots of temple in Gaya but mostly it is famous for pinddaan It is known as moksha-dhama. A lots of guest come to Gaya to visit the Vishnupada temple as well as to do the pinddanaan during the "Pritrapaksh period" . Although everyday people come from the corner of Indian as well as world but during the 'pitrapaksha period' they come in huge number. So this period is also called "Pitrapaksha parva".

Vishnupadda Temple : it is an ancient temple in Gaya which is dedicated to lord Vishnu. This temple is located along the Falgu River, marked by a foot print of lord Vishnu known as Dharmasila. The Brahmkalpit Brahmans are traditional priests of the temple from ancient time who is known as gayawal tirth pandit or panda. The structure of this temple was rebuilt by Ahilia Bai Holkar in 1787, on the banks of the Falgu river. She was the ruler of Indore. The pindadani comes in Vishnupadda and do pinddaan ceremony to their ancestor.

Mangala Gauri Temple : we can find the name of mangala gauri in padma purana, vayupurana and agni purana, markandey purana etc. This temple is among the eighteen maha saktipeeth. The present temple dates back to 15th century. The shrine is dedicated to sati or the mother goddess. Mangala gauri is worshiped as the goddess of benevolence. Here sati is worshipped in the form of breast, a symbol of nourishment. It is believed that whoever comes to Maa Durga with his/her wishes and prayers, returns successfully with all of prayers and wishes come true. The temple faces east and is built on top of the Mangala Gauri hills. A small Mandap stands in front of the temple.

Falgu River : The Falgu, a river that flows past Gaya, in the Indian state of Bihar, is a sacred river for Hindus and Buddhists. In ancient Scriptures, it is called the Niranjana in Sanskrit. The portion of the course of the falgu flowing by Gaya is sacred to the Hindus, it is the first holy site visited by the pilgrim and here first offering must be made for the souls of Ancestors. According to Hindu belief, the soul wanders after death until pinddan or religious service seeking salvation for the dead from the cycle of rebirth, is performed. The fortnight long pitrapaksha period is Considered auspicious to offer pinddan. The 15 days of the waning moon durig the hindu month of Ashvin are known as pitrapaksha. Pinddaan is traditionally offered on the banks of the falgu at Gaya. It is mandatory for hindu devotees offering pinddaan to shave their heads and take a holy dip and head for the Baitarni pond. The prayers are performed at the Vishnupad temple. Priests, known as gayawal pandas, conduct the rituals. Thousands of Hindus visit Gaya for the purpose of Pinddaan.

There is reference to the city of Gaya and the Falgu in the Purana, which says that Sita had cursed the Falgu river. There is an interesting story and the Purana states that on account of this curse, the Falgu lost its water, and the river is simply a vast stretch of sand dunes.

There are four Purusartha in Hinduism-Dharma, Artha {money), Kama {sex) and Moksha {Nirvana). The last one Moksha is the goal of life according to

Hinduism. A person who ones get moksha, becomes free from sufferings. The spiritual way is opened for them. We can see the live example to meet Aatma in to parmatama in Pitrapaksha Parva, it is said that the spirit of all finished people is keep on moving in quest of their liberation and when their families fulfills his duty (pinda-daana) their ancenstors visit to swarg 10k (paradise). They get moksha. According to Hindu Mythology:--

जीवतो वाक्य करणात् क्षयाहे भूरिभोजनात्।
गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिर्पुत्रस्य पुत्रता।।

Once a son must comes to Gaya offer the Pinddaan. It is mention in Vedas also. Atharva veda says

जीवनामायुः पितर त्वमग्ने लोकमपि गच्छन्तु ये मृताः। (12, 2, 45)

Second,

त्वमग्न ईडितो जात वेदोडवाऽदव्यानि सुभीणि कृत्वा प्रदाः पितृभ्यः स्वधा ते अक्षन्नद्धि त्वं देवः प्रयता हवीर्षि। (18, 3, 42)

Second,

गयां यास्यति यो पुत्रः स नस्त्राता भविष्यति।
पदभ्यामपि जलं स्पृष्ट्वा सोऽस्मान् कि न दास्यतिं।

At last we can say that Gaya is known for its history and spirituality. The religious approach of Gaya is very rich and plays a vital role in achieving the goal of life i.e. liberation (free from all the suffering of life). Therefore we can say Gaya as 'INCREDIBLE GAYA'

Lecturer, Dept. of Buddhist Studies
Magadh University, Bodhgaya, Gaya
Mob:- 9430841042
email : mritunjalasinha@gmail.com

चरणतीर्थ में सिर्फ बालू पिंडदान से मोक्ष

अशोक कुमार अंज

विश्व का अनोखा, अद्‌भुत धार्मिक स्थल है मोक्षधाम गया जी। इस पावन स्थल पर राक्षसी प्रवृत्ति वाले राक्षस को सद्‌बुद्धि हुई थी। उसी सद्‌बुद्धि की पूजा यहाँ की जाती है। यह विष्णुनगरी वरदान का नगरी है हीं, सद्‌बुद्धि की भी है। सद्‌बुद्धि यानी मोक्ष प्राप्ति की नगरी। अनुष्ठान लिए यह नगरी धार्मिकता से ओतप्रोत है। विष्णुपद मोक्षधाम में चरण की पूजा की जाती है। मुख्यत: यह चरण वेदी है, उसी चरण की पूजा-अर्चना पूरे सद्‌भाव से होती आ रही है। वह चरण शांति-समृद्धि व मोक्ष का द्योतक है। विश्व में ऐसा चरण मंदिर कहीं नहीं है, जो अद्वितीय है। पिंडदान करने से पहले पिंडदानी सिर का बाल मुंडन करवाते हैं, उसके बाद पिंडदान करते हैं। पिंडदान के उपरांत पिंडदानी उसी पिंड को गौ को खिला देते हैं। विष्णुपद स्थित पवित्र फल्गुतट स्मृतियों का तीर्थस्थली है। जहाँ पिंडदान के माध्यम से पूर्वजों को मुक्ति प्राप्त होती है। यह धार्मिकता से महिमामंडित स्थल है। यही वजह है कि यहाँ अनवरत बारहों मास पिंडदान का सिलसिला चलता रहता है। यह मोक्षधाम, फल्गु नदी के तट पर अवस्थित है। जो अतिप्राचीन है। फल्गु नदी पहले तीर्थ नहीं था, परन्तु पिंडदान के महत्त्व के उपरांत फल्गु तीर्थ का रूप लिया और फल्गु तीर्थ बन गया। यानी फल्गु नारायण के रूप में आया और पूजनीय हुआ। पहले यह इलाका अरण्य वन सा था। धीरे-धीरे जंगल कटते गये ओर इलाका विकसित होता गया। अब यहाँ सालों भर भक्तिमय वातावरण कायम रहता है। पिंडदान के लिए पहले कुल 360 वेदियाँ थीं, परन्तु अब 45 वेदियाँ पावन पिंडदान के लिए शेष बची है। जिसमें 19 वेदियाँ विष्णुपद मंदिर के आस-पास ही हैं। फल्गु नदी का ब्राह्मणी घाट सौर तीर्थ है। सूर्यास्त तक ही श्राद्ध का विधान है। परन्तु ब्राह्मणी घाट अपवाद है। वहाँ दिन हीं नहीं, रात में भी श्राद्ध किया जाता है। मंदिर में सूर्य के बारह स्वरूप स्तंभ पर अंकित है। वहाँ कलाओं से युक्त सूर्य मूर्त्तियाँ है। जहाँ रात में भी श्राद्ध का विधान है। गयाजी धर्म का गढ़ है, जो पावन कल्याणकारी धर्मस्थली है। यह देव भूमि की नगरी है। यहाँ पितृपक्ष काल में तैंतीस करोड़ देवी-देवता निवास करते हैं, ऐसी मान्यता है। यह तीर्थं अनोखा है ही, अद्वितीय भी। यह महान चरणतीर्थ बिहार राज्य के गया जिला मुख्यालय में स्थित है। यहाँ अधिकतर बुजुर्ग लोग हीं पिंडदान करने आते-जाते हैं। चरणतीर्थ अध्यात्म, कर्म तथा ज्ञान की संगम स्थली है। पिंडदानी, पावन धार्मिक अनुष्ठान करते, अघाते नहीं। पवित्र कामना सहित पूर्वजों के मोक्ष प्राप्ति की पूर्त्ति के लिए श्रद्धालुजन यहाँ पहुँचते और भगवान विष्णु के चरण की पूजा-अर्चना करते हैं। धर्मग्रंथों में मान्यता है कि पूर्वजों को पिंडदान से मोक्ष मिलता है। हिन्दू धर्मावलंबियों के लिए गयाजी चरणतीर्थ स्थली आस्था तथा श्रद्धा का पावन स्थल है। दुनियाभर में यही एक ऐसा तीर्थ स्थल है जहाँ पूर्वजों की आत्मा की असीम शांति के लिए पिंडदान व तर्पण किया जाता है। यही वजह है कि यह चरणतीर्थ सबसे भिन्न है। जिसमें धार्मिकता व ऐतिहासिकता का अनोखापन समाहित है। हिन्दू धर्म में तीन ऋण का वर्णन है। जिसमें देव ऋण, ऋषि ऋण तथा पितृ ऋण प्रसिद्ध है। पितृ ऋण से छुटकारा पाने लिए पितृ यज्ञ यानी श्राद्ध का विवरण धर्मग्रंथों में अंकित है। शास्त्रानुसार पिंडदान, तर्पण सहित श्राद्ध अर्पित करने से पिंडदानियों को पूर्वजों की कृपारूपी आशीर्वाद मिलता है। उक्त तीनों ऋण जैसे देवऋण, ऋषिऋण और पितृपक्ष से लोग उऋण होते हैं। इस कार्य से सुफल, मन में सुख-शांति तथा में धन-संपदा का आगमन होता है। विकट संकट से प्राणियों को छुटकारा मिलता है। प्रभु श्रीविष्णु की असीम कृपा से अह्‌लदित है विष्णु नगरी मोक्षधाम। उनकी असीम अनुकंपा से पिंडदानियों का सदैव कल्याण होता है। चरणतीर्थ में अवस्थित विष्णुपद मंदिर में प्रभु श्रीविष्णु का चरण स्पर्श कर भक्तजन सुफल आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। महान चरणतीर्थ, दुर्गम सप्त पर्वत शृंखलाओं से आह्‌लादित है। वैष्णवों की महान चरणतीर्थ स्थली के कण-कण में श्रीहरि विष्णु समाहित हैं। महापावन चरणतीर्थ स्थली तप:स्थली, तप:भूमि है। मान्यता है कि चरणतीर्थ स्थली में पधार कर जो कोई भी श्राद्ध कर्म करता है, उसके सात कुल तर जाते हैं। समझो, उसके पूरे कुल-खानदान का तरण-तारण हो जाता है। यहाँ अयोध्या से प्रभु राम-सीता पधारे थे और अपने पिता राजा दशरथ को पावन पिंडदान दिये थे। सीता माता द्वारा दिये गए सिर्फ बालू के पिंड से हीं राजा दशरथ तर गए थे। चरणतीर्थ नगरी धार्मिकता व मोक्ष से ओत-प्रोत है। यहाँ सबों का कल्याण होता ही है, मोक्ष भी मिलता है। दानव प्रवृत्ति भी मानवता में परिवर्तित हो जाती है। यह ऐसी नगरी है।

लेखक-साहित्यकार-डीडी न्यूज पत्रकार, दूरदर्शन केन्द्र, पटना
संपर्क- वजीरगंज, गया - 805131 चलितभाषा: 9934799834.

◆

तर्पण : जीवन के बाद का जीवन दर्शन

अश्विनी

सदियों की आस्था। सदियों का संस्कार। पुरखों के प्रति प्रेम और सम्मान का अनूठा भाव। उनकी स्मृतियों को ताजा करने का एक अवसर और यह अवसर प्रदान करने वाली पवित्र फल्गु नदी। मोक्षभूमि गया। एक मेला तर्पण का। अर्पण श्रद्धा का। सनातन परंपरा को खुद में समाहित करने वाली फल्गु की पवित्र धारा। धन्य है वह भूमि, जहाँ हर साल लाखों लोगों के कदम पड़ते हैं। ये कदम पड़ते हैं पुरखों को मोक्ष की कामना के साथ। गयाजी। जिस शहर का परिचय ही मोक्ष है।

यह भारतीय संस्कृति का विराट स्वरूप ही है, जहां भौतिक जीवन की समाप्ति के बाद भी आत्मिक परछाई में पुरखे जीवित रहते हैं। उनके आशीष का भरोसा जीवित रहता है। उनके प्रति प्रेम और स्नेह की अनुभूति सदैव जीवित रहती है। जहां के कण-कण में मोक्ष हो, जिसकी धूलि और फल्गु जल के स्पर्श मात्र में पितरों के मोक्ष का प्रगाढ़ विश्वास हो, उस स्थल पर बार-बार नमन की इच्छा स्वाभाविक है। यही इच्छा लोगों को यहां खिंच लाती है। सनातन परंपरा और आस्था के वशीभूत अब तो विदेशों से भी लोग यहां आ रहे हैं। यह यूं ही नहीं है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था- यूरोप की ताकत उसकी राजनीति में हो सकती है, पर भारत की ताकत उसका अध्यात्म और जीवन दर्शन ही है।

इसका वह स्वरूप दिखता है पितृपक्ष मेले में जब हजारों-हजार लोग एक साथ पूरे श्रद्धा भाव से पितरों को तर्पण-अर्पण करने फल्गु तट पर जुटते हैं। मंत्रोच्चार की गूंज एक अजीब सी अनुभूति का अहसास कराती है। इसके सिर्फ धार्मिक-आध्यात्मिक मतलब नहीं है। वैज्ञानिक नजरिए से भी देखें तो साइकोलॉजिकली यह मन में एक विश्वास भरता है, शांति का अहसास कराता है। अब तो कई तरह की थेरेपी आ गई है। लोग साइकिएट्रिक काउंसलिंग के लिए जा रहे हैं, ताकि शांति मिले। दुनिया के सामने मानसिक शांति का संकट पैदा होता जा रहा है। लेकिन इस तट पर जिस शांति की अनुभूति होती है, वह सदियों से चली आ रही परंपरा का एक दृश्य है। इसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। जिन वेदियों पर पिंडदान किया जाता है, उस एक-एक वेदी के पीछे कई-कई कहानियां है। पुरखों ने इसके बारे में बताया और आज भी एक पीढ़ी से होती हुई दूसरी पीढ़ी तक ये कहानियां चली आ रही हैं, चलती रहेगी। आस्था यही होती है, जिसे किसी तर्क की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता। बस महसूस किया जा सकता है। गयाजी की पावन भूमि वही है। बस अहसास करते रहिए। जिस तट पर मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने भी पिंडदान किया हो, युधिष्ठिर ने भी किया हो, जहां चैतन्य महाप्रभु भी आए हो और विवेकानंद भी। जिस तट के किनारे तप कर राजकुमार सिद्धार्थ भगवान बुद्ध बने हों, उसके पावन अहसास को शब्दों में समेटना मुश्किल है। यही अहसास गयाजी को और शहरों से अलग करता है। यह नश्वर जीवन के बाद उस जीवन का अहसास कराता हैं, जहाँ आत्मा की मुक्ति, उसके मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। नैनं छिंदंति शस्त्राणि, नैनं दहति पावक- (आत्मा अमर हैं, इसे न मारा जा सकता है, न जलाया जा सकता है, न गलाया जा सकता है)। इसे चरितार्थ करती भूमि। तभी तो परमात्मा में लीन होने को आतुर अपने पितरों की आत्मा के मोक्ष के लिए तर्पण के कर्मकांड का हजारों वर्षो से यह सिलसिला अनवरत चला आ रहा है, चलता रहेगा। यही यहां का जीवन दर्शन है, यहां के धर्म, यहां की सनातन विशेषता-परंपरा और आध्यात्मिक भाव की कुंजी है। हाँ! यह दायित्व है इस शहर का कि इसकी उस पहचान को, फल्गु की पवित्र धारा को बचाए रखें, क्योंकि मोक्षभूमि और फल्गु एक-दूसरे के पर्याय हैं।

समाचार संपादक
दैनिक जागरण, गया

◆

फल्गु : भारतीय संस्कृति की अन्त:सलिला

सुनील सौरभ

मनुष्य स्वभावत: प्रगतिशील प्राणी है। यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता और उन्नत करता रहता है। ऐसे प्रत्येक जीवन-पद्धति, रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार, नवीन अनुसंधान और आविष्कार, जिससे मनुष्य पशुओं और जंगलियों से ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है, सभ्यता-संस्कृति का अंग है। सभ्यता से मनुष्य के भौतिक संग की प्रगति सूचित होती है, जबकि संस्कृति से मानसिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है। संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है, जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है। संस्कृति जीवन की विधि है। संस्कृति उस विधि का प्रतीक है जिसके आधार पर हम सोचते हैं और कार्य करते हैं। किसी देश की संस्कृति उसकी सम्पूर्ण मानसिक निधि को सूचित करती है। यह किसी खास व्यक्ति के पुरुषार्थ का फल नहीं, अपितु असंख्य ज्ञात तथा अज्ञात व्यक्तियों के भगीरथ प्रयत्न का परिणाम है। भारतीय संस्कृति की रचना भी इसी प्रकार हुई है।

भारतीय संस्कृति संसार की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है और बहुआयामी है। भारतीय संस्कृति सर्वांगणता, विशालता, उदारता, प्रेम और सहिष्णुता की दृष्टि से अन्य संस्कृतियों की अपेक्षा अग्रणी स्थान रखती है। भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि में मानव कल्याण की भावना निहित है। यहाँ पर जो काम होते हैं वो 'बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय' की दृष्टि से ही होते हैं। भारत ही नहीं सारे संसार में संस्कृति के विकास में नदियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। मानव का नदियों से अन्योन्याश्रय संबंध रहा है। पूरे संसार में नदी के किनारे ही मानव बस्तियाँ सबसे पहले बसीं। मानव सभ्यता, संस्कृति के विकास में नदी की जलधाराओं, उनके संगम क्षेत्र, नदी के किनारे स्थित मनभावन जंगल, जमीन और बालुका राशि का महत्त्व अक्षुण्ण रहा है। हमारे देश में तो युगों-युगों से नदियों का सामाजिक व सांस्कृतिक महत्त्व रहा है। यहाँ की नदियां धार्मिक दृष्टिकोण से अतिमहत्त्वपूर्ण रही है पितृतारक सरिताओं में गयाजी का फल्गु का सर्वाधिक महत्त्व है। इसे सुमागधा, मोक्षतोया, अंत:सार, अंत:सलिला, गदाधारी तथा मोक्षदायी भी कहा गया है। सच कहा जाय तो फल्गु भारतीय संस्कृति की अंत:सलिला है, इसमें कोई संशय नहीं है। क्योंकि हजारों-हजार साल से चली आ रही सनातन परंपरा और संस्कृति को अपने सीने पर बरकरार रखी। पितरों के मोक्ष की सनातन परंपरा और संस्कृति को फल्गु उसी रूप में आज भी कायम रखे हुए है, जिस रूप में हजारों साल पूर्व थी। दुनिया के कई देशों की परंपराएं बदली, कहीं-कहीं तो संस्कृति ने अपना रूप भी बदल लिया। लेकिन भारतीय संस्कृति और परंपराओं में बहुत कुछ नहीं बदला-बदला भी तो उसकी मूल भावना आज भी जस की तस है। इन्हीं परंपराओं में शक्ति है देश की धार्मिक नगरी गयाजी में फल्गु तट पर होने वाला पिंडदान, जो जीवित मानव अपने पितरों के मोक्ष के लिए करते हैं। इसका महत्त्वपूर्ण कृत्य पवित्र फल्गु तट पर होता है, इसीलिए कहा जाता है कि फल्गु भारतीय संस्कृति की अंत:सलिला है। हमारे देश में गंगा, यमुना, सरस्वती, सरयूग, नर्मदा, कावेरी, कृष्णा महत्त्वपूर्ण माना जाता है, लेकिन फल्गु अत्यंत पवित्र व धार्मिक रूप में बेहद महत्त्वपूर्ण है। केवल उनके लिए नहीं जो जल पीते हैं, जो इसे स्पर्श करते हैं, जो इससे स्नान करते हैं बल्कि उनके लिए भी जो अब इस दुनिया में हैं ही नहीं। दरअसल कहा जाता है कि फल्गु के जल का स्पर्श मात्र भी व्यक्ति के पूर्वजों की मुक्ति की राह खोल देता है। क्योंकि फल्गु के धार्मिक महत्त्व के बारे में मान्यता है कि यह भगवान विष्णु के चरण से निकलती है। यही कारण है कि इसका स्पर्श मात्र मनुष्य के लिए मुक्तिदायी होता है।

इसी धारणा के साथ हर साल देश दुनिया के लाखों लोग फल्गु दर्शन व इसके जल से स्नान के लिए गया पहुँचते हैं। धार्मिक ग्रंथों में कहा गया है कि अंत:सलिला फल्गु नदी के सृष्टिकर्त्ता भगवान ब्रह्मा हैं। गया तीर्थ को सर्वश्रेष्ठ मानकर पितामह ब्रह्म ने गया में यज्ञ किया था। ऐसी मान्यता है कि महानदी फल्गु तीर्थ में स्नान कर गदाधर भगवान का दर्शन करके सुकृत्कारी मनुष्यों को सब कुछ प्राप्त हो जाता है। फल्गु स्नान करके 21 पीढ़ी के पितर ब्रह्मलोक को प्राप्त कर लेते हैं।

वायुपुराण के अनुसार - फल्गु गंगा नदी से भी उत्तम है, क्योंकि गंगा केवल विष्णुपद नख से निकली है, परन्तु फल्गु स्वयं आदिगदाधर स्वरूप हैं। फल्गु दूध देने वाली नदी है, जिसके जल में शहद का अंश मौजूद है। घृतकुला, मधुकुला, कपिलधारा, अग्निधारा, वैतरणी तथा आकाशगंगा इसकी सहायक धाराएँ हैं। पुलस्य ऋषि के अनुसार - 'पुष्करेतु कुरुक्षेत्र गंगयां मगधेषुय, स्नात्वातारयंत जन्तु सप्तावंश स्तवा' अर्थात् पुष्कर, कुरूक्षेत्र, गंगा और मगध प्रदेश के तीर्थ फल्गु नदी आदि में स्नान करने वाला अपने सात पीछे और सात आगे की पीढ़ियों का उद्धार करता है। महाभारत के श्लोक संख्या 42 में फल्गु महिमा का बखान करते हुए कहा गया है - 'तत: ब्रजेद राजस्य तीर्थ सेवी नराधिष अश्वमेधम पापनोति सिद्धिच महती ब्रजते' अर्थात् फल्गु तीर्थ की यात्रा करने वाले को अश्वमेध यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है, क्योंकि यह पतित पावन पुण्यात्मा नदी है। गरुड़ पुराण में कहा गया है कि पितृगण नरक के भय से बहुत से पुत्रों की कामना करते हैं वह इसलिए कि उन बहुत से पुत्रों में से कोई एक भी पुत्र हाथ से तर्पण नहीं करके यदि पैरों से भी फल्गु के जल को स्पर्श कर देगा तो नरक से हमारा उद्धार हो जायेगा। फल्गु का शाब्दिक अर्थ भले ही निरर्थक, व्यर्थ, क्षूद्र, सामान्य, मिथ्या वचन आदि है। लेकिन फल्गु का एक अर्थ निस्सार (जिसमें कुछ तत्त्व नहीं हो, सारहीन) भी है। अत: इसका एक दार्शनिक अर्थ यह भी हो सकता है कि संसार की निस्सरता को साक्षी मानकर हम गया श्राद्ध करते हैं किन्तु यहाँ जो फल दे वही फल्गु है - 'फले ददाति च फल्गु'। गया स्थित फल्गु नदी में पिण्डदान का अर्थ होता है - सुफल प्राप्त करना। धार्मिक दृष्टिकोण से फल्गु तीर्थ की विस्तार से चर्चा गया महात्म्य के सातवें अध्याय में हुई है:-

नागाज्जनार्दनात् ब्रह्मकूपा दुत्तर मानसात्।
एतद्गयाशिरः प्रोक्तं फल्गुतीर्थं तदुच्यते।।
पितामहं समासाद्य यावच्चोत्तर मानसम्।
फल्गु तीर्थं तु विज्ञेयं देवानामपि दुर्लभम्।।

अर्थात् भष्मकूट पर्वत मंगलागौरी पहाड़ी से ब्रह्मकूप से उत्तर मानस तक देवताओं के लिए भी दुर्लभ फल्गुतीर्थ जानने योग्य हैं। उपर्युक्त के अलावा वेदों- पुराणों तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों में फल्गु की महिमा की विस्तृत चर्चा है। पुराणों में वर्णित है कि फल्गु नदी में ऐसे तो प्रतिदिन लोग पिण्डदान कर अपने पितरों की सुख-शांति की कामना करते हैं, परन्तु आश्विन महीना के प्रतिपदा से अमावस्या तक का समय पिण्डदान के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण माना गया है। इस अवसर पर देश-विदेश से लाखों हिन्दू गयाजी आकर विशेष रूप से अपने पितरों का फल्गु की पवित्र जलधारा से तर्पण कर इसकी बालुका राशि के पिण्ड से उनकी सुख-शांति तथा अपने सुख-चैन की कामना भगवान विष्णु से करते हैं। फल्गु की महिमा के सैकड़ों प्रामाणिक दृष्टांत हमारे सनातन धर्म के विभिन्न ग्रंथों में है। बदलते दौर और अति आधुनिकता की अंधी दौड़ में फल्गु में पिण्डदान करने की परंपरा उसी रूप में हो रही है, जिस रूप में सैकड़ों वर्ष पूर्व होती थी। इन्हीं सब बातों तथा धार्मिक ग्रंथो में फल्गु की महिमा को देखते हुए कहा जाता है कि 'फल्गु भारतीय संस्कृति की अंत:सलिला' है।

ब्यूरो प्रमुख 'चौथी दुनिया'
गेवालविगहा, गया-823001
मो० 99431085007, 7277991900

◆

गयातीर्थ में श्राद्ध का महत्व

दयाशंकर उपाध्याय

प्राचीन काल से हिन्दू संस्कृति में व्यक्ति के मरणोंपरान्त गया में श्राद्ध एवं पिण्डदान करना एक आवश्यक धार्मिक कृत्य माना गया है। वेदों में उल्लिखित 'कर्मकाण्ड' के अर्न्तगत विविध यज्ञों एवं अनुष्ठानों की पद्धति का वर्णन है जिसमें 'पितृयज्ञ' का उल्लेख है जिसे कालान्तर में श्राद्ध कर्म कहा गया। अत: पुराणों में गया का उल्लेख 'गया तीर्थ', 'देवतीर्थ' एवं 'पितृतीर्थ' के रूप में आया है। वायु पुराण (105/18) में कहा गया है- 'गयायां सर्वकालेषु पिण्डं दद्यात्- विचक्षण:' अर्थात् गया में सभी समय श्राद्ध किया जा सकता है। ''श्राद्ध'' शब्द की व्याख्या करते हुए पुराणों में कहा गया है- श्रद्धया कृतं सम्पादितमिदम् ''श्रद्धया इदं श्राद्धम्'' अर्थात् अपने मृत पितृगण के उद्देश्य से श्रद्धापूर्वक किये जाने वाले कर्म-विशेष को श्राद्ध कहते हैं। 'ब्रह्मपुराण' में श्राद्ध का विवरण विस्तारपूर्वक दिया गया है- देश, काल और पात्र में श्रद्धा द्वारा जो भोज पितरों के उद्देश्य से ब्राह्मणों को दिया जाय उसे "श्राद्ध" कहते हैं-

दश काले च पात्रे च श्रद्धया विधिना च यत्।
पितूनुद्दिश्य विप्रेभ्यो दत्तं श्राद्धमुदाहृतम्।।

महर्षि पराशर ने भी श्राद्ध के लक्षण बताते हुए कहा है- देश, काल तथा पात्र में हविष्यादि विधि द्वारा जो कर्म, तिल, यव और दर्भ, अन्न आदि से और मंत्रों से श्रद्धापूर्वक किया जाय, उसे 'श्राद्ध' कहते हैं।

"देश काले च पात्र च विधिना हविषा च यत्।
दर्भैश्च अन्नैश्चतिलैर्दमैश्र मन्ये च श्राद्धं स्यात्
श्राद्धया युतम्।।

"शास्त्रों में श्राद्ध के अनेक प्रकार के भेद का विवरण आया है। 'मत्स्यपुराण' में तीन प्रकार के श्राद्ध का उल्लेख है- 'नित्यं नैमित्तिकं काम्यं त्रिविधं श्राद्धमुच्यते' 'यमस्मृति' में पाँच प्रकार के श्राद्ध का उल्लेख है-

'नित्यं नैमित्तिकं काम्यं वृद्धिश्राद्धमथापरम्।
पार्वणं चेति विज्ञेयं श्राद्धं पंचविधं बुधैः।।'

प्रतिदिन करने वाले श्राद्ध को 'नित्य श्राद्ध', एकोद्दिष्ट प्रभृति श्राद्ध को 'नैमित्तिक' श्राद्ध, स्वाभिलषित कार्य सिद्धि हेतु किए जाने वाले श्राद्ध को 'काम्य श्राद्ध' कहा गया है। इसके अतिरिक्त पर्व में जो श्राद्ध किया जाता है उसे 'पार्वण श्राद्ध' कहते हैं। इन पाँच प्रकार के श्राद्धों का उल्लेख 'कूर्मपुराण' एवं 'वृहस्पति संहिता' में भी आया है। इनके अलावे जिस श्राद्ध में 'प्रेतपिण्ड' को 'पितृपिण्ड' में मिला दिया जाए तो उसे 'सपिण्डन श्राद्ध' कहते हैं। पुराणों में 'श्रौत और स्मार्त' श्राद्ध का भी विवरण आया है। श्रौत श्राद्ध में श्रुति के प्रतिपदा मंत्रों का प्रयोग होता है और स्मार्त श्राद्ध में वैदिक, पौराणिक तथा धर्मशास्त्रीय मन्त्रों का प्रयोग होता है। वेदों में वर्णित 'पितृयज्ञ' का अर्थ है- पिता, माता, आदि पारिवारिक व्यक्तियों की मृत्यु के पश्चात् उनकी तृप्ति हेतु श्रद्धापूर्वक किये जाने वाले पिण्डादि समस्त कर्म श्राद्ध शब्द से व्यवहृत होता है। 'महर्षि जाबालि' का विचार है कि पितृपक्ष में श्राद्ध करने से पुत्र, आयु, आरोग्य, अतुल ऐश्वर्य और इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होती है। 'आदित्यपुराण' में कहा गया है कि जो मनुष्य दुर्बुद्धिवश पितृलोक अथवा पितृगण को न मानकर श्राद्ध नहीं करता उसके पितर उसका रक्त-पान करते हैं। अत: मनुष्यों को पितृगण की सन्तुष्टि एवं स्व-कल्याण हेतु श्राद्ध अवश्य करना चाहिए। महर्षि सुमन्तु का भी यह कथन है कि संसार में श्राद्ध से बढ़कर अन्य कोई दूसरा कल्याणप्रद मार्ग नहीं। मार्कण्डेयपुराण के अनुसार पितृपूजन (श्राद्धकर्म) से सन्तुष्ट होकर पितर मनुष्य के लिए आयु, पुत्र, धन, विद्या, स्वर्ग, मोक्ष, बल, वैभव, सुख, एवं धन-धान्य प्रदान करते हैं-

'आयुः प्रजां धनं स्वर्गं, विद्यां मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छन्ति तथा राज्यं पितरः श्राद्धतर्पिताः।।"

ब्रह्मपुराण के अनुसार - जो मनुष्य अपने वैभव के अनुसार विधिपूर्वक श्राद्ध करता है, वह साक्षात् ब्रह्म से लेकर तृणपर्यन्त समस्त प्राणियों को वश में करता है। श्रद्धापूर्वक विधि-विधान के साथ श्राद्ध करनेवाला मनुष्य ब्रह्म, इन्द्र, रुद्र, नासत्य (अश्विन) सूर्य, अनल (अग्नि), वायु, विश्वेदेव, पितृगण, मनुष्यगण, पशुगण, समस्त भूपगण तथा सर्वगण को भी सन्तुष्ट करते हुए सम्पूर्ण जगत् को सन्तुष्ट करता है-

यो वा विधानतः श्राद्धं कुर्यात् स्वविभवोचितम्.
श्राद्धं श्रद्धान्वितः कुर्वन् प्रीणत्यस्यखिलं जगत्।।

इस प्रकार गृहस्थ को चाहिए कि वह हव्य से देवताओं का, काव्य से पितृगणों का तथा अन्न से अपने बन्धुबान्धव का सत्कार तथा पूजा करे।

"एवं सम्यग् गृहस्थेन देवताः पितरस्तया।
सम्प्रीत्या हव्यकव्येन अन्नेनापि स्वबान्धवाः।।"

हेमाद्रि के अनुसार जो मनुष्य एक दिन भी श्राद्ध करता है उसके पितृगण वर्षभर के लिए सन्तुष्ट हो जाते हैं-

''यो नै श्राद्धं नरः कुर्यादकस्मिन्नपि वासरे।
तस्य संवत्सरं यावत्- संतृप्ताः पितरो ध्रुवम्।।''

''महाभारत'' के अनुसार (अनुशासन पर्व-87/9-17) - श्राद्ध करने हेतु उचित समय प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक प्रत्येक तिथि में श्राद्ध करने का पृथक-पृथक फल युधिष्ठिर को भीष्म ने बताया। इसी प्रकार 'ब्रह्मपुराण' में प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक श्राद्ध करने हेतु विभिन्न फल बताये गए हैं। इसमें अतिरिक्त विभिन्न नक्षत्रों में श्राद्ध करने का भी विधान बताया गया है।

संक्षिप्त मे कहा जा सकता है कि श्राद्ध का फल केवल पितरों की तृप्ति ही नही है अपितु उससे श्राद्धकर्ता को भी विशेष फल की प्राप्ति होती है।

अतः व्यक्ति को श्राद्धकर्म द्वारा आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक उन्नति का लाभ मिलता है और पितरों की संतृप्ति तथा सद्गति के लिए तर्पण और पिण्डदान मुख्य कर्म हैं जो कि श्रद्धालुगण श्राद्धकर्म द्वारा पूर्ण करते हैं।

श्री रामनगर, बैंक कॉलोनी के सामने, मस्जिद रोड,
दिव्यायन के समीप, मोराबादी, राँची (झारखण्ड)
पूर्व प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

◆

गया-श्राद्ध में पुनपुन नदी की महत्ता

प्रभाकर शर्मा 'शास्त्री'

पुनपुन नदी को मागधी गंगा कहा गया है। मगध प्रदेश की यही एकमात्र नदी है, जो गंगा नदी में जाकर मिलती है, मगध पुरातन जनपद है। ऋग्वेद काल में इसकी ख्याति 'कीकट' नाम से थी। यहाँ के लोग प्रमगन्द (सूदखोर) थे। उन्हें नैचाशाख या गात्य (अनार्य) कहा जाता था। पुराण काल की उक्तधारणा थोड़ी बदलती जान पड़ती है। कुछ ऋषियों द्वारा मगध जनपद के चार स्थानों को पावन बतलाया गया है। वायु-पुराण अध्याय 108 से श्लोक 73:-

कीकटेषु गया पुण्या, पुण्यं राजगृहं वनम्।
च्यवनस्याश्रमं पुण्यं, नदी पुण्या पुनःपुना।।

हरिहरगंज ऐतिहासिक दृष्टि से पुनपुन नदी झारखंड प्रान्त स्थित पलामु जिला के तरिहरगंज अंचल वर्तमान पीपरा प्रखंड से कुंड (छोटानाला) के रूप में निकली है। यह नदी आगे जाकर टंडवा के निकट से रामरेखा, अदरी, मदार, धाबा, बटाने, नेरा एवं मोरहर आदि सहायक नदी के मिल जाने से गहरी हो गयी है। यह पलामु, औरंगाबाद, अरवल, जहानाबाद, पटना होते हुए फतुहाँ के समीप गंगा नदी में मिल जाती है।

गंगा शब्द सामान्य रूप से जल का पर्यायवाचक शब्द है। वर्तमान गंगा का उद्‌गम सतयुग के तपोनिष्ठ राजर्षि भगीरथ की अखंड-तपस्या से हुई है। इसी से इसका एकनाम 'भागीरथी' भी है।

भागीरथी से पूर्व भी गंगा नाम की एक नदी थी, जिसका नाम आज पुनपुन जाना जाता है। यही कारण से आज भी कहावत प्रचलित है- यथा :- 'आदिगंगा पुन:पुना'

गया-महात्म्य में इसकी चर्चा महर्षि सनतकुमार ने की है। 'आदिगंगा' के किनारे पुनपुनियाँ नाम की एक वेश्या रहती थी। वह संध्या समय घर लौट रही थी, तो रास्ते में अखंड-कीर्तन हो रहा था। अखंड-कीर्तन की आवाज सुनकर कीर्तन में शामिल हो गयी। कीर्तन-समाप्त होने पर वह वेश्या प्रसाद पाकर घर आ गयी। घर आते आते विचार में परिवर्तन हो गया और वह पुन: वहीं जाकर आसन लगाकर भगवान में ध्यानमग्न हो गयी। इसकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान प्रकट हो गये और वर मांगने की बात कही। इसपर पुनपुनियाँ वेश्या कहने लगी कि मेरे स्पर्श से जितने लोग पापी बने हैं, उनका उद्धार हो। भगवान ने तथास्तु कहा तथा अपने मन से दूसरा वरदान दिया कि आज से 'आदिगंगा' नदी तुम्हारे नाम से पुनपुनियाँ कही जायेगी। इस नदी में जो लोग स्नान, ध्यान, तर्पण, पिण्ड, दान करेगा, उसका एक सौ बीस पीढ़ी का उद्धार हो जायेगा। पुनपुनियाँ वेश्या भी उसी वक्त नदी के तटपर पार्थिव शरीर छोड़कर वैकुण्ठ चली गयी। आज भी पुनपुनियाँ से अपभ्रंश पुनपुन कहला रही है। इस मगध में वाणभट्ट भृगु एवं च्यवन-ऋषि तपोवल से यज्ञ-धार्मिक अनुष्ठान करने लगे, तथा मगध की महिमा बढ़ने लगी। अति तेजस्वी राजर्षि गया ने गया में ब्रह्म सरोवर के निकट यज्ञ सम्पादित किया । यज्ञ के हविष्य से देवताओं को पूर्ण तृप्त किया। मगध जनपद में विद्यमान गंगा शिर नामक पर्वत पर राजर्षि गय ने अपनी नगरी बसायी, तथा च्यवन आदि ऋषियों के बुलाकर अश्वमेध-यज्ञ भी करवाया। यथा:-

'इक्ष्वांकुवंशे राजर्षि गयो नामाऽति विश्रुत:।
निर्ममे मगधेष्वद्रौ गयायां भवकरोत-मखमै।।
(पद्‌म पुराण, स्वर्गखण्ड अ० 38) श्-11,12

मगध में कर्णदा जो पुनपुन नदी का प्राचीन नाम है। यह नदी पीतरगण के स्वर्ग दिलाने वाली नदी बन गयी। यथा:-

तत्रदेशे गयानाम पुण्य देशोऽस्ति विश्रुत:।
नदी च कर्णदा नाम पितृणांस्वर्गदायिणी।।

(कूर्म पुराण से)

गया-श्राद्ध करने वाले यात्रियों के गया-श्राद्ध के पूर्व पुनपुन नदी में स्नान, तर्पण एवं पिण्डदान करके गया पहुँचना चाहिये। यथा:-

गयायांगच्छत: पुंसां मार्गेगंगा पुन:पुना।
समायात्यत्र प्रथमं पिंडं, दद्यात् विचक्षण:।।

(कूर्म पुराण से)

भगवान राम 'देवकुंड' रामपुर चाय, पंत्तीथ अरवल जिला होते हुये गया जी में गया श्राद्ध हेतु गये थे। पाण्डवगण भी हस्तिनापुर से चलकर पुनपुन नदी में (पटना के निकट) पिण्ड देकर जहाँ शान्ति-विश्राम किया था, उस स्थान का नाम कुरुस्थान था। कुरु स्थान से कुरुथान बना । अब कुर्था नाम से जाना जाता है।

गया जी जाने के पूर्व अनुग्रह नारायण रोड (औरंगाबाद जिला) पुनपुन स्टेशन (पटना जिला) पंतीथ (अरवल जिला) अथवा किंजर (जहानाबाद जिला) में पिण्ड देकर गया-जी श्राद्ध करने जाते है।

सेवानिवृत शिक्षक
बारा, कुर्था, अरवल

◆

गया श्राद्ध : मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन

आचार्य सुशील कुमार तिवारी

सनातन संस्कृति आदिकाल से देव पितृ पूजक रही है। हिन्दू समुदाय में देवताओं की तरह ही पितृजनों के पूजन की भी परम्परा रही है जिसे हम श्राद्ध और तर्पण के रूप में जानते हैं। गृहस्थ धर्म में निर्धारित दैनिक पाँच यज्ञों में एक पितृयज्ञ भी है। संध्या वन्दन तथा देवो पासना की तरह ही पितृतर्पण और पितृश्राद्ध भी हमारा नित्य-नैमित्तिक कर्म है। यों तो वर्षकृत्य के अंतर्गत हमारे श्रुति स्मृति पुराणादि ग्रंथों में प्रत्येक महीने के दोनों पक्षों में गणेश चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, एकादशी, त्रयोदशी, मास शिवरात्रि आदि व्रत बतलाये गये हैं तथा विशेष पर्व त्योहारों के अन्तर्गत दशहरा, दीपावली, होली, शारदीय, वासंतिक एवं शिशिर कालीन नवरात्र आदि अनेक अवसर बतलायें गये हैं। जिसमें सकाम एवं निष्काम भाव से देवाराधन का विधान है किन्तु पितरों की उपासना के लिए वर्ष में एक ही पर्व बतलाया गया है जो भाद्रपद पूर्णिमा से आरंभ होकर आश्विन शुक्ल प्रतिपदा तक (17 दिनों का) अथवा आश्विन कृष्ण प्रतिपदा से आश्विन अमावास्या तक (15 दिनों) का माना जाता है। इसमें भगवान सूर्य प्राय: कन्या राशि में हुआ करते हैं। मानव के शारीरिक पिण्ड के निर्माण से लेकर विद्या, बुद्धि, वैभव तथा संस्कार पर्यन्त संरचना में पितरों का योगदान एवं प्रभाव सन्निहित है जिसे न तो हमारे धर्मशास्त्र अस्वीकार करते, नहीं तो विज्ञान ही। वैसे पूर्वजों के लिए यदि किसी वर्ष में एक वार और एक दिन के लिए भी समय नहीं निकाल सकें तो यह परम दुर्भाग्य और कृतघ्नता ही कही जायेगी। इसी तरह भारतवर्ष की पुण्यभूमि में अनेक देवतीर्थ के उल्लेख हुए हैं किन्तु पितृतीर्थ के रूप में प्रभास क्षेत्र, पुष्कर क्षेत्र, गयाधाम, प्रयाग, देव प्रयाग तथा बदरीकाश्रम जैसे कुछ क्षेत्र ही आये हैं जहाँ पितरों के लिए श्राद्ध तर्पणादि के विधान हैं। इनमें गयाधाम की महत्ता सर्वाधिक है। वायु पुराण के अनुसार -

पृथिव्यां यानि तीर्थनि ये समुद्राः सरांसि च ।
फल्गुतीर्थं गमिष्यन्ति वारमेकं दिने दिने ।।
पृथिव्यां च गया पुण्या गयायां च गयाशिरः ।
श्रेष्ठंतथा फल्गुतीर्थं तन्मुखं च सुरस्य हि।।

अर्थात् पृथ्वी पर (अखिल भूमण्डल में) जितने भी तीर्थ हैं (जो समुद्र, नदी अथवा सरोवर के रूप में अधिष्ठित हैं) वे प्रतिदिन एक बार गयाधाम में अवश्य आते हैं (अर्थात् उपलब्ध हो जाते हैं) तात्पर्य यह कि एक मात्र गयातीर्थ में आगमन, स्नान और तर्पणादि से सारे तीर्थों में भ्रमण दर्शन तथा पूजन के फल प्राप्त हो जाते हैं। फल्गु नदी (अंत:सलिला) के जल में इन सारे तीर्थ जल का समाहार है जिसका एक बार दर्शन, पान और जिस जल में एक बार स्नान मात्र ही अपने सहित शताधिक पीढ़ियों के उद्धार (मोक्ष प्राप्ति) के लिए पर्याप्त है।

इस पृथ्वी पर गयाधाम पुण्यक्षेत्र है, गया में भी गयासिर विष्णुपद क्षेत्र एक कोस अर्थात् तीन किलोमीटर की परिधि श्रेष्ठ है। उसमें फल्गुतीर्थ सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि वहीं देवताओं का मुख है। सम्पूर्ण गयाक्षेत्र पाँच कोस अथवा पन्द्रह किलोमीटर की परिधि की भूमि पुण्यमयी और मोक्षदायिनी है। यहाँ कहीं भी किसी दिन भी श्राद्ध और तर्पण पितरों के लिए मोक्षदायक है। यथा-

गयायांन हि तत्स्थानं यत्र तीर्थं न विद्यते ।
सान्निध्यं सर्व तर्भनां तीर्थं ततो वरम्।।
पञ्चक्रोशं गयाक्षेत्रं यत्र तत्र तु पिण्डदः।
अक्षयं मारनोति ब्रह्मलोकं नयेत् पितृण्।।

पौराणिक मान्यता के अनुसार हर कुल के पितर प्रतिवर्ष गयाधाम में आकर अपने वंशजों (पुत्र पौत्रादि की) के पिंडदान की प्रतीक्षा करते हैं। उन्हें आशा होती है कि मेरा कुलोद्भव कोई संतान यहाँ आयेगा और श्राद्ध-तर्पणादि से तृप्त कर हमें पूर्वकृत

पाप की यातनाओं से मुक्ति दिलायेगा किन्तु जब अमावास्या तक उनके कोई वंशज यहाँ नहीं पहुँचते तथा उनका श्राद्ध तर्पण नहीं करते तो वे अतिशय उदास होकर अपनी संततियों को शाप देते हुए निराश लौट जाते हैं। अत: हर पुत्र का यह कर्त्तव्य है कि पितृपक्ष में वह पितरों का श्राद्ध और तर्पण अवश्य करे। गयाधाम में अपने पुत्र पौत्रादिकों को देखकर पितृजन काफी खुश होते तथा उत्सव मनाते हैं। उन्हें आशा होती है कि फल्गु के पुण्यमय जल में खड़े होकर वे उनका तर्पण करेंगे जिससे उन्हें तृप्ति होगी और मुक्ति मिलेगी। पितृजन सदैव अपनी संतान द्वारा प्रदत्त जल के पिपासु हैं तथा संतान से उन्हें तर्पण (जलदान) की अपेक्षा होती है –

गयाप्राप्तं सुतं दृष्ट्वा पितृणामुत्सवो भवेत्।
पद्भ्यामपि जलं स्पृष्ट्वा सोऽस्भ्यं किं न दास्यति।।

तर्पण का विधान हर वेदी पर और हर श्राद्ध के साथ है। तर्पण श्राद्ध का अभिन्न अंग है। यह स्वतंत्र रूप से भी किया जा सकता है। पिण्डदान के पूर्व उसके आम रूप में भी किया जा सकता है। श्रद्धालु पुत्र सालोभर प्रतिदिन देवताओं पितरों और ऋषियों के तर्पण कर सकते हैं। पितृपक्ष में विशेष रूप से पन्द्रह दिन तर्पण किये जा सकते हैं। यदि यह सम्भव नहीं तो पितृपक्ष में पितृक्षयाह तिथि को अथवा वह भी ज्ञात नहीं हो तो अमावस्या को पितरों का तर्पण अवश्य करना चाहिए।

विशेष रूप से गयाक्षेत्र में पुत्र, पौत्र, भ्रातृव्यादि कोई भी कुलोद्भव यदि गया कूप में पिण्डदान करता है तो जिन जिन नामों से संकल्पित पिण्ड वहाँ दिये जाते हैं उन आत्माओं को नारायण की सायुज्य मुक्ति प्राप्त होती है–

आत्मजो ऽप्यन्य जो वाऽपि गया भूभौ यदा तदा ।
यन्नाम्ना पातयेत् पिण्डं तं नयेत् ब्रह्म शाश्वतम्।।

गया श्राद्ध के प्रभाव से अपने और पूर्वजों के जन्म जन्मांतर के कायिक, वाचिक, मानसिक, सांसर्गिक सारे पाप महापातक नष्ट हो जाते हैं। गरुड़ पुराण में कहा गया है –

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमम्।
पापं संसर्गजं सर्वं गया श्राद्धाद्विनश्यति।।

पुन: उन तृप्त पिता, पितामहादि के आशीर्वाद से मानव को इहलोक और परलोक में सब कुछ प्राप्त हो जाते हैं। कुछ शेष नहीं रहता। धर्मशास्त्र की मान्यता है–

आयुः पुत्रान्यशः स्वर्गं कीर्तिं पुष्टिं बलं श्रियम्।
पशून सौख्यं धनं धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्।।
आयुः प्रजा धनं विद्यं स्वर्गं मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छन्ति तथा राज्यं प्राप्नुयात् पितृ पूजनात्।।

अत: 'लोक सुख' के आकांक्षी सद्गृहस्थ पितृपक्ष में और संभव हो तो गयाधाम में पितरों के श्राद्ध तर्पण तथा उनके निमित्त यथाशक्ति दान अवश्य करें।

सहायक प्राध्यापक, व्याकरण-विभाग
ब्रजभूषण संस्कृत महाविद्यालय
खरखुरा, गया - 823002

◆

हरि व्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम ते प्रकट हों हि मैं जाना।।

– गोस्वामी तुलसीदास

गया स्थित विष्णुपद का पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक महत्व

प्रो० मुन्द्रिका प्रसाद नायक

वायुपुराण के अनुसार गया का नामकरण गय नामक असुर के नाम पर किया गया था। गयासुर के पिता का नाम त्रिपुरासुर तथा माता का नाम प्रभावती था। गयासुर अत्यंत बलवान और बुद्धिमान व्यक्ति था। उसने महर्षि शुक्राचार्य से वेद, वेदांग और धर्मशास्त्रों में विद्वता तथा दक्षता प्राप्त की थी। कहा जाता है कि जो व्यक्ति उसका पूजन, दर्शन और शरीर स्पर्श करता वह सीधे स्वर्ग जाता था। फल यह हुआ कि सभी जीव उसके स्पर्श मात्र से ही स्वर्ग जाने लगे। इससे देवताओं में घबराहट होने लगी। नतीजतन समस्त देवतागण ब्रह्मा को लेकर विष्णु के पास गये और वृत्तांत सुनाये। भगवान विष्णु ने ब्रह्मा से कहा कि आप गयासुर के पवित्र शरीर पर एक यज्ञ का अनुष्ठान करें। इतना सुनकर ब्रह्मा ने गयासुर से, यज्ञ हेतु शरीर मांगा। परमधर्मपारायण गयासुर ने ब्रह्मा के कहने पर, अपना शरीर यज्ञ हेतु दे दिया। यज्ञ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के अनुष्ठान हेतु सम्पन्न होने के क्रम में, उसके शरीर के हिलने पर देवतागण घबराने लगे। वे पुनः भगवान विष्णु के पास जाकर अभ्यर्थना करने लगे। विष्णु पुनः आये और गयासुर के विशालकाय शरीर पर पाँव रखकर सवार हो गये। बतलाया गया है कि विष्णु के ऐसा करने पर उसका प्राणान्त होने लगा। मरते-मरते उसने विष्णु से प्रार्थना की कि हे भगवान! मेरी मृत्यु जहाँ भी हो, मैं शिला होकर वहाँ विद्यमान रहूँ। जो कोई भी शिला पर पिण्डदान एवं तर्पण करें, उसके पितृगण सभी पापों से मुक्त हों, तथा स्वर्ग में वास करें। जिस दिन ऐसा नहीं हो, उस दिन उस शिला का नाश हो जाय। विष्णु ने उसकी अभ्यर्थना को स्वीकार कर लिया। उस दिन से पिण्डदान की परंपरा प्रारंभ हो गयी, जो आज भी की जाती है।

गया एक प्रमुख धार्मिक केन्द्र के रूप में विश्रुत रहा है। यह विविध संस्कृतियों एवं विचार धाराओं का संगम है। यहाँ एक तरफ वैदिक देवों की पूजा होती है तो दूसरी ओर असुर नाग, यक्ष तथा वृक्ष की भी पूजा अर्चना होती है। पालि बौद्ध साहित्य में गया का वर्णन तीर्थस्थल के रूप मिलता है। वहाँ कहा गया है कि प्रत्येक वर्ष फाल्गुन मास में यहाँ के 'गया फाल्गुनी' नामक स्थान पर बड़े मेले का आयोजन होता था। जिस स्थल का उल्लेख पालि साहित्य में मिलता है, सम्भवतः उसी के समीप कथित विश्वप्रसिद्ध विष्णुपद मंदिर अवस्थित है। पालि साहित्य में विष्णुपद को भिक्खुपद कहा गया है। भारत के वैष्णव मंदिरों मे गया स्थित विष्णुपद का महत्वपूर्ण स्थान है। यह फल्गु, जिसे बौद्धकाल से निरंजना नदी कहा जाता था, के बाएँ तट पर स्थित है। जिस स्थान पर यह मंदिर स्थित है, उसके विषय में विद्वानों का कहना है कि भगवान विष्णु ने गयासुर नामक असुर का वध दाहिने पैर से दबा कर यहीं पर किया था और उनके दाहिने पद चिह्न जो इस मंदिर के गर्भगृह में अंकित है, में पूजा कर्म होता है। इस पदचिह्न का आकार 35 सेमी लम्बा है। विभिन्न पुराणों के विशेषकर वायुपुराण के 'गया महात्म्य' के अध्ययन से विष्णुपद की लोकप्रियता एवं गयासुर के समर्पण का पता चलता है। महाभारत में गया के अनेक धर्म स्थलों का वर्णन मिलता है परन्तु उसमें विष्णुपद की चर्चा नहीं मिलती है। सौभाग्यवश महाभारत के अरण्यपर्व में निम्नलिखित श्लोक मिलता है।

उद्यन्तं च ततो गच्छेत् पर्वतं गीतनादितम्।
सावित्र्यास्तु पदं तत्र दृश्यते भरतर्षभ ।।

इसके अनुसार गया के उद्यन्त पर्वत पर सावित्री पद स्थित है, परन्तु बाद में साहित्यों में सावित्री पद का कोई उल्लेख नहीं मिलता। सर्वत्र विष्णुपद का ही जिक्र मिलता हैं। गया स्थित किसी पहाड़ी पर भी सावित्री पद का अवशेष नहीं मिलता है। विष्णुपद में सूर्यदेव अर्थात सावित्री की अनेक प्रतिमाएँ समाहित हैं, यह शास्त्रविहित बतलाया गया है। इस कारण महाभारत का सावित्री पद स्वाभाविक तौर पर गया स्थित विष्णुपद हो सकता है।

ऋग्वेद के मंत्रों में विष्णु और सूर्य के साहचर्य तथा विष्णु के पादों का अनेकानेक स्थानों पर उल्लेख मिलता है। विष्णु के तीन पादों के विषय में यास्क ने अपने निरुक्त मे शाकपूर्ण तथा प्रभूति, आचार्य आदि टीकाकारों के मतों को उद्धृत किया है। उनके अनुसार विष्णु का तीसरा पाद गया के मस्तकाग्र पर रखा है। समारोह विष्णुपद गयाशिरसि। और्णनाभ द्वारा व्याख्यापित विष्णुपदों के रूपक का प्रभाव गया महात्म्य पर पड़ा है। उनके अनुसार गया के विष्णुपद की मान्यता प्राक्बुद्ध के रूप में भी विहित हो सकता है, जिसकी पूजा अर्चना का महात्म्य अद्यावधि अक्षुण्ण है। विष्णु से सम्बद्ध एक अन्य प्रमाण हमें वैशाली में प्राप्त हुआ है। वहाँ उत्खनन के क्रम में गुप्तकाल के मिट्टी की मुहर मिली है जिस पर त्रिशूल, दण्ड, शंख और चक्र अंकित हैं। उसके बायीं ओर चक्र तथा पहिए का सा एक चिह्न है। इस पर एक लेख उत्कीर्ण है। 'विष्णुपाद स्वामी नारायण' अनुमान है कि इसका सम्बंध प्रसिद्ध 'विष्णुपद' से होना चाहिए। ऐसी स्थिति में गया स्थित विष्णुपद मंदिर को गुप्तकाल में विद्यमान होना चाहिए । बाद में यह मंदिर नष्ट हो गया होगा। इसी स्थल पर 18वीं शताब्दी के उतरार्द्ध मे रानी अहिल्याबाई होल्कर ने वर्तमान मंदिर का निर्माण करवाया होगा। यह विष्णु मंदिर स्थापना कला का एक महत्वपूर्ण नमूना है मंदिर भूरे ग्रेनाइट पत्थरों से निर्मित हैं। इस मंदिर का स्थापत्य इस प्रकार है। मुख्यगर्भ गृह, सामने स्तंभयुक्त मण्डप, चारों ओर से परकोटा से घिरा हुआ खुला प्रांगण। प्रत्येक समूह में चार स्तम्भ है तथा मध्य में 16 वर्गफीट खुला स्थल है। आठ समूहों मे खड़े स्तम्भों पर आधारित मण्डप 58 फीट वर्गाकार है।

स्तम्भ पर अल्प अलंकरण है। इसके मध्यभाग के उपर 80 फीट ऊँचा एक सुन्दर गुम्बद है। मंदिर का मुख्य गर्भगृह अष्टभुजाकार है। इसके ऊपर करीब 100 फीट ऊँचा एक पिरामिडाकार शिखर है। इस मंदिर से सटे एक विस्तृत 'बरादरी' है जिसमें 16 आग्नेय शैल से निर्मित स्तंभ है। इन 16 स्तम्भों के कारण ही इस स्थल को 'सोलहवेदी' कहा जाता है। प्रवेश द्वार के निकट ही चार स्तम्भों पर टिकी एक छतरी है जो लोगों के अनुसार नेपाल के एक मंत्री रणजीत पाण्डेय द्वारा प्रदत्त घंटी को टांगने के लिए बनाया गया था। लेकिन प्रसिद्ध इतिहासकार बुकानन के अनुसार यह स्थल रानी अहिल्याबाई होल्कर की मूर्ति स्थापना के लिए थी। विष्णुपद मंदिर, कृष्ण द्वारिका मंदिर, ब्रह्मयोनि आदि प्रमुख स्थापत्य है।

विष्णुपद को पितरों के प्रति श्रद्धा, विश्वास और आस्था व्यक्त करने का केन्द्र के रूप में माना गया है। भाद्रपद की चर्तुदशी जिसे अनन्त चर्तुदशी भी कहा जाता है, के दूसरे दिन से पंद्रह दिनों के पक्ष पितृपक्ष के समय विश्वभर से लोग यहाँ अपने पितरों के प्रति श्रद्धा निवेदित करने के लिए आते है। इस अवधि में सभी पितृगण, शास्त्रानुसानर अपेक्षा रखते हैं कि उसके वंश का कोई न कोई व्यक्ति गया आयेगा और उन्हे तर्पण कर तृप्त करेगा, ऐसी किंवदंती है।

जीवितो वाक्य पालनात्।
क्षयाहे भूरि भोजनात्।।
गयायां पिण्ड दानाच्च।
त्रिभिःपुत्रस्य पुत्रता।।

पिता के जीवित रहने पर उनकी आज्ञा का पालन करना, मरणोपरान्त क्षयतिथि पर भूखे जन को भोजन कराना और श्राद्धकर्म पूरी आस्था और श्रद्धा के साथ सम्पादित करना, शास्त्र विहित माना गया है।

'श्राद्ध' शब्द श्रद्धा से बना है। श्राद्ध जैसे अनुष्ठान में श्रद्धा का होना परमावश्यक है। यों तो श्राद्धकर्म या पितर पूजा सालों भर चलता रहता है, परन्तु पितृपक्ष में श्राद्धकर्म करने 'अश्रद्धा प्ररम पापं श्रद्धा पाप विमोचनी'। पिण्डदान के लिए पूर्व में 365 वेदियाँ निर्मित थी, जो अब घटकर 45 रह गयी है। वैसे मुख्यरूप से विष्णुपद, फल्गु और अक्षयवट इन वेदियों पर ज्यादातर पिण्डदान के काम होते हैं।

सेवा निवृत्त प्रोफेसर
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

पितरों की तृप्ति का साधन श्राद्ध

डॉ० कौशल किशोर पाण्डेय

हिन्दू संस्कृति में गर्भाधान से प्रारम्भ होकर मृत्युपर्यन्त षोडश संस्कारों के विवेचन मिलते है, जिनमें अन्तिम संस्कार श्राद्ध है, श्राद्ध के भेदोपभेद में भी मतैक्य नहीं दृष्टिगत होता है, फिर भी सर्वमान्य सुलभ उपलब्ध भेदों की चर्चा नीचे अंकित की जा रही है जिसका आधार भविष्यपुराण है।

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं वृद्धिश्राद्धं सपिण्डनम्।
पार्वणं चेति विज्ञेयं गोष्ठीं शुद्ध्यर्थमष्टमम्।।
कर्माङ्ग नवमं प्रोक्तं दैविकं दशमं स्मृतम्।
यात्रास्वेकादशं प्रोक्तं पुष्ट्यर्थं द्वादशं स्मृतम्।।

पितरों की तृप्ति का मुख्य साधन श्राद्ध ही है। श्राद्ध प्रत्येक माह के कृष्णपक्ष में आता है, जिसे पार्वण के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक मनुष्य को अपने पितरों की तृप्ति के लिए श्राद्ध प्रति वर्ष करने का विधान है, अर्थवेद भी कहता है- 'पितृभ्यो मासि उपमास्यं ददाति।' यानी प्रत्येक माह में श्राद्ध करना चाहिए, यहाँ माह का तात्पर्य वर्ष से है, क्योंकि मनुष्यों का एक माह पितरों एक दिन रात होता है-

पित्रये रात्रयहनी मासः प्रविभागस्तु पक्षयोः।
कर्मचेष्टास्वहः कृष्णः शुक्लः स्वप्नाय शर्वरी।
(मनु०1/66))

यानी मनुष्यों का एक माह पितरों का रात दिन होता है और उनके दोनों पक्षों का विभाग यह है कि काम करने के लिए जो कृष्णपक्ष है वह दिन तथा सोने के लिए शुक्लपक्ष है वह रात्रि है, इस तरह वर्ष में एक वार भी किये गये वार्षिकादि श्राद्ध से पितरों की तृप्ति निश्चित रूप से होती है।

पितरों के दिन रात का विभाजन जो मनुष्यों के माह से किया गया है इसका कारण निम्नलिखित है।

विधूर्ध्वभागे पितरो वसन्तः
स्वाधः सुधादीधितिमामनन्ति।
पश्यन्ति तेऽर्कं निजमस्तकोर्ध्वं
दर्शे यतोस्माद्द्युपलं तदैषाम्।।
सिद्धान्त शिरोमणि गो० 13।।

इस श्लोक से पितृलोक चन्द्रलोक के ऊपर सिद्ध होता है। शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा सूर्य से दूर होता है तब पितृलोक में 15 दिन में निरन्तर एक रात्रि और कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा सूर्य के क्रमशः निकट हो जाता है तब पितरों का 15 मे निरन्तर एक दिन होता है। अमावस्या तिथि को जब सूर्य चन्द्र एक राशि में होते है तब मध्याह्न काल होता है, इस काल को पितरों का भोजनकाल कहते हैं, यह कारण है कि - 'त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः' इस विष्णुपुराण के वाक्य से मध्याह्न काल में पिण्डादि दान का अधिकाधिक महत्व है। मृत्युलोक से प्रस्थान किये गये पितरों की स्थिति पितृलोक में हुआ करती है।

'अधा मृताः पितृषु सं भवन्तु।'
(अर्थव० 18/4/48)
'पितृणां लोकमणि गच्छन्तु ये मृताः।'
(अर्थव० 12/02/45)

पितरों को भोजनादि प्राप्त कराने का साधन-

पितृलोकस्थ पितरों को भोजन अथवा किये गये दानादि वस्तुओं को प्राप्त कराने का मुख्य रूप से दो प्रकार के साधनों का विवेचन शास्त्र में मिलता है।

1. अग्नि में हवन के द्वारा-
2. अग्नि के सहोदरभूत ब्राह्मण अग्नि के सहाद कैसे? इस प्रश्न का उत्तर वेद वाक्यों से तथा मनुस्मृति से प्राप्त होता है जो इस प्रकार है-

ये निखाता ये परोप्ता ये दग्धाये च चोद्धिताः
सर्वास्तानग्न आ वह पितून् हविषे अत्तवे।।
(अर्थव 18/2/34)

विराट् पुरुष के मुख से अग्नि और ब्राह्मण दोनों की उत्पति बताई गयी है- ब्राह्मणोस्यमुखमासीत्" (यजु०-सं० 31/11) 'मुखादग्निरजायतः (यजु० सं० 31/12)' इसी कारण से ब्राह्मणः कहा गया है,

इस वाक्य से ब्राह्मण और अग्नि की सजातीयता सिद्ध होती है। मनुस्मृति में तो इतना एक कह दिया है कि-

अग्न्यभावे तु विप्रस्य पाणावेवोपपादयेत्।
यो ह्यग्निः स द्वि जो विप्रैमंत्रर्शिभिरूच्यते।।
(मनु० 3/212)

यदि अग्नि न हो तो ब्राह्मण को ही कव्य प्रदान कर दें।

ब्राह्मणों ह वा इमम्ग्निं वैश्वानरं बभार।
(गोपथ 1/2/20)

वैश्वानरः प्रतिशत्य तिथि ब्राहमणो गृहान्।
(कठोपनिषद् (1/1/7)

दोनों ग्रन्थों में ब्राह्मणों का अग्नि से सन्निकटता का प्रमाण मिलता है, उपर्युक्त प्रमाणों की पुष्टि महाभारत के आदि पर्व के 29 वां अध्याय से हो जाती है, प्रसंग आया है कि निषाद् के आचार वाले गरुड़ महाराज जब ब्राह्मणों को निगलने लगे तब उनके कण्ठ में अग्निदाह होने लगा था। इससे सिद्ध होता है कि ब्राह्मण अग्नि का सहोदर है।

महर्षि पाणिनि में भी व्याकरण अष्टाध्यायी के सूत्र 'सास्य देवता' 4/2/24 की व्याख्या में लिखा है - 'आग्नेयो वै ब्राह्मणों देवतया'। इस वाक्य के सन्दर्भ में वालमनोरमा टीका कहती है- 'अग्निर्नाभ यो देवता जाति विशेषो लोकवेद प्रसिद्धः तदभि-मान को ब्राहमणः।' इन वाक्यों से तथा सूत्र की व्याख्या से यह स्पष्ट होता है कि अग्नि और ब्राह्मण की सजातीयता है, तथा पितरों को कव्यादि प्राप्त कराने का यही दो साधन उपयुक्त हैं। यही कारण है कि श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन एवं दानोपदान के पश्चात् अन्नादि दान का महत्व है क्योंकि दिये गये दान पितरों को पितृलोक में निश्चित रूप से प्राप्त होते हैं, इसमें संशय नहीं है।

दूसरा प्रमाण है कि जिस तरह यज्ञ में हविर्दान से तृप्त होकर देवता वृष्टि करते हैं और अन्नादि का उत्पादन होता है, उसी प्रकार श्राद्ध में भी जब कव्य को अग्नि का सहोदर ब्राह्मण या स्वयं अग्नि प्राप्त करता है तब उस ब्राह्मण की अग्नि या स्वयं अग्नि कव्य को सूक्ष्म रूप कर महाग्नि के साथ मिल जाती है और आकाश में जाकर चन्द्रलोकस्थ पितरों को सौंप देती है। पितर हवि प्राप्त करके तृप्त होते है। और श्राद्धकर्ता को धान्य सन्तानादि की व्यवस्था अपने माहात्म्य से कर देते है। जिस प्रकार देवताओं को 'सोमाय स्वाहा वरुणाय स्वाहा' इत्यादि मंत्रों द्वारा दी हुई हवि को सूर्य खींचता है, उसी प्रकार पितरों के उद्देश्य से दी गई हवि को चन्द्रमा खींचते हैं ओर चन्द्रलोकस्थ पितरों को प्राप्त करा देते हैं।

श्राद्ध में संकल्प का अधिक महत्व है, अतः श्राद्धकर्ता को चाहिए कि सुयोग्य शास्त्रज्ञ ब्राह्मण से ही श्राद्धकर्म सम्पादित करावे क्योंकि 'पितरो वाक्यमिच्छन्ति भावमिच्छन्ति देवताः' ऐसा उल्लेख शास्त्रों में मिलता है। जिन-जिन पितरों के नाम से संकल्पित कर हवि प्रदान किया जाता है, उस हवि को तत्तत् पितरों तक प्राप्त कराने का साधन अग्नि है, जिसका अनुमोदन वेद भी करता है जैसा कि -'मनोदेवा मनुष्यस्या जाननीति मनसा संकल्पयति तत् प्राणमपिपद्यते प्राणो व्याप्तं व्वातो देवेभ्य आचष्टे यथा पुरूषस्य मनः' (शतपथ ब्रा० 3/4/2/6) इस बात की पुष्टि मनुस्मृति से भी होती हैं-

तांस्तु देवाः प्रपश्यन्ति स्वस्यैवान्तरः पुरुषः
द्यौर्भूमिरापो हृदयं चन्द्रार्काग्नियमानिलाः
रात्रिः सन्ध्ये च धर्मश्च वृतज्ञाः सर्वदेहिनाम्।
(मनुस्मृति 8/85, 86)

अतः जिस प्रकार वह सर्वाधिष्ठाता देव जड़कर्मों का फल उनके कर्त्ताओं को प्राप्त कराता है वैसे ही उन-उन देवताओं के अधिष्ठातृत्व में उन-उन पितरों का श्राद्ध का फल प्राप्त कराता है। इस प्रकार श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन या दी गयी दान की वस्तु सूक्ष्म रूप मे पितरों को निश्चित रूप से प्राप्त होती है, इसमें तनिक भी संशय नहीं है। यज्ञ और श्राद्ध दोनों हिन्दु संस्कृति के मुख्य अंग है, इसे कभी भी नहीं भूलना चाहिए क्योंकि इसी से हिन्दू संस्कृति की रक्षा होती है।

विभागाध्यक्ष, (व्याकरण विभाग)
बी०एम०यू० संस्कृत कॉलेज, हाजीपुर वैशाली
मो० न०-9472239835

समय के साथ हो रहा है-बदलाव

सुमन्त

सब दिन होत न एक समाना। समय परिवर्तनशील है। समय के साथ बदलाव प्रकृति का नियम है। शायद यही कारण है कि पुरातन काल से प्रत्येक वर्ष लगने वाले पितृपक्ष मेला में भी समय के साथ बदलाव होता रहा है। लेकिन इस बदलाव के बावजूद गयाजी पितृपक्ष मेले में आज भी पिण्डदानी उसी आस्था और विश्वास के साथ आते हैं और अपने पितरों के प्रति तर्पण, श्राद्ध व पिण्डदान करते हैं। ब्रह्मवैवर्त में कहा गया है-

गयाशीर्षे नसेन्नित्यं स्नानं फल्ग्वां समाचरेत्।
गयाशीर्षे सदा पिण्डमेतत् स्वर्गेऽपि दुर्लभम्।।

अर्थात गया तीर्थ पहुँचकर फल्गु स्नान करके गया श्राद्ध करने का सुख स्वर्ग में भी दुर्लभ है। लेकिन आज के इस भाग-दौड़ भरी जिन्दगी में हर किसी के पास वक्त की कमी है। हर कोई किसी भी कार्य को जल्दी में निपटाना चाहता है। पितृपक्ष मेले में आने वाले पिण्डदानी भी इस बात से अछूते नहीं है। अब अंगुली पर गिने-चुने पिण्डदानी ही पूरे सत्रह दिनों का श्राद्ध कर पाते हैं। अब तो उन पिण्डदानियों की संख्या शायद सबसे अधिक होती है, जो एक ही दिनों में श्राद्ध से जुड़े सारे कार्य निपटा लेते है। प्रथम पिण्डदान पुनपुन नदी घाट पर किया जाए, तभी पितृजनों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस बात की चर्चा पद्मपुराण मे भी है जो भी मनुष्य पुनपुन नदी तट पर मुण्डन करा कर पिण्डदान करेगा, उनके पितरों का उद्धार होगा। कथा यह भी प्रचलित है कि भगवान राम अपने पिता राजा दशरथ का प्रथम पिण्डदान पुनपुन घाट पर ही किया था और तब वे जगत जननी माता सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ गयाजी आए थे। आज भी गया-पटना रेलखण्ड के पुनपुन घाट हॉल्ट, गया-मुगलसराय ग्रैण्ड कार्ड रेल लाइन के अनुग्रह नारायण रोड व सोननगर स्टेशन के बीच पुनपुन नदी पर बने रेल पुल के नीचे और राष्ट्रीय उच्च पथ-2 पर बने सिरिस पुल के नीचे पिण्डदान किया जाता है। इन स्थानों पर अनुपालन पिण्डदानियों की संख्या बहुत कम होती है। समयाभाव में पिण्डदानियों को गयाजी में ही पुनपुन नदी का प्रथम पिण्डदान करवा दिया जाता है। धर्माग्रंथों के अनुसार ब्रह्माण्ड के साढ़े तीन करोड़ तीर्थों में सर्वश्रेष्ठ तीर्थ गयाजी है, जहाँ श्राद्ध, तर्पण, दान इत्यादि करने से प्राणी मात्र का तरण हो जाता है। वायु पुराण में कहा गया है-

ब्रह्मज्ञानं गया श्राद्धं गोगृहे मरणं तथा।
वासः पुंसां कुरूक्षेत्रे मुक्तिरेषाचतुर्विधा।।
ब्रह्म ज्ञानेन कि साध्यं गोगृहे मरणेनकिम्।
वासेन किं कुरूक्षेत्रे यदि पुत्रो गयां व्रजेत्।।

अर्थात ब्रह्मज्ञान, गया श्राद्ध, गोशाला मरण और कुरुक्षेत्र का वास ये चार मुक्ति के साधन हैं, किन्तु यदि पुत्र गयाजी केवल चला जाए जो अन्य तीन साधनों की कोई आवश्यकता ही नही है।

गयाजी में त्रिपाक्षिक सत्रह दिनी श्राद्ध का विशेष महत्व है। पहला दिन प्रथम फल्गु तीर्थ में श्राद्ध दूसरा दिन प्रेतशिला स्थित ब्रह्मकुण्ड में स्नान तर्पण के बाद प्रेतशीला पर पिण्डदान एवं इसी दिन रामकुण्ड, रामशिला और काकबलि में श्राद्ध, तीसरे दिन उत्तर मानस, उदीची, कनखल, दक्षिण मानस, जिह्वालोल एवं गदाधर, चौथे दिन बोधगया स्थित, सरस्वती, धर्मारण्य, मातंगवापी, पाँचवाँ दिन ब्रह्मसरोवर, छठा दिन विष्णुपद मंदिर स्थित विष्णुपद रुद्रपद ब्रह्मपदों पर श्राद्ध, सातवाँ दिन विष्णु मंदिर स्थित सोलह वेदी तीर्थ में अवस्थित कार्तिके पद दक्षिणाग्नि पद, पदगार्हपत्याग्नि पद, आह्वन नीयाग्नि पद, आठवां दिन चन्द्रपद, गणेश पद, सम्याग्नि, दधीचपद, कण्व पद, आवसध्याग्नि पद और पद में श्राद्ध सोलह वेदी तर्थ के नवम् दिन मतंगपद, इन्द्रपद, गिस्त्यि पद, कैश्यपपद दसवाँ दिन

सीताकुण्ड व राम गया, ग्यारहावाँ दिन गयासिर और गया कूप, बारहवाँ दिन मुण्डपृष्ठा, आदि गदाधर और धौतपद, तेरहवाँ दिन भीम गया, गौ प्रचार, गदालोल, चौदहवाँ दिन फल्गु स्नान कर दूध तर्पण, पन्द्रहवाँ दिन वैतरणी में तर्पण, सोलहवाँ दिन अक्षयवट और सत्रहवाँ दिन गायत्री तीर्थ पर श्राद्ध का विधान है। लेकिन समय की कमी के कारण बहुत कम पिण्डदानी इसे कर पाते है। पिण्डदानी अपनी सुविधा के अनुसार कम दिनों में ही श्राद्ध कार्य सम्पन्न करते हैं।

ऐसी मान्यता है कि गयाजी में कुल 360 वेदियाँ थी। पिण्डदानी अपने पितरों की मुक्ति के लिए एक वर्ष रह कर सभी पिण्ड वेदियों पर श्राद्ध करते थे। आज कुल 55 पिण्ड वेदियाँ हैं, जिनमें कई पिण्ड वेदियों की हालत बदतर है। इन 55 पिण्ड वेदियों में तीन पिण्ड वेदियों फल्गु, विष्णुपद और अक्षयवट का महत्व सबसे अधिक है। कहा जाता है कि 16वीं शताब्दी में 16 गोत्रों में विभक्त गयावाल पण्डों के परिवारों की संख्या 1484 थी, लेकिन आज इनकी संख्या भी घट कर केवल 60-70 के आसपास रह गई है। इनमें अधिकांश गयावाल आज भी यजमनिका कार्य ही करते है, लेकिन यजमनिका वृत्ति को छोड़ कई गयावाल पण्डे दूसरे कार्यों में लगे है। गयावाल पण्डा समाज को गीत-संगीत, साहित्य व पहलवानी का शौक था। लेकिन आधुनिक युग में पहलवानी लगभग समाप्त हो चुकी है। गीत-संगीत व साहित्य को कुछ पण्डा समाज के लोगों ने आज भी जिन्दा रखा है।

सारांश यह है कि समय के साथ पितृपक्ष मेले, पिण्डदान, तर्पण एवं श्राद्ध में बदलाव आया है। लेकिन बावजूद इसके अपने पितरों की मुक्ति के लिए हर कोई एक बार अवश्य गयाजी आना चाहता है।

महामंत्री , गया जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन
चलभाष-919934874307

◆

पौराणिक और आध्यात्मिक नगरी गयाजी

कंचन

गयाजी धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक व ऐतिहासिक नगरी जिसे ज्ञान व मोक्ष की भूमि कहा जाता है। गयाजी की महत्ता पूरी दुनिया मे है, यहीं पास में बोधगया में राजकुमार सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त हुआ। ईश्वर की आराधना एवं साधना कर अपने शरीर को गयासुर ने पावन कर लिया। गयासुर के शरीर पर भगवान विष्णु समेत सभी देवी-देवताओं ने वास किया। इसी वजह से यह भूमि पावन हो गयी। भगवान विष्णु ने गयासुर के वक्ष पर अपना पांव रखा, वह स्थल विष्णुपद के नाम से ख्यात हुआ। बाद में इंदौर की महारानी अहिल्याबाई ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया । गया में पिंडवेदियों व सरोवरों में पिंडदान व तर्पण करने से पितरों को मुक्ति मिलने की बात धार्मिक पुस्तकों व पुराणों में वर्णित है, लेकिन, पिंडवेदियों व सरोवरों की गणना को लेकर मतभिन्नता है। यह मतभिन्नता इसलिए कि समय के साथ अतिक्रमण या फिर प्राकृतिक आपदाओं के कारण क्षय की वजह से है। 'गया माहात्म्य' नामक पुस्तक में यहाँ पर 365 पिंडवेदियों व सरोवरों का जिक्र है, जहाँ लोग सालोंभर यहाँ रहकर हर रोज एक पिंडवेदी या सरोवर में पिंडदान-तर्पण कर अपने पितरों को मुक्ति दिलाते थे। इसलिए गयाजी को मुक्तिधाम, मोक्षभूमि जैसे नामों से भी जाना जाता है। यूँ जहाँ तक पिंडदान का ताल्लुक है, देश में तीन वैसे पवित्र स्थल हैं, जहाँ पिंडदान किया जाता है। भगवान विष्णु के चरण गयाजी में विष्णुपद में है, तो भगवान का हृदय (वक्षस्थल) इलाहाबाद के प्रयाग में बेनीमाधव तीर्थ में है। हालांकि इसमें भी थोड़ी मतभिन्नता है। कहीं पुष्कर तो कहीं देव प्रयाग की भी चर्चा है और भगवान का सिर (मुंड) बद्रिकाश्रम (बद्रीनाथ) में है। बद्रिकाश्रम में ब्रह्मकपाल हैं, जहाँ की मान्यता है कि यहाँ पिंडदान के बाद किसी अन्य जगह पिंडदान की जरूरत नहीं होती। इसलिए पितृभक्त गयाजी के बाद प्रयाग में पिंडदान करते हुए बद्रिकाश्रम जाते हैं। गयाजी में पिंडदान के संदर्भ में गरुड़ पुराण, अग्नि पुराण, महाभारत आदि धार्मिक पुस्तकों में चर्चा है। यूँ डॉ० ललित प्रसाद विद्यार्थी ने अपनी पुस्तक *'उत्तर भारत का एक सांस्कृतिक नगर, गया'* में भी गया के पिंडवेदियों, सरोवरों व दर्शनीय स्थलों का विस्तार से वर्णन किया है। उस पुस्तक में गयाजी में ऐसे 375 स्थलों की जिक्र है जो पिंडवेदी, तर्पण स्थल व दर्शनीय स्थल हैं।

गयाजी का शहरी क्षेत्र ऐतिहासिक व पुरातात्विक स्थलों से तो श्रृंगारित आज भी है, पर जिले का बाहरी आवरण भी कम श्रृंगारित नहीं है। यहाँ द्वापरयुग, त्रेतायुग, पालकालीन, बुद्धकालीन से लेकर मुगलकालीन और फिर अंग्रेजों के बने किले-टीले, एवं देवी-देवताओं के पुरावशेष आज भी मिलते हैं, यह इनकी पौराणिकता को दर्शाती है। अब हम बात करते हैं जिले के कुछ चर्चित बाहरी आवरण की। इनमें राष्ट्रीय राजमार्ग पर बाराचट्टी के पास मायापुर गाँव से करीब तीन किलोमीटर अंदर दरबार गाँव है, जहाँ कभी दक्षिणाखंड का प्रधान प्रशासकीय केन्द्र था। बाद में यह बोधगया महंत के राजकीय-प्रशासकीय केन्द्र के रूप में चर्चित हुआ। गाँव के एक तरफ विशाल आहर है तो उसी के बगल में गढ़ क्षेत्र है। बाद में यहीं शिव मंदिर व तीन तल्ला मठ बना। खुदाई के दौरान मिला मृद्भाण्ड इस मध्यकाल के होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। डोभी प्रखंड मुख्यालय से करीब नौ किलोमीटर दूर वंशी मोड़ से अंदर हरदवन गाँव है। यह नीलांजन जिसे बुद्धकालीन निरंजना के नाम से जाना जाता है, के तट के करीब है, अमारुत- कोठवारा व इसके बाद

घोड़ाघाट भी ऐतिहासिक गाँव ही है। तथागत के जमाने में हरदवन गाँव में हरसिंगार का बाग था, जिसे 'पारिजात वन' कहा गया है। गाँव में करीब तीन सौ पुराना शिवमंदिर और उसके पास पुरातन किला का अंश देखा जा सकता है। गया- कोंच पथ पर पंचानपुर से आगे उतरेन-पाली गाँव हैं। पाली में पालकालीन हद आज भी विद्यमान हैं जबकि उतरेन के प्राचीन गढ़ अब समतल होकर मकान में परिवर्तित होते जा रहे हैं। उतरेन का संबंध राजा विराट की पुत्री महासुंदरी उत्तरा से बताया जाता है, जो अभिमन्यु की धर्मपत्नी थी। वर्ष 1871-72 में बुकानन हैमिल्टन ने यहाँ तीन-तीन मंदिर के अवशेष का विवरण अपने यात्रा वृत्तांत में किया है। पाली के ये अवशेष गुप्तकाल से लेकर उत्तर गुप्तकाल के मध्य का है। उतरेन में बाबा सोमेश्वर नाथ के नाम से पूजित मंदिर है, जहाँ भगवान गणेश, भैरवनाथ की मूर्तियाँ भी है। यहीं उमा-महेश्वर व विष्णु आदि के भी स्थान हैं। वजीरगंज का कुर्किहार गाँव प्राच्य काल में कुर्क विहार के नाम से चर्चित राजगृह व बोधगया के मध्य एक सशक्त बौद्ध केन्द्र था। यहाँ पाल काल के तीनों चरण मूर्त्ति निर्माण का विशिष्ट स्थल रहा है। यहाँ पास में स्थित हड़ाही पोखर से भगवान श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी का हरण करने की भी दंतकथाएँ चर्चित है। गया के बाहर सात वनों का नाम चर्चित रहा है। इनमें पौराणिक पुनावन आज भी पुनावाँ गाँव के नाम से जाना जाता है। यह स्थान कुर्किहार से चार किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम है। वर्ष 1874 में मेजर किट्टो ने यहाँ के पुरावशेषों का पहला दर्शन कर उसकी विशद् चर्चा की है। फिर अलेक्जेंडर कनिंघम ने भी पुरातन मंदिर व विशाल मूर्त्त भंडार को देखा व लिखा है। आज भी इस क्षेत्र में आठवीं से 13वीं शताब्दी के बीच के कई विग्रह मिल जायेंगे। गाँव के बाहरी भाग के दो तालाब की चर्चा इतिहास के पुस्तकों में है। इनमें 'करमन ताल' व 'बुधोकर ताल' कहा जाता है। कहते हैं तथागत पुनावन में विश्राम किये थे। यहाँ की एक कलाकृति भारतीय संग्रहालय, कोलकाता में सुरक्षित है। बथानी-राजगीर मार्ग पर बथानी बाजार से करीब आठ किलोमीटर पश्चिम सिमरौर गाँव है। यहाँ तथागत के तीन शैली की बुद्ध प्रतिमा कभी खेतों से प्राप्त हुई थी। वह भी अंग्रेजों के जमाने में। आज इस गढ़ के रखरखाव का बुरा हाल है। इस गाँव में गढ़ के ठीक बगल में ही दाता चिनगी शहीद साहब का मज़ार है। रानीगंज से करीब साढ़े चार किलोमीटर पूरब जाने पर परसिया गढ़ गाँव है, यह रानीगंज-नौडीहा मार्ग पर है। यहाँ भी गढ़ है। गढ़ के पूरब में लब्जी नदी तो पश्चिम में वंशी ढोरहा नदी है। एक समय में लोक देवता चेड़ी बाबा जिन्हें आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त थी, ने इस क्षेत्र का नाम रोशन किया। यह मूलत: कोलगढ़ी था, जिसे कालांतर में स्थानीय जमींदार गजराज सिंह ने अपने आधिपत्य पर लिया था। कहते हैं इस विशाल गढ़ पर कभी विशाल कुआँ था तो दक्षिण-पश्चिम में शिवालय है। गया-फतेहपुर मार्ग में बरतारा मोड़ से आगे महेर गाँव है। कहते हैं प्राच्य काल में यही महाथेर पर्वत है। इसके नीचे का गाँव आबाद है। पर्वत पर भी देवी मंदिर व मज़ार जैसी आकृति है। टिकारी का केसपा गाँव जो कश्यप मुनि का साधना केन्द्र रहा है। यह पुराने जमाने से कश्यपापुरी, कश्यपा आदि नामों से जाना जाने लगा। यहाँ देवी तारा का आदमकद प्रतिमा व चर्चित मंदिर है। पास में देवालय है जहाँ से प्राचीन टीले का दर्शन होता है। यहाँ से मिले मृद्भांड 1500 से 2000 वर्ष प्राचीन बताये जाते हैं। गया-पटना रेलखंड व सड़क मार्ग से करीब नौ किलोमीटर पूरब कौआडोल जिसे 'कौवाडोल' भी कहते हैं, अवस्थित है। यह बराबर जाने के रास्ते में है। छठी-सातवीं सदी से 12वीं शताब्दी तक मूर्त्ति शिल्प निर्माण के अभिनव प्रयोग होने का यहाँ प्रमाण मिलता है।

रामायण कालीन काकभुसुंडि का भी यहाँ से संबंध होना बताया जाता है, इसीलिए इस पर्वत का नाम कौआडोल है। यहाँ बाल भिक्षुओं को मध्यकाल के आस पास ऊँचे-बने विशाल भवन खंड में बौद्ध धर्म से जुड़ाव के विविध प्रमाण मिलते हैं। यह बाल भिक्षुओं का प्रशिक्षण स्थल के रूप में जाना जाता है। बोधगया में ताराडीह जो माँ तारा देवी (बौद्ध देवी) के नाम से चर्चित है। महाबोधि मंदिर जाने के रास्ते में पूर्वी द्वार के दाहिने अवलोकितेश्वर का स्थान है। यहाँ तीन-तीन कालखंड के मनौती स्तूप होने के प्रमाण मिलते हैं। यहाँ नवाश्मकालीन पुरावशेषों से लेकर पालकालीन अवशेष हैं। गुरुआ में दुब्बा गढ़ जहाँ बुद्धकाल से पाल काल तक के अवशेष मिलते हैं। यहीं पास में भ्रुणाहा तीर्थ (भूरहा) का संबंध वैदिक ऋषि दुर्वासा से जोड़ा जाता है। यहीं पास में मंडिका पर्वत जिसे आज मंडा पहाड़ी, आरसी कला, तारापुर व गुनेरी अपने अंदर इतिहास के पन्नों को समेटे हैं। गया-शेरघाटी वाया चेरकी रोड में चिताब गाँव है। पुराने समय में यह बंदरगाह क्षेत्र था। मोरहर व सोरहर नदी के संगम पर यह गाँव पालकालीन है। 1862 ईस्वी में पहली बार मार्ग बनाने के दौरान इस स्थान से मनौती स्तूप व टूटे ईंटो का विशाल टीला मिला था। कभी यह स्थान कोल राजाओं का पुराना व्यापारिक जलमार्गीय केन्द्र था, जहाँ दक्षिणाखंड का सीधा संपर्क कायम था। यह बंदरगाह स्थल मुगलकाल के बाद समाप्त हो गया। बेलागंज का शोणितपुर जिसे आज सोनपुर के नाम से जाना जाता है त्रेतायुगीन है। इस तरह न सिर्फ गया बल्कि आसपास के इलाके की पौराणिकता के कई प्रमाण मिलते हैं।

सीनियर चीफ रिपोर्टर
प्रभात ख़बर, गया

◆

गया श्राद्धम् पुनः पुनः

मुकेश कुमार सिन्हा

अति सौभाग्यशाली हैं वो लोग, जिनकी आँखें 'गयाजी' की पावन धरती पर खुली है। हर वो लोग, जो सनातन संस्कृति पर गहरी आस्था और विश्वास रखते हैं, 'गयाजी' आना चाहते हैं। एक बार नहीं बल्कि बार-बार! ऐसे में, जो लोग यहाँ निवास करते हैं, सच मानिए, वो बड़े भाग्यशाली हैं। मैं भी उन भाग्यशालियों में से एक हूँ। सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक सौहार्द की मिसाल 'गयाजी' की धरती में सहयोग और आतिथ्य की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है।

मेरे सहकर्मी मुझे देखकर कहते हैं- मुकेश! बड़ा भाग्यशाली है, 'गयाजी' का है। सच पूछए मेरा मन बाग-बाग हो जाता है। इठलाता हूँ और मोर की तरह नाच उठता हूँ फिर गर्व से इतिहास बताता हूँ 'गयाजी' का।

'गयाजी' को शब्दों में बाँधना मुश्किल है। मुश्किल है सभी तथ्यों को कागज पर समेट पाना। अभी तो कई ऐसे पहलू भी हैं, जो आज तक अनछुआ ही है। रामायण, महाभारत, श्रीविष्णु पुराण, वायु पुराण, हरिवंश पुराण, श्रीमार्कण्डेय पुराण, स्कंद पुराण, गरुड़ पुराण, पद्म पुराण, भविष्य पुरारण, लिंग पुराण, अग्नि पुराण, नारद पुराण, वायु पुराण, ब्रह्म पुराण और न जाने कितने धार्मिक ग्रंथों में 'गयाजी' का जिक्र है। तीर्थ-अनुष्ठान और धार्मिक विवेचना की चर्चा जिन-जिन ग्रंथों में हुई है, 'गयाजी' भी उन चर्चाओं में शामिल है।

'गयाजी' .... एक ऐसे तीर्थस्थल का नाम है, जहाँ के कण-कण में भगवान का बसेरा है। 'गयाजी' में ऐसा कोई स्थान नहीं, जहाँ भगवान रचते-बसते न हो। 'गयाजी' को तीर्थों में श्रेष्ठ माना गया है, गया तीर्थ महातीर्थम्। इसे तीर्थों का प्राण भी कहा जाता है। मान्यता है कि अन्य सभी तीर्थ करने के बाद भी यदि गया तीर्थ नहीं हुआ, तो सभी परिश्रम बेकार है।

कण-कण में भगवान के विराजमान रहने की वजह से हर आस्थावान यहाँ आने को लालायित रहते हैं। पितरों के प्रति आस्था की मजबूत डोर की वजह से यहाँ सालों भर आस्थावानों की भीड़ उमड़ती है, लेकिन खासकर 'पितरपख' में यह भीड़ और बढ़ जाती है। पितृपक्ष मेला आम मेले की तरह नहीं है। यह मेला पितर के प्रति अटूट श्रद्धा, प्रेम और विश्वास को प्रदर्शित करता है। तभी तो आधुनिक काल में भी यह परंपरा जीवंत है!

'गयाजी' आने मात्र से पूर्वजों को मोक्ष मिल जाता है। यूँ तो मान्यता यहाँ तक है कि 'गयाजी' के लिए घर से निकल जाने मात्र से ही पितरों के स्वर्ग जाने का मार्ग प्रशस्त होने लगता है।

गृहात्चलित मात्रेण गयायां गम नं प्रति
स्वर्गारोहण सोपानं पितृणां च पदे-पदे
(वायु पुराण)

यहाँ आने वाले न केवल अपने पितरों का उद्धार करते हैं, बल्कि खुद को भी परम सौभाग्य की श्रेणी में खड़ा कर डालते हैं। कुल की सात पीढ़ियों का उद्धार करने वाले स्वयं पुण्य के भागीदार बनते हैं। तभी तो आस्था की डोर आस्थावानों को 'गयाजी' तक खींच लाती हैं।

धन्यास्तु खलु ते मर्त्या गयायां पिंडदानामिः
कुलान्युभयतः सप्त समुकृत्यान्युयात् परम

'गयाजी' की पवित्र भूमि पर किसी का नाम और गोत्र का उच्चारण कर किसी अन्य के द्वारा भी यदि पिंड दिया जाता है, तो वो भी परमगति को प्राप्त कर लेते हैं। सच में इतनी पावन है यह धरा! फल्गु की भी अपनी विशेषता है। गंगा नदी भगवान विष्णु का चरणामृत है, तो फल्गु स्वयं आदि गदाधर हैं। मतलब, भगवान द्रव रूप में यहाँ विराजमान हैं।

'गयाजी' की सबसे बड़ी खासियत यह है कि दूसरे तीर्थों पर आह्वान करने पर पितर आते हैं, लेकिन 'गयाजी' में अपने पुत्रों को आया देख पितर स्वयं अवतरित होकर पिंड ग्रहण करते हैं। 'गयाजी' में आये अपने पुत्रों को देखकर पितर आनांदित हो उठते हैं। लोक मान्यता है कि यदि पितर का आशीर्वाद किसी व्यक्ति या किसी घर पर पड़ जाये, तो उस घर में और उस व्यक्ति के जीवन में हमेशा खुशहाली रहती है। पितर खुश, तो सब खुश!

ऐसी पवित्र भूमि, जहाँ पितरों को मोक्ष मिलता हो। ऐसी पवित्र भूमि, जहाँ कण-कण में भगवान रचते-बसते हो। ऐसी पवित्र भूमि, जहाँ ब्रह्मा के नेतृत्व में इन्द्र सहित सभी देवतागण विराजमान हुए। ऐसी पवित्र भूमि, जहाँ सत्य का साक्षी अक्षयवट है। ऐसी पवित्र भूमि, जहाँ मोक्षदायिनी फल्गु है और हिमालय से भी प्राचीन ब्रह्मयोनि पहाड़। ऐसी पवित्र भूमि, जहाँ भगवान विष्णु का चरणचिह्न हैं। ऐसे में इस पवित्र भूमि पर हर कोई आना चाहता है, तभी तो आस्थावान के दिल से यह आवाज आती है - **गया श्राद्धम् पुनः पुनः।**

जिला भविष्य निधि कार्यालय, नवादा
चलितवार्ता-9304632536

◆

ज्ञान और विज्ञान

राम नरेश सिंह 'पयोद'

आदि शंकराचार्य ने अपने अल्प जीवन काल में ईश्वरोपासना से जो मानव जीवन का सार तत्व नवनीत स्वरूप ग्रहण किया, उसे उन्होंने अपनी पुस्तक 'सर्व वेदांत सिद्धांत' में निरूपति कर ज्ञान और विज्ञान की संक्षिप्त व्याख्या इस प्रकार की है- 'सृष्टि का मूल स्वरूप ज्ञान स्वरूप है। अध्यात्म ज्ञान के द्वारा ही हम ज्ञान स्वरूप को जानते और पहचानते हैं। इस मूल तत्व को हम जड़ नहीं कह सकते, बल्कि वह पूर्ण रूपेण चेतन है। इसी के द्वारा हम अध्यात्म की जानकारी प्राप्त करते हैं। यह संपूर्ण जड़-चेतनात्मक सृष्टि उसी ज्ञान शक्ति का विज्ञान है।

आज का विज्ञान संसार के भौतिक पदार्थों की खोज कर हमे चमत्कृत कर रहे हैं परंतु चेतन शक्ति की उपेक्षा के कारण उसका मूल तत्व गायब है। चेतन शक्ति परोक्ष होने से उस पर विज्ञान की भांति प्रयोग व परीक्षण नहीं किया जा सकता। इस पर प्रयोग की विधि विज्ञान की विधि से भिन्न है। उच्च चेतना संपन्न के यंत्र कारगार सिद्ध नहीं होते। इस पर प्रयोग व परीक्षण करना उच्च चेतना संपन्न व्यक्ति से ही संभव है। क्योंकि ऐसे पुरूष सूक्ष्म बुद्धिकारक हैं। सूक्ष्म को जानने के लिए स्थूल बुद्धि उपयुक्त नहीं है। उदाहरण स्वरूप छ इंच के फीते से पृथ्वी को नहीं नापा जा सकता। समुद्र को चम्मच से नहीं मापा जा सकता। सबके लिए भिन्न-भिन्न मापों की जरूरत होती है। भौतिक विज्ञान का जहा अंत होता है।, उसके बाद चेतना का विज्ञान आरंभ होता है। यह भौतिक तराजू पर अभौतिक को नहीं मापा जा सकता। बिना प्रयोग के अध्यात्म ज्ञान को अंध विश्वास कहना स्वयं की अधूरी सोच का ही परिणाम है।

भौतिक वैज्ञानिकों ने इस पृथ्वी की रचना का रहस्य जानने के लिए अणु व परमाणु की खोज की। परंतु ये भी भिन्न-भिन्न स्वभाव के जाने गए। इनके विखण्डन करने पर यह पता चला कि ये सभी ऊर्जा के ही विभिन्न रूप हैं, जिससे यह सिद्ध हो गया कि भौतिक जगत का मूल कारण ऊर्जा है। चेतन तत्व भौतिक ऊर्जा का प्रयोग कर सृष्टि की रचना करता है। इसी से जीव सृष्टि की रचना होती है। जड़ भौतिक ऊर्जा स्वयं किसी की रचना नहीं कर सकती जब तक उसमें चेतना का संयोग नहीं जुड़ा हो जिस प्रकार बिना चेतन प्राणी के ईट, सीमेंट, बालू और पत्थर से किसी भवन का निर्माण संभव है। क्योंकि सभी वैज्ञानिक उपकरणों का निर्माण चेतन प्राणियों द्वारा ही किया गया है।

संसार की सृष्टि में जड़ और चेतन द्वारा ही सारे काम संपूर्ण कराये जाते हैं। जिसमें चेतन शक्ति की प्रमुखता है। अकेला ज्ञान सृष्टि की रचना नहीं कर सकता। वह पंगु है तथा अकेली प्रकृति सृष्टि की रचना नहीं कर सकती, क्योंकि वह अंध शक्ति है। अकेला भौतिक व अकेला चेतन दोनों अपूर्ण है। इन दोनों में एक तत्व स्थापित करना ही अध्यात्म का प्रयोजन है।

अकेला भौतिक साधन दे सकता है, परंतु जीवन नहीं दे सकता। जीवन के लिए साधन आवश्यक है, किन्तु साधनों को ही जीवन मानना अज्ञानता है। जीवन से साधन पैदा किए जा सकते हैं, साधनों से जीवन पैदा नहीं किया जा सकता।

पता - डालमिया कम्पाउण्ड
लखीबाग, रोड न०-1, गया - 823003
मोबाईल : 7033669695

◆

श्राद्ध एवं गया श्राद्ध

आचार्य लालभूषण मिश्र याज्ञिक

तपः सिद्ध ज्ञानी ऋषि अपने दिव्य ज्ञान चक्षुओं से जीवात्मा की गतिविधि को जानते हैं। मृत्यु के समय मनुष्य के स्थूल शरीर के छिद्रों से जीवात्मा अति सूक्ष्म होकर निकलती है जिससे दृष्टिगोचर नहीं होती है। मृत्यु से 12 दिनों तक प्रेत रूप में रहकर अपने पुत्र, परिवार एवं गृह को जीवात्मा देखती रहती है और श्राद्ध द्वारा पिंड ग्रहण करने के लिए आकाश में विचरण करती है। मत्स्य पुराण में कहा गया है –

प्रेताय पिंड दान् तु द्वादशाहं समाचरेत्।
तस्मात् प्रेतपुरं प्रेतो द्वादशाहं न नीयते।
गृहं पुत्रं कलत्रं च द्वादशाहं प्रपश्यति।।
(अध्याय 18)

उक्त श्राद्ध मृतात्मा (पिता आदि) के उद्देश्य से तिल, कुश एवं हविष्यान्न (चावल, जौ आदि) से पुण्यतीर्थ (देश) श्राद्धकाल एवं सत् पात्र ब्राह्मण पाकर सम्पन्न किया जाता है।

देशे काले च पात्रे च विधिना हविषा च यत्।
तिलैः दर्भैः च मंत्रैः च श्राद्धं स्यात् श्रद्धयायुतम्।।

प्राचीन मनीषी सनत्कुमार ने दिव्य दृष्टि से देखकर कहा है कि श्राद्ध से प्रेत की तृप्ति होती है। मत्स्य पुराण का वचन है :-

सनत्कुमारः प्रोवाच पश्यन् दिव्येन चक्षुषा।
गता गतज्ञः प्रेतानां प्राप्तिं श्राद्धस्य चैव हि।।
(अध्याय 141)

दाह संस्कार से बारहवाँ दिन तक श्राद्ध पिंड लेकर प्रेतात्मा पितर हो जाती है। सपिंडीकरण श्राद्ध से वह अपने पिता, बाबा एवं परबाबा में मिल जाती है किन्तु मृत्यु से एक वर्ष व्यतीत हो जाने पर ही वह गया श्राद्ध का अधिकारी होती है। अग्नि पुराण में वर्णन है :-

कृते सपिंडीकरणे नरः संवत्सरात् परम्।
प्रेत देहं समुत्सृज्य भोग देहं प्रपद्यते।।
(अध्याय 367)

गया श्राद्ध में पार्वण श्राद्ध होता है। श्राद्धकर्त्ता की ऊपरी छः पीढ़ियों के पितर (पिता आदि) में से पिता, बाबा एवं परबाबा पिंड भागी हैं तथा उनसे ऊपर की तीन पीढ़ी कुशा के मार्जन से लेप भागी हैं। श्राद्धकर्त्ता सहित सात पीढ़ी है।

लेपभाजः चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिंड भागिनः।
पिण्डदः सप्तमः तेषां सापिण्ड्यं साप्त पौरुषम्।।
(मत्स्य पुराण अध्याय 18)

नरक में गए हुए पितर, बार-बार जन्म लेने वाले पितर तथा प्रेतयोनि को प्राप्त जीवात्मा गया श्राद्ध से मुक्त होते हैं। दुर्मरण (अपमृत्यु) से प्रेत योनि में गए हुए प्राणी को गया श्राद्ध ही उद्धार करता है। विषभक्षण, अग्निदाह, आत्महत्या आदि से मृत्यु को प्राप्त प्राणी अपमृत्यु से ग्रस्त माना गया है। स्कन्द पुराण में उल्लिखित है :-

अपमृत्यु हतानाच्च सर्वेषामपि देहिनः।
दुर्मृत्युना मूतो यश्च स प्रेतो जायते नरः।।

ब्रह्महत्या, गोहत्या, चोरी, सुरापान, गुरु की पत्नी से व्यभिचार, भूमि हरण एवं कन्या हरण करने से प्राप्त प्रेत योनि का उद्धार भी गया श्राद्ध से ही होता है। पद्मपुराण में कहा गया है :-

ब्रह्महत्या, गोघ्नकः स्तेयः सुरापो गुरुतल्पगः।
भूमि कन्यापहर्त्ता च स प्रेतो जायते नरः।।

गयाधाम में तीन स्थान पर शिला है जो प्रेतों से मुक्ति प्रदान करती है। विष्णुपद से 4 किलोमीटर उत्तर प्रभासतीर्थ में रामशिला, वहाँ से 4 किलोमीटर

पश्चिम प्रेतपर्वत पर प्रेतशिला तथा विष्णुपद मंदिर के अत्यंत समीप धर्मशिला - ये तीनों प्रेत के लिए मुक्तिदायक हैं।

येयं प्रेतशिला ख्याता गयायां सा त्रिधा स्मृता।
प्रभासे प्रेत कुंडे च गयासुर शिरस्यपि।।

उक्त तीनों शिलाओं में परम पवित्र धर्मशिला है। इसे मुंडपृष्ठ गिरि भी कहते हैं। गयासिर वेदी इस पर्वत के पादतल में है। गय असुर के सिर को स्थिर करने के लिए यह शिला रखी गयी थी। धर्म की पत्नी धर्मव्रता अपने पति के शाप से परम पवित्र शिला हो गयी थी। तपस्या द्वारा उक्त शिला पर सदा निवास करने का वचन धर्मव्रता ने विष्णु भगवान् से प्राप्त किया था। विष्णु के साथ ब्रह्मा, शंकर आदि देवताओं एवं सभी तीर्थों के निवास का भी वरदान प्राप्त था। इस के चरण प्रदेश में गयासिर वेदी पर प्रतिनिधि होकर दूसरों की मुक्ति के लिए श्राद्ध किया जाता है। धर्मशिला स्थित गयासिर वेदी पर पिण्डदान करके विशाला नगरी के राजा विशाल ने अपने पिता, बाबा एवं परबाबा को मुक्त होकर ब्रह्मलोक जाते हुए देखा था। साथ ही उक्त पिण्डदान से उनको पुत्र प्राप्ति हुई थी :-

विशालोऽयं गयाशीर्षे पिण्डदोऽभूच्च पुत्रवान्।
(गरुड़ पुराण)

पूर्वजन्म में राजा विशाल एक बनिया थे। उन्होंने शिला स्थित गयासिर वेदी पर एक प्रेत के लिए पिण्डदान किया था। इससे प्रेत को मुक्ति हुई थी और राजा को स्वर्ग की प्राप्ति हुई थी।

श्रुत्वावणिग् गयाशीर्षे प्रेतराजाय पिण्डकम्।
सर्वे मुक्ताः विशालोऽपि सपुत्रोऽभूच्च पिण्डदः।।
(गरुड़ पुराण)

यहाँ पर इस के पर्वतभाग में ही पाण्डुशिला है। पाण्डु के उद्धार हेतु पाण्डवों ने श्राद्ध किया था। पाँच कोश के गया धाम का उक्त शिला केन्द्र स्थल है। यहाँ से 2.5 कोस उत्तर तथा 2.5 कोस दक्षिण कुल पाँच कोश में गयाधाम है। इसे गया क्षेत्र कहा जाता है। इस शिला पर आदि गदाधर भगवान् निरन्तर निवास करते हैं।

महामंत्री, अखिल भारतीय विद्वत परिषद्, गया
आवास : भलुआही, खरखुरा, गया - 823002
मोबाईल : 9430412321

◆

महान् संत कबीर दास जी

कबिरा संगति साधु की
जौं गंधी के वास।।
जो कछु गंधी दे नहीं
तो भी वास-सुवास।।

सर्वपाप हरा धुमा

बन्दना प्रज्ञा

गंगा के बाद किसी नदी की महिमा गायी गई है तो वह फल्गू ही है। परन्तु गंगा जीवित और स्नान करने पर ही तारती है और फल्गु कई पीढ़ियों को तुरंत तार देती है। वेद वाक्य है – गंगा में नियमित स्नान करने पर वह पापों से मुक्त कर देती है परन्तु कुल में (स्नानदान एवं श्राद्ध) के लिए कोई भी संतान अगर अन्तः सलिला फल्गु में चलता है, और उससे जो धूल उड़ती है उसी से कई पुस्त के पितर तर जातें हैं, मुक्त हो जाते है। यह फल्गु, विभिन्न रूपों में विभिन्न नामों से जानी जाती है। यथा–मुहाना, लीलांजन, निरंजना, फल्गु, भूतही और अन्त में पुनपुन में मिल जाने से पुनपुन हो जाती है। भौगोलिक स्थिति मे यह 24 डिग्री 43 इंच उत्तर एवं 45°00'47" डिग्री अक्षांश पर स्थित है। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार देवताओ ने पितरों के तर्पण के लिए इसे यहाँ अवतरित किया था इसलिए इसे महानदी की उपाधि प्राप्त है। फल्गु नदी के किनारे जाने पर ही अश्वमेध यज्ञ के बराबर पुण्य प्राप्त होता है और जल–दर्शन के उपरांत पूर्व के सारे पाप समाप्त हो जाते हैं।

तीर्थानां तु परं तीर्थ नदी नां उत्तमानदी।
मोक्षदा सर्वभूतानां महापातकिनामपि।।

इसके उद्गम की एक कथा स्कन्द पुराण में उद्धृत है– महर्षि कण्व गन्धमार्दन पर्वत पर रहकर अत्यन्त दुस्कर तपस्या करते थे। जन्म से ही पंगु होने के कारण कहीं आने–जाने में कठिनाई होती थी। इसलिए गन्धमादन पर्वत पर ही स्थित तीर्थों का लाभ ले पाते थे। तपस्या में शरीर सूख जाने के कारण शरीर में खाज हो गई थी।

इसलिए शरीर सूख जाने के कारण उन्हें नियमित असह्य पीड़ा रहती थी। एक दिन तपस्या में ही उन्हें ऐसा इशारा मिला कि गंगा, यमुना और सरस्वती के जल से स्नान करने से इस असह्य खाज से मुक्ति मिल सकती है। गंगा और यमुना जल तो प्राप्त है वह भी बड़ी कठिनाई से परन्तु सरस्वती का जल दुर्लभ सोंच कर उन्होने ध्यान लगाया। उन्हें आभास हुआ कि एक महानदी यह (महानदी उडीसा के महानदी से भिन्न) है। उसके अवतरण का प्रयास करो जिसके जल में स्नान करके तुम पूर्व जन्मों के पापों से मुक्त हो सकोगे। अन्यथा इन नदियों के पवित्र जल तुम्हारे खाते में पुण्य तो प्रदान कर सकेंगे परन्तु पूर्व जन्मों के पापों को धोने में सक्षम नहीं होंगे। बस क्या था, मुनि तपस्या में पुनः लग गए। उनके प्रयास से एक महानदी का उद्गम हुआ जिसके जल ने इनके पूर्व के पापों को धो डाला। तभी से यह फल्गू पाप–मोचनी हो गई और पितरों की मुक्ति के लिए प्रसिद्ध हो गई। पुनः सीता जी का श्राप की कथा भी प्रसिद्ध है जिसके कारण इसकी धारा गुप्त हो गई है। इसलिए इसे अन्तः सलिला कहा जाता है। गर्मी के दिनों मे इस पार से उस पार जाना तपती बालुकाराशि के कारण दुर्लभ होता है, फिर भी गया शहर के सारे कपड़े इसी फल्गु में धोए जाते हैं। जरा सा खोदकर यह और प्रचुर जल प्राप्त किया जा सकता है। इसीलिए इसे पुण्यतोया भी कहा जाता है। इसे गौतम को बुद्ध बनाने का भी गौरव प्राप्त है, इसीलिए यह महानदी भी है।

पविधागापनीयं या मङ्गलानाम् च मंगलम्।
महेश्वर भ्रष्टा सर्व पाप हरां धुमा।।

इस प्रकार अनेक पौराणिक अख्यान फल्गु नदी की महिमा प्रतिदिन करते हैं। सनातन धर्मावलम्बियों के लिए यह नदी सुधोपमा, सर्वार्य–साधिका, पुरुषार्थ चतुष्टयप्रदा तथा दशपूर्व पर पीढ़ियों के साथ स्नान तर्पण कर्त्ता के लिए मोक्षप्रदा है। यहाँ वर्ष में कभी भी किसी दिन मोक्षमाकना से पितरों के श्राद्ध एवं तर्पण किये जाते हैं। वायुपुराण की मान्यता है कि फल्गु तीर्थ में प्रति दिन एक बार विश्व के सारे तीर्थों का समागम होता है।

पृथिव्यां यानि तीर्थानि से समद्राः सरांसि च।
फल्गु तीर्थे गभिष्यन्ति वारमेकं दिने दिने।।

स्पष्ट है कि फल्गु तीर्थ में स्नान तर्पण से सारे तीर्थ स्नान दानादि के फल एक ही साथ प्राप्त हो जाते हैं। ऐसी महिमा किसी अन्य तीर्थ की नहीं।

वरीय अध्यापिका, काशी (उ.प्र.)

श्राद्ध एवं श्रद्धा

उपासना उदिप्त

अपने पूर्वजों की स्मृति में किये गये कर्मकांड दान या भोज, अन्य कर्म ही श्राद्ध है। कहा जाता है सनातन धर्मावलंबी मनुवंशावतन्स वेद के द्वारा निर्गत कर्म के आलोक में यज्ञ, तप, श्राद्ध, उपनयन आदि किया करते हैं। ऐसे तो भिन्न-भिन्न प्रकार के मतावलंबी इस क्रिया (श्राद्ध कर्म) को गलत ठहराते हैं एवं तथ्यहीन साबित करते हैं, परन्तु इसके समर्थक, जानकार, अनुभवी, ज्ञानवेत्ता, कर्मनिष्ठ, ब्राह्मण कर्म करने वाले इसे महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ मानते है और तथाकथित ऐसा सुनने में आता रहता है कि राम के पूर्व पुरुष की आत्मा की शांति हेतु तथा वेद की महिमा को मर्यादा को स्थापित करने के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम ने श्राद्ध क्रिया को किया था। अतएव यह प्रासंगिक नहीं की श्राद्ध क्रिया एक वाहियात वेद रहित नियम है। अस्तु अब हम अगर वेद की सार्थकता, पर इसकी अनिवार्यता पर व्यापक दृष्टि डालते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि मंत्र द्वारा दी गई कोई भी वस्तु उस स्थान तक, उस व्यक्ति तक, उस आत्मा व जो हमारे कुल के किसी पीढ़ी में उत्पन्न हुआ हो जड़, चेतन, स्थावर, जंगम, किन्नर, गंधर्व, पितृव्यादि स्थानों में रहने वाले कोई भी जन्म ले चुके हो या कही हों तो यह मेरे द्वारा दिया गया, या किया गया कर्म उस तक पहुँचे, ऐसी प्रार्थना फलवती होती है और हम सभी को भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्टों, यातनाओं से तत्काल मुक्ति मिलती है एवं हमारे सभी परिवार-जन सुख समृद्धि ऐश्वर्य की ओर अग्रसर होता हुआ प्रतीत होता है। ऐसी किंवदन्तियाँ पिण्डदानियों के द्वारा सुनाई जाती है कि श्राद्ध कर्म करने से मुझे अत्यंत शांति और प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है और मैं ये भी महसूस कर रहा हूँ कि जिसके निमित्त मैं इस श्राद्ध कर्म को किया वो प्रसन्नता पूर्वक मोक्ष को प्राप्त हुए। वो लोग स्वत: अपने हर्षित मन से प्रसन्नता पूर्वक सभी के समूह में अपने आत्मीय शांति का उद्घोष भी तत्क्षण करते है।

श्राद्ध की पृष्ठभूमि अत्यंत ही गंभीर, गहरी और कल्पनातीत है। श्राद्ध क्रिया इतना गहन है कि इसकी सूक्ष्मता आत्मतत्व से ही जाना जा सकता है। इसकी यथार्थता को यथार्थ रूप से समझने वाले कोई महापुरुष नहीं मिलते,तब तक मनुष्य का इसमें प्रवेश पाना अत्यंत ही कठिन है। अल्पज्ञ कैसे समझेंगे? कठोपनिषद् के अध्याय 1 श्लोक 8 में ऐसा दर्शाया गया है कि प्रकृति पर्यन्त जो भी सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्व हैं यह आत्मतत्व उससे भी सूक्ष्म है। यथा:

न नरेणावरेण प्रोक्त एष सुविज्ञेयो बहुधा चिन्त्यमानः अनन्यप्रोक्ते गतिरत्र नास्ति अणीयान् ह्यतर्क्यमणुप्रमाणात्।।
कठोपनिषद् (अ. 1, श्लोक 8)

आत्मतत्व की सूक्ष्मता को जानने के लिए महर्षि उधालक के पुत्र नचिकेता ने यमराज से अपने को शिष्य समझते हुए पूछा है। यथा:

यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो यत्साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत् योऽयं वरो गूढ़मनु प्रविष्टो नान्यं तस्मान्चिकेता वृणीतें।। (कठोपनिषद्, अध्याय 1, श्लोक 29)

जिस आत्मतत्व संबंधी महान ज्ञान के विषय में लोग यह शंका करते हैं कि मरणोपरांत आत्मा का अस्तित्व रहता है या नहीं उसके संबंध मे निर्णयता निर्णयात्मक जो आपका अनुभूत ज्ञान हो पा कर मुझे उपदेश कीजिए यह सत्य है कि गूढ़ है। अतएव, याज्ञवाल्कय ने श्रद्धा पर वृहदारण्यकोषनिषद (श्लोक 21, अध्याय 3) बड़ा ही सुन्दर विवेचन किया है। यथा

किन्देवतोऽयां दक्षिणायां दिश्यसीति यमदेवतं इतिसयमः कस्मिन् प्रतिष्ठित इति यज्ञ इति कस्मिन्नु यज्ञः प्रतिष्ठित इति दक्षिणायामिति कस्मिन्नु दक्षिणां प्रतिष्ठितेति श्रद्धायामिति यदा ह्येव श्रद्धतेऽथ दक्षिणां ददाति श्रद्धायाम्ह्येव दक्षिणां प्रतिष्ठितेति कस्मिन्नु श्रद्धा प्रतिष्ठितेति हृदय इति हो वाच हृदयेन हि श्रद्धा जानाति हृदये ह्येव श्रद्धा प्रतिष्ठिता भवतीत्येवमेवैतद् याज्ञवाल्क्य।।
वृहदारण्यको उपनिषद (अध्याय 3, श्लोक 21)

याज्ञवलक्य ने कहा है कि श्रद्धा हृदय की ही वृत्ति है, हृदय से ही पुरुष श्रद्धा को समझता है और इस श्रद्धा को प्रतिष्ठित करने के लिए वृतिमान होना अनिवार्य होता है, अस्तु हृदय में ही श्रद्धा प्रतिष्ठित है, जिससे दान, तप, यज्ञ, आदि हम करते हैं।

कालीबाड़ी, टिल्हा, गया

◆

गयाधाम में श्राद्ध की विशेष महत्ता

डॉ० ब्रजराज मिश्र

श्राद्ध शब्द श्रद्धा का परिचायक है। धर्मशास्त्रों में 'श्राद्ध' शब्द को परिभाषित करते हुए बतलाया गया है – 'श्रद्धया दीयते क्रियते तच्छाद्धम्' अर्थात् व्यावहारिक अर्थ में श्राद्ध 'पितृपूजन' के अर्थ में प्रयुक्त है। अन्त्यकर्म श्राद्ध प्रकाश में 'श्राद्ध' शब्द को व्याख्यायित करते हुए कहा गया है- "श्रद्धया पितृन, उद्दिश्य विधिना क्रियते यत्कर्म तत् श्राद्धम्" **'श्रद्धार्थ मिदं श्राद्धम्' श्रद्धया कृतं सम्पादितमिदम्" "श्रद्धया दीयते यस्मात् तच्छाद्धम्" (अन्यकर्म श्राद्ध प्रकाश पृ० 4)**

महर्षि पराशर के अनुसार :

"देशेकाले च पात्रे च विधिनाहविषा चयत् ।
तिलैर्दभैश्च मन्त्रैश्च श्राद्धं स्याच्छ्रद्धया युतम्।।

अर्थात् देश काल तथा पात्र के अनुरूप हविष्यादि विधि द्वारा जो कर्म तिल, यव, दर्भ (कुश) तथा मंत्रों से युक्त (पितरों के उद्देश्य से) श्रद्धा पूर्वक किया जाय वह श्राद्ध है। श्राद्ध को पितृयज्ञ की संज्ञा भी दी गई है।

महर्षि वृहस्पति तथा महर्षि पुलस्त्य के वचनानुसार :-

संस्कृतं व्यंजनाद्यं च पयोमधुघृतान्वितम्।
श्रद्धया दीयते यस्माच्छ्रद्धं तेन निगद्यते।।

अर्थात् जिस कार्य विशेष में दुग्ध, घृत और मधु से युक्त सुसंसक्त (सुपाचित) उत्तम व्यंजन को श्रद्धापूर्वक पितृजनों के उद्देश्य से ब्राह्मणादि को प्रदान किया जाय, उसे श्राद्ध कहते हैं।

ब्रह्मपुराण में श्राद्ध को परिभाषित करते हुए यों बतलाया गया है:-

देशेकाले च पात्रे श्राद्धया विधिनाचयत्।
पितनुद्दिश्य विप्रेभ्योदत्तं श्राद्ध मुदाहृतम्।।

अर्थात् पितरों के उद्देश्य से देश काल और पात्र के अनुरूप जो ब्राह्मणों को (अन्न, द्रव्य वस्त्रादि) दान किये जाये, वह श्राद्ध है। यह श्राद्ध न केवल पितरों के प्रति संततियों की श्रद्धा का द्योतक है, वृद्ध पितरों के लिए तृप्तिकर और मोक्षदायक होने के साथ-साथ कर्त्ता अर्थात् पुत्र-पौत्रादि व संतानों के लिए भी कल्याणकारी है। महर्षि सुमन्तु के अनुसार-

श्राद्धात्परतरं बात्यच्छ्रेयष्कर युदाहृतम्।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेने श्राद्धं कुयाद्धियक्षणः।।

अर्थात् इस जगत् में श्राद्ध से श्रेष्ठ अन्य कोई कल्याणकारी उपाय नहीं है। पितृपूजन अर्थात् श्राद्ध अनुष्ठाता की आयु को बढ़ाता है। पुत्र पौत्रादि प्रदान कर कुल परम्परा को अक्षुण्ण प्रदान करता है। शरीर में बल एवं पौरुष का संचार करता है तथा यश का विस्तार करते हुए हर प्रकार के लौकिक एवं पारलौकिक सुख प्रदान करता है। गरुड़ पुराण में कहा गया है:-

आयुः पुत्रान् यशः स्वर्ग कीर्ति पुष्टिं बलं श्रियम् ।
पशून् सौख्यं धनं धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात् ।।

(गरुड़ पुराण, यमस्मृति)

मार्कण्डेय पुराण में भी उक्त कर्म का समर्थन किया गया है:-

आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छन्ति तथा राज्यं पितरो श्राद्ध तर्पिता ।।
(मार्कण्डेय पुराण)

इतना ही नहीं श्राद्ध के विधि विधान के ज्ञाता को, श्राद्ध करने का परामर्श देने वाले को तथा श्राद्ध कराने वाले आचार्य को भी समतुल्य फल की प्राप्ति होती है। इसलिए उपनिषदों में भी बतलाया गया है **'देवपितृकार्भभ्यां न प्रभदितव्यम्' (तैत्तिरीय उपनिषद् 1/11/1)** अर्थात् देवताओं एवं पितरों के

कार्य में प्रमाद नहीं करना चाहिए। अर्थात् इन दोनों कार्यों का सम्पादन श्रद्धा - विश्वासपूर्वक करना चाहिए। श्राद्धकर्म में पित्तशाठ्य विवर्जित है। अत: अपने सामर्थ्य के अनुसार श्राद्ध में व्यय अवश्य करना चाहिए। श्राद्ध का यह विधान न केवल धनपतियों के लिए, प्रत्युत् गरीबों के लिए भी है। अर्थाभाव में जौ के आटे से पिण्ड देकर, शास्त्र से पिण्ड देकर, मात्र कुछ ब्राह्मणों को भोजन कराकर रतथा अति दैन्यावस्था में श्राद्धतीर्थ में और वह भी नहीं संभव हो तो किसी एकांत में जाकर भगवान नारायण का ध्यान करते हुए दोनों हाथों को ऊपर उठाकर पितरों से (पितृरूपी जनार्दन से) उनका स्मरण करते हुए साश्रुनयन प्रार्थना कर लेने मात्र से भी पितरों की तृप्ति होती है। किन्तु ऐसा तभी कर, जब कर्त्ता पूरी तरह अकिंचन हो। प्रार्थना इस प्रकार है।

नचास्ति पित्रं न धनं च नान्यत्
श्राद्धोपयोज्यं स्वपितून्नतोऽस्मि।
तुप्यन्तु भक्त्या पितरौ मयैतो
कृतौ भुजौ वर्त्मनि मारूतस्य ।।
विष्णु पुराण 3/14/30

अर्थात् हे पितृगण! मैं अकिंचन हूँ। मेरे पास श्राद्ध प्रयोज्य किसी भी वस्तु की व्यवस्था करने का सामर्थ्य नहीं है। मेरे पास आपलोगों के प्रति मात्र श्रद्धा है। आप इसे ही स्वीकार कर तृप्त हों। मैं आकाश में दोनों भुजाओं को उठाकर आपके चरणों में आत्म समर्पण करता हूँ।

सामान्य स्थिति में कन्द, मूल, फल, शाक, तृण, अन्न द्रव्यादि जो भी सामर्थ्य हो उससे हर व्यक्ति को पितरों का श्राद्ध करना चाहिए।

मत्स्य पुराण में पांच प्रकार के श्राद्ध के विधान बतलाये गये हैं - 1. नित्य 2.नैमित्तिक, 3. काम्य 4. वृद्धि और 5. पार्वण। प्रतिदिन किये जाने वाले श्राद्ध को नित्यश्राद्ध कहा जाता है। अशक्तावस्था में केवल जल प्रदान करने से भी यह श्राद्ध पूरा हो जाता है। एकोदिष्ट श्राद्ध (जो किसी एक ही व्यक्ति के लिए किया जाय) उसे नैमित्तिक श्राद्ध कहते हैं। विशिष्ट कामना की पूर्ति के उद्देश्य से किये गये श्राद्ध को काम्यश्राद्ध कहते हैं। यज्ञ-योगादि, पुत्र जन्मोत्सव अथवा विवाहादि मांगलिक अवसरों पर सम्पादित पितृपूजन को वृद्धि श्राद्ध की संज्ञा दी गई है। इसी तरह पुण्य तिथि, ग्रहण, अमावस्या अथवा विशेष पर्वों पर किये गये श्राद्ध को पार्वण श्राद्ध कहा जाता है। उपयुक्त सभी प्रकार के श्राद्धों के लिए गयाधाम सर्वाधिक उपयुक्त पुण्यभूमि है क्योंकि यहाँ स्वयं भगवान गदाधर विष्णु पितृरूप रूप में विद्यमान हैं। यथा :-

गयायां पितृ रूपेण स्वयमेव जनार्दन
(वायु पुराण 4/92)

यों गृहस्थों के लिए ब्रह्मज्ञान, गोगृह अर्थात् गोशाला में मृत्यु, कुरुक्षेत्र में निवास और गया श्राद्ध इन चार कर्मों को मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन बतलाया गया है, किन्तु यदि जीवन में ऐसा संयोग न भी जुड़े तो अगर पुत्र (पौत्रादि भी) गया क्षेत्र में आकर श्राद्ध कर दे, तो पितरों को अवश्य ही मुक्ति मिलती है। गया मोक्षभूमि है। अत: यहाँ तर्पण और श्राद्ध पितरों के लिए और स्वयं अपने लिए (कर्त्ता या पुत्र के लिए) सर्वश्रेष्ठ मुक्ति साधन है।

प्रधानाचार्य
डॉ० जगन्नाथ मिश्र कॉलेज, मऊ (गया)
दूरभाष : 9931894075

◆

पिंडदान में जौ और तिल प्रयोग करने की वैज्ञानिक प्रासंगिकता

प्रो० अरविन्द कुमार सिन्हा

हिन्दू धर्म के अनुसार पिंडदान एक ऐसा धार्मिक एवं आध्यात्मिक तरीका है जिसके द्वारा बेचैन मृत आत्मा को शांति एवं संतोष प्राप्त होता है। विज्ञान यह कहता है कि हम अपने पूर्वज अर्थात् पिता बाबा, परबाबा, धरबाबा इत्यादि से जीन्स द्वारा जुड़े होते हैं, जो डी०एन०ए० का हिस्सा होता है। यह सर्वमान्य है कि हमलोग 'जीन्स' के द्वारा बनते हैं। एक वंश से दूसरे वंश में स्थानांतरित हरेक इन्सान अपने पूर्वज का ऋणी है, इस ऋण को चुकाने के लिए हम अनुष्ठान (पिंडदान) करते हैं, जिसके माध्यम से पूर्वज मोक्ष को प्राप्त करते हैं। पिण्ड एक गोल बॉल के समान होता है जो जौ के आटा एवं तिल के बीज का मिश्रित रूप होता है। गया में ही पिंड दान क्यों होता है इसके पीछे भी एक कहानी है।

गयासुर नामक एक राक्षस ने कोलाहल पर्वत पर जाकर घोर तपस्या की। भगवान विष्णु ने खुश होकर उसे यह वरदान दिया कि जो उसे एक बार देख लेगा वह वैकुंठ में जाएगा। इसके कारण यमलोक की व्यवस्था धीरे-धीरे चरमरा गई। इसके निवारण के लिए ब्रह्मा जी ने गयासुर से कहा कि तुम्हारा शरीर पवित्र है और मैं पवित्र स्थान पर महायज्ञ करना चाहता हूँ। इस पर गयासुर तैयार हो गया। ब्रह्मा जी समस्त देवतागण के साथ उसके शरीर पर विराजमान होकर यज्ञ का कार्य आरंभ करने लगे। लेकिन गयासुर का शरीर अचल नहीं हुआ। तब स्वयं भगवान विष्णु ने धर्मशिला और गदा के साथ उसके शरीर पर अपना-अपना दाहिना पैर रख दिया जिससे गयासुर का शरीर अचल हो गया। भगवान विष्णु ने भक्ति भाव को देखकर उसे वरदान मांगने को कहा, तब गयासुर ने भगवान से यह प्रार्थना की कि कोई भी प्राणी चाहे वह पुण्यात्मा या पापात्मा, अगर उसे मृत्यु के पश्चात् उसका गया में पिंडदान होता है, तो उसे मुक्ति मिल जाये। भगवान विष्णु ने गयासुर की प्रार्थना को स्वीकार किया।

यह कहा गया है कि गया में मृत आत्मा को पिंडदान करने से निम्नलिखित लाभ प्राप्त होता है :-

(क) ऐसे परिवार के जीवन में जो बाधाएँ आती हैं उसका समाधान सहज होता है।

(ख) ऐसे परिवार के सदस्यों में अचानक महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावशाली परिवर्त्तन दिखने लगता है।

जौ और तिल, जिसका प्रयोग पिंड बनाने में किया जाता है उसका वैज्ञानिक आधार भी है। वेद और पुराण के अनुसार जौ भगवान विष्णु का प्रियतम अनाज है जिसे महत्त्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान में प्रयोग में लाया जाता है। जौ पीले रंग का होता है, जो भगवान विष्णु को अत्यन्त प्रिय है।

जौ का वास्तविक नाम 'हॉर्डियम वलग्येर' (Hordeum vulgare) है, जो पोऐसी कुल का सदस्य है। यह एक वार्षिक पौधा है जिसकी लम्बाई ढाई से तीन फीट होता है। जौ एक बहुमुखी अनाज है। जिसमें पोषक मात्राएँ काफी होती है, इसमें सभी महत्त्वपूर्ण विटामिन एवं पोषक तत्व होते हैं। इसमें वसा की मात्रा नहीं होती हैं। इस अनाज की उत्पत्ति काफी पुरानी है और प्राचीन लोग जौ के आटा की रोटी खाते थे। गेहूँ जौ के बाद आया। क्राउफोर्ड एवं ग्योंग (2003) के अनुसार जौ सभी अनाजों में सबसे प्राचीन है, इसकी खेती की जाती थी। अलबर्ट हिल (1986) के अनुसार जौ की उत्पत्ति का स्थान दक्षिण-पश्चिम एशिया या दक्षिण पूर्व एशिया है, अर्थात् वृहद भारत तथा मिश्र, जौ की उत्पत्ति का स्थान रहा होगा। जौ की उत्पत्ति करीब 10000 ईसापूर्व (किंग, 2004) है।

इस प्रकार यह माना जाता है कि जौ सबसे प्राचीन अनाज ह, जिसकी खेती बड़े पैमाने पर की जाती थी। विश्व की शीतोष्ण कटिबंध स्थानों में जौ गरम अनाज तथा उष्ण कटिबंध स्थानों में शीतकाल अनाज के रूप में लगाया जाता है। जौ के बीज का

अंकुरण एक से तीन दिन के अन्दर हो जाता है। गेहूँ की तुलना में जौ में खरा मिट्टी बर्दाश्त करने की क्षमता ज्यादा होती है।

जौ की उपयोगिताएँ अनेक हैं। बिहार राज्य के मगध क्षेत्र में जौ पत्ती के भस्म को 'शरबत' बनाने के प्रयोग में लाया जाता है। यह क्षुधावर्धक, कामोत्तेजक एवं कड़वा होता है।

यह भी कहा जाता है कि जौ के प्रयोग से आवाज मधुर होता है। अशक्त व्यक्तियों एवं खून की कमी वाले मरीजों के लिये जौ का प्रयोग लाभदायक होता है। ऐसा कहा जाता है कि हजरत मुहम्मद साहब ने बहुत सी बीमारियों के इलाज के लिए लोगों को जौ का प्रयोग करने को कहा था। ग्रीस एवं इजरायल में भी जौ को प्राचीन एवं अत्यन्त उपयोगी अनाज के रूप में जाना जाता है।

अत: जौ कई विशेषताओं से परिपूर्ण प्राचीनतम अनाज है। जिसकी उत्पत्ति का स्थान भी वृहद भारतवर्ष माना जाता है, ऐसे में इसका उपयोग 'पिण्ड' बनाने में प्रासंगिक एवं तर्कपूर्ण लगता है।

जौ के तरह तिल को भी प्राचीनतम तेल वाला फसल माना जाता है। इसकी खेती का इतिहास 5000 वर्ष से भी अधिक पुराना है और प्राचीन काल से ही इसे पवित्र माना जाता था और इसका उपयोग धार्मिक अनुष्ठान में किया जाता था।

तिल का पौधा पाँच से छ: फीट लम्बा होता है। इसका फूल सफेद घंटी के समान होता है। एक फल में अनेक बीज होते हैं। बीज काले या सफेद रंग के होते हैं। ऐसे भूरा रंग का भी देखा गया है। तिल के पौधे का वानस्पतिक नाम 'सेसमम इंडिकम' (Sesamum indicum) होता है और यह 'पेडयलियेसी' (Pedaliaceae) कुल का सदस्य है। इसकी उत्पत्ति से संबंधित जो लिखित प्रमाण मिलता है वह 3000 बी.सी. पुराना है। इसकी उत्पत्ति का स्थान भी भारतवर्ष माना जाता है। पोहलमेन एवं ब्रोथाकर (1972) के अनुसार 1600 बी.सी. से भारतवर्ष के विभिन्न भागों में इसकी खेती की जाती थी और इसी देश से इस पौधे का बीज मिश्र तथा यूरोपियन देश में गया। तिल के बीज से तेल निकाला जाता है, जो हिन्दू शास्त्रों के अनुसार काफी महत्त्वपूर्ण होता है। ऐसा कहा गया है कि तिल पौधे का बीज अमरत्व को दर्शाता है। तिल के बीज की औषधीय उपयोगितायें अनेक हैं। मिश्र में इसका प्रयोग औषधि के रूप में काफी होता है। इसे ईबर (Ebers) की सूची में एक महत्त्वपूर्ण दवा के रूप में दर्शाया गया है। प्राचीन रोम में वहाँ की महिलायें तिल के बीज को शहद के साथ मिलाकर एक मिश्रण बनाती थी और इसका उपयोग खूबसूरती और जवानी बरकरार रखने के लिए करती थी।

रोमन सिपाही इस मिश्रण का उपयोग अपनी शक्ति एवं ऊर्जा बढ़ाने के लिए करते थे। तिल के बीज में सभी आवश्यक पोषक तत्व, विटामिन तथा एन्टी ऑक्सीडेन्ट होते हैं, जो शरीर को चुस्त-दुरुस्त बनाये रखते हैं।

गरुड़पुराण, प्रेतखण्ड के 29वें अध्याय के 15-17 छन्द में यह कहा गया है कि तिल के बीज की उत्पत्ति भगवान के पसीने से हुआ है, इसलिए यह पवित्र है। यह कहा गया है कि जहाँ भी तिल का बीज रखा जाता है, वहाँ से बुरी आत्मा पलायन कर जाती हैं। तिल के बीज को 'तर्पण और होम' में चढ़ाया जाता है, जिसके अनन्त फायदे होते हैं।

अत: जौ की तरह तिल की उत्पत्ति प्राचीनतम है और यह भी महत्त्वपूर्ण है कि इसकी उत्पत्ति का स्थान भी भारतवर्ष है। इसके साथ-साथ जौ और तिल दोनों का पोषक तथा औषधीय उपयोगितायें अनेकानेक हैं तथा इसकी खेती आसानी से की जा सकती है। इसी वैज्ञानिक कारणों से इन दोनों फसलों का इस्तेमाल पिण्ड बनाने में किया जाता है। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार यह दोनों फसल भगवान के अत्यन्त प्रिय हैं।

पूर्व विभागाध्यक्ष
बॉटनी एवं बायोटेक्नोलॉजी विभाग
गया कॉलेज, गया

◆

MAIN PLACES FOR PIND DAAN IN INDIA

Anil Saxena

Hinduism is full of rituals for all occasions in life and death. Death brings its own set of rituals like Shraddh, Asthi Visarjan and Pind Daan. Pind Daan is a ritual to venerate ancestors and facilitate the journey of their souls towards salvation. It is believed that Lord Brahma started this practice. The Pind Daan ceremony is important because it is believed the soul of the departed is liberated from suffering and, in the process, the survivors also attain peace. If the Pind Daan ceremony is not done the soul of the departed lives in hell in torment and the surviving family members will not have peace in their lives. Pin Daan is performed at specific places considered holy and auspicious for the purpose. The Rituals involve traditional Pooja and chanting of mantras followed by giving alms to the poor. There are many places considered as appropriate for Pind Daan ceremonies and these also happen to be the best places for Asthi Visarjan.

GAYA in Bihar is another important spot for Pind Daan. The ceremony is usually conducted on the banks of the Falgu River which is said to be an embodiment of Lord Vishnu. They take a dip in the holy river and the Brahmins conduct the ceremony on any one of the 48 platforms that are available here. Balls of rice with wheat flour, oats and dried milk are offered to the ancestors to the chanting of mantras, which ritual is supposed to free the soul of the departed from torment and give it lasting peace.

VARANASI is located on the banks of the holiest of holy Rivers of India, the Ganges and the city is also considered as one of the topmost pilgrimage places in India. This is the above of Lord Shiva and Parvati. It is customary to conduct the Pind Daan ceremony at Ganga Ghat where local Brahmin Pandits initiate rituals that involve mantra chanting and then offerings of Pind that consist of rice mixed with wheat flour, milk and honey. Seven Pinds are offered. One is offered to the soul of the departed for whom the ceremony is conducted while the rest are offered to the ancestors.

The BRAHMA KAPAL GHAT BADRINATH on the banks of the Alaknanda is considered auspicious for Pind Daan ceremonies. Devotees take a dip in the holy waters and Brahmins initiate the ritual to the chanting of mantras and offering of the traditional balls of rice to the soul of the departed and to the ancestors. The soul attains liberation and rests in peace. The holy lake at Pushkar in Rajasthan is believed to have sprung from the navel of Lord Vishnu according to some and according to others, it came into being when Lord Brahma dropped a lotus flower here. There are 52 Ghats around the lake and bathing platforms where devotees engage in the Pind Daan ceremony usually conducted during the holy month of Ashwin.

ALLAHABAD is one of the holiest of pilgrimage sites in India. It is the place of Triveni Sangam of confluence of three holy rivers, Saraswati, Yamuna and Ganga and the confluence is whre too Pind Daan ceremony is conducted in Allahabad. Just bathing in the water here washes away sins and frees the soul from the cycle of births and deaths. The Pind Daan ceremony conducted here has benefits for the soul of the departed family member.

HARIDWAR is one of the holiest pilgrimage spots in India. It sits on the banks of the Ganga and the evening Aarti is a beautiful, elevating experience. Bathing in the Ganga here washes away all sins and if one is cremated here his soul goes to heaven is a general belief. The Pind Daan ceremony, if conducted here, brings lasting peace to the soul of the departed and also gives happiness to the surviving family members.

TRIMBAKESHWAR in Nashik is a preferred place for Pind Daan owing to the sanctity and holiness of the place before a well known holy place of India, Trimbakeshwar is one among the 12 Jyotirlingas. Trimbakeshwar temple is also famous for Narayanbali Pooja, which should be performed in case of unnatural death.

The Pind Daan is an important ritual and it is obligatory in cases of natural deaths. It becomes even most necessary in the cases of unnatural deaths like accidents when it is believed the soul of the departed suffers torments unless the ceremony is performed.

Sylvenia, Ohio USA
e-mail : saxenaal273@gmail.com

◆

सिद्धि गच्छन्ति मानवा

डॉ० सच्चिदानन्द प्रेमी

अनन्ताय नमस्तस्यै यस्यान्तो नोपलभ्यते
महेशाय च अवितो मयि स्तां सुमुखौ सदा।

सामान्य अर्थों में श्राद्ध श्रद्धा के साथ किया गया कर्म है। परन्तु यह भी यथार्थ है कि श्राद्ध मृत्यु के उपरान्त ही प्रायः किया जाने वाला कर्म है। श्रद्धा जीवन की या जीवन के बाद की? श्रद्धा श्राद्ध की या श्राद्धी की? यह प्रश्न जीवन्त होता जीवात्मा को झकझोरता है। यह प्रश्न सामान्य है। होना भी चाहिए। जब जगदम्बा सती को परान्तपर प्रभु राम के विषय में शंका हो सकती है, महाकाल से साक्षात्कार के उपरान्त महाराज करन्धम को शंका हो सकती है, तो सामान्य मानव मन में शंका होना स्वभाविक है। महाराज करन्धम ने महाकालेश्वर से इसी तरह के कई प्रश्न किए- महाराज! पितरों को दिया जाने वाला तर्पण में जल और अन्य स्थूल सामग्री होती है, जल-जल में चला जाता है, स्थूल सामग्री सामने ही रह जाती है। फिर पितर इसका उपभोग कैसे करते हैं। इसी प्रकार भीम और युधिष्ठिर ने दादा भीष्म से पूछा- आत्मा अमर है, शरीर नश्वर है, तो फिर श्राद्ध किसके लिए- आत्मा या शरीर के लिए ?

बाली वध के उपरान्त तड़पती तारा को श्रीराम प्रभु ने उपदेश देकर शान्त किया-

प्रकट सो तनु तब आगे सोबा।
जीव नित्य केहि लगि तुम्ह रोबा।।

अर्जुन की समस्या का समाधान करते हुए श्री कृष्ण कहते हैं- इन प्रश्नों के उत्तर शास्त्रीय, पौराणिक एवं ऐतिहासिक मिल जाएँगे, परन्तु सामाजिक स्तर पर इसे स्थापित करना कठिन है।

करन्धम को भगवान सदाशिव समझाने में समर्थ हो जाते हैं। वे कहते हैं- पितरों एवं देवताओं की योनि ही ऐसी होती है कि वे दूर से कही गई बातें सुन लेते हैं और पूजा ग्रहण कर लेते है।

हमारा शास्त्र कहता है कि पितरों का शरीर पाँचों तन्मात्राओं, मन, बुद्धि, चित, और अहंकार से बना होता है जिसमें दशमें तत्व के रूप में स्वयं पुरुषोत्तम होते हैं। इसीलिए देवता और पितर गन्ध और रस तत्व से ही तृप्त होते हैं! अब योनियों का भोजन अन्न का सार तत्व है, सम्पूर्ण देवताओं की शक्ति अचिन्त्य एवं ज्ञान गम्य है। अतः वे अन्न और जल का सार तत्व ग्रहण करते हैं, शेष, स्थूल वस्तु नहीं। पितर अपने-अपने कर्मों के अधीन होते हैं। पिता सात प्रकार के माने गए हैं जो नित्य पितर की संज्ञा से आविर्भूत हैं ।

देवता, असुर एवं यक्ष आदि वे तीन अमूर्त्त पितर तथा चारो वर्णों के चार मूर्त के अधीन नहीं हैं। ये खुश होकर मनोवांछित फल देने में समर्थ होते हैं, ये सभी पितर तृप्त होकर श्राद्धकर्त्ता के पूर्वजों की जहाँ-कहीं भी उनकी स्थिति हो, जाकर तृप्त करते हैं, यह मत है स्कन्द पुराण का, जिसका विशद् वर्णन माहेश्वर खण्ड में करन्धम प्रश्न के रूप में मिलता है। सनातन धर्म सभी धर्मों का जनक है, इसीलिए सनातन धर्म में उत्पन्न सभी धर्म 'श्रद्धा-विश्वास रूपिणौ' है। श्रद्धा और विश्वास के अभाव में शास्त्रों को समझना कठिन ही नहीं, असम्भव है। 'जानहिं झूठन सायं' वालों की पैठ नहीं है। इसलिए वे शास्त्रों पर झूठा आरोप लगाने में नही चूकते।

श्रुति कहती है- 'मंत्राधीना देवताः।'

देवता श्रद्धा के साथ समर्पण को स्वीकार करते हैं। अश्रद्धालु पुरुष के द्वारा बिना मंत्र का कोई हव्य ग्राह्य नहीं होता।

मंत्रा देवता यर्थाद्वद्वाक्मंत्र वस्करोति।
देवता भिरवे तत्करोति यद्वदाति
देवताभिरेव तद्दाति यत्प्रतिगृहणाति।
देवताभिरेव तत्प्रति गृहणाति।।

अत: पौराणिक एवं वैदिक मंत्रों के द्वारा ही सदा दान करना चाहिए। इसमें पात्र-कुपात्र अवश्य ध्येय है। चारों युगों में कलियुग सबसे महान युग माना गया है।

ध्यानं परं कृतयुगे त्रेतायां यज्ञ उच्यते।
कृतं च द्वापरे सत्यं दानमेव कलियुगे।
स्क०पु०, मा० कुमा० (15/45)

कलियुग समयुग आन नहि, जोनर कर विश्वास
गाइ राम गुन कपटतजि भव तर विनहिं प्रयास।
प्रकट चारि पद धर्म के कलि महऐका प्रधान
येन केन विधि कीन्हे दान करै कल्याणं।

इसलिए कलियुग में दान की ही महिमा बताई गई है। दान देने के लिए नियम बनाया गया है कि पितरों के लिए दी जाने वाली सामग्री के साथ कुश और तिल आवश्यक है, परन्तु देवताओं को दिए जाने वाले दान में अच्छत और जल आवश्यक होते हैं। इसके पीछे एक कथा है। राक्षस बलपूर्वक देवताओं और पितरों के दान को हरण कर लेता था। देवताओं एवं पितरों की प्रार्थना पर ब्रह्मा ने यह उपाय सुझाया। राक्षस कुश, तिल एवं अच्छत ग्रहण नहीं करते। इससे देवताओं और पितरों को मिलने वाले भाग अक्षुण्ण रह गए। श्री राम शर्मा आचार्य ने जोर-जोर से कहा- *''सावधान! युग बदल रहा है।''* इसका अर्थ अब प्रकट हो रहा है तथा यह अभी प्रभावी दृश्य हो रहा है।

वैदिक युग की मान्यताएँ खण्डित कर नए पंथ उदित हो रहे है। कार्य व्यस्तता स्वप्न जागरण और सुषुप्तावस्था में धनार्जन का एक मात्र उद्देश्य -अधौधमर्जन न है। इतना धन कि उससे आगे धन नही हो। कल-बल-छल से धनार्जन और इस धन चौपड़ की विशांति पर सदाधार के मोहरे कहीं नहीं पा रहे हैं। दान की बात कथा- समय किसी के पास नहीं है। समय नहीं है संस्कार के लिए, संस्कृति के संरक्षण के लिए। समय नहीं है- शास्त्र अध्ययन स्वाध्याय के लिए, समय नहीं है चिंतन के लिए। श्राद्ध की महिमा तो है, परन्तु समयाभाव में सिर्फ ख्यालपुरी कर लेने से उसका फल नहीं प्राप्त होता- बस शास्त्र को दूषित करना आरंभ कर दिया।

मेरे एक मित्र बाहर से आए। गया जी के प्रति उनकी श्रद्धा थी, श्राद्ध करना चाहते थे। उनके पास मात्र एक दिन का समय था। उन्होंने पुरोहित को हठात रख कर मुझे विस्मित कर दिया। एवं दिन में श्राद्ध-वह भी बिना तैयारी के। तीर्थ पुरोहित से बात की। उन्होंने कहा- हाँ, हो जाएगा। मेरे लिए शर्तें -मैं जैसे हूँ वैसे ही करूँगा, मैं बाल-उल नहीं मुंड़ाऊँगा, तीन घंटे में सभी कार्य सम्पन्न होने चाहिए, मैं कोई सामान नही लाऊँगा, दक्षिणा जो होगा कहेंगें, वह दूँगा। अगर मैं होता, तो अवश्य न ही कह देते। परन्तु उनकी बात ही अलग थी। ब्राह्मण भोजन तक 2 घंटे करीब लगे। लौटकर जाने के एक माह बाद उनका फोन आया। मै तो घबड़ा गया था- 'क्या-क्या अविश्वास की बात कहेंगे।' परन्तु उलटा हुआ। उन्होंने कहा- मेरे घर की सारी बाधाएँ समाप्त हो गईं अब मैं पहले से बिल्कुल शांत एवं अच्छा हूँ। यह है श्राद्ध की महिमा। यह भी बता दें कि वे पढ़े-लिखे सज्जन उच्चतम न्यायालय दिल्ली के रजिस्ट्रार थे।

यह है श्राद्ध और दान की महिमा। इसीलिए श्राद्ध श्रद्धा की चीज है। श्रद्धा तीर्थ के प्रति, तीर्थ पुरोहित के प्रति-और प्राणी के प्रति।

इसीलिए हमारा शास्त्र कहता है-

कलेर्दोषनिधेश्चैव श्रृणु चैकं महागुणम्।
यदल्पेन तु कालेन-सिद्धि गच्छन्ति मानवाः।।

आनन्द विहार कुंज, माड़नपुर, गया
सम्पर्क सूत्र- 9430837615

◆

पितर करते हैं गया जी में वास

नीरज कुमार

जिस समय पर्वतराज हिमालय की कोई परिकल्पना नहीं थी, तब भी गयाजी की सात पर्वतामालाएँ यथावत् थीं और गयाजी का अस्तित्व बरकरार था। मतलब, पर्वतमालाएँ और गयाजी हिमालय से भी प्राचीन हैं। ऐसे, प्राचीनतम शहर में मोक्ष की कामना को लेकर श्रद्धालु श्रद्धाभाव के साथ आते हैं, ठहरते हैं और पितरों के प्रति अपनी श्रद्धा निवेदित करते हैं। इससे पितरन खुश होते हैं और खूब आशीर्वाद बरसाते हैं। मतलब, गयाजी में आकर पितर भी खुश होते हैं और श्रद्धालु भी प्रफ्फुलित हो उठते हैं! ऐसी मान्यता है कि पितृपक्ष में समस्त पितर गयाजी में वास करते हैं और यहाँ अपने लोगों को देखकर प्रसन्नचित हो उठते हैं। गयाजी में सालों भर पिण्डदान का विधान है। लेकिन, आश्विन मास में 15 दिनों तक लगने वाले पितृपक्ष मेले में देश-विदेश में प्रवास कर रहे भारतीय मूल के लोग विशेष तौर पर श्राद्ध और पिंडदान को यहाँ पहुँचते हैं। हालिया वर्षों में विदेशी संस्कृति को मानने वाले श्रद्धालु भी खुले मन से यहाँ आकर पूर्वजों के नाम से तर्पण करते हैं। रामायण हो या महाभारत काल या अन्य कोई कालखंड, सबका संबंध गयाजी से रहा है। हर कालखंड में गयाजी की चर्चा है। गयाजी की चर्चा के बिना हर काल खंड अधूरा है। यह एकमात्र स्थल है, जिसके नाम के साथ 'जी' लगता है। ऐसा है अपना पवित्र गयाजी।

गयाजी में पितरों की आत्माओं की शांति और मुक्ति के लिए पिंडदान किए जाते हैं। धर्मारण्य, रामशिला, प्रेतशिला, मातंगवापी, अक्षयवट, रामगया, वैतरणी, रामसागर, भीमगया, गोप्रचार, रामकुंड, सीताकुंड, सोलहवेदी आदि पिंडवेदियों एवं सरोवरों में परंपरा का निर्वहण करते हुए पिंडदान व तर्पण किया जाता है। पहले-पहल पिंडदानी साल भर का दाना-पानी लेकर अपने प्रदेश से गयाजी के लिए निकलते थे। यहाँ पहुँचकर प्रतिदिन एक वेदी के हिसाब से पिंडदान का कार्य एक वर्ष में सम्पादित करते थे। 365 वेदियों की अवस्थिति से भी इस बात की पुष्टि हो जाती है। हालांकि 365 वेदियों में बमुश्किल अब 44-45 वेदियों का ही अस्तित्व यहाँ नजर आता है। फिर भी, विज्ञान के बढ़ते वर्चस्व एवं स्थिति-परिस्थितियों में उतार-चढ़ाव के बावजूद यह परंपरा गयाजी में कायम है।

गयाजी वह धार्मिक शहर है, जहाँ भगवान विष्णु का चरण अवस्थित है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के पिता राजा दशरथ के हाथों का प्रतिरूप अंकित है धरा पर। गया को छूती फल्गु नदी है, जो रामायण काल से ही अभिशाप का दंश झेल रही है। फल्गु सूखी नदी है! इस नदी में बरसात के दिनों को छोड़कर अन्य दिनों में ऊपरी सतह पर पानी नहीं दिखता। किन्तु, आन्तरिक धारा अविरल प्रवाहित होती रहती है। गयाजी में हिन्दू-जैन-इस्लाम-पारसी आदि विविध सम्प्रदाय व संस्कृति के लोग निवास करते हैं और यहाँ समय-समय पर धार्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होते रहता हैं। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटनस्थल बोधगया के कारण विश्व के विभिन्न हिस्से से लोगों का यहाँ प्रतिदिन आगमन होते रहता है, सो अलग।

अन्य धाम के पंडों की तरह इस तीर्थ क्षेत्र में तीर्थ पुरोहित गयापाल पंडों की अच्छी खासी आबादी है। इन तीर्थ पंडों के पास भिन्न-भिन्न प्रदेशों के यात्रियों का खतियान होता है। जो जिस प्रदेश के गयापाल हैं, वहाँ से गयाजी पधारे यात्री इनके ही संरक्षण में श्राद्ध कार्य सम्पन्न करते हैं। वापस अपने प्रदेश विदा लेते वक्त चरण पूजा के पश्चात् इनकी आज्ञा अवश्य लेते हैं और बदले में श्रद्धावश दान-पुण्य तक करते हैं। गयाजी में दूसरे प्रांतों के यात्री आकर मूल रूप से अपने पितर आत्माओं का आह्वान करते हैं और पितरों की शांति व सद्गति की कामना करते हैं। मान्यता है कि यदि पितर आत्माएँ प्रसन्न हो जायें, तो आपकी सभी बाधाएँ न केवल दूर हो सकती हैं बल्कि घर-परिवार में हमेशा मंगल बना रहता है। जब तक पितरों के प्रति आंतरिक श्रद्धा नहीं होगी, तब तक पितर प्रसन्न नहीं होंगे और पितर प्रसन्न नहीं होंगे, तब तक घर-परिवार खुशहाल नहीं हो पाएगा।

दैनिक प्रभात खबर, गया

◆

जब गया तीर्थ में पहली बार तीर्थयात्रियों पर लगा टैक्स

प्रो० डॉ० रामनिरंजन परिमलेन्दु

भारत तीर्थों का देश माना जाता है। भारत के अनन्य तीर्थों में जाना तो तीर्थ यात्रियों की श्रद्धा और सुविधा पर निर्भर करता है किन्तु गया तीर्थ इस दृष्टि से अपवाद स्वरूप ही है। गया यात्रा करना हिन्दुओं का अनिवार्य-धार्मिक कर्त्तव्य है जिसकी उपेक्षा प्राय: हिन्दूगण नहीं करते। अतएव गया में यात्रियों की भीड़ सदैव बनी रहती है। अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा का निवेदन करते हुए उनकी सदगति और मोक्ष की प्राप्ति हेतु प्रत्येक हिन्दू के मन में यह अभिलाषा रहती है कि जीवन में कम से कम एक बार गया करना चाहिए। 1883 ई० में पहली बार गया के तीर्थयात्रियों पर तीर्थकर की व्यवस्था की गयी थी। नगर की सफाई और यात्रियों की अन्य सुविधाएँ प्रदान करने के उद्देश्य से गया में 'टैक्स' का प्रावधान किया गया था। यह टैक्स यात्रियों से प्रत्यक्ष रूप से नहीं अपितु तीर्थ पुरोहितों अर्थात् गयावालों से लिया जाता था। इसके पूर्व तत्कालीन बिहार सरकार ने यात्रियों के स्वास्थ्य के उपचार हेतु एक अस्पताल की स्थापना भी की थी। जो पिलग्रीम हॉस्पिटल के रूप में जाना जाता था। इस अस्पताल का जन निर्माण हुआ था तब तत्कालीन युग पत्र पत्रिकाओं ने प्रतिकुल टिप्पणी कही थी कि यह गया नगर से बहुत दूर है जहाँ आगमन की सुविधा नहीं थी।

उन दिनों गया चार विशाल फाटक और 13 घरों में ही मूल रूप से सीमित था जिसे आज अन्दर गया भी कहा जाता है। उक्त हॉस्पिटल की दूरी इस अन्दर गया से दूर तीर्थ यात्रियों के लिए बहुत मानी जाती थी और यहाँ से वहाँ तक का महलवर्ती क्षेत्र प्राय: सुनसान थी और आबादी नगर ही थी। ऐसी स्थिति में यात्रियों का वहाँ जाना प्राय: कष्ट कर प्रतीत होता था। कोलकाता से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक पत्र 'सार सुधा निधि' 8 अक्टूबर 1883 ई०, तद्नुसार 22 आश्विन सोमवार विक्रम संवत् 1940 (भाग पाँच, अंक-26) में 'गया में गवर्मेन्ट का भ्रम' सम्पादकीय अग्रलेख हुआ था जिसमें तीर्थ यात्रियों के टैक्स का विरोध किया गया था। उक्त सम्पादकीय के अनुसार गया का यह नियम था कि जो गाड़ी जिस गयावाल का होता है यह अपने गयापाल पंडा के निर्विष्ट आवास गृह में ही ठहरता था और उस आवास गृह का किराया पृथ्क रूप से यहीं लेकर मात्र पुरोहित की दक्षिणा ही लिए जाने की परम्परा थी किन्तु जब से गयावालों को यात्रियों से टैक्स लिए जाने की व्यवस्था हुई तब से यात्रियों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ गया था। इसके पूर्व निर्धन लोग मात्र 1 रुपया तक में गया यात्रा कर लेते थे किन्तु इस टैक्स के लागू होने पर 1 रु० तीर्थकर में ही देना आवश्यक था, इसलिए निर्धनों के लिए गया यात्रा करना तब कठिन हो गया था। इसे पुरी टैक्स भी कहा जाता था। क्योंकि इसके पूर्व जगन्नाथपुरी में ही इस तरह की टैक्स की व्यवस्था थी।

इस टैक्स की व्यवस्था होने के बाद यात्रियों के स्वास्थ्य की जाँच करते और उनकी सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेने के लिए डॉक्टर और पुलिस के पदाधिकारीगण यात्रियों के आवास पर जाते थे। वह युग अंधविश्वास और कई रोग से भयंकर रूप से पीड़ित था। महिलाओं में पर्दा प्रथा की कठोरता थी। ऐसे में डॉक्टर, किसी पुलिस पदाधिकारी का वहाँ प्रवेश आपत्तिजनक माना जाता था।

'सार सुधा निधि' के उक्त अंक में यह आरोप लगाया गया था कि 'टैक्स' लेने के बावजूद यात्रियों के पक्ष में न तो किसी प्रकार की समस्या रक्षा का उपाय हुआ था और न कोई सुगम चिकित्सा की व्यवस्था भी हुई थी। सफाई की भी कोई उचित व्यवस्था नहीं थी। यात्रियों की सुविधा के लिए फिर हॉस्पिटल का निर्माण तत्कालीन सरकार ने करवाया था। इस साप्ताहिक में कहा गया था कि इस टैक्स से

तत्कालीन सरकार के प्रति घृणा और विरक्ति का भाव उत्पन्न हो गया था। गया यात्रा हिन्दुओं का धर्म विषयक प्रधान कार्य होने के बावजूद सरकार द्वारा इस हस्तक्षेप से तत्कालीन जनमानस में आक्रोश का भाव भी था। उक्त साप्ताहिक पत्र में यह आरोप लगाया गया था कि सरकार ने आय करने का जो कार्य किया यह महाभ्रम का कार्य किया है। यदि सरकार पूरी टैक्स जारी नही कर सफाई और चिकित्सा के लिए गयावालों से प्रति मकान टैक्स लिया जाता तो हानि नहीं होती। किन्तु प्रत्येक गरीब-अमीर तीर्थ यात्री से टैक्स लेने से गया श्राद्ध करना कठिन हो गया था।

सार सुधा निधि का कथन था कि प्राय: सभी गयावाले धनी और सामर्थवान हैं अत: उनसे ही किसी प्रकार का टैक्स लिया जाना ज्यादा उचित रहता। इस प्रावधान को निरस्त करने के लिए तत्कालीन धर्मनिष्ठ हिन्दुओं ने भारतवर्ष के वायसराय लार्ड रिपन से लिखित निवेदन भी किया था। किन्तु आगे भी यह व्यवस्था बनी रही फिर 1920 में गठित लॉजिंग हाउस कमेटी (संवास सदन समीति) द्वारा यह कार्य अपने हाथों में ले लिया गया।

पूर्व विश्वविद्यालय प्राचार्य (हिन्दी)
आवास : दक्षिण दरवाजा, गया
फोन- 0631-2222347, मो०- 9470853118

◆

धर्म का मर्म

मुन्द्रिका सिंह

सनातन धर्म में तर्पण अपने पूर्वजों के प्रति आस्था का प्रतीक है। धर्म में आस्था और विश्वास दो ऐसे अमोघ-अस्त्र का इस्तेमाल होता है, जहाँ पर सभी ज्ञानी-विज्ञानी आकर मौन हो जाते हैं। जब तर्क की गुंजाइश समाप्त हो जाती है, तब वह अपने बुद्धि-विवेक का इस्तेमाल करना बन्द कर देता है, और वह धर्म-भीरू बनकर अपनी आँखे मूंद कर जो पंडा-पुजारी कहते है, उसे आत्मसात कर लेते हैं। ऐसे लोगों को ही आस्तिक कहा गया, परन्तु जो लोग तथ्यों को जाँच-परख कर स्वीकार करना चाहते हैं उन्हें नास्तिक की संज्ञा दी गई। लेकिन जगत् का अस्तित्व तो सभी लोगों के सामने होता है, इसलिए इसमें आस्तिक और नास्तिक के बीच ज्यादा फर्क पैदा नहीं होता है, परन्तु परलौकिक वस्तुओं की चर्चा जैसे ही प्रारम्भ होती है, मन में शंका, संशय और सन्देह उत्पन्न होना स्वाभाविक है। जो लोग अपने पित्तरों के प्रति कटिबद्ध दिखाई पड़ते है उनकी आस्था पारलौकिक शक्तिओं पर टिकी होती है। ऐसे लोगों की मान्यता होती है कि इस जगत से व्यक्ति के गुजर जाने के बाद केवल उसके नश्वर शरीर का ही अन्त होता है, शेष सारे उसके क्रियाकलाप फला-फल किसी न किसी रूप में जगत में व्याप्त रहता है। इससे पोषण पाकर उसकी आत्मा उन सारी सुख-सुविधाओं का मरने के बाद भी उपभोग करता रहता है। इस लिए मृत व्यक्ति के लिए पिण्ड और तर्पण दोनों अनिवार्य होते हैं।

अब यदि आज के वैज्ञानिक पृष्ठ-भूमि पर इसका मूल्यांकन किया जाय तो धर्म का सीधा सम्बन्ध कर्म से जुड़ा हुआ है और कर्म का सीधा सम्बन्ध शरीर से जुड़ा हुआ है। अत: जब शरीर का अस्तित्व ही समाप्त हो गया तब उसके लिए धर्मावरण की बात बेबुनियाद प्रतीत होती है। अत: कुछ लोग इससे अपनी सहमति नहीं रखते हैं। यह तो सनातन सत्य है कि धर्म शब्द जितना व्यापक और प्रचलित है, इसका विश्लेषण और अर्थ ग्रहण करना उतना ही दुरूह और दु:साध्य है। धर्म शब्द का बोध होते ही हमारे दिलो दिमाग में पूजा-पाठ, मंदिर-मस्जिद, गुरुद्वारा या फिर देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना कौंधने लगती है।

इसका मूल कारण हमारा पारम्परिक संस्कारों से जुड़ा होना होता है। हम जन्म से ही अपने आस-पास धर्म के नाम पर अखण्ड कीर्तन, भजन्, पूजन इत्यादि देखते आए हैं। फलतः हम भी अनायास उसी ओर अग्रसर होने लगते हैं। जबकि धर्म इससे बिल्कुल अलग एक बहुआयामी दर्शन है। यदि सामान्य तौर पर भी इसका विश्लेषण करें तो इसका सीधा सम्बन्ध मानव कल्याण से जुड़ा हुआ है। जब हम कोई ऐसा कार्य करते है, जिससे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कोई प्राणी लाभान्वित होता है और उसे सुख-शांति या आराम मिलता है, तब हम इसे कल्याणकारी कार्य कहते हैं, दूसरे रूप में इसे ही धर्म कहते है। परन्तु धर्म से कल्याण तभी सम्भव है जब उसमें सेवा जुड़ा हुआ हो। जबतक हम किसी की किसी रूप में सेवा नहीं करते, तब तक उसे धर्म नही कह सकते। यहाँ पर एक बात खास तौर पर ध्यान देने योग्य है कि जन कल्याण के लिए जो सेवा ली जाती है, उसे ही धर्म की श्रेणी में रखते हैं। जो सेवा कल्याण से इतर होती है उसे धर्म की संज्ञा नहीं दी जा सकती। जैसे-जैसे हम इस ओर बढ़ते हैं सेवा का व्यापक आयाम हमारे सामने खुलते जाता है, जिन्हें हम मूलरूप से तीन बिन्दुओं में सीमित रखते हुए चर्चा करेंगे। धर्म के लिए जो सेवा होती है इसमें तन-मन और धन तीनों की भूमिका अहम होती है।

सेवा का सीधा सम्बन्ध शरीर से है और शरीर का सीधा सम्बन्ध मन से है। फलतः जब तन और मन दोनों आपस में मिलकर सम्मिलित रूप से भाव पैदा करते हैं तभी धर्म के प्रति रूझान पैदा होती है। लेकिन यह निर्वाद सत्य है कि मात्र धर्म का भाव पैदा होने से ही उसका निष्पादन सम्भव नहीं है, क्योंकि कोई भी कार्य बिना साधन के पूरा नही हो सकता, इसके लिए साधन की जरूरत होती है और साधन के लिए धन अनिवार्य है। कहा भी गया है 'बिनु धन धर्म न होहीं खगेशा।' अतएव जब तक हम तन-मन और धन से संतुष्ट नहीं होगे, हम धर्म नहीं कर सकते। हालाँकि यह बात आंशिक तौर पर ही सही जान पड़ता। जीवन के विविध पड़ावों पर बिना धन के भी कार्य सम्भव है। क्योंकि धर्म का विस्तार केवल मंदिर-मस्जिदों में पूजा-पाठ या ईश्वर स्तुति या मूर्ति पूजा तक ही सीमित नही है। प्रकारान्तर से यदि कहें तो मूर्त्ति पूजा तो धर्म है ही नहीं। धर्म तो मानव कल्याण से जुड़ा है जबकि जब मूर्त्ति पूजा उदरपूर्त्ति से जुड़ा हुआ है।

धर्म का सम्बन्ध मानव के क्रिया से जुड़ा है, इसीलिए तो कहा गया -

ति क्षमा दमोस्तेय, शौचमिन्द्रिय निग्रह।
धीः विधा सत्यम् क्रोधः दशकम् धर्म लक्षणम्

अर्थात मानवीय संवेदनाओं को प्रभावित करने वाले जो कार्य हैं, धर्म उसी में निहित है। इसमें केवल तन और मन की ही प्रमुखता है, तीसरा पक्ष धन तो मात्र सहायक के रूप में दिखाई पड़ता है, जिसका उपयोग आवश्यकतानुसार पात्र के अनुसार होता है, जैसे किसी अन्धे को सड़क पार का रास्ता दिखाना । सड़क पर तड़प रहे घायल को अस्पताल पहुँचाना, प्यासे को पानी देना इत्यादि धर्म के ऐसे आयाम हैं, जिससे हमारे जेब पर कोई अतिरिक्त भार आनेवाला नहीं है। संत तुलसी ने तो स्पष्ट कहा - *'परहित सरिस धर्म नही भाई'*

परन्तु पर हित करते समय हमें पात्र के चयन में सावधानी बरतनें की जरूरत है। जब हम परहित में पीड़ित मानवता से जुटते हैं, उनकी चिन्ता से स्वयं को जोड़ते हैं, जिनकी अनूभूतियाँ, संवेदनाओं को समझने के बाद जब उनके रगों पर हाथ रखते हैं, तब उसे जो सुख मिलता है वही धर्म हैं। बूढ़े माँ-बाप की सेवा, जन सेवा, देश की सेवा, जो अपने को न्योछावर करता है। सचमुच में वही धार्मिक है और उसकी सेवा ही धर्म है।

सहायक मंत्री, गया जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन
आजाद पार्क (गया) सम्पर्क :- 9431207620

◆

किलाबंदी की तरह फाटकों से सुरक्षित गयाजी

डॉ० रामकृष्ण

गयाजी भारत की एक सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक नगरी है। यहाँ विश्व के कोन-कोने से सनातनी अपनी आस्था और विश्वास की प्रेरणा से आकर अपने पितरों के प्रति निवेदित करते हैं। इस नगरी का जो स्वरूप आज दिख रहा, वव पूर्वकाल में नहीं था। ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी से भारत पर मुसलमानों द्वारा हुए आक्रमणों का विध्वंशक प्रभाव गयाजी पर भी समय-समय पर पड़ता रहा है। उसकाल में भौतिक संसाधनों का अभाव रहा है। आजादी के बहुत पहले तक यहाँ आने वाले यात्रियों के आवागमन का साधन पैदल या घोड़े आदि रहे होंगे। 1113 ई० में बख्तियार खिलजी के आक्रमण और संस्कृति विनाशक दुर्वृत्ति से गयाजी अछूता नहीं रह सका। नालंदा के तहस-नहस के पश्चात् बोधगया के प्रति विनाशक दौरे के क्रम में इस क्षेत्र में भी धार्मिक स्थलों का विध्वंश, मूर्तियों का विखण्डन देव मूर्तियों का अंश भंजन होता गया। तब भय का ऐसा वातावरण बना कि यहाँ के तीर्थपुरोहित कहे जाने वाले गयावाल पंडे आस-पास के गाँवों में बस गए। संपूर्ण क्षेत्र जातीय विद्वेष और असहिष्णुता की आग में झुलसने लगा। यहाँ की आबादी घटने लगी साथ ही यात्रियों की संख्या भी क्षीण होने लगी। तभी उदयपुर के राजा लक्षा का गया आना और तातारियों से युद्ध में उनका परास्त होना एक अत्यंत दुखद घटना थी। फिर तो उनके वंशजों की छठी पीढी तक ने तातरियों के साथ का संघर्ष जारी रखा। अंत में राजा सांगा जो 1509 ई० उदयपुर के राजा हुए, गया को तातारियों से मुक्त कराया।

औरंगजेब के दिल्ली तख्त पर बैठेने के बाद भी गयापालों की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में बहुत सुधार नहीं हो सका। हाँ, एक सुखद घटना हुई। औरंगजेब काल में ही गयापालों को जीवन में एक सुखद् मोड़ आया जिसे महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। गयापाल सीताराम चौधरी के बड़े पुत्र थे। शहरचंद चौधरी जो बड़े मेधावी, प्रत्युत्पन्नमतिवाले, गायक, कलाकार थे। उन्होंने अपने समाज की तंग हालत और पीड़ा का अनुभव किया। जजिया टैक्स के यात्रियों के आवागमन की क्षीणता के कारण ये लोग आर्थिक तंगी से गुजर रहे थे। इनकी जीविका का साधन यात्रियों से मिली दान-दक्षिणा ही था। अत: अपने समाज की आर्थिक दुर्दशा में सुधार के लिए औरंगजेब से मिलने का निश्चय किया। येन-केन प्रकार से शहरचंद दिल्ली की ओर प्रस्थान कर कई माह की यात्रा के पश्चात् औरंगजेब से मिलने की युक्ति भिड़ाने लगे। स्वयं तो गायक भी थे, कलाकार भी थे। इनका दिल्ली दरबार में प्रवेश संभव हुआ। दरबार के लोग इनसे काफी प्रभावित हुए। स्वयं औरंगजेब भी इनसे संतुष्ट हुआ। अपनी प्रतिभा और कौशल का उपयोग करते हुए इनहोंने की बेगम तक पहुँच बनाई। मल्लिका (रानी) के संपर्क में आने से इनकी स्थिति और अनुकूल हो गई। अपने उद्देश्य में सफल होने के लिए इच्छा के विपरीत इन्हें इस्लाम स्वीकारना पड़ा। जैसे लोक कल्याण के लिए शिव ने विषपान किया था। परिणामत: इन्हें सभा में चार हजार बीघा जमीन मुगल बादशाह औरंगजेब से मिली साथ ही जजिया कर से भी मुक्ति मिल गई। वातायन और गवाक्ष भी प्राचीन वस्तुकला के अप्रतिम उदाहरण है। एक मुख्य मार्ग जो उत्तर फाटक द्वार से दक्षिण फाटक द्वार तक था जिसका विस्तार अंग्रेजी शासन काल में रामशिला तक हुआ। आरंभ में यह दीर्घीकरण चौक टावर (घंटाघर) तक था। अंदर (प्राचीन) गया की गलियाँ प्राय: संकीर्ण है। लगता है पहले ये गुप्तमार्ग की तरह थीं, जो किसी एक भवन में समा जाती थीं। ये गलियाँ प्राय: घुमावदार हैं। प्रतिरक्षा की दृष्टि से इनका बहुत महत्व रहा होगा। फल्गु नदी के पश्चिम और विष्णुपद मंदिर के वायव्य कोण पर सटे एक विस्तीर्ण षटकोणीय तालाब है जहाँ छठ पर्व के अवसर पर संध्याकालीन अर्घ से सूर्य की आराधना की जाती है। इसे दक्षिण मानस के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ पाँच वेदियाँ (पंचतीर्थ) हैं जहाँ पिण्डदान होता है। इस तालाब में कभी पानी की कमी न हो इस के लिए जल भरने का व्यवस्था की गई है। यह तालाब स्नान एवं तैराकियों के लिए बहुत उपयुक्त है। तालाब के किनारे भगवान सूर्य देव की विशाल मूर्ति है। विशेषकर रविवार के दिन साधकों/आराधकों का जुटना स्वभाविक है। गयाजी की एक अद्भुत विशेषता है कि यहाँ पर हर 30-40 कदम पर मुहल्ला बदल जाता है। दक्षिण दरवाजा, सिसोदिया चौरण, कृष्णद्वारका, चंदन दुर्गा, पिंडवेची, पंचमहला, कण्ठगच्ची आदि। इनकी कुल दूरी आधा किलोमीटर भी नहीं है। स्वतंत्रता आंदोलन के पश्चात् समग्र विकास की हवा इस क्षेत्र में आ चुकी है। पारंपरिक सोच और आचरण में अनेक परिवर्तन दिख रहे है। संगीत, कला, साहित्य के अतिरिक्त कुस्ती की परंपरा के अंश आज भी द्रष्टव्य हैं।

संज्ञायन, विष्णुपद मार्ग
कर सिल्ली, गया
मोबाइल न०-9801489728

मृत्यु जीवन का शृंगार कैसे बने?

शिव बचन सिंह

मानव जीवन बड़ा मूल्यवान है, जिसे प्राप्त करने के लिए देवगण भी तरसते हैं। किन्तु हम कितने अभागे है कि भगवत कृपा से प्राप्त ऐसे सुन्दर मानव शरीर का पूर्णरूपेण लाभ नहीं उठा पाते, और इस शरीर को हम सांसारिक भोगों के कीचड़ में डुबोये रहते हैं। अन्त काल में काल के मुँह में समा जाते हैं। इस पर विचार हमें करना होगा कि अपने जीवन को कैसे सार्थक बना सके कि मरण जीवन का शृंगार बन सके।

भोग-भरी कामनाएँ नागिन की तरह जीव को डँस लेती हैं तो अनर्थकारी विषय के समान नीम की कड़वी पत्ती भी मधुर लगती है। भोगवृत्ति ही सिर्फ जीवन का समाधान नहीं है।

आइये हम देखें एक बार की बात है कि जनक जी सत्संग में बैठे थे और महल में आग लग गयी। सभी लोग भागने लगे, किन्तु जनक जी आँखे बन्द कर प्रभु के ध्यान में बैठे रहे। लोगों ने उनसे पूछा कि आप का राजमहल जल रहा है और आप आँखे मून्द कर बैठै हुए हैं। इस पर जनक जी ने कहा कि *''तुम बाहर भागे, हम अन्दर भागे एवं तुम भागे अपनी कुटिया बचाने, हम बैठे प्रभु को बताने में कि तुम्हारा राजमहल जल रहा है, और आप आँखें मूँदकर बैठे हुए हैं, चाहो तो बचालो, चाहों तो जलने दो-जैसी तुम्हारी इच्छा हो करो।''* यह कहते हुए उन्होंने कहा मेरा कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। इतना सुन सारे तत्वज्ञानी लज्जित हो गये और जनक जी के सामने नतमस्तक हो गये।

हमारे भीतर ईश्वर बैठे है जो कुछ होता है उनकी ईच्छा से। तुलसी दास जी ने कहा है-

होईहि सोई जो राम रचि राखा
को करि तर्क बढ़ावै साखा

महाराज परीक्षित को सृंगी ऋषि ने शाप दे दिया कि आज के सातवें दिन तुम्हें तक्षक सर्प डस लेगा और तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी। राजा परीक्षित चाहते तो शाप लौटाने या उससे बचने के उपाय कर सकते थे, परन्तु नहीं, उन्होंने इस शाप को अपना सौभाग्य समझा कि कम से कम एक सप्ताह पूर्व उन्हें मरने की सूचना तो मिल गयी। उन्होंने कहा अभी मरने को संभालने का बहुत समय है और अपना 'मरन' संधारण के लिये श्रीमद्भागवत को धरती पर प्रगट किया और भागवत कथा सुनकर मोक्ष की प्राप्ति की। अत: हम सबों को भी अपने 'मरन' को सँवारने की आवश्यकता है, चूकि जीवन मिला है मृत्यु को सँवारने ने लिये। अच्छा काम करें, ईश्वर का स्मरण करते रहें, ईश्वर की कृपा से स्मृति बनी रहेगी और लोक और परलोक दोनो सुधर जायेगा।

हम सचेत रहते हैं जिन्दगी जैसे-तैसे जीते है। काल का कोई ठिकाना नहीं न जाने कब आ जाये। अन्त सँवर जाये तो पूरा सँवर जाये और बिगड़ जाये तो जानो कि पूरा जीवन बिगड़ गया। *'अन्त भला तो सब भला'* परन्तु अन्त कैसे सुधरे? इस पर हमें विचार करना होगा। मानव इसी भय से भयभीत रहता है कि 'मर' न जाऊँ। हाँलाकि यह जानता है कि जीव मरनशील है और मृत्यु सम्भावी है। इसे टाला नहीं जा सकता। मरन जीवन का विरोधी नहीं है। जन्म और मृत्यु दो बिन्दु है, इसी के बीच जीवन रेखा खिंचती है। मृत्यु जीवन का विश्राम है। मरन का अर्थ है इस शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में प्रवेश करना चूँकि आत्मा नहीं मरती, शरीर छोड़ कर दूसरे शरीर में चला जाता है। जीवन में बचपन-जवानी और बुढ़ापा। बचपन मरता है, तभी जवानी आती है और जब जवानी खत्म हुई तो बुढ़ापा आता है। बचपन मरा, तब जवानी आयी-जवानी मरी, तो बुढ़ापा आया और इसी बुढ़ापा में तो नया जीवन-महाजीवन छिपा है, किन्तु बुढ़ापे के मरने पर लोग रोते है जो अटल सत्य है। प्राणी को मरना ही है।

मनुष्य के इन्द्रियों की सीमा होती है। बचपन और जवानी को झूलते हुए जब इन्द्रियाँ आशक्त होने लगती है तब बुढ़ापा आ जाता है। कान से कम सुनना, दांत टूट जाना, केश पक जाना, शरीर पे झुर्रियाँ पड़ जाना, आँख से कम दिखाई देना आदि और एक दिन ऐसा आता है कि जो आत्मा प्राणी में बास कर रहा है वह इस शरीर को छोड़कर अन्यत्र चला जाता है। वह अपना घर बदल देता है।

संसार परमात्मा का साकार रूप है और हमें इस संसार से गुजर कर ही जाना है, कोई दूसरा रास्ता नहीं। संसार का प्रत्येक कण उसी परमात्मा से भरा पूरा है। केवल दृष्टि में परिवर्तन करने की अपेक्षा है, अनुभव करने की आवश्यकता है, व्यर्थ की आकांक्षाओं में पलने वाला यह 'मन' है। मन पर नियंत्रण कर इसे भटकने नही दे । प्रभु में लीन करें तो मरन जीवन का श्रृंगार बन सकता है। विवेक जब वर्तमान में जीने लगता है तब सारा अंधकार विलीन हो जाता है, प्रकाश फैल जाता है।उसी को उपनिषदों में उसीको उपमित्र ऋषियों ने कहा है- **'असतो मा सद गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृत गमय'**। भवार्थ- *'हे प्रभु! आप हमें असत्य से सत्य की ओर चलें, मृत्यु से अमृत की दिशा में ले चलें।'* मृत्योर्मामृतम् को अन्दर की दिशा में मोड़कर अपने अन्तः स्तल में देखने से ही चेतना का साक्षात्कार हो सकेगा। जीवन के सत्य को पाना है तो उसकी खोज स्वयं से ही करनी पड़ेगी। अपने अन्तः स्तल में झांक कर देखना होगा।

वरीय अधिवक्ता एवं साहित्य प्रेमी
वीणा कुंज, निकट जिला स्कूल, जी॰बी॰ रोड, गया

◆

मगध में गया, फल्गु नदी पुण्य प्रदायिनी

रामरतन प्रसाद सिंह रत्नाकर

आर्यों ने अन्न को भोज्य पदार्थ माना। सर्वप्रथम गंगा, यमुना, सरस्वती नदी के किनारे अपना निवास बनाया। आर्यों की पवित्र भूमि में जहाँ भृगु, यद-पद, भरत और तृत्सु, तुर्वसु, अनु, जदु जातियाँ निवास कर रही थी, वहाँ आर्य संस्कार और धर्म के संस्थापक महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र, जमदग्नि, अंगिरा, गौतम और कण्व के आश्रमों से निकलती दिव्य ऋचाओं की ध्वनि आर्यों की उत्कृष्ट आत्मा को शब्दों में व्यक्त कर रही थी। ऋग्वेद के ऋचाओं से स्पष्ट होता है कि आर्य पर्णकुटीर बनाकर गाँव में निवास करते थे। आर्य लोग नर्मदा से मगध तक फैले हुए थे। कई विद्वानों का मत है कि प्रथम आर्य वस्ती मगध में खासकर राजगृह और गया के बीच में बसा था। जमदग्नि पुत्र परशुराम के अवतरण काल को संक्रान्ति काल माना गया है। ऋग्वेद का जीवन समाप्त हुआ और ब्राह्मण काल प्रारम्भ हुआ था।

आर्यों ने सर्वप्रथम जौ एवं तिल, दो अन्न प्रजाति की पहचान की। जौ और तिल के साथ कोदो का चावल अक्षत के रूप में उपयोग होने लग गया था। श्राद्ध को श्रद्धा पर्व माना जाना चाहिए। इस श्रद्धा उत्सव में अन्न का महत्त्व सबसे अधिक है। भात का जात से रिश्ता प्रमाणित करता है। सभी धर्मों में मृत्यु के बाद जीवन की संभावनाएँ आँकी गयी है और माना गया है कि आत्मा अमर है। आत्मा की शांति के लिए अनुष्ठान करने की परम्परा है। हिन्दू सनातन मतवादी आत्मा की शान्ति के लिए श्राद्ध एवं

पिंडदान करते हैं। हिन्दुओं की मान्यता है कि व्यक्तियों, प्राणियों के स्वर्गवास हो जाने के बाद उनकी आत्मा सूक्ष्म शरीर के रूप में बाहर जाते समय या तो प्रकाशपुंज में मिलती है या अपने किसी प्रियजन से मृतात्मा का मिलन होता है, वह प्रकाश पुंज उस आत्मा को परलोक में कार्य करने को निर्देशित करता है। सांसारिक मोह-माया में जकड़ा इंसान का इस सूक्ष्म संसार में प्रवेश मुश्किल से हो पाता है। तब उसका सूक्ष्म शरीर भटकने लगता है फिर नयी योनियों में उसका अवतरण होता है। इन योनियों में भूत-प्रेत की योनि भी हो सकती है। सनातन हिन्दू धर्म की मान्यता है कि आत्मा की शांति के लिए पूर्वजों को श्राद्ध तथा तर्पण किया जाता है। वायु पुराण के अनुसार ब्रह्मज्ञान, गयाश्राद्ध, गोशाला में मृत्यु लाभ एवं कुरुक्षेत्र में निवास- ये चार कर्म पुरुषों के लिए मोक्षदायक हैं। आगे वायु पुराण में लिखा है कि पितरों को तारने के लिए बुद्धिमान पुरुष को सब प्रयत्न कर गयाश्राद्ध करना चाहिए। जो मुनष्य गया क्षेत्र में श्राद्ध करता है, वह पितरों के ऋण से मुक्त हो जाता है। जो गयाशिर में श्राद्ध करता है वह सौ कुलों का उद्धार करता है। दूध मिश्रित चारु, सत्तु, पेठा, चावल, विविध प्रकार के वस्तुओं से गया में पिण्डदान किया जाता हैं अन्न सबसे महत्त्वपूर्ण हैं

वायु पुराण का गया महात्म्य से मगध एवं खासकर गया का सांस्कृतिक महत्त्व सामने हो जाता है। वायु पुराण में आगे लिखा गया है कि मगध के तीर्थों में गया नगरी सर्वाधिक पुण्य प्रदायिनी हे, राजगृह के आस-पास के वन सभी वनों में अधिक पुण्यप्रद है, आश्रमों में च्यवन का आश्रम एवं नदियों में पुनपुन नदी सबसे अधिक पुण्यदायिनी हैं। वायुपुराण के अध्याय 3 में लिखा गया है कि जो व्यक्ति एक लाख अश्वमेघ यज्ञ करता है, वह उतना फल प्राप्ति नहीं करता, जितना फल्गु में स्नान करने वाला पाता हैं फल्गु तीर्थ में स्नानकर मनुष्य को तर्पण एवं सपिण्ड श्राद्ध कर्म अपने गृहसूत अनुसार करना चाहिए, पितामह को नमस्कार करना चाहिए। फल्गु नदी में स्नानकर आदिगदाधर देव का दर्शन करने वाला मनुष्य अपने को तो तारता ही है, अपने से दस पीढ़ी पूर्व और दस पीढ़ी बाद में होने वालों को भी तुरन्त तारता है।

ग्राम/पो०-मकनपुर, जिला-नवादा

◆

न हि वेरेन वेरानि समान्तीध कुदाचनं।
अवेहेन च सम्मन्ति एस धम्मोसनन्तो।।
शत्रु को शत्रुता से नहीं, बल्कि मित्रता की
भावना से जीता जा सकता है।
यही प्राचीनतम नियम है।
(बुद्ध वचन - धम्मपद)

पूजनीय पितृतीर्थ गया

डॉ० राकेश कुमार सिन्हा 'रवि'

हरेक मानव के जीवन बगिया के प्रथम माली होते हैं पिता। मातृ-पितृ कृपा से ही इस लोक में मानव मात्र का जन्म होता है, तभी तो धरती से बड़ी माता और स्वर्ग से बड़े पिता स्वीकारें जाते हैं। पिता के संदर्भ में मूल बात यही जानने समझने की है कि शरीर में पिता से ही पंच तत्वों के तीन तत्व पूर्णतया संबंधित हैं। एक बालक के लिए माता-पिता से बढ़कर कोई दूसरा नहीं होता, जो पारिवारिक श्री वृद्धि के प्रमुख कारक हैं। यह पिता से पुत्र में, फिर पुत्र जब पिता बन जाता है तो उसके बाद उस पुत्र में और यह निर्वाह क्रम अनवरत चलता रहता है। पूरे देश में ऐसे कितने ही तीर्थ हैं, पर हरेक तीर्थ किसी न किसी देवी-देवता, देव लीला, सरिता-सरोवर-पर्वत और उनसे जुड़े तत्व व तथ्य से परिपूर्ण रहता है और उनकी मूल बातें वहाँ के कण-कण में सन्निहित रहती हैं। सम्पूर्ण देश में ऐसे तो कितने ही तीर्थ हैं पर उनमें पितृतीर्थ एकमेव गया ही है... कहने का आशय पिता श्री का तीर्थ, बाबू जी का धाम, पितृ गौरव की भूमि। गया श्री को पितृतीर्थ के अंतकरण से फूलित करने के ऐसे तो कई कारण हैं पर इनमें सर्वप्रथम गयासुर की साधना-आराधना उल्लेख योग्य है। पुराणों में उल्लेखित कथन के अनुरूप 'गय' त्रिपुरासुर व प्रभावती देवी का ज्येष्ठ पुत्र था जिसके पिता त्रिपुरासुर का मान मर्दन व अवसान शिवशंकर के हाथों हुआ था। बालकाल से ही 'गय' अपनी माता से पिता के बारे में कुछ जानना चाहता था पर माता चाहती थीं कि पिता के दानवी जैसे कर्म कृत्य का 'गय' पर लेशमात्र भी प्रभाव न पड़े। इस कारण वो पिता के बारे में हर बार कुछ बताने से बचती रहीं। पर एक दिन 'गय' के हठ के आगे माता को बताना पड़ा कि तेरे पिता के कुविचार व अपकृति के कारण ही शिवशंकर के हाथों उनका अन्त हो गया तभी बाल मन में कठोर निर्णय व अटूट संकल्प लिया कि हम कुछ ऐसा क्यों न करें कि देवता हमारे आगे नतमस्तक हों। फिर क्या था 'गय' ने एक पैर (दाहिना) के अंगूठे पर खड़े होकर कोलाहल पर्वत पर अनवरत तपस्या की तब जाकर श्री विष्णु के दिव्य दर्शन हुए। पिता की जानकारी के बाद कठिन साधना के गया के पितृतीर्थ होने का संकेत सहज में प्राप्त हो जाता है।

गया श्राद्ध पिंडदान की उत्तमोचन भूमि है। गया श्राद्ध सायुज्य मुक्तिदायक है और श्राद्ध पिंडदान पितृ कर्म कृत्यों में सर्वोपरि है। यही कारण है कि गया तीर्थ स्वमेव पितृतीर्थ के रूप में स्थापित हो जाता है, जो पितरन कार्य हेतु अनूठा व अद्वितीय धरती स्वीकार्य है। भारतीय तीर्थों में प्रयागराज तीर्थराज, पुष्कर तीर्थगुरु, नासिक तीर्थों की नासिका, काशी मोक्ष तीर्थ, उज्जैन महाकाल तीर्थ, हरिद्वार स्वर्ग तीर्थ, कामाख्या तंत्र तीर्थ है, तो गया पितृतीर्थ है, जो मानव शरीर के पंच तत्व प्रदाता पितृगणों की भांति पंचकोशी है। पिता की महत्ता भारतीय समाज में आदि काल से प्रतिष्ठित है और पितृतीर्थ के कारण गया की प्रतिष्ठा आदिकाल से अक्षुण्ण बनी हुई है। आचार्य मनु कहते हैं कि मनुष्य के उत्पन्न होते समय माता-पिता जो अपार कष्ट सहते हैं उसका बदला सौ वर्षों में भी नहीं चुकाया जा सकता है। आचार्य तिरूवल्लुवर की वाणी उपयोगी है कि पिता के कर्तव्य से ही कोई पुत्र प्रथम पंक्ति में बैठने योग्य बनता है। श्रीमद्भागवत गीता के नौवें अध्याय का 17वाँ श्लोक कहता है कि इस सम्पूर्ण जगत् का धाता अर्थात् धारण करने वाला एवं कर्मों का फल देने वाला पिता, माता, पितामह.....मैं ही हूँ। इसी में अध्याय 11 के 39वें श्लोक में आया है कि अर्जुन कहते हैं- हे श्रीकृष्ण! आप वायु, यमराज, अग्नि वरुण, चन्द्रमा, प्रजा के स्वामी ब्रह्म और ब्रह्म के भी पिता हैं। आपके लिए हजारों बार नमस्कार है। आगे इसी अध्याय में श्लोक संख्या 43 स्पष्ट करता है कि श्रीकृष्ण इस चराचर जगत् के पिता और सबसे बड़े गुरु एवं अति पूजनीय हैं। शास्त्रों में आया है कि पिता

स्वर्ग हैं, पिता धर्म हैं, पिता परम तप हैं और पिता की पूजा अर्चना (पितृ कर्म) से ही जगत् के समस्त देव तुष्ट हो जाते हैं। आज भी गया में ऐसे कोई देवता नहीं, जिनका मंदिर या स्थान नहीं हो। जहाँ त्रैलोक्य के सभी देव विराजमान है वही गया है जहाँ श्री कृष्ण का आगमन तीन तीन बार होने का पुराणोक्त मत स्वीकार्य है।

गया को पितृतीर्थ के रूप में स्थापित प्रमाणित करने में यहाँ शिवशंकर का भी योगदान स्मरणीय है। गया रूद्रावतार की भूमि हैं, जो आदि पितृ रूप हैं। ऐसे भी गया जी में शिवशंकर के पितृ रूप के नाम से स्थापना वैदिक युग से है और जिनकी पूजा अर्चना उस जमाने से लेकर आज तक निर्बाद्ध रूप से जारी है। इनके नाम का क्रम वयोवृद्धता के आधार पर वृद्ध पर पितामहेश्वर, पितामहेश्वर व महेश्वर (मार्कण्डेय) के रूप मे जाना समझा जा सकता है। इनके स्थान गया तीर्थ में क्रमशः अक्षयवट, संकटा तीर्थ, उत्तर मानस व वैतरणी के सम्मुख है। शिवशंकर के पितर रूप की पूजा गया के पितृतीर्थ तत्व को और भी बल प्रदान करता है। वायुपुराण में आया है कि गया में पितृ रूप में जनार्दन (विष्णु) उपस्थित हैं।

गया तीर्थ के आविर्भाव व जगत्ख्यात गयासुर की कथा से युग पिता ब्रथा जी का संबंध अक्षुण्ण है, तभी तो गया को पूर्व काल में 'ब्रह्मगया' कहा जाता था। इस तरह जब गया आदि पिता ब्रह्मा का तीर्थ है तो इससे गया का पितृतीर्थ होना सार्थक सिद्ध होता है।

अस्तु! वेद पुराणों में गया की बातें इस घोर कलियुग में भी अक्षरः सत्य दृष्टगत होती है जहाँ पिता व उनसे जुड़े कुल खानदान के नाम पर सालो भर देश विदेश के लोगों की उपस्थिति पितृकायार्थ बनी रहती है। गया महात्म्य भी यह कहता है कि जब तक सूरज चाँद है, पितृतीर्थ गया का मान बना रहेगा।

'अखिलेशायन'
गोदावरी, भैरो स्थान, गया
Mob. 9934463552,
email : kumar.drrakesh85@gmail.com

◆

तीर्थयात्री ख्याल रखें इन बातों का

डॉ० रामदीप मिस्त्री

हम सभी लोग जानते हैं और देखते हैं कि हर चीज में मिलावट है, हम उसे धड़ल्ले से खरीदते हैं तथा बिना परिणाम सोचे इस्तेमाल कर लेते हैं–

1. खाद्य पदार्थों में मिलावट से हम तरह–तरह के रोगों से ग्रसित हो रहें हैं।

2. डॉक्टरों की जाँच रिपोर्ट में मिलावट के कारण लोग अपने प्राण गंवा रहे हैं या गँवा चुके हैं।

3. डॉक्टरों के डायग्नोशिस में मिलावट कारण व्यक्ति एक रोग से मुक्त नहीं होता है और दूसरे तथा तीसरे रोगों से ग्रसित होता जा रहा है।

4. डाक्टरों के विचार एवं नियत में मिलावट के कारण प्रतिदिन घटनायें घटित हो रही हैं, जो न्यूज पेपर्स में प्रकाशित भी होता रहता है।

5. डाक्टरों द्वारा रोग निवारण विवरणी में मिलावट जिसके कारण मरीजों को जो रोग नहीं है उसका इलाज हो जाना आम बात बन गई है।

6. जीवनदायी दवाओं में मिलावट के कारण खाने के बाद निरोग होने की बजाए रोगी बनकर जकड़ते जा रहें हैं। कितनों का प्रतिदिन जीवन लीला ही समाप्त हो रही है, जिन्हें हम दुर्भाग्य समझकर बैठ जाते हैं।

7. दूध, दही, घी में मिलावट के कारण प्रतिदिन बच्चे, जवान, बूढ़े रोग ग्रस्त होते जा रहें हैं, जिन्हें हम अमृत समझकर पीना, खाना तथा तरह–तरह के इस्तेमाल में लेते आ रहे हैं।

8. शराब में मिलावट के कारण लोग प्रतिबंधित होने के बाद भी पीते हैं, बीमार पड़ते हैं। कितने तो

बिना बीमारी के ही पीकर मर जा रहें हैं, जिसकी चर्चा अखबारों में मिलती रहती है।

9. सत्य में झूठ की मिलावट के कारण कचहरियों में थोक के भाव से तथा अन्यत्र छिटपुट होने से अनगिनत जानें जा रहीं है।

10. अनाज से लेकर, फलों, सब्जियों में खतरनाक रसायन प्रवेश कराये जा रहे ह, इसका अनुमान लगाना आसान नहीं है। बाजार से हम जो कुछ भी खरीदकर ला रहे हैं उसमें कितना जहर है इसे कोई भी नहीं जान सकता है। कुछ गिने-चुने लोग जानकार भी हैं, तो इस जहर को खरीदने के अलावा उनके पास कोई विकल्प भी नहीं है।

11. शहद जिसे सेहत का खजाना बताया जाता रहा है, जो चिकित्सा के क्षेत्र में भी कितनी उपयोगी चीज है, लेकिन प्राकृतिक शहद जितनी मात्रा में तैयार होता है उससे कई गुना मिलावटी (नकली) शहद बाजार में रोज खपा दिया जाता है।

अत: आज के दौर में हमारा नजरिया सामाजिक कम, परन्तु आर्थिक ज्यादा होता जा रहा है। सिर्फ आर्थिक नजरिया वाले लोग मुनाफा कमाने की अंधी दौड़ में बेलगाम दौड़ते चले जा रहे हैं। उसी का नतीजा है मिलावट।

सावधानियाँ - तीर्थयात्रियों को निम्न प्रकार की सावधानियाँ बरतनी चाहिए :-

(क) किसी भी जगह जाने से पहले सारी जानकारी जुटा लेनी चाहिए ।

(ख) ज्यादा रुपये अपने पास न रखें। प्लास्टिक मनी का उपयोग करें। साथ ही डेबिट कार्ड और सारे पैसे एक हीं पर्स में न रखें ।

(ग) हमेशा सर्तक रहें । किसी भी नए शहर में अगर ऐसा आभास होता है, कि कोई व्यक्ति आपका पीछा कर रहा है, तो फौरन नजदीकी थाने पर जाकर सूचित करें।

(घ) किसी भी जगह जाएँ उसके बारे में पहले अच्छी जानकारी प्राप्त कर लें और किसी भी संदिग्ध स्थान पर न जाएँ ।

(ङ) यात्रा के दौरान ऐसे कपड़ों का चुनाव करें कि आप एक तीर्थ यात्री की तरह न दिखें तथा आम व्यक्ति की तरह बर्ताव भी न करें । शांति से शुद्ध व स्वच्छ भोजन करें ।

स्वास्थ्य का निर्धारण खानपान से हीं होता है। रसोई एक ऐसा स्थान है, जहाँ सबसे अधिक सफाई की जरूरत होती है। ऐसा नहीं रहने से बीमारियों के फैलने की आशंका बनी रहती है। भोजन बनाने के बाद उसे ज्यादा देर तक रखा रहे तो वह खराब होने लगता है, उसमें बैक्टीरिया पनपने लगते हैं। गरमी व बारिश के मौसम में बंद डिब्बों में भी रखी हुई खाद्य सामग्रियों में जल्दी कीड़े पड़ जाते हैं। स्वास्थ्य की उपेक्षा अनगिनत बीमारियों को जन्म देती है और जीवन रोगों का घर बन जाता है।

12. आजकल हम जिसे फास्टफुड कहते हैं, उसके स्वाद को बढ़ाने के लिए चटपटा एवं तीखापन लाने के लिए तरह-तरह के मिर्च, कई तरह के रसायनों का भरपूर प्रयोग किया जाता है। इसमें नमक, मसाला, मिर्च एवं वसा की मात्रा अत्यधिक होती है। इसमें पोषक तत्वों की कमी होती है तथा वसा और सोडियम की मात्रा अधिक होती है, जिसके सेवन से अनेक प्रकार की बीमारियाँ पनपने लगती हैं। फास्टफुड से शारीरिक वजन में वृद्धि, मोटापा, डायबिटीज, हृदय रोग, मानसिक रोग, अनिद्रा, तनाव, चिन्ता, ब्लड प्रेशर तथा किडनी संबंधी बीमारियाँ होने लगती है।

अत: निरोग जीवन जीने के लिए विवेकपूर्ण स्वास्थ्य प्रदायक, शुद्ध, सात्विक एवं पोषण युक्त आहार ग्रहण करना तथा संयमित जीवन जीना चाहिए। तीर्थयात्री फास्टफुड का सेवन नहीं करें।

करसील्ली, विष्णुपद, गया

◆

श्राद्ध का आरंभ एवं स्वर्ग-नरक की धारणा

डॉ० शत्रुघ्न दांगी

श्राद्ध का आरंभ एवं स्वर्ग-नरक की धारणाओं का विकास वैदिक काल की समाप्ति अर्थात् ई.पु. 1000 के साथ से माना जाता है। यम को मृतकों का राजा और स्वर्ग का दयालु शासक माना गया है। यहीं पितरों की आत्मा आनंद लाभ करती है। यम पापियों को नरक की यातना देने का कार्य करता है, वहीं पुण्य आत्माओं को स्वर्ग का सुख पहुँचाता है। मरने के बाद आत्मा को जाने का विभाजन दो भागों में स्वर्ग और नरक के रूप में किया गया है। ऐसी मान्यता है कि गया स्थित विष्णुधाम में पिंडदान-श्राद्धकर्म कराने से अक्षय फल की प्राप्ति होती है और उनसे बीस पीढ़ियों का उद्धार होता है। यही कारण है कि भारत के समस्त वैष्णव मन्दिरों में सर्वाधिक पवित्र गया का 'विष्णुपद मंदिर' को माना गया है। प्रसिद्ध पुराविद् बुकानन ने यहाँ 45 ऐसे तीर्थ स्थलों की सूची दी है, जहाँ पहले मराठे तथा धनिक बलि चढ़ाने आते थे। वर्तमान विष्णुपद मंदिर फल्गु-सूर्यकुंड के अंतर्गत आता है, जिसकी आशातीत वृद्धि हुई, जबकि मंगलागौरी और अक्षयवट खंड के धार्मिक केन्द्रों को पता भी नहीं चलता। वे प्रायः लुप्त हो गये, जिसे पुजारी भी नहीं बता पाते।

आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया की एक रिपोर्ट में 10वीं शताब्दि का अक्षयवट के पास गये एक शिलालेख के अनुसार उस समय यह स्थल यात्रियों के लिए एक पवित्र वेदी के रूप में पूजित था। वहीं एक दूसरे शिलालेख के अनुसार नयापत्त के शासक वज्रपाणी ने इसकी प्रसिद्धि तथा उन्नति की चर्चा 'अमरावती' इन्द्र की राजधानी के रूप में की है। तात्पर्य यह है कि 11वीं सदी के पूर्व गयातीर्थ तथा गया श्राद्धकर्म को लोकप्रियता मिल चुकी थी। किन्तु, 1112-13 में मुहम्मद बख्तियार खिलजी के आक्रमण में गया भी नहीं बचा और यह वीरान हो गया। गयावाल पंडे गया छोड़ पड़ोसी गाँवों में शरण ली। यात्रियों का आना प्रायः बंद हो गया। कुछ धर्मान्ध यात्री यहाँ आते भी तो उन्हें मुस्लिम अधिकारी तंग करते और लुटेरे उन्हें लूटते। यह स्थिति काफी दिनों तक बनी रही।

प्राचीन जमाने में यहाँ की प्रसिद्धि नरसिंह, गदाधर, कृष्ण-द्वारका तथा सूर्य मंदिर से थी। दूर-दूर से तीर्थ यात्री इनकी प्रसिद्धि जानकर आते। चौथी-पाँचवीं शताब्दी (399-413 ई०) में जब फाहियान भारत भ्रमण पर आया तो इसे जंगलों से भरा जन-शून्य बतलाया। किन्तु जब सातवीं शताब्दी (629-634 ई०) में चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत भ्रमण में आया तो उसने अपने यात्रा वृतांत में ''गया को एक हिन्दू शहर के रूप में'' वर्णन किया। उसने लिखा कि यहाँ एक छोटी सी जनसंख्या थी और ब्राह्मणों के 1000 परिवार रहते थे, जो अपने को ऋषि के संतान बताते थे। उन्हें राजा द्वारा मृत्युकर से छूट थी। 11वीं शताब्दी के अंतिम दशक तक गयावालों तथा श्राद्ध कर्म की लोकप्रियता यहाँ के लोगों में चरम पर थीं लोग अपने पितरों की आत्मा की शांति के लिए पवित्र फल्गु तट पर बसे विष्णुधाम गया में पिंडदान, तर्पण तथा श्राद्ध कार्य संपन्न करने से प्राणी को सीधे स्वर्ग की प्राप्ति होती है, अन्यथा प्राणी की आत्मा चौरासी लाख योनी में भटकती रहती है ऐसा विश्वास है। यही कारण है कि पितृपक्ष में लाखों तीर्थ यात्री यहाँ आते हैं। 18वीं सदी (1787 ई०) में इन्दौर की महारानी अहिल्या बाई ने जयपुर के कुशल कारीगरों द्वारा प्रस्तर की यहाँ अष्टकोणीय सूची स्तम्भीय भव्य विशाल एवं आकर्षक विष्णुपद मन्दिर का निर्माण करवायी, जिसका गज मंडल 58 फीट चौड़ा तथा मंदिर की ऊँचाई 100 फीट है। यहाँ पूजा गयावाल पंडे ही करवाते हें, जबकि प्रेतशिला, रामशिला पर धामी पंडों का अधिकार है। गयावाल पंडे अपने को अग्निहोत्री ब्राह्मण कहते हैं, जबकि धामी अपने को गयासुर की आहुति के समय स्वयं विष्णु से अपनी सृष्टि को जोड़ते हैं और वे वामी गयावाल कहे जाते हैं। अग्निहोत्री गयावालों का यों तो 1484 गोत्र बताये जाते हैं, किन्तु इन दिनों इनकी संख्या मात्र 50 के लगभग बची है।

सांस्कृतिक अनुसंधान केन्द्र
दाँगी नगर, पो०-लाव टिकारी (गया)
मो०-9430607530

तीर्थों का प्राण-गयाजी

डॉ० मनोरंजन कुमार सिंह

हिन्दू मान्यताओं के अनुसार, पिंडदान मोक्ष प्रारित का एक सहज एवं सरल मार्ग है। भारतवर्ष में ऐसे तो कई स्थान है जहाँ पिंडदान किया जाता है, मगर बिहार के गया में फल्गु नदी के तट पर पिंडदान का महत्व कुछ और ही है। देश में कई नदियों के किनारे पिंडदान किया जाता है, लेकिन सबसे ज्यादा पुण्य गया में निरंजना नदी के तट पर पिंडदान करने से मिलता है। गरुड़ पुराण में लिखा है कि गया जाने के लिए घर से निकलने पर चलने वाले एक-एक कदम पितरों के स्वर्गारोहण के लिए एक-एक सीढ़ी बन जाता है। विष्णु पुराण के अनुसार गया में पिंडदान करने से पूर्वजों को मोक्ष मिल जाता है। यहाँ पिंडदान करने से पूर्वजों का स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

वायु पुराणों में वर्णित कथा के अनुसार भस्मासुर के वंश में गया सुर नामक राक्षस हुआ करता था। उसने बहुत ही कठिन तपस्या की जिससे ब्रह्मा जी प्रसन्न हो गये। उसने ब्रह्मा जी से यह वरदान माँगा की उसका भी शरीर देवताओं की तरह पवित्र हो जाए। उसके दर्शन से सभी लोग पाप मुक्त हो जाएँ। उस समय लोग पाप करके भी गया सुर का दर्शन कर स्वर्ग पहुँच जाते थे, क्योंकि गयासुर को ब्रह्मा जी से ऐसा वर प्राप्त था कि उसका दर्शन करने से स्वर्ग की प्राप्ति होगी। ऐसा होने से स्वर्ग में पहुँचने वालों की संख्या काफी तेजी से बढ़ने लगी। इस समस्या से बचने के लिए देवताओं ने यज्ञ करने के लिए पवित्र स्थल की मांग गयासुर के सामने रखी। तब गयासुर ने देवताओं को यज्ञ के लिए अपना शरीर देवताओं को दे दिया। ऐसा करने के क्रम में गयासुर लेट गया तब उसका शरीर पाँच कोस तक फैल गया एवं उसका शिर एक कोस में। इस बात से प्रसन्न देवताओं ने गयासुर को वरदान दिया कि इस स्थान पर जो भी तर्पण/पिण्डदान करेगा उसके पितरों को मुक्ति मिल जायेगी।

आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तिथि तक पंद्रह दिन की अवधि 'पितृपक्ष' के नाम से प्रसिद्ध है। इन पंद्रह दिनों में लोग अपने पितरों (पूर्वजों) को जल देते हैं तथा उनकी मृत्युतिथि पर पार्वण श्राद्ध करते है। माता-पिता आदि पारिवारिक मनुष्यों की मृत्यु के पश्चात् उनकी तृप्ति के लिए श्रद्धापूर्वक किए जाने वाले कर्म को पितृश्राद्ध कहते हैं।

श्रद्धया इदं श्राद्धम्

अर्थात् जो कार्य श्रद्धा से किया जाए, वह श्राद्ध है।

भावार्थ है प्रेत और पित्तर के निमित्त उनकी आत्मा की तृप्ति के लिए श्रद्धापूर्वक जो अर्पित किया जाए वह श्राद्ध है। हिन्दू धर्म में माता-पिता की सेवा की सबसे बड़ी पूजा माना गया है। यही कारण है कि हिन्दू धर्मशास्त्रों में पितरों का उद्धार करने के लिए पुत्र की अनिवार्यता मानी गई है। माता-पिता को लोग मृत्यु-उपरांत विस्मृत न कर दें इसलिए उनका श्राद्ध करने का विशेष विधान बताया गया है। पितृपक्ष में तर्पण के द्वारा मानव अपने पूर्वजों की सेवा करते हैं। पितृपक्ष गया के लिए अपना विशिष्ट महत्व रखता है। पितृपक्ष के साथ गया स्मरण किया जाता है और गया के साथ पितृपक्ष का। अतएव, पितृपक्ष मेला एक ऐसा मेला है, जिसके माध्यम से, इस अवधि मे सम्पूर्ण भारतवर्ष का दर्शन गया-धाम में प्रत्यक्ष समाहित रहता है। इस अवसर पर देश-विदेश से लाखों की संख्या में तीर्थ-यात्री यहाँ आते हे। अपने पितरों को मोक्ष या परमशान्ति प्रदान करने के लिए तर्पणादि विभिन्न श्राद्ध कर्म पूरी आस्था और विश्वास के साथ सम्पादित करते हैं।

गया में पिंडदान करने की प्रथा कई युगों से चली आ रही है। एक पौराणिक कथा के अनुसार भगवान राम अपने भ्राता लक्ष्मण तथा माता सीता के साथ अपने पिता दशरथ का श्राद्ध करने गया जी आये थे। भगवान राम अपने अनुज के साथ जब पिंडदान की सामग्री लाने के लिए चले गये, माता सीता को

फल्गु नदी के तटपर अकेले छोड़कर और सीता माता नदी के तट पर उनके आने का इंतजार करने लगी। काफी समय बीत गया, पर भगवान अपने अनुज के साथ नहीं लौटे, तभी दशरथ जी की आत्मा सीता माता के सामने प्रगट हुई और यह आदेश दिया की यही उचित समय है पिंडदान का। इस समय पिंडदान करने से यह हमें प्राप्त होगा, अन्यथा नहीं और मेरी आत्मा को मोक्ष की प्राप्ति होगी। सीता माता ने दशरथ जी के आत्मा से यह अनुरोध किया की भगवान श्रीराम के आगमन तक प्रतीक्षा करें पर आत्मा व्याकुल होकर सीता माता के द्वारा ही पिंडदान करने की मांग करने लगे। सीता माता ने यह कहा कि अभी पिंडदान की कोई सामग्री भी नहीं है और वही लाने भगवान गये भी हैं। पर आत्मा नहीं मानी। आत्मा ने सीता माता से कहा की वो बालू के पिंड से पिण्ड दान करें, हमें स्वीकार है। तब शास्त्रों में वर्णित कथा के अनुसार सीता माता ने, तुलसी का पौधा, गाय, वट वृक्ष, अग्नि और फल्गु नदी को साक्षी मानकर बालू का पिण्ड बनाकर राजा दशरथ के लिए पिंडदान किया।

कुछ समय बाद जब भगवान श्रीराम अपने अनुज के साथ लौटकर आऐ तब माता सीता ने उन्हें पिण्डदान की सारी घटना बताया। पर श्रीराम को इन बातों पर यकीन नहीं हुआ। तब सीता माता ने उन सभी को भगवान के सामने गवाही देने के लिए बुलाया। वट वृक्ष को छोड़कर सभी इस घटना से मुकर गये। तब सीता माता ने दशरथ जी की आत्मा का ध्यान कर आह्वान किया और श्रीराम के आगे गवाही देने की प्रार्थना की। जिसके बाद राजा दशरथ की आत्मा प्रकट हुई और उन्होंने कहा की अब पिंडदान की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सीता ने पिंडदान कर दिया है। सीता माता के पिंडदान करने के कारण ही महिलाओं द्वारा भी पिंडदान किया जाने लगा अन्यथा यह केवल पुरुषों को ही करना पड़ता था।

इस घटना से सीता माता नाराज हो गई और उन्होंने तुलसी के पौधें, गाय, अग्नि तथा फल्गु नदी को श्राप दे दिया। तुलसी को उन्होंने श्राप दिया की तुम हमेशा गन्दे स्थान पर उगोगे। हम आज भी इस घटना को सच होते हुए देखते हैं। गाय को उन्होंने श्राप दिया की तुम गंदा, मैला आदि खाओगी। अग्नि को उन्होंने कहा की तुम गन्दे वस्तुओं को भी आत्मसात करोगी। और फल्गु नदी को दण्ड स्वरूप यह मिला की तुम में पानी कभी नहीं दिखाई देगा या रहेगा। यही कारण है कि आज भी अति वृष्टि हो तो भी कुछ काल के बाद नदी का पानी गायब हो जाता है। पर जब हम बालू को थोड़ा हटाते हैं तो हमें पानी तुरन्त मिल जाता है। इस कारण से ही फल्गू को अन्तः सलीला भी कहा जाता है।

केवल वट वृक्ष ने सच का साथ दिया था अर्थात माता सीता के सत्य काम की साक्षी का कार्य ईमानदारी से निभाया था अतः माँ का आशीर्वाद केवल उसे ही मिला 'अक्षय' रहने का अर्थात् उसका कभी भी नाश नहीं होगा। और यही कारण है कि आज भी सभी तीर्थ यात्रि यहाँ अक्षयवट के नीचे पिंडदान करते है और यह पेड़ आज भी खड़ा है। तब से आज भी लोग बालू, मिट्टी या रेत से पिंडदान करते है।

धर्मग्रंथों के अनुसार मनुष्यों पर मुख्यतः तीन प्रकार के ऋण होते हैं- पितृऋण, देवऋण तथा ऋषिऋण। इसमें पितृऋण सर्वोपरि है। पितृऋण में पिता के अलावा माता तथा वे सभी बुजुर्ग शामिल है जिन्होंने हमें अपना जीवन धारण करने तथा उसका विकास करने में सहयोग किया है।

पितृपक्ष में हिन्दू लोग मन क्रम वचन से संयम का जीवन व्यतीत करते हैं पितरों का ध्यान कर जल चढ़ाते हैं, निर्धनों एवं ब्राह्मणों को दान देते हैं। पितृपक्ष में प्रत्येक परिवार में मृत माता-पिता का श्राद्ध किया जाता है पर गया श्राद्ध का विशेष महत्व है। वैसे तो इसका भी शास्त्र के अनुसार समय तय है पर 'गया सव्रकालेषु पिण्डं दधादिपक्षणं' कहकर सदैव पिंडदान करने की अनुमति दे दी गई है। शास्त्र के अनुसार जो अपने पितरों को तिल-मिश्रित जल की तीन अंजलियाँ प्रदान करते हैं उनके जन्म से तर्पण

के दिन तक के पापों का नाश हो जाता है। मत्स्य पुराण में तीन प्रकार के श्राद्ध बताये गये हैं जिन्हें नित्य या नैमित्तिक एवं काम्य श्राद्ध कहते है। जहाँ यम स्मृति में पाँच प्रकार के श्राद्धों का वर्णन मिलता है जिन्हें नित्य, नैमित्तिक, काम्य, वृद्धि और पार्वण के नाम से जाना जाता है।

इस वर्ष पितृपक्ष 24 सितंबर 2018 से 8 अक्टूबर 2018 तक रहेगा तथा पूर्णिमा श्राद्ध 24 सितम्बर को तथा सर्वपितृ अमावस्या 8 अक्टूबर को होगा। महाभारत में भक्तराज भीष्म द्वारा भगवान के जिन परम पवित्र सहस्रनामों का उल्लेख किया है, वह विष्णुसहस्रनाम के नाम से जाना जाता है। पुराणों के अनुसार विष्णु उस सत्ता का नाम है जिससे पृथक किसी की कोई सत्ता नहीं है। समस्त जगत उनके विराट रूप का साकार विग्रह है। यह विश्व भगवान विष्णु की शक्ति से ही व्याप्त है। वे ही इस संसार के पालक है। उन्हीं से संसार की उत्पत्ति तथा प्रलय होते है। वे निर्गुण भी है तो सगुण भी तथा उनमें ये दोनों गुण एक साथ विद्यमान है। वे ही इस चराचर जगत के पालक-पोषक एवं संहारक भी है। मानव को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्रदान करने के लिए वे अपने चारो हाथों में शंख, चक्र, गदा एवं पद्म धारण किये रहते है। भगवान विष्णु ने अपने तीन पद से तीनों लोकों पृथ्वी, अंतरिक्ष एवं स्वर्ग को नाप दिया था। शास्त्रों के मतानुसार भगवान ने अपने एक पद गया जी में रखना माना है। इसका यह प्रमाण है कि गया जी में विष्णु भगवान की मूर्ति न होकर उनके चरण चिह्न है, जिसकी पूजा वर्त्तमान विष्णुपद मंदिर में होती है। काले पत्थर का यह सुन्दर मंदिर महारानी अहिल्या बाई ने 1787 ई० में करवाया था। वैदिक काल में इसी गया जी का नाम 'कीकट' था, त्रेतायुग में गयापुरी और औरंगजेब के शासन काल में आलमगीरपुर था। जबकि वर्तमान नगर (गया) सन् 1865 में बना था।

गया के पूर्व में फल्गु नदी बहती है जिसके तट पर भगवान विष्णु का चरण विद्यमान है। यहाँ से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर अक्षयवट है। यहाँ दूध, पुष्प, जल, चंदन, ताम्बूल आदि से पूजा एवं श्राद्ध किया जाता है। धार्मिक ग्रंथों में यहाँ 45 वेदियों का वर्णन है। महाभारत के वनपर्व के मतानुसार तीर्थाटन के क्रम में यहाँ पाण्डव भी पधारे थे। यहाँ सम्राट अशोक भी तथागत की तपो-भूमि के दर्शनार्थ यहाँ पधारे थे। महाप्रभु चैतन्य की ज्ञान भूमि भी गया जी ही हैं।

गयाजी पाँच पहाड़ियों से घिरा हुआ है जिससे यह बड़ा ही मनोरम दिखता है। शहर के उत्तर-पूर्व में रामशिला, उत्तर-पश्चिम में प्रेतशिला, दक्षिण में ब्रह्मयोनि, पूर्व में मुरली पहाड़ तथा शहर के दक्षिण छोर पर भस्मकूट पर्वत है। इस पर्वत पर स्थित है शक्तिपीठ 'मंगलागौरी' यह शक्तिपीठ पालन पीठ के नाम से जाना जाता है। शास्त्रों के अनुसार यह मंदिर भारत के प्रसिद्ध द्वादश देवी मंदिरों में से एक है। यहाँ जो भी भक्त आते हैं मन की मुरादें पाते हैं। आप मन से इनके चरणों में अपनी प्रार्थना अर्पित कर दें तो मनचाही इच्छा माँ पूरी करती है। लोग रोते-रोते आते हैं और हँसते हुए यहाँ से लौटते हैं।

गयाजी से 12 किमी दक्षिण में स्थित है बोधिवृक्ष और महाबोधि मन्दिर। बोधिवृक्ष के नीचे स्थित है वज्रासन, जिस पर बैठ कर तथागत साधना करते थे। अत: हम यह कह सकते है कि गया जी वह क्षेत्र है जहाँ मनुष्य को ज्ञान भी प्राप्त होता है तो मोक्ष भी। मोक्ष और ज्ञान के इस संगम को मानव एक जीवन रूपी मनुष्य की तरह गयाजी कहकर यूँ ही नहीं पुकारता है। इस धरती में वह चुम्बकीय गुण है जो विश्व को यहाँ खींच कर लाती है क्योंकि यहाँ के तालाब, पहाड़, वेदियाँ, नदी, पेड़ अर्थात् कण-कण पूजनीय है।

चंदन है इस देश (गयाजी) की माटी
तपोभूमि हर ग्राम है ।
हर बाला देवी की प्रतिमा
बच्चा-बच्चा राम है।।

गणित विभाग
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

◆

देवघाट में बना है गुरुद्वारा नानकशाही

सुबोध कुमार नन्दन

मगध क्षेत्र में सिख पंथ का व्यापक प्रसार है। यहाँ स्वयं सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी आए थे। गुरु नानक की पहली उदासी (विचारण यात्रा) अक्तूबर, 1507 ई. से 1515 ई. तक रही थी। इसी यात्रा के दौरान गया, पटना आदि स्थानों की यात्रा उन्होंने की थी। यहाँ आकर गुरु नानक देव जी ने निवास किया। वह स्थान अभी भी देवघाट के पास विद्यमान है, जिसे नानकशाही के नाम से जाना जाता है। गुरु जी की स्मृति का स्थान आज भी श्री गुरुवाणी के प्रचार-प्रसार में जुटा है। दस सिख गुरुओं की जीवन चरित्र पुस्तक के पृष्ठ-32 पर वर्णित है कि बनारस से जब ज्ञान, उपदेश-सन्देश देकर नानक देव जी पटना होते हुए गया आए, तब वह विष्णुपद मन्दिर के पास फल्गु तट पर इसी स्थान पर आकर ठहरे थे। हिन्दुओं की परम्परा के अनुसार गया में प्राणियों के पिण्डदान करने से उनकी गति हो जाती है। गुरु जी के यहाँ आने पर पंडों ने पिण्डदान करने का आग्रह किया। तब नानक देव जी ने उनसे कहा कि अपने हाथ से किया हुआ दान कभी समाप्त नहीं होता, इसलिए अपने जीते जी अपने हाथों दान करना ही लोक-परलोक में सहायक होता है। पंडों को ऐसा उपदेश देकर वह आगे की यात्रा पर निकल पड़े। श्री गुरु नानक देव के पुत्र श्रीचन्द जी ने भी अपने पितृकर्म का अनुसरण किया और गयाधाम पधारें। इनके आगमन की स्मृति स्वरूप उदासीन संगत आज फल्गु नदी किनारे पंचायती अखाड़ा क्षेत्र में विराजमान है।

गुरु तेग बहादुर जी का भी संबंध गया से रहा। साक्ष्यों से मालूम होता है कि 1665 ई. में शिव नगरी काशी से भभुआ, सासाराम, नवीनगर होते हुए गुरु जी अपनी माता नानकी, कृपालचन्द, पत्नी गुजरी, प्यारे राजा जय सिंह और औरंगजेब की सेना के साथ कई दरबारियों ने अपनी तीर्थयात्रा के क्रम में गया में विश्राम किया। यह स्थान गेवाल बिगहा के नाम से उल्लेखित है। गुरु जी ने जिस स्थान पर निवास किया उसे संगतिया (संगत पर) के नाम से जाना जाता है। गया शहर में गुरु तेगबहादुर की स्मृति में ही गुरुद्वारा है। सिखों के अन्तिम गुरु गोविन्द सिंह का सीमान्तयनयन के पूर्व पुंसवन संस्कार गया में ही सम्पन्न हुआ। ऐसे गुरु गोविन्द सिंह ने भी गया की यात्रा की, जिसका प्रमाण यहाँ के गयावाल परिवार के पास सुरक्षित उनके आगमन से जुड़े कुछ दस्तावेज हैं।

प्रधान कार्यालय
प्रभात खबर, पटना

◆

परहित सरिस धरम नहिं भाई ।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।।

(रामचरितमानस)

पितृपक्ष महासंगम

पितृपक्ष महासंगम हिन्दू कैलेंडर के अनुसार भाद्रपद शुक्लपक्ष के अनन्त चतुर्दशी के दिन से हर वर्ष के शुरु होता है। इस वर्ष यह मेला दिनांक **23 सितम्बर, 2018 (रविवार)** से प्रारंभ होकर **08 अक्तूबर, 2018 (सोमवार)** तक चलेगा। यह मेला धार्मिक, मिथकीय व एतिहासिक रूप से बहुत महत्व रखता है। हर वर्ष बड़ी सख्या मे सनातन हिंदू धर्मावलंबी गया पिण्डदान के लिए आते है ताकि उनके पूर्वजों को मोक्ष प्राप्ति हो सके। इसके लिए वे पिण्डदान करते है और विभिन्न धार्मिक क्रियाकलापों को विभिन्न वेदियों पर संम्पन्न करते हैं जो विष्णुपद मंदिर फल्गु नदी अक्षयवट एव अन्य स्थानों पर स्थित है। यह मान्यता है की पितृपक्ष के दौरान गया मे पिण्डदान करने से उनके पूर्वजों की आत्मा को मोक्ष प्राप्ति मे सहायता मिल सकती है।

गया नगर

गया विश्व में पितरों के उद्धार के लिए सर्वश्रेष्ठ तीर्थ-स्थल माना गया है। इसे तीर्थों का प्राण कहा गया है। पौराणिक काल से ही इसकी महत्ता प्रतिष्ठापित है। कथाओं में कहा गया है कि सतयुग के पूर्व ब्रह्म ने सृष्टि का निर्माण किया, तब इसका श्रीगणेश गया के ब्रह्मयोनि पर्वत से ही हुआ था। गया में सारे भारतवर्ष के तीर्थाटन करने वाले यात्री, निर्धारित विधि से अपने पूर्वजों की श्राद्ध-क्रिया करने आते हैं। श्राद्ध-क्रियाओं में पूर्वजों की आत्माओं की शांति के लिए पिंडदान एवं तर्पण करना ही प्रधान कर्म है, जो मुख्यत: तीन स्थलों-फल्गु नदी के तट पर, विष्णुपद मंदिर में तथा अक्षयवट के नीचे संपादित किया जाता है।

गया फल्गु नदी के तट पर बसा बिहार राज्य का दूसरा बड़ा शहर है। वाराणसी की तरह गया की प्रसिद्धि मुख्य रूप से एक धार्मिक नगरी के रूप में है। गया सड़क, रेल और वायु मार्ग द्वारा पूरे भारत से जुड़ा है। गया से 12 किलोमीटर की दूरी पर बोधगया स्थित है जो बौद्ध तीर्थ स्थल है और यहाँ बोधि वृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।

गया, बिहार का एक महत्वपूर्ण शहर है, जो गंगा की सहायक नदी फल्गु के पश्चिमी तट पर स्थित है। यह बोधगया से 12 किलोमीटर उत्तर तथा राजधानी पटना से 100 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। यहाँ का मौसम मिलाजुला है। गर्मी के दिनों में यहां काफी गर्मी पड़ती है और ठंड के दिनों में औसत सर्दी होती है। मॉनसून का भी यहाँ के मौसम पर व्यापक असर होता है। लेकिन वर्षा ऋतु में यहां का दृश्य काफी रोचक होता है।

रेलमार्ग द्वारा :

गया पूर्व मध्य रेलवे (पहले पूर्व रेलवे) हावड़ा–नई दिल्ली ग्रैंड कार्ड सेक्शन का एक प्रमुख जक्शन है यह सीधी रेल सेवा से नई दिल्ली, कोलकाता, मुंबई और चेन्नई से जुड़ा है। यह नई दिल्ली से लगभग 1000 किमी दूर है। दिल्ली से यहाँ आने के लिए चार राजधानी एक्सप्रेस ट्रेनों के अलावा अन्य सूपरफास्ट ट्रेनें है। जहाँ राजधानी एक्सप्रेस इसमें 12 घंटे का समय लेती है, वहीं दूसरी मेल व एक्सप्रेस ट्रेनें 15 से 17 घंटे का समय लेती है। कोलकाता से यहाँ आने में रातोंरात लगभग 6–7 घंटे का समय लगता है। यहाँ से सीधी ट्रेन सेवा पुरी, नागपुर, इंदौर, लखनऊ, वाराणसी, इलाहाबाद, कानपुर, पटना, राँची के लिए है।

वायुमार्ग से :

गया में एक अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा भी है। इंडियन एयरलाइंस यहाँ से सप्ताह में दो बार कोलकाता–गया–बैंकॉक के लिए और कोलकाता–गया–यंगून के लिए उड़ान उपलब्ध करता है। भूटान का एक एयरलाइंस भी साप्ताह में दो बार पारो–गया–बैंकॉक उड़ाने उपलब्ध करता है। नये टर्मिनल भवन के निर्माण के उपरांत उम्मीद है कि और ज़्यादा अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू उड़ानें कारवाँ में शामिल की जाएँगी। गया सड़क मार्ग (राष्ट्रीय राजमार्ग) से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। ग्रैंड ट्रंक रोड (रा० रा० मा० – 2) भी गया को छूती है, जो यहाँ से 32 किमी दक्षिण में, दिल्ली और कोलकाता एक्सप्रेस–वे को जोड़ती है। राज्य की राजधानी पटना यहाँ से 105 किमी दूर है और सड़क मार्ग राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–83 से अच्छी तरह से जुड़ा है।

सड़क से :

ग्रैंड ट्रंक रोड गया को उत्तर भारत के प्रमुख शहरों से जोड़ती है गया राँची, जमशेदपुर, राउरकेला, हज़ारीबाग, कोलकाता, वाराणसी, इलाहाबाद, कानपुर दिल्ली और अमृतसर से अच्छी तरह जुड़ा है

गया के मुख्य दर्शनीय स्थल

विष्णुपद मन्दिर :

विष्णुपद मंदिर वैष्णवों के लिए प्रमुख तीर्थस्थलों में एक विशिष्ट स्थान रखता हैं। वर्तमान विष्णुपद मंदिर का निर्माण इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने सन् 1787 ई० में जयपुर के प्रसिद्ध स्थापत्यकारों को बुलाकर कराया था। इस विशाल मंदिर की ऊँचाई 100 फीट तथा मण्डप 50 वर्ग फीट है। भगवान विष्णु के चरण चिह्न के कारण ही इसका नाम विष्णुपद है, चरणचिह्न 13 इंच लम्बा हैं।

फल्गु नदी :

गया के पूर्व मे बहने वाली फल्गु नदी मे सिर्फ़ मॉनसून के मौसम मे ही पानी आता है। अन्य मौसमों में नदी बाहर से सूखी रहते है। यदि आप नदी की रेत को थोडा खुर्चें तो आप पानी प्राप्त कर सकते है। देवी सीता के श्राप से यह नदी भूमि के नीचे ही बहती है।

सीता कुंड :

विष्णुपद मंदिर के विपरीत फल्गु नदी के दूसरे तट पर सीताकुंड के स्थित है। यहाँ पर एक छोटा मंदिर है, जो उस स्थान को दर्शाता है, जहाँ देवी सीता ने अपने श्वसुर का पिण्डदान किया था।

अक्षयवट :

प्रसिद्ध अक्षयवट विष्णुपद मंदिर के पास मे ही अवस्थित है। अक्षयवट को देवी सीता का आशीर्वाद प्राप्त है की वह अमर होने क साथ साथ किसी भी मौसम मे पत्ते नही गिरते।

मंगलागौरी मंदिर :

गया के दक्षिण दिशा मे एक छोटी सी पहाड़ी पर प्रसिद्ध सती (गौरी) मंदिर है। यह मंदिर अक्षयवट के पास मे स्थित है। भगवान शिव ने अपनी पत्नी सती की मृत्यु प्रालयंकारी तांडव नृत्य किया था। इसे रोकने के लिए और भगवान शिव के क्रोध को कम करने के लिए भगवान विष्णु ने सुदर्शनचक्र से देवी सती के मृत देह को विभिन्न टुकड़ों मे काट दिया। ये विभिन्न टुकड़े अलग-अलग स्थानों पर पृथ्वी पर गिरे, जो विभिन्न शक्ति पीठों (देवी गौरी की पूजा हेतु पवित्र स्थल) के रूप मे स्थापित हुए।

रामशिला पर्वत :

गया के दक्षिण पूर्व दिशा मे स्थित रामशिला पहाड़ी गया के प्रमुख पवित्र स्थलों मे से एक है क्योंकि अनुश्रुतियो के अनुसार भगवान राम ने इसी पहाड़ी पर पिण्डदान किया था। पहाड़ी का नाम भगवान राम के साथ जुड़ा हुआ है। यहाँ पर का पत्थर की मूर्त्तियाँ मिली है जो प्राचीन युगीन है जिन्हे अब भी पहाड़ी के उपर व उसके आसपास देखा जा सकता है जो यह दर्शाता है की यहाँ बहुत पहले ही किसी मंदिर का अस्तित्व रहा होगा। पहाड़ी के उपर स्थित मंदिर को पातालेश्वर मंदिर कहा जाता है। जिसे प्रारंभिक रूप मे 1014 ई. में बनाया गया था लेकिन बाद मे इसकी मरम्मत एवं पुनर्स्थापना की गयी।

प्रेतशिला पर्वत

रामशिला पहाड़ी से लगभग 10 किलोमीटर दूर प्रेतशिला पहाड़ी है। ठीक पहाड़ी के नीचे ब्रह्मकुंड स्थित है। इस जलाशय मे स्नान करने के उपरांत लोग पिण्डदान करने के लिए जाते है। इस पहाड़ी के शिखर पर इंदौर की महारानी, अहिल्या बाई के द्वारा 1787 ई. में राम मंदिर बनवाया था जिसे अब अहिल्या बाई मंदिर के नाम से जाना जाता है। यह मंदिर हमेशा से ही अपने विशिष्ट स्थापत्य एवं शानदार मूर्तियाँ के लिए पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है।

पिण्डदान कार्यक्रम

दिनांक	तिथि	श्राद्ध क्रम
23.09.18 (रविवार)	चतुर्दशी	तीर्थपुरोहित पण्डाजी की पांवपूजा, पुनपुन श्राद्ध एवं गोदावरी श्राद्ध
24.09.18 (सोमवार)	पूर्णिमा	फल्गु स्नान, श्राद्ध, तीर्थपुरोहित एवं खीर का पिण्ड
25.09.18 (मंगलवार)	प्रतिपदा	ब्रह्मकुण्ड, प्रेतशिला, रामशिला तथा रामकुण्ड श्राद्ध एवं काकबलि पिण्ड
26.09.18 (बुधवार)	द्वितीया	पंचतीर्थ (उत्तर मानस, उदीची, कनखल, दक्षिणमानस, जिह्वालोल श्राद्ध) एवं गदाधर जी का पंचामृत स्नान
27.09.18 (गुरुवार)	तृतीया	सरस्वती स्नान, पंचरत्न दान, मातंगवापी श्राद्ध, धर्मारण्यमें यूप एवं कूप के मध्य श्राद्ध
28.09.18 (शुक्रवार)	चतुर्थी	ब्रह्मसरोवर, काकबलि श्राद्ध एवं आम्रसिंचन
29.09.18 (शनिवार)	पंचमी	विष्णुपद, ब्रह्मपद, एवं रुद्रपद श्राद्ध
30.09.18 (रविवार)	षष्ठी	कार्तिकपद, दक्षिणाग्निपद, गार्हपत्याग्निपद, आहवनीयाग्निपद एवं सूर्यपद
01.10.18 (सोमवार)	सप्तमी	चन्द्रपद, गणेशपद, सभ्याग्निपद, आवसथ्याग्निपद एवं दधीचिपद
02.1018 (मंगलवार)	अष्टमी	मतंगपद, क्रौंचपद, इन्दपद, अगस्त्यपद एवं कश्यपपद
03.10.18 (बुधवार)	नवमी	रामगया, सीताकुंड एवं सौभाग्यदान
04.10.18 (गुरुवार)	दशमी	गया सिर एवं गया कूप श्राद्ध
05.10.18 (शुक्रवार)	एकादशी	मुण्डपृष्ठ, आदिगदाधर, धौतपद श्राद्ध एवं चाँदी दान
06.10.18 (शनिवार)	द्वादशी/त्रयोदशी	भीम गया, गौप्रचार, गदालोल श्राद्ध एवं संध्या में दीपदान
07.10.18 (रविवार)	चतुर्दशी	दूध तर्पण एवं वैतरणी तर्पण तथा गोदान
08.10.18 (सोमवार)	अमावस्या	अक्षयवट श्राद्ध खीर का पिण्ड षोड़शदान एवं सुफल
09.10.18 (मंगलवार)	प्रतिपदा	गायत्रीघाट में दही का पिण्ड एवं आचार्य की दक्षिणा

विभिन्न पिण्डवेदियों की स्थिति

क्र.	पिण्डवेदी	स्थान
1	पुनपुन	पुनपुन गया–पटना रेलखंड के पुनपुन घाट स्टेशन एवं गया–डेहरी रेलखंड के अनुग्रह नारायण रोड स्टेशन के समीप
2	गोदावरी	मंगलागौरी जाने वाले रास्ते में
3	फल्गु नदी	देवघाट से लेकर पितामहेश्वरघाट
4	प्रेतशिला	प्रेतशिला पहाड़ी के नीचे
5	ब्रह्मकुन्ड	प्रेतशिला पहाड़ी के नीचे
6	रामशिला	पंचायती अखाड़ा के समीप स्थित
7	काकबली	रामशिला पहाड़ी के समीप
8	उत्तरमानस	पितामहेश्वर मुहल्ला
9	दक्षिणमानस	विष्णुपद क्षेत्र में सुर्यकुन्ड में
10	उदीची	विष्णुपद क्षेत्र में सूर्यकुन्ड
11	कनखल	विष्णुपद क्षेत्र में सूर्यकुन्ड
12	जिह्वालोल	फल्गुनदी के किनारे विष्णुपद मंदिर के पास
13	गदाधर वेदी	विष्णुपद मंदिर परिसर
14	सरस्वती वेदी	गया–बोधगया रोड पर अमवाँ गाँव से पूरब
15	मतंगवापी	बोधगया
16	धर्मारण्य	बोधगया
17	बोधितरु	बोधगया
18	ब्रह्मसरोवर	माड़नपुर
19	काकबलि	माड़नपुर
20	आम्रसिंचन	मंगलागौरी मंदिर के नीचे
21	तारकब्रह्म	मंगलागौरी मंदिर के नीच
22	रुद्रपद	विष्णुपद मंदिर परिसर
23	ब्रह्मपद	विष्णुपद मंदिर परिसर
24	दक्षिणाग्निपद	विष्णुपद मंदिर परिसर
25	गार्हपत्यग्निपद	विष्णुपद मंदिर परिसर
26	आह्वन्याग्निपद	विष्णुपद मंदिर परिसर
27	सन्भ्यग्निपद	विष्णुपद मंदिर परिसर
28	आवस्थ्यगनिपद	विष्णुपद मंदिर परिसर
29	सूर्यपद	विष्णुपद मन्दिर परिसर
30	कार्तिकेय पद	विष्णुपद मन्दिर परिसर
31	इंद्रपद	विष्णुपद मन्दिर परिसर

32	अगस्तपद	विष्णुपद मन्दिर परिसर
33	कण्वपद	विष्णुपद मन्दिर परिसर
34	चंद्र पद	विष्णुपद मन्दिर परिसर
35	गणेश पद	विष्णुपद मन्दिर परिसर
36	कौच पद	विष्णुपद मन्दिर परिसर
37	मँतग पद	विष्णुपद मन्दिर परिसर
38	कश्यप पद	विष्णुपद मन्दिर परिसर
39	गजकर्णपद	विष्णुपद मन्दिर परिसर
40	सीताकुंड	फल्गु नदी के पूर्व तट के किनारे देवघाट के सामने
41	रामगया	फल्गु नदी के पूर्व तट के किनारे देवघाट के सामने
42	गया सिर	विष्णुपद श्मशान घाट
43	गयाकूप	विष्णुपद मन्दिर परिसर
44	मुण्डपृष्टा	करसिल्ली पहाड़ी पर
45	आदिगया	करसिल्ली पहाड़ी पर
46	धौतपद	दक्षिण दरवाजा
47	बैतरणी	दक्षिण दरवाजा
48	भीमगया	मंगलागौरी
49	गोप्राचार	मंगलागौरी
50	अक्षयवट	माड़नपुर
51	गदालोल	अक्षयवट के समीप
52	गायत्री घाट	ब्राह्मनीघाट के समीप

पितृपक्ष महासंगम से संबंधित सरोवर की सूची

1 ब्रहम सरोवर
2 बैतरणी सरोवर
3 रुक्मिणी तालाब
4 सूर्यकुण्ड
5 पितामहेश्वर
6 गोदावरी
7 रामशिला
8 प्रेतशिला

पितृपक्ष मेला में आये श्रद्धालुओं के लिए महत्वपूर्ण सूचनाएँ

आवासन व्यवस्था :-

यात्रियों के ठहरने के लिए मेला क्षेत्र में पण्डागृहों, धर्मशालाओं तथा होटलों में आवासन की व्यवस्था रहती हैं इसके अतिरिक्त जिला प्रशासन द्वारा निम्नलिखित 26 स्थलों पर आवासन की व्यवस्था की गई है।

1. जी. एस. एम. कन्या उ. वि. जेलप्रेस	14. कन्या म. वि. विराजमोहनी, गया
2. मध्य विद्यालय, डंकन	15. मध्य विद्यालय, घुघरीटांड
3. मध्य विद्यालय, केन्दुई	16. मध्य विद्यालय, अक्षयवट
4. हादी हाशमी +2 उ. वि., गया	17. चन्द्रशेखर उ. वि. अक्षयवट
5. महावीर इन्टर विद्यालय, गया	18. राजेन्द्र मध्य विद्यालय, गोदावरी
6. अनुग्रह नारायण उच्च वि., गया	19. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
7. अनुग्रह नारायण मध्य वि., गया	20. प्रखण्ड संसाधन केन्द्र, नगर निगम
8. राजकीय कन्या उच्च वि., रमना	21. अभ्यास म. वि., डायट कैम्पस
9. टी० मॉडल इन्टर विद्यालय, गया	22. रामरूचि बालिका इन्टर वि., गया
10. टी० मॉडल मध्य विद्यालय, गया	23. शहीद उच्च विद्यालय, गया
11. +2 जिला स्कूल, गया	24. निगमा मोनेस्ट्री, बोधगया
12. मध्य विद्यालय, शहमीर तक्या	25. रामचन्द्र मल उ.वि. वनमाली, गया
13. न्यू मध्य विद्यालय, चाँदचौरा	26. चन्द्रशेखर जनता कॉलेज, गया

सम्पर्क पदा० :– **जिला पंचायती राज पदा०,** गया # 8210207757
D.P.O. (ICDS), गया # 9431005034 , **D.E.O.,** गया # 8544411293

यातायात व्यवस्था :-

तीर्थ यात्रियों को यातायात सुविधा उपलब्ध कराने हेतु जिला प्रशासन द्वारा 6 रूटों का निर्धारण किया गया है –

1. रेलवे स्टेशन से विष्णुपद	2. विष्णुपद से प्रेतशिला
3. गांधी मैदान से विष्णुपद	4. विष्णुपद श्मशान घाट से बोधगया
5. गया कॉलेज खेल परिसर उत्तरी गेट से रामशिला/प्रेतशिला	6. कण्डी नवादा से गया कॉलेज खेल परिसर/विष्णुपद मंदिर

मेला अवधि में **रिंग बस सेवा** चलाई गई है। यात्रियों की सुविधा के लिए बस, ऑटो एवं रिक्सा भाड़ा निर्धारित कर दिया गया है। साथ ही, प्री-पेड ऑटो सेवा **गया जं० रेलवे स्टेशन** से 34 विभिन्न स्थलों के लिए उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही, टैक्सी ऑन कॉल की सुविधा निम्न टूर एवं ट्रैवेल्स के द्वारा उपलब्ध कराई जा सकेगी :-

डिलाईट टूर एवं ट्रैवेल्स, गया, मो० : 9431225290
अखण्ड ज्योति टूर एवं ट्रैवेल्स, गया, मो० : 9431272040
गुरूकृपा टूर एवं ट्रैवेल्स, गया, मो० : 9934290558
प्रेम टूर एवं ट्रैवेल्स, गया, मो० : 9430073077

सम्पर्क पदा० :– **जिला परिवहन पदाधिकारी,** गया # 6202751055

नि:शुल्क स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर :–

तीर्थ यात्रियों के लिए चिकित्सा की विशेष सुविधा निम्न अस्पतालों में उपलब्ध कराई गई है :

1. अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, गया	2. जयप्रकाश नारायण अस्पताल संक्रामक रोग अस्पताल एवं प्रभावती अस्पताल

24 घंटे कार्यरत शिविर

1. विष्णुपद मंदिर	2. गया जंक्शन रेलवे स्टेशन
3. गया कॉलेज खेल परिसर	4. निगमा धर्मशाला, बोधगया

इसके अतिरिक्त प्रात: 6 से संध्या 6 बजे तक कुल 12 स्थानों पर स्वास्थ्य शिविर बनाए गए हैं एवं 21 आवासन स्थलों पर संध्या 4 बजे से रात्रि 8 बजे तक चिकित्सा सुविधा उपलब्ध रहेगी। शिविरों में डॉक्टर, पारा मेडिकल स्टॉफ एवं आवश्यक दवायें सुलभ है।

सम्पर्क पदा० :– **सिविल सर्जन,** गया # 9470003278

पण्डागणों की पहचान :–

पण्डों एवं उनके अधिकृत प्रतिनिधियों को **संवास सदन समिति, गया** के मुहर एवं हस्ताक्षर से फोटो आईडेंटिटी कार्ड निर्गत किया गया है। पहचान पत्र जरूर देखें। वेबसाईट एवं मोबाईल एप्प पर पण्डागणों की सूची उपलब्ध है।

सम्पर्क पदा० : **सचिव, संवास सदन समिति,** गया # 8969669177, 9431883672

जन वितरण प्रणाली की दुकान :–

तीर्थयात्रियों को कुकिंग गैस उचित दर पर उपलब्ध कराने हेतु मेला क्षेत्र में विष्णुपद में एक अस्थाई बिक्री केन्द्र की स्थापना की गई है तथा यात्रियों की सुविधा हेतु सुधा डेयरी के नौ स्टॉल लगाये गये।

सम्पर्क पदा०– **जिला आपूर्त्ति पदा०,** गया रु 9473460772

हेल्पलाईन :– गया शहर के महत्वपूर्ण स्थानों पर "May I Help You" सहायता केन्द्र की स्थापना की गई है। तीर्थ यात्री अपनी समस्याओं से प्रशासन को अवगत कराएँ।

सम्पर्क पदा० – **वरीय उप-समाहर्त्ता,** गया रु 9835146531

पार्किंग स्थल :– नगर के पाँच स्थानों पर वाहनों के लिए पार्किंग स्थल बनाये गए है

1. सिकरिया मोड़ बस स्टैण्ड	4. सूर्य मन्दिर परिसर, केन्दुई
2. गया कॉलेज खेल परिसर	5. आईटीआई/पॉलिटेक्निक मैदान
3. प्रेतशिला पहाड़ी के निकट	6. संक्रामक अस्प. तथा रेल ब्रिज, पंचायती अखाड़ा

छोटी–छोटी वाहनों का प्रवेश ब्रह्मसत तालाब के उत्तर तरफ प्रतिबंधित रहेगा।

सम्पर्क पदा० :– **जिला परिवहन पदाधिकारी,** गया # 6202751055

सूचना केन्द्रः- गया रेलवे स्टेशन एवं **विष्णुपद मंदिर** परिसर में सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग का सूचना केन्द्र संचालित है। प्रतिनियुक्त पदाधिकारी एवं कर्मचारी आपकी सेवा में 24 घंटे उपलब्ध हैं।

सम्पर्क पदा० :- **जिला जन-सम्पर्क पदा०,** गया मो. 7739109858

महत्वपूर्ण सरोवर :-

1. रुक्मिणी तालाब	2. वैतरणी तालाब	3. गोदावरी,	4. सूर्यकुण्ड,
5. ब्रह्मासरोवर,	6. रामशिला तालाब	7. पितामहेश्वर तालाब	

प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम :-

मेला में आये श्रद्धालुओं के स्वस्थ्य मनोरंजन के लिए प्रतिदिन सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग एवं पर्यटन विभाग के कलाकारों द्वारा **संध्या 5:00 से 7:00** तक **सांस्कृतिक कार्यक्रम** तथा आध्यात्मिक ज्ञानवर्द्धन के लिए मेला अवधि में **संध्या 7:00 बजे से 10:00** बजे तक **विष्णुपद मंदिर** के प्रांगण में देश के विख्यात प्रवचनकर्त्ताओं द्वारा **प्रवचन एवं भजन संध्या** आयोजित है।

विशेष अनुरोध :-

- सड़े-गले खाद्य सामग्रियों का सेवन न करें।
- नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले एवं असामाजिक तत्वों से सावधान रहें।
- किसी अपरिचित व्यक्ति द्वारा दी गई खाद्य सामग्रियों का सेवन न करें।
- चापाकल एवं शद्ध जलकूपों से पेयजल लें और गंदे जल का व्यवहार पीने के लिए न करें।
- किसी भी समस्या या जानकारी के लिए निकटतम सहायता शिविर अथवा गश्ती दल से संपर्क करे। अफवाहों पर ध्यान न दें।
- वेदी, तालाब एवं सरोवरों को स्वच्छ रखें। पूजन सामग्रियों का विसर्जन तालाब में न करें।
- कृपया शौचालय का प्रयोग करें।
- कृपया अन्यत्र गंदगी ना फैलायें तथा प्रशासन को साफ सफाई में सहयोग दें।

सुरक्षा व्यवस्था (Police Help) :-

तीर्थ यात्रियों की सुरक्षा एवं विधि-व्यवस्था को प्रभावकारी बनाने के लिए नगर के पुलिस पदाधिकारियों/थानों के मो० नम्बर निम्नलिखित हैं :-

1. कोतवाली थाना मो०-9431822198	2. सिविल लाईन्स थाना, मो०-9431822199
3. मुफस्सिल थाना मो०-9431822201	4. डेल्हा थाना मो०-9431822219
5. बोधगया थाना मो०-9431822208	6. बेला थाना मो०-9431822209
7. रामपुर थाना मो०-9431822220	8. मगध मेडिकल थाना मो०-9431822222
9. विष्णुपद मंदिर थाना मो० - 9431092838	

मेला क्षेत्र में कुल **72 स्थानों पर 24 घंटे पुलिस शिविर** कार्यरत है, मंदिर परिसर में भी मेला थाना का गठन किया गया है। इन सुरक्षा शिविरों पर दण्डाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिस बल की तैनाती की गई है। आवश्यकता पड़ने पर इनकी सहायता लें।

आपातकालीन दूरभाष :-

पुलिस 0631-2225902 | फायर - 101 | एम्बुलेंस - 102, 108

पितृपक्ष के दौरान प्रशासन द्वारा तय किया गया यात्री किराया

ऑटो रिक्शा (टेम्पो) का किराया

क्र.	स्थान	किराया	आरक्षित
1	गया जंक्शन से गाँधी मैदान	09.00	50.00
2	गया जंक्शन से टिल्हा धर्मशाला	12.00	50.00
3	गया जंक्शन से चाँदचौरा	12.00	50.00
4	चाँदचौरा से रामशिला	18.00	90.00
5	चाँदचौरा से प्रेतशिला	30.00	130.00
6	दिग्घी तालाब से बोधगया	20.00	20.00
7	चाँदचौरा/टिल्हा धर्मशाला से बोधगया	20.00	90.00
8	गया रेलवे स्टेशन से गया कॉलेज खेल परिसर	13.00	70.00
9	गया कॉलेज खेल परिसर से बंगाली आश्रम/चाँदचौरा	13.00	70.00

साईकिल रिक्शा का किराया

क्र.	स्थान	किराया
1	गया जंक्शन से विष्णुपद	40.00
2	गया जंक्शन से टिल्हा धर्मशाला	40.00
3	गया जंक्शन से गया कॉलेज खेल परिसर	40.00
4	गया जंक्शन से रामशिला	40.00
5	बागेश्वरी गुमटी से गेवालबिगहा	45.00
6	टिलहा धर्मशाला से रामशिला	45.00
7	बागेश्वरी गुमटी से गाँधी चौक(टावर)	40.00
8	बागेश्वरी गुमटी से गेवालबिगह	45.00
9	बागेश्वरी गुमटी से रेलवे स्टेशन	20.00
10	पंचयती अखाड़ा से गेवलबीघा	35.00
11	पंचयती अखाड़ा से चौक	20.00
12	पंचयती अखाड़ा से गया कॉलेज	45.00
13	स्टेशन से अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज	50.00
14	टावर चौक से ए. पी. कॉलोनी	45.00
14	टावर चौक से चंदौती से गाँधी मैदान (बस स्टैण्ड)	50.00
16	गया रेलवे स्टेशन से गाँधी मैदान (बस स्टैण्ड)	35.00
17	मुफ़स्सिल मोड़ से टावर चौक	35.00

जिला प्रशासन द्वरा चलाए जा रहे निजी बस का किराया

क्र.	स्थान	किराया
1	विष्णुपद से बोधगया	18.00
2	विष्णुपद से प्रेतशिला	26.00
3	विष्णुपद से रामशिला	18.00
4	रामशिला से प्रेतशिला	12.00
5	रेलवे स्टेशन से विष्णुपद	12.00
6	गया कॉलेज खेल परिसर से रामशिला	15.00
7	गया कॉलेज खेल परिसर से प्रेतशिला	18.00

HOTELS & GUEST HOUSES

1	MAHABODHI	Bodhgaya	2900801, 7546988900
2	HOTEL IMPERIAL	Bodhgaya	
3	DELTA INTERNATIONAL	Bodhgaya	2200854, 9431225234
4	HOTEL GOUTAM	Bodhgaya	2200109, 943129009
5	ROYAL RESIDENCY	Bodhgaya	2200124, 9431831836
6	TAJ DARBAR	Bodhgaya	2200053, 9431289452
7	HOTEL GALAXY	Bodhgaya	2200006, 9430247704
8	HTL. ANAND INT.	Bodhgaya	2200026, 9934891205
9	BUDDHA RESENCY	Bodhgaya	
10	HOTEL URVELA	Bodhgaya	2200236
11	HOTEL VISHAL	Bodhgaya	2200633, 9835417477
12	HOTEL SHASHI	Bodhgaya	2200459
13	ANUKUL Guest House	Bodhgaya	2200118
14	SHANTHI BUDHA Guest House	Bodhgaya	2200519
15	RAHUL BUDHA Guest House	Bodhgaya	2200536, 9431289421
16	HOTEL SUJATA	Bodhgaya	2200481,9431224698
17	R.K INTERNATIONAL	Bodhgaya	2200506
18	HOTEL TOSHITA	Bodhgaya	2200760, 9304636579
19	HOTEL NIRANJANA	Bodhgaya	2200475, 9431477395
20	LOTUS NIKKO	Bodhgaya	2200700, 2200789
21	HOTEL MAHAMAYA	Bodhgaya	2200676,9931276680
22	HOTEL TATHAGAT	Bodhgaya	2200106,9939491063
23	HOTEL BUDHA VIHAR INT.	Bodhgaya	2200506, 9572807755
24	HOTEL LUMBNI	Bodhgaya	2200351
25	HOTEL JEEVAK	Bodhgaya	2200646, 9934473633
26	BODHGAYA RIGENCY	Bodhgaya	8969466281
27	SAMBODHI RETREAT	Bodhgaya	6950080
28	HOTEL OM INT.	Bodhgaya	9199186640
29	HOTEL VIPASHNA	Bodhgaya	9934600777
30	KRITI Guest House	Bodhgaya	9430841313, 9006307888
31	ARIHANT Guest House	Bodhgaya	9507530300
32	RAINBOW Guest House	Bodhgaya	2200308, 9431280810
33	SHANTI SAKYA Guest House	Bodhgaya	2200439
34	HAPPY Guest House	Bodhgaya	
35	SHANTI Guest House	Bodhgaya	2200129, 9835818081
36	SANG PRIYA Guest House	Bodhgaya	
37	PUJA Guest House	Bodhgaya	
38	DEEP Guest House	Bodhgaya	
39	WELCOME Guest House	Bodhgaya	
40	SANGMITRA	Bodhgaya	9434070240
41	AMRAPALI Guest House	Bodhgaya	
42	JYOTI Guest House	Bodhgaya	
43	BEEYUTY Guest House	Bodhgaya	9472932045
44	ARYA Guest House	Bodhgaya	22001144
45	RAVI Guest House	Bodhgaya	9431155080
46	RAHUL Guest House	Bodhgaya	9931463849
47	HARSH & YASH Guest House	Bodhgaya	
48	EKWAL Guest House	Bodhgaya	9933655175
49	Hotel Royal View International	Gaya	0631-2220340
50	Hotel Darwar International	Gaya	9431223155
51	Hotel Gaya Regency,	Gaya	0631-2221153, 9934098892
52	Satyam International,	Gaya	9430057604
53	Hotel Ajatsatru	Gaya	9934480814
54	Annapurna Hotel	Gaya	9352791400

HOTELS & GUEST HOUSES

55	Hotel Gautam	Gaya	9386804133
56	Vikash Hotel	Gaya	9334233672
57	Gaurav Hotel	Gaya	9931075334
58	Aalok Hotel,	Gaya	9835293435
59	Mushkan Hotel,	Gaya	9939391978
60	Aanand Hotel,	Gaya	9304104555
61	Classic Hotel,	Gaya	9771532865
62	Amarnath Guest House	Gaya	9430281309
63	Raj Kumar Guest House,	Gaya	9304463428
64	Subhas Hotel,	Gaya	8521402739
65	Vishnu Bhojanalay	Gaya	9939208410
66	Vishnu Rest House,	Gaya	9472971649, 8092742622
67	Singh Station View,	Gaya	0631-2222045, 9973941235
68	Hotel Birat In,	Gaya	9234455311
69	Aakash Hotel,	Gaya	9471002103
70	Buddha Bihar	Gaya	9709866604
71	Lal Guest House,	Gaya	9934058151
72	Laxman Guest House,	Gaya	9973940360
73	Atithi Guest House,	Gaya	9431290446
74	Chabra Residency,	Gaya	9835414667
75	Grand Place,	Gaya	9122928709
76	Pal Guest House,	Gaya	9386067942
77	Chandralok Guest House,	Gaya	7352474945
78	Tirupati Guest House	Gaya	9097553241
79	Durga Guest House	Gaya	9430476313
80	Swathi Guest House	Gaya	9934414265
81	Shivam Guest House	Gaya	9835292117
82	Siddharth Hotel	Gaya	9102162888, 9102163888
83	Ratnya Priya Guest House	Gaya	0631-2222999
84	Hotel Orbit	Gaya	0631-2220958
85	Samman Hotel	Gaya	9934024179
86	Bishnu Maya, Rest House	Gaya	9771532865
87	Prithivi Rest House	Gaya	7549518665
88	Hotel Vrindawan,	Gaya	0631-2229999, 9934011735
89	Hotel Neelkamal,	Gaya	0631-2221050, 9955062668
90	City Surya,	Gaya	0631-2222321, 7783806661
91	Hotel Surya,	Gaya	0631-2224004, 9431081702
92	Hotel Royal Surya,	Gaya	9334477222, 9122536444
93	Hotel Heritage,	Gaya	8083490956
94	Hotel Garv,	Gaya	0631-2222069, 2222269
95	Fiesta Resort,	Gaya	9431224402
96	Hotel, Gharana,	Gaya	0631-2225512,9470416563
97	Saraogi Hotel,	Gaya	0631-2222575
98	Saraogi Place	Gaya	0631-2220999, 9431223203
99	Vishnu International,	Gaya	0631-2224422
100	Royal Guest House,	Gaya	9661533562
101	Chandan Guest House,	Gaya	0631-2220486
102	Hotel Vishal,	Gaya	0631-2222307
103	Hotel Vashudhara,	Gaya	0631-2220550
104	Palm Gurden	Gaya	9939408422
105	Hotel Vize	Gaya	9431289874
106	New Vize,	Gaya	9470411456
107	Kripal Lodge,	Gaya	9955062902

अन्य महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थल

बोधगया

बोधगया विश्व के प्रमुख एवं पवित्र बौद्ध-तीर्थस्थलों में से एक है। यहीं बोधि वृक्ष के नीचे गौतम ने अलौकिक ज्ञान प्राप्त किया जिसके उपरांत उन्हें बुद्ध कहा गया। हिमालय की तराई में स्थित कपिलवस्तु (वर्तमान नेपाल में) के शाक्य गणराज्य के राज कुमार के रूप में जन्में तथागत के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ जैसे ज्ञान प्राप्ति और महापरिनिर्वाण दोनों बिहार में ही घटित हुईं। बौद्ध धर्म का वास्तविक उद्‌भव बिहार में हुआ और बुद्ध के उपदेशों एवं उन के सरलतम जीवन शैली के उदाहरण और हर जीवित प्राणी के प्रति अन्य-अन्यतम करुणा के कारण पूरे विश्व मे फैल गया। महत्वपूर्ण यह भी है की बिहार राज्य का नाम भी (विहार) शब्द से व्युत्पन्न है जो जिसका तात्पर्य उन बौद्ध-विहारों से है जो प्रचुर मात्रा में बिहार में फैले थे। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के सैकड़ों वर्ष बाद मगध के मौर्य राजा अशोक (269 ईपू से 232 ईपू) ने बौद्ध धर्म के पुनरूत्थान, सुदृढ़ीकरण एवं व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए अनेक प्रयास किए। अशोक ने बौद्ध भिच्छुओं के लिए चैत्य और विहार बनवाए। उसने अनेक अभिलेख खुदवाये जो प्रस्तर शिलालेखों के रूप में महत्वपूर्ण एतिहसिक धरोहर है, जिनमें बुद्ध और बौद्ध धर्म से जुड़े अनेक बातों का पता चलता है। अशोक के अभिलेख जो आज भी अतिवशिष्ट हैं, विद्वानों और तीर्थ-यात्रियों के लिए बुद्ध के जीवन की घटनाओं एवं शिक्षाओं की जानकारी का महत्त्वपुर्ण स्रोत हैं। यहां अत्यंत भव्य महाबोधि मंदिर है जिस में वास्तविक बोधिवृक्ष अभी भी खड़ा है। इस मंदिर का स्थापत्य सैकड़ों वर्षों के सांस्कृतिक विरासतों का समन्वय है, हालांकि इस की भवन निर्माण कला गप्त युगीन कला का अदभुत नमूना है। यह मंदिर विरासत के रूप में अभिलेख भी रखता है, जिनमें 7 वीं से 10 वीं सदी ई0 के बीच के श्रीलंका म्याँमार और चीन से आए तीर्थयात्रियों के यात्रा विवरण मिलते हैं। यह वही मंदिर है जहाँ सातवीं सदी में ह्वेनसांग आया था।

महाबोधि मंदिर

यह मंदिर बोधिवृक्ष के पूर्व में स्थित है। इसका स्थापत्य अदभुत है। इसकी चौड़ाई 48 वर्ग फुट है जो सिलिंडर पिरामिड के रूप में इस की गर्दन तक उठती चली गई है, क्योंकि इसका आकर सिलिन्डरिकल है। मंदिर की कुल उँचाई 170 फुट है और मंदिर के शिखर पर छत्र है, जो धर्म की संप्रभुता का प्रतीक है। इसके चारों कोनों पर स्थित मीनार कलात्मक ढंग से बनाए गये हैं जो पवित्र बनावट को संतुलन प्रदान करते हैं। यह पवित्र इमारत पर फहराया गया एक महान बैनर है, जो दुनिया को सांसारिक समस्याओं से ऊपर उठकर , मानव के दुखमय जीवन को शांति प्रदान करने के लिए बुद्ध के पवित्र प्रयासों का प्रचार करने के लिए और ज्ञान के अच्छे आचरण और अनुशासित जीवन के माध्यम से दिव्यशांति प्राप्त करने के लिए किए गये प्रयास का प्रतीक है। मंदिर के अंदर मुख्य क्षेत्र में बुद्ध की बैठी हुई मूर्तिस्थित है जिस में वे अपने दाएँ हाथ से बनी हुई है जो श्रद्धालूओं के दान से लाई गई थी। मंदिर का पूरा छत्र कलात्मक निर्मित स्तूपों से भरा हुआ है। ये स्तूप विभिन्न आकर के हैं जो पिछले 2500 सालों के दौरान बनाए गये हैं। इनमें से ज्यादातर स्थापत्य की दृष्टि से अत्यंत आकर्षक हैं। प्राचीन वेदिका जो मंदिर को चारों ओर घेरती हैं पहली सदी ईपू. की है और यह उस सदी की रोचक स्मारकों में से एक है।

80 फुट बुद्ध प्रतिमा

महान बुद्ध की मूर्ति को 80 फुट की बुद्ध प्रतिमा के रूप मे जाना जाता है। इसका अनावरण एव लोकार्पण 18 नवंबर, 1989 को समारोहपूर्वक 14वें पवित्र दलाई लामा की उपस्थति मे किया गया था, जिन्होने इस 25 मीटर की प्रतिमा को आशीर्वाद प्रदान किया। यह महान बुद्ध की पहली प्रतिमा थी जिसे आधुनिक भारत के इतिहास में बनाया गया था। यह प्रतिमा महाबोधि मंदिर बोधगया के आगे स्थित है। यहाँ पर सुबह 7 बजे से 12 बजे तक दोपहर 2 बजे से शाम 6 बजे तक दर्शन किया जा सकता है।

अनिमेष लोचन चैत्य

यह विश्वास किया जाता है कि बुद्ध ने महान बोद्धिवृक्ष को बिना पलकें झपकाये देखते हुए यहाँ एक साप्ताह बिताया था। वर्तमान बोधिवृक्ष वास्तविक वृक्ष का संभवत: पांचवाँ उतराधिकारी है, जिसके नीचे बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था। वज्रासन महाबोधि वृक्ष के नीचे एक पत्थर का प्लेटफार्म है, जिसपर मान्यता है कि बुद्ध ज्ञान प्राप्ति के तीसरे हफ्ते बैठकर पूर्व की ओर देखते हुए ध्यान लगाया करते थे। **चक्रमण**– यह पवित्र चिन्ह है जो बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति के तीसरे हफ्ते बाद में ध्यान की मुद्रा में टहलने से बना है। मान्यता है कि यहां बुद्ध ने अपने पदमचरण रखे थे। रतनगढ़ में बुद्ध ने एक सप्ताह बिताया था जहां विश्वास है कि उनके शरीर से पाँच रंग फूटने लगे थे।

कोटेश्वर नाथ मंदिर

गया जिला के बेलागंज प्रखंड के पाई बिगहा के आगे मेन कोटेश्वरनाथ मंदिर अवस्थित है। भगवान शिव के पवित्र मंदिर के रूप मे प्रसिद्ध यह मोरहर दरघा नदियों के संगम पर स्थित है। पटना से दक्षिण 120 किमी की दूरी पर स्थित कोटेश्वर मंदिर के बारे मे मान्यता है कि इसका निर्माण 8वीं सदी ई० के आसपास हुआ था। कोटेश्वर मंदिर का गर्भगृह लाल पत्थर के एक टुकड़े को काटकर बनाया गया है जिसमे एक विशाल शिवलिंग के आसपास 1008 छोटे शिवलिंग हैं, जो लगभग 1200 साल पुराना है। यह कहा जाता है कि वाणासुर का मेला और देवकुंड घने जंगल मे अवस्थित थे। उषा यहाँ मंदिर मे भगवान शिव की पूजा-अर्चना के लिए आती थी। जिस दौरान भगवान शिव प्रकट हुए और उसकी इच्छापूर्ति हेतु सहस्र लिंगों की स्थापना करने का निर्देश दिया। उसके बाद शिवलिंग की स्थापना हुई। इसके परिणाम स्वरूप भगवान शिव ने उसकी इच्छा पूरी की और उसका अनिरुद्ध से विवाह हुआ। अनिरुद्ध भगवान कृष्ण के पौत्र थे जिनके साथ पत्नी के रूप मे उषा ने अपना जीवन गुजारा। यह स्थान प्राचीन काट मे शिवनगर के रूप मे जाना जाता था। कई ग्रंथों मे उल्लेख है कि सहस्र शिवलिंग की स्थापना द्वापर युग के अंत में की गई थी।

यह विश्वास किया जाता है कि इस स्थान में इतनी शक्ति है कि जो भी तीर्थयात्री यहाँ आता है, उसकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है। स्वाभाविक रूप से प्रत्येक वर्ष सावन के महीने मे तीर्थयात्री यहाँ जलाभिषेक एवं पूजा अर्चना के लिए आते हैं। सामान्यता भगवान शिव के पवित्र स्थलों पर बड़ी संख्या में तीर्थयात्री सालों भर आते हैं, लेकिन सावन के पवित्र महीने मे यह संख्या और बढ़ जाती है। यह स्थान पक्की सड़क द्वारा मख्दूमपूर, शकुराबाद, घेजन, टेकारी और बेला रामपुर से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। इस मंदिर में द्रविड़ शैली मे हाल मे एक नया शिखर निर्मित किया गया है। हालाँकि इसके आंतरिक स्थापत्य वास्तविक स्वरूप में ही संरक्षित किया गया है। इसके गर्भगृह एव आंशिक बदलाव किए गये हैं। यह मंदिर मुख्यत: ईंटों और ग्रेनाइट पत्थरों से निर्मित है जिसे इसके प्रवेश द्वार अंतराल एवं स्तंभ मे देखा जा सकता है।

डुंगेश्वरी मंदिर

डुंगेश्वरी गुहा मंदिर जसे महाकाल गुफाओं के नाम से भी जाना जाता है बोधगया (बिहार) के उत्तर-पूर्व में 12 किमी की दूरी पर स्थित है। यहाँ तीन पवित्र बुद्ध गुफाएँ हैं, जिनके बारे मे मान्यता है की यहाँ बुद्ध ने ध्यान लगाया था। ढुंगेश्वरी गुहा मंदिर प्राचीन गुफाएँ हैं। इन गुफाओं में भगवान बुद्ध बोधगया आने के पूर्व कई वर्षों तक कठोर निग्रह के साथ तपस्या की थी। इन तीन मुख्य गुफाओं मे कई पवित्र बुद्ध आवशेष हैं और एक हिंदू-धर्म से जुड़ा है। ढुंगेश्वरी गुहा मंदिर स्थानीय लोगों में 'सुजाता स्थान' के नाम से लोकप्रिय है। इस मंदिर से जुड़ी एक प्रसिद्ध कहानी है। यह माना जाता है की कठोर तपस्या के कारण बद्ध बिल्कुल शकाय हो गये थे। जब वे बरगद वृक्ष के नीचे सुजाता का आग्रह स्वीकार किया और भोजन ग्रहन किया। बुद्ध इसके उपरांत इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ना तो स्व के प्रति अति आग्रह और ना तो स्व के प्रति अतिनिग्रह ज्ञान प्राप्ति का सही तरीका है। बुद्ध ने माध्यम मार्ग के ज्ञान को प्राप्त किया। जो परम निर्वाण को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। दुँगेश्वरी गुहा मंदिर इसी घटना का प्रतीक स्मारक है। सिद्धार्थ गौतम के बारे मे विश्वास किया जाता है की बोधगया मे ज्ञान प्राप्ति करने हेतु जाने के पूर्व उन्होंने यहाँ छ: वर्षों तक ध्यान लगाया था। दो छोटे मंदिर इस घटना की याद मे यहाँ बनाए गये हैं। यहाँ स्वर्ण से बनी एक बुद्ध मूर्ति बुद्ध के कठोर निग्रह को दर्शाती हुई एक गुफा मंदिर मे रखी गई है और लगभग 6 फुट ऊँची विशाल बुद्ध मूर्ति दूसरे मंदिर मे रखी है। एक हिंदू देवी ढुंगेश्वरी की मूर्ति भी गुहा मंदिर मे अंदर रखी गई है।

राजगीर

गया से 80 किमी तथा पटना से 110 किमी दूर स्थित राजगीर का नाम राजगृह से पड़ा जिसका तात्पर्य है राजा का घर। यह शहर भगवान बुद्ध के समय में प्रसिद्ध मगध साम्राज्य की राजधानी था, जब पाटलिपुत्र शहर नही बसा था। राजगीर नालंदा से 14 किमी की दूरी पर अवस्थित है। राजगीर भारत के प्रमुख पर्यटक स्थलों में से एक है। राजगीर की प्राकृतिक सुंदरता अद्‌भुत है क्योंकि यह पाँच पवित्र पहाड़ों से घिरा है। राजगीर शहर बौद्धों के साथ-साथ जैन लोगों के लिए भी अत्यंत प्रिय है। यहीं पहाड़ी पर दो गुफाएँ हैं, जो भगवान बुद्ध को विश्राम के लिए अत्यंत प्रिय थीं, यहीं पहाड़ी पर उन्होंने अपने दो प्रसिद्ध उपदेश भी दिए थे।

राजगीर के प्रमुख पर्यटक स्थल :

शांति स्तूप - रत्नागिरि पहाड़ी की चोटों पर स्थित अत्यंत सफेद पठारों से निर्मित यह संरचना बौद्धों के लिए सबसे आकर्षक स्थल है यहाँ स्थित चार सोने की मूर्तियाँ बुद्ध के जन्म, संबोधि, शिक्षाओं व मृत्यु को दर्शाती हैं।

गृधकूट पर्वत - यह भगवान बुद्ध के प्रिय स्थलों में से एक था, जहाँ उन्होंने संबोधि प्राप्ति के उपरांत कई बार उपदेश दिये। यहीं पर उन्होंने दो प्रमुख सूत्रों का प्रतिपादन किया - लोटस सूत्र और प्रज्ञानपरिमिता

प्राचीन अवशेष - यहाँ राजा बिंबिसार और आजातशत्रु से जुड़े अनेक स्थल, गुफाएँ एवं प्राचीन राजगृह शहर के अवशेष दर्शनीय हैं। यहाँ आजातशत्रु द्वारा निर्मित 5 वीं सदी ई.पू. का किला देखा जा सकता है जहाँ उसने अपने पिता को कैद करके रखा था। इसकी 115 कि.मी. लंबी बाहरी दीवार पठारों के खंडों से निर्मित है।

बराबर गुफाएँ

गया से 24 किमी दूर बिहार के जहानाबाद जिले में अवस्थित, बराबर की गुफाएँ चट्टानों को काटकर बनाई गयी भारत की प्राचीनतम अवशिष्ट गुफाएँ है, जो ज्यादातर मौर्य साम्राज्य 322 का 185 ई.पू. के दौरान बनी जिसमें अशोक के कुछ अभिलेख भी हैं। यह मखदूमपुर प्रखंड मुख्यालय से 11 किमी दूर स्थित है। बुद्ध धर्म को अपनाने के बावजूद अशोक ने अपनी धार्मिक सहिष्णुता की नीति के तहत जैन एव अन्य संप्रदायों को भी फलने-फूलने का अवसर दिया। ये गुफाएँ मक्खली गोसाल द्वारा संस्थापित आजीवन संप्रदाय के अनुयायियों द्वारा प्रयोग मे लाने के लिए बनाई गई थी। मक्खली गोसाला बुद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध और जैन धर्म के 24 वे अंतिम तीर्थकर महावीर के समकालीन थे। इन गुफाओं में चट्टानों को काटकर बनाई गई कई बुद्ध एवं हिंदू मूर्त्तियाँ हैं। बराबर की अधिकतर गुफाओं मे दो कमरे बने हैं, जिन्हें ग्रेनाइट की चट्टानों को काटकर बनाया गया है जिन की आंतरिक सतह पर ऊँचे दर्जे की चमकयुक्त पॉलिश की गई है और आकर्षक प्रभाव है। पहला कमरा एक बड़ा आयताकार हॉल है, जहाँ पूजा करने वेल लोग इकट्ठा होते थे और दूसरा कमरा छोटा है जो गोल एव गुंबदनुमा है, पूजा के लिए बनाया गया था। संभवतया इस दूसरे आंतरिक कमरे मे एक छोटा स्तूर जैसी संरचना होती थी लेकिन अब ये खाली है । ये सात गुफाएँ (सतगढवा) मौर्य सम्राट अशोक के समय में आजीवकों के लिए बनवाया गया था। ये गुफाएँ कठोर एकामक ग्रेनाइट चट्टानों को काटकर बनाई गई है जिनपर असाधारण पोलिश की कला का सुंदर नमूना प्रस्तुत करते हुए आंतरिक दीवारों पर असाधारण चमक वाली पॉलिश की गई है।

पितृपक्ष मेला की तैयारी को लेकर डीएम ने की बैठक

गया जंक्शन पर लगेंगे 26 सीसीटीवी कैमरे

टूटे परिसर व जर्जर सड़क को करें दुरुस्त: डीएम

पितृपक्ष मेले में आउटसोर्सिंग से होगी सफाई

601 सफाईकर्मी करेंगे साफ सफाई, ड्रेस कोड का होगा पालन, 23 अगस्त से शुरू से जाएगा सफाई का काम

इन वार्डों में होगी सफाई

पिंडदानियों को मंदिरों के रास्ते आसानी से पता चलें इसके लिए बनेगा रूट मैप

सिटी रिपोर्टर | गया

पितृपक्ष मेला

- मेला क्षेत्र की हर गलियां हो रौशन, चिह्नित स्थलों पर लगाए जाए सीसीटीवी कैमरा
- माला बेचने वालों व संदिग्धों की गतिविधियों पर रखें नजर, 31 ...

पितृपक्ष मेला की तैयारी पर तीन करोड़ के खर्च का प्रस्ताव पारित

निगम की सशक्त स्थायी समिति की बैठक तालाब व घाटों की सफाई पर विशेष

पितृ पक्ष मेला

पितृपक्ष मेला में रोशनी से नहाएगा पूरा शहर

जागरण संवाददाता, गया : पितृपक्ष मेला की तैयारी को लेकर जिलाधिकारी ने शनिवार को बैठक ... कार्यों को 31 अगस्त ... लेने का निर्देश दिया। ... कि इस वर्ष पितृपक्ष ... से और आकर्षक बनाने ... र बैठक करनी होगी। ... किसी भी प्रकार की ... चाहिए। उन्होंने कहा ... पूरी तरह लाइट से ... भी कोने में अंधेरा ... निरीक्षण कर जल्दी ... निश्चित करें। उन्होंने ...

पितृ पक्ष मेला

बैनर के माध्यम से प्रचार-प्रसार ... का किराया दर निर्धारित करने का निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिया। जिलाधिकारी ने अनुमंडल पदाधिकारी को एक कलेंडर बनाकर ... का निर्देश दिया, जिसमें ... सभी ...

पिंडदानियों से अनुचित वसूली रोकने के लिए लॉजिंग हाउस एक्ट में होगा बदलाव

सिटी रिपोर्टर | गया

पंचकोसी विष्णुधाम में बढ़ेंगी यात्री सुविधाएं

गयापाल पंडों को मिलेगा स्थायी पहचान पत्र

अंतरराष्ट्रीय स्तर का गेस्ट हाउस भी बनाया जाएगा

अहिल्याबाई गेस्ट हाउस की जांच

सामुदायिक भवन से हटेगा कब्जा

चौड़ा होगा रास्ता

एक्ट में बदलाव से सहूलियत

मेला के दौरान नहीं हो जलजमाव : डीएम

पितृपक्ष मेले की तैयारी की समीक्षा लेकर जिलाधिकारी ने की अधिकारियों के साथ बैठक

पितृपक्ष मेले की तैयारी में प्रशासन, बनी कमेटी

जागरण संवाददाता, गया : समाहरणालय में जिलाधिकारी अभिषेक सिंह की अध्यक्षता में गुरुवार को पितृपक्ष मेला की तैयारी को लेकर एक बैठक हुई। पर्यटन शाखा के प्रभारी पदाधिकारी केके यादव ने पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन के द्वारा विभिन्न समितियों के द्वारा विगत वर्ष किए गए कार्य से अवगत कराया गया। उन्होंने बताया कि गया में कई वेदियां हैं, जहां पिंडदान किया जाता है। कुल 15 समितियां विगत वर्ष बनाई गई थी, जिनमें

समाहरणालय में आगामी पितृपक्ष मेला को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक करते डीएम

... नदियां और श्रद्धालुओं के आने- ...

जिलाधिकारी ने कहा कि 24 घंटे में ... गंदगी नहीं दिखे। यह ... होगा। सभी नालों की ... ई तक करवा लेने का ... गम के नगर प्रबंधक को ... के नाले का स्लैब उखड़ा ... नहीं ...

श्रद्धालुओं को शुद्ध एवं शीतल जल प्राप्त हो सके। इसके लिए उन्होंने पूर्व से कार्य योजना बनाकर क्रियान्वित करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि प्याऊ हेतु गोल मॉडल भी बनाया जा सकता है। प्रत्येक शौचालय पर एक कर्मी की प्रतिनियुक्ति रखने का निर्देश उन्होंने नगर निगम को दिया। उन्होंने कहा कि सफाई कर्मी दो शिफ्ट में प्रतिनियुक्त होंगे। जहां भी अतिरिक्त शौचालय लगवाना है, वहां भी सफाई की व्यवस्था की जाए।

विद्युत एवं प्रकाश व्यवस्था की समीक्षा के दौरान इंडिया पावर के पदाधिकारी ने बताया कि पितृपक्ष मेला के दौरान 1 मिनट के लिए भी बिजली नहीं कटती है। वाहन ...

पितृपक्ष मेले में पिंडदानियों को मिलेगी विशेष सुविधा, निगम ने शुरू की तैयारी

सिटी रिपोर्टर | गया

सड़कों के किनारे बिछाए जा रहे पेवर ब्लॉक, आज से चलेगा विशेष अभियान

पितृपक्ष को लेकर चल रही तैयारी।

मुख्य सड़कों के किनारे बिछाए जा रहे पेवर ब्लॉक

मेला क्षेत्र में लगेंगे 10 वाटर एटीएम

रोशन से जगमगाएगा मेला क्षेत्र

आउटसोर्सिंग ... वार्डों की सफाई ...

पितृपक्ष मेले में पिंडदानियों को मिलेंगी विशेष सुविधाएं

नगर निगम खर्च करेगा 1.35 करोड़ रुपये, नौ वार्डों में चलेगा विशेष अभियान

तैयारी

समय से पहले ही कर लें पूरी तैयारी : डीएम

सिटी रिपोर्टर | गया

समाहरणालय के सभागार में शनिवार को पितृपक्ष मेला की तैयारी को लेकर डीएम अभिषेक सिंह की अध्यक्षता में बैठक हुई। बैठक में नगर निगम के आयुक्त ईश्वर चंद्र शर्मा द्वारा बताया गया कि सफाई के लिए पितृपक्ष मेला में कुल 38 जोन बनाए गए हैं एवं सभी जोन में एक जोनल पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की गई है। साथ ही पीएचइडी सफाई कर्मी की भी प्रतिनियुक्ति की गई है। देवघाट एवं विष्णुपद की सफाई के लिए सफाई कर्मियों की तीन पालियां रहेंगी एवं शेष स्थानों में सफाई कर्मी दो पालियों में रहेंगे। डीएम ने नगर आयुक्त को कहा कि कचरा उठाने के लिए एक समय निर्धारित करना होगा, किस समय कचरा उठाया जाए, आवासन की सफाई सुबह में करवाना सुनिश्चित करें। सभी स्थलों पर साफ-सफाई, पेयजल आदि की व्यवस्था पूरी होनी चाहिए, कमी मिलने पर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि 16 कार्यों के लिए टीम गठित की गई है, जिसमें साफ सफाई, स्ट्रीट लाइट, जलापूर्ति, विद्युत, यातायात, आवासन स्थल, CCTV इत्यादि का जांच प्रतिवेदन अगले 2 से 3 दिनों में उपलब्ध ...

बंद पड़े सीसीटीवी कैमरों को करें चालू

उन्होंने कहा शहर में पुलिस चौकी की व्यवस्था होती है, जो कुल 72 होंगी। उनके आसपास ...

मिलेगी पितृपक्ष मेले से जुड़ी पूरी जानकारी, देशी-विदेशी पर्यटकों को होगी सुविधा

तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए पिंडदान मोबाइल एप हुआ लांच

हेल्पलाइन नंबर जारी

रहे ध्यान, पिंडदानियों का नहीं हो शोषण : आयुक्त

एक सितंबर तक सभी सड़कों की हो मरम्मत

भावनाओं का समागम

गदाधर घाट पर तीर्थयात्री

सीताकुण्ड पर तीर्थयात्री

फल्गु नदी पर पिण्डदान

फल्गु में जलांजलि

तीर्थयात्रियों द्वारा तर्पण

रात्रि में फल्गु नदी एवं विष्णुपद

श्राद्ध के उपरांत तीर्थयात्री

गया में श्राद्ध का अनुष्ठान

आस्था का समागम

फल्गु नदी में तीर्थयात्री

गया में श्राद्ध

फल्गु में तर्पण करते यात्री

फल्गु नदी में पिण्डदानी

पितृ दीपावली

सामूहिक पिण्डदान

अक्षयवट में तीर्थयात्री

पितामहेश्वर में तर्पण

Fortnight of the Ancestors
pitrapaksha
MAHASANGAM

पूर्वजों के प्रति श्रद्धा

फल्गु किनारे विदेशी तीर्थयात्री

विदेशी तीर्थयात्रियों द्वारा गया श्राद्ध

गया में विदेशियों द्वारा पिण्डदान

विदेशी यात्रियों द्वारा तर्पण

फल्गु में तीर्थयात्री

गया श्राद्ध की तैयारी

प्रेतशिला जाते तीर्थयात्री

ब्रह्मकुण्ड में पिण्डदान

Fortnight of the Ancestors
pitrapaksha
MAHASANGAM

पूर्वजों के प्रति श्रद्धा

फल्गु में तर्पण

देवघाट पर पिण्डदानी

पिण्डदान करती महिलाएँ

बोधगया में पिण्डदान

श्राद्ध करते तीर्थयात्री

विष्णुपद मंदिर में पिण्डदान

फल्गु महा आरती

सामूहिक तर्पण

Fortnight of the Ancestors
pitrapaksha
MAHASANGAM

गया के मुख्य दर्शनीय स्थल

धर्मारण्य

सीताकुण्ड

वृद्ध परपितामहेश्वर

ब्रह्मयोनि पर्वत

प्रेतशिला पर्वत

रामशिला

पितामहेश्वर

पवित्र फल्गु

Fortnight of the Ancestors
pitrapaksha
MAHASANGAM

गया के मुख्य दर्शनीय स्थल

विष्णुपद मन्दिर

गया गदाधर मन्दिर

मार्कण्डेय मन्दिर

देवघाट

ब्रह्मसरोवर

अक्षयवट

सूर्यकुण्ड

जनार्दन मन्दिर

गया के मुख्य दर्शनीय स्थल

महाबोधि मन्दिर, बोधगया

80 फीट ऊँची बुद्ध प्रतिमा

माँ मंगलागौरी मन्दिर

बगला स्थान

दुर्लभ मूँगा के गणेश (रामशिला)

दुर्लभ स्फटिक शिवलिंग (रामशिला)

सुजाता गढ़, बोधगया

माँ दु:खहरणी मन्दिर

Fortnight of the Ancestors
pitrapaksha
MAHASANGAM

तैयारियों की समीक्षा

पितृपक्ष मेला की तैयारी की समीक्षा मा० मुख्यमंत्री द्वारा

माननीय मुख्यमंत्री द्वारा पितृपक्ष मेला की तैयारी की समीक्षा (समाहरणालय सभाकक्ष, गया)

मा० मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार सूर्यकुण्ड का निरीक्षण

देवघाट का निरीक्षण करते माननीय मुख्यमंत्री

विष्णुपद मंदिर में पूजा–अर्चना करते मा० मुख्यमंत्री

देवघाट जाते माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार

जिलाधिकारी, गया द्वारा मा० मुख्यमंत्री को विष्णुपद का चित्र भेंट

मा० मुख्यमंत्री द्वारा पदाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक

तैयारियों की समीक्षा

जिलाधिकारी एवं व० पुलिस अधीक्षक द्वारा मेले की तैयारी की समीक्षा

मेले की तैयारी की समीक्षा करते जिलाधिकारी एवं व० पुलिस अधी०

पिण्डदान गया मोबाईल एप्प का शुभारंभ

देवघाट का निरीक्षण करते जिलाधिकारी एव अन्य पदाधिकारीगण

सूर्यकुण्ड का निरीक्षण करते जिलाधिकारी एवं वरीय पुलिस अधी०

जिलाधिकारी द्वारा हृदय योजना कार्य का अवलोकन

सूर्यकुण्ड पर जिलाधिकारी द्वारा निरीक्षण

देवघाट निरीक्षण के दौरान हृदय योजना के वास्तुविद को निर्देश देते जिलाधिकारी

तैयारी में प्रशासन

जिलाधिकारी एवं व० पु० अधी० द्वारा सीताकुण्ड का निरीक्षण

आयुक्त, मगध प्रमण्डल एवं प्रधान सचिव, नगर विकास एवं आवास विभाग द्वारा निरीक्षण

आयुक्त, मगध प्र० तथा डी.आर.एम. पू०म० रेलवे के साथ बैठक

पितृपक्ष मेला की तैयारी हेतु बैठक करते जिलाधिकारी एवं व० पु० अधी०

मेला क्षेत्र के निरीक्षण में आयुक्त, मगध प्रमण्डल तथा प्रधान सचिव, न. वि. एवं आ. विभाग एवं जिलाधिकारी

मेला क्षेत्र के निरीक्षण में आयुक्त, मगध प्रमण्डल तथा प्रधान सचिव, नगर विकास एवं आवास विभाग

प्रधान सचिव, नगर विकास एवं आवास विभाग श्री चैतन्य प्रसाद द्वारा मेला क्षेत्र का निरीक्षण

हृदय योजना का अवलोकन करते प्रधान सचिव नगर विकास एवं आवास विभाग श्री चैतन्य प्रसाद

पितृपक्ष मेले को राजकीय दर्जा देने की अभूतपूर्व, ऐतिहासिक अधिसूचना

बिहार सरकार
राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग
अधिसूचना

संख्या 8 /नियम संशोधन (रा०मेला) – 03 09/2011 259 (8)/रा० दिनांक 02/09/2014

विभागीय अधिसूचना सं०–677 (8) रां० दिनांक 10.09.2009 द्वारा बिहार राज्य मेला प्राधिकार के प्रबंधन मे दिए गये निम्नांकित मेलों को राजकीय मेला का दर्जा दिया जाता है।

(i) पितृपक्ष मेला, गया

(ii) हरहिर क्षेत्र मेला, सोनपुर (सारण)

बिहार राज्यपाल के आदेश से
ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

ज्ञापांक – 259 दिनांक 02/9/14

प्रतिलिपि :– अधीक्षक, सचिवालय मुद्रणालय, गुलजारबाग, पटना को अधिसूचना की दो प्रति एवं सी०डी० के साथ बिहार राजपत्र के असाधारण अंक में प्रकाशनार्थ प्रेषित करते हुए अनुरोध है कि उसकी 500 (पाँच सौ) अतिरिक्त प्रतियाँ राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग को उपलब्ध करायी जाय।

ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

ज्ञापांक – 259 दिनांक 02/9/14

प्रतिलिपि :– माननीय मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव, बिहार, पटना/माननीय मंत्री, राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के आप्त सचिव, बिहार, पटना/मुख्य सचिव, बिहार, पटना/प्रधान सचिव, राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के प्रधान आप्त सचिव, बिहार, पटना को सूचनार्थ एवं आवश्यक कारवाई हेतु प्रेषित।

ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

ज्ञापांक – 259 दिनांक 02/9/14

प्रतिलिपि :– सभी प्रमंडलीय आयुक्त, बिहार/सभी जिला पदाधिकारी, बिहार को सूचनार्थ एवं आवश्यक कारवाई हेतु प्रेषित।

ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

ज्ञापांक – 259 दिनांक 02/9/14

प्रतिलिपि :– सभी विभाग/सभी विभागाध्यक्ष, बिहार, पटना को सूचनार्थ एवं आवश्यक कारवाई हेतु प्रेषित।

ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

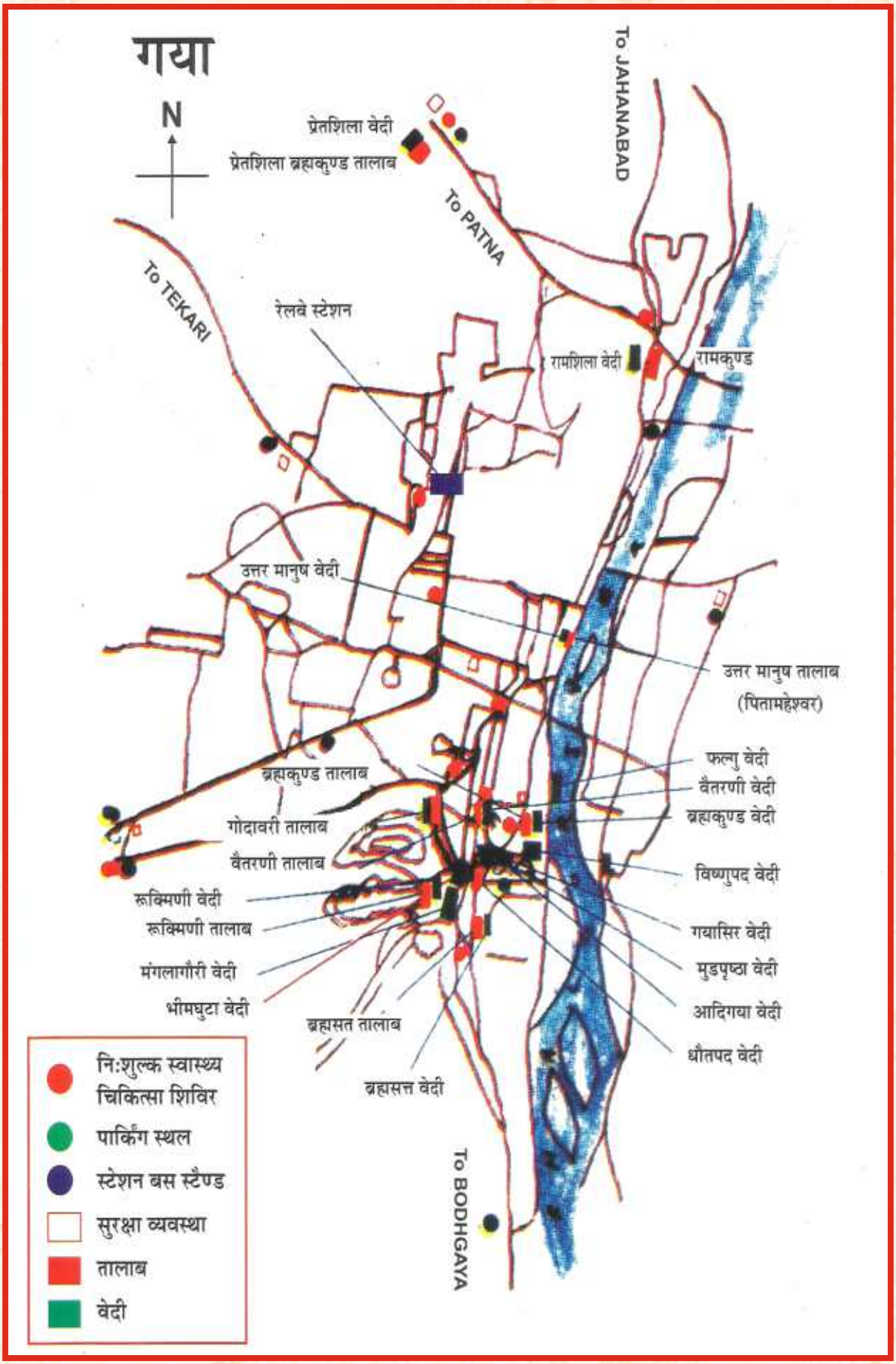
गया
N
To JAHANABAD
To PATNA
To TEKARI
To BODHGAYA
प्रेतशिला वेदी
प्रेतशिला ब्रह्मकुण्ड तालाब
रेलवे स्टेशन
रामशिला वेदी
रामकुण्ड
उत्तर मानुष वेदी
उत्तर मानुष तालाब
(पितामहेश्वर)
फल्गु वेदी
वैतरणी वेदी
ब्रह्मकुण्ड वेदी
ब्रह्मकुण्ड तालाब
गोदावरी तालाब
वैतरणी तालाब
विष्णुपद वेदी
रूक्मिणी वेदी
रूक्मिणी तालाब
गयासिर वेदी
मंगलागौरी वेदी
मुडपृष्ठा वेदी
भीमघुटा वेदी
आदिगया वेदी
ब्रह्मसत तालाब
धौतपद वेदी
ब्रह्मसत्त वेदी
नि:शुल्क स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर
पार्किंग स्थल
स्टेशन बस स्टैण्ड
सुरक्षा व्यवस्था
तालाब
वेदी

श्रद्धांजलि

गोवर्द्धन प्रसाद सदय

(11 अक्टूबर, 1925 - 30 नवम्बर, 2017)

कार्य : 1950 से 52 तक वरीय उप-सम्पादक, 'जनता' - दैनिक; 52 से 56 तक; उप-सम्पादक 'अवन्तिका' तथा सम्पादक 'चुन्नू-मुन्नू' मासिक पत्रों में; नवम्बर 1956 से सहायक अनुवादक, सचिवायल, पटना; 1957 से 62 तक सम्पादक, बिहार समाचार, बिहार सरकार, पटना; 1962 से 65 तक सम्पादक-पंचायती राज, बिहार सरकार, पटना; 1966 से 1977 तक सहायक निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बिहार सरकार; 1977 से 1985 तक उपनिदेशक, सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग। अक्टूबर, 1985 से सेवा-निवृत्त। 1986 से सम्पादक-काश, तथा सहयात्री त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अनवरत लेखन-कार्य। कविता, कहानी, लेख तथा निबंध हिन्दी की साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित तथा आकाशवाणी से प्रसारित होते रहे। दूरदर्शन से भी 'बिकता हुआ आदमी' एक टेलीफिल्म का प्रसारण हुआ ।

प्रकाशित पुस्तकें : संधान (कविता-संग्रह), मनुहार (गीत-संग्रह), कोठरी की आत्मा (कहानी-संग्रह) तथा फुलवारी (बाल कविता-संग्रह), फूलों की क्यारी (बाल-रचनाओं का संग्रह), प्रणति (भक्ति-काव्य-संग्रह), लोक ऋषि (खण्ड काव्य), अपनी बगिया अपने फूल (किशोरोपयोगी मगध परिचय) वायुनन्दन (भक्ति-गीत), राम आख्यान (वाल्मीकीय रामायण पर आधारित महाकाव्य), सन्नाटे का संगीत (गीतों का संग्रह) संकल्प (कविता-संग्रह) बालरामायण, भगवान बुद्ध, कालचक्र, तीन तीर्थ आदि बालोपयोगी पुस्तकें। बिहार सरकार की राष्ट्रभाषा परिषद् की ओर से स्वतंत्रता दिवस, 1993 के अवसर पर 'साहित्य-सेवा' सम्मान से पुरस्कृत। बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन-पटना, बिहार राजभाषा परिषद-पटना और विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित। गया जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति।

विशेष : पितृपक्ष स्मारिका प्रवेशांक 1995 से लेकर वर्ष 2017 तक के **प्रधान सम्पादक** के रूप में इन्होंने अपना बहुमूल्य योगदान दिया। स्मारिका प्रकाशन में इनके अमूल्य योगदान के लिए स्मारिका परिवार इन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

पितरों के प्रति हमारी श्रद्धा ....

पितृपक्ष
महासंगम

संस्कृतियों का संगम :
पितृपक्ष महासंगम

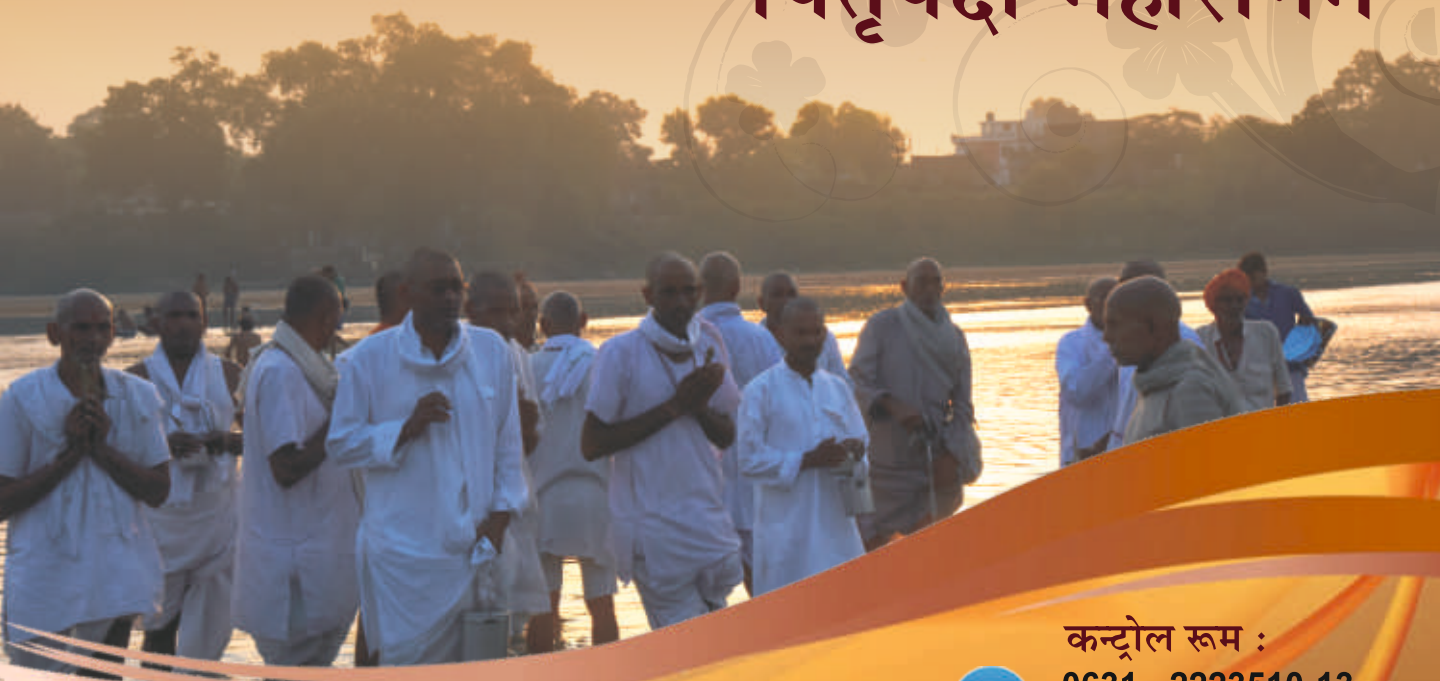

कन्ट्रोल रूम :
0631 - 2223510-13
हेल्पलाईन (24×7) :
8448596580

www.pinddaangaya.in

ANDROID APP ON Google play
App Store

pinddaangaya